प्रश्नशिरोमणि



खेमराज़ श्रीकृष्णदास प्रकाशन

श्रीः

पंडितरुद्रमणिविरचित

प्रश्नशिरोमणि

ढाडौलिग्रामवास्तव्यपंडितरामदयालु

विरचित

भावार्थबोधिनीभाषाटीकासहित

★

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : अगस्त २०१३, संवत् २०७०

मूल्य : १०० रुपये मात्र

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

भूमिका

सर्व सज्जन विद्वान् पुरुषोंको विदित हो कि यह प्रश्नशिरोमणि नामक बृहत् ग्रंथ श्रीयुत वाल्मीकवंशावतंसत्रिपाठिपण्डितराजरुद्रमणिविरचित है इसके आद्यन्तलेखसे यह ज्ञात होता है कि आप जगदम्बादेवीके परम भक्त थे, इस ग्रंथकी मनोहर सुललित कविता अवलोकन करनेसे श्रीयुत पण्डितराजका विद्वत्तागौरव भी विद्वानोंके सामने छिपा नहीं रहता, आप व्याकरण, कोश, काव्य, छन्दोग्रंथ, ज्योतिश्शास्त्रादि विद्योदधिके पारगामी प्रतीत होते हैं, परन्तु यह नहीं जान पड़ता कि श्रीमत्पण्डितजी महाराजका निवासस्थान तथा इस ग्रंथका निर्माणसमय क्या था, यह ग्रंथ मेरे पास तो १०० वर्षसे अधिक समयका हस्तलिखित, जीर्ण-शीर्ण तथा अशुद्धरूपसे उपस्थित था; मैंने परोपकार विचार कर बडे परिश्रमसे इसको शुद्धतापूर्वक भाषानुवादविभूषित करके श्रीयुत सेठ. खेमराज श्रीकृष्णदासजीको छापनेके लिये इस करणसे समर्पण कर दिया कि, संसारमें ग्रंथकर्त्ताका नाम यश विख्यात होकर उनका परिश्रम सफल हो और षडंग वेदका नेत्रभूत ज्योतिश्शास्त्रान्तर्गत प्रश्न-ग्रन्थ ही तात्कालिक अद्‌भुत फल कहनेमें प्रधानतया सर्वोपरि विराजमान है, सो प्राचीन उत्तम उत्तम प्रश्नके बृहद् ग्रन्थ तो बहुधा पण्डितोंने अभीतक छिपा रखे हैं और जो कुछ छोटे प्रश्नग्रन्थ, जैसे षट्-पञ्चाशिका, प्रश्नप्रदीप, भुवनदीपक, प्रश्नभैरव, प्रश्नसिन्धु आदि प्रकट-रूपसे प्रचलित हैं उनके द्वारा प्रश्नका फल यथावत् वर्णन नहीं हो सकनेसे प्रश्नकर्त्ता और प्रश्नफलवक्ता दोनोंका चित्त प्रसन्न नहीं होता इसी कठिनताके दूर करनेसे लिये इस अलौकिक ग्रंथका प्रकाशित करना उचित समझकर उपर्युक्त बंबईवास्तव्य सेठजीको छापनेका हक्क भी पूर्णरूपसे दे दिया गया है। मैं निष्कपटतापूर्वक कहता हूँ कि, विद्वान् ज्योति-षियोंको इसी अकेले ग्रंथके पास रखनेसे अन्य प्रश्नग्रंथकी आवश्यकता न रहेगी, क्योंकि ग्रन्थकर्त्ता महाशयने अपने विचारसे प्रश्नकी कोई बात

शेष नहीं छोडी है, प्राचीन महर्षिप्रणीत नाना प्रश्नग्रंथोंका साररूप यह ग्रंथ निर्माण किया है और इसका नाम प्रश्नशिरोमणि चरितार्थ ही रखा है। अब मैं अंतमें समस्त विद्वानोंसे प्रार्थना करता हूँ कि इसमें जहां कहीं त्रुटि, अशुद्धि हो उसको कृपया सुधारकर क्षमा करेंगे।

सर्वविद्वज्जनानुरागी–

पं०–रामदयालुशर्मा,
ग्राम ढाडौली, पोस्ट आफिस बहजोई
जि० मुरादाबाद

श्रीः

अथ प्रश्नशिरोमणिस्थविषयानुक्रमणिका

इति प्रश्नशिरोमणि विषयानुक्रमणिका समाप्ता

श्रीगणेशाय नमः

प्रश्नशिरोमणिः

हिन्दीटीकासहितः

★

मंगलाचरणम्

प्रणम्य भक्त्याच्युतविच्युतापदं सदा सदानन्दपदं शिवापदम् ।
त्रिपाठिवाल्मीकजरुद्रपण्डितस्तनोति सत्प्रश्नशिरोमणिं मणिम् ।। १ ।।

जगत्प्रबोधप्रदभास्करं प्रभुं सुरासुरैः सेवितपादपंकजम् ।
प्रकाशकं विश्वगुरुं गुणाकरं प्रणम्य भक्त्याऽखिलकर्मसिद्धिदम् ।। १ ।।
भाषानुवादं सरलं सुबोधं कुर्वे च सत्प्रश्नशिरोमणेर्वै ।
श्रीपण्डितो रामदयालुशर्मा ढाडौलिवास्तव्य इति प्रसिद्धः ।। २ ।।

अच्युत (विष्णु) भगवान्ने दूर की हैं आपदा जिन्हों करके अर्थात् विष्णुने जिन चरणोंके अवलम्बसे नाना प्रकारकी आपत्तियां हटायी हैं ऐसे श्रीमती पार्वतीजीके चरण, जो कि सदा, सत् अखण्ड आनन्दके स्थान हैं, उनको भक्ति से प्रणाम करके वाल्मीकवंशोद्भूत त्रिपाठी रुद्रमणिपण्डित सत्प्रश्नशिरोमणिरूप मणि (रत्न) का विस्तार करते हैं ।। १ ।।

अथ संक्षेपाध्यायः

वपुषि रूपवयोगुणजातिसाहससुखच्युतिलक्ष्म विचिन्तयेत् ।।
कनकरत्नधनक्रयक्रयविप्रचयकोशकथाश्च धने तथा ।। २ ।।

शरीरका रूप, अवस्था, गुण, जाति, साहस, सुखच्युति (सुखकी हानि) और शरीरके चिन्ह ये सब प्रथम घरमें चिन्तन करे। सुवर्ण ,रत्न, धन खरीदना, बेचना इकट्ठा करना, खजाना इन सबका विचार दूसरे घरमें करना ।। २ ।।

यदुपजीविपराक्रमकिङ्करोद्यमसहोत्थमतं त्रितये तथा ।।
पुरगृहेशचतुष्पदवाटिकाविवरवेशधरौषधमम्बिकाम् ।। ३ ।।

अपने सहारेसे आजीविका करनेवाले नौकरोंका, पराक्रमका, सेवकोंका उद्यम, भाई, बहिनका विचार, तीसरे घरमें करना । ग्राम, मकान, स्वामी, चौपाये, फुलवाडी, बिलमें घुसना वा सुरंग लगाना, गृहप्रवेश, जमीन, औषध, माता ।। ३ ।।

सदनमागतमेव च वप्रकं सुहृदि वृद्धिखलौ च विचिन्तयेत् ।।
मतिविबन्धनयात्मजदोहदाध्ययनमंत्रकलाः सुतभे तथा ।। ४ ।।

घर आया हुआ जन, मेंढाकोट, वृद्धि, धान्य कूटने गाहनेका स्थान इन सबका विचार चतुर्थ घरमें करे। बुद्धि, प्रबन्ध (नवीन शास्त्रोंकी कथा अथवा बन्दोवस्त) नीति, पुत्र, गर्भ. विद्या, पढना, मन्त्र, चौसठ कला इन सबका विचार पांचवें घरमें करना ॥ ४ ॥

महिषरुग्रिपुदाहनमातुलोष्ट्रभयंशकितगा रिपुभे तथा ॥
शयनवादगमागमविक्रयक्रयवधूर्विनिवृत्तिरताः स्त्रियाम् ॥ ५ ॥

भैंस, भैंसे, रोग, वैरी, जलाना आदि कर्म, मामा, ऊंट, भय, शका इन सबका विचार छटे घरमें करना। शयन, वाविवाद (झगडा) ,जाना, आना, खरीदना, बेचना, वधू (स्त्री), लौटना, रति इन सबका चिन्तन सातवें घरमें करना ॥ ५ ॥

विषमदुर्गनदीतरणाध्वशस्त्रगतदष्टमृताश्च रणक्रियाम् ॥
सहजवैरिवधूरिपुबादरन्ध्रमुखरादि मृतौ परिचिन्तयेत् ॥ ६ ॥

विषम दुर्ग (ऊँच , नीचा) अथवा जलस्थल आदिसे दुष्प्रवेश किलेका तोडना, कलह करना, नदीमें तैरना, मार्गकी कुशलता, शस्त्रसे घायल, कुत्ते, सर्पादिसे काटा हुआ, मृतक, युद्ध करना, भाईका शत्रु, वधू, वैरि, * वाद अथवा वाद्य, छिद्र, (शाकिनी-डाकिनीकृत दोष) मुखर (वाचाल, वकवादी), मृत्यु इन सबका विचार आठवें घरमें करना ॥ ६ ॥।

सुकृतभाग्यशीलतटाककूपसुरतीर्थगतीर्गुरुदेवरौ ॥
श्वशुरजं सहजं श्वशुरं तथा नवमभेऽप्यभिषेकमथोऽङ्कभात् ॥ ७ ॥

धर्म, भाग्य, सुन्दर, शील, तटाक, कूप, देवयात्रा, तीर्थयात्रा, गुरु देवर, साला, भाई, श्वशुर, राज्याभिपेक इन सबका चितन नवम घरमें करना चाहिये ॥ ४७ ।'

गगनवृत्तनृपास्पदमुद्रिकाजनकवृष्टिमनस्विनृपान् खभे ॥
कनकसस्यनृयानगजाम्बराश्वमणिलाभकचश्वशुरान् भवे ॥
व्ययगृहे व्ययदण्डिविबन्धहानिपशुदानपितृव्यकमातुलीः ॥ ८ ॥

आकाशका, वृत्तान्त, राजगद्दी, राजमुद्रा (राजाकी मुहर छाप अथवा रुपया ढालना आदि) पिता, वृष्टि, शूरवीर, राजा इनका विचार दशवें घरमें करना। सुवर्ण, धान्य नृयान, (पालकी), हाथी, वस्त्र, घोडा; मणि इनका लाभ, वाल, श्वसुर इन सबका विचार ग्यारहवें घरमें करना। खर्च, दंड, बंधन, हानि, पशु, दान, पिताका भाई चाचा, आदि, मामी इन सबका विचार बारहवें घरमें करना चाहिये ॥ ८ ॥

---

* वाद्य इति पाठः। अर्थ—बाजेके भले बुरे होनेका विचार।

यदि वपुःकृतिपौ गृहसंगतौ त्रिलवमेकमितौ कृतिसिद्धिदौ ॥ ९ ॥

यदि लग्नेश और कार्येश लग्नमें स्थित हों एक योग, अथवा कार्यगृहमें स्थित हों दूसरा योग, अथवा एक द्रेष्काण में स्थित हों तीसरा योग तो कार्यकी सिद्धि करते हैं ॥ ९ ॥

तनुपस्तनुकार्यकार्यनाथान् कृतिपः कार्यवपुर्वपुःपतींश्च ॥
सुविधुस्तनुकार्यपौ च पश्येद्यदि नूनं सकलार्थ कार्यसिद्धिः ॥ १० ॥

लग्नेश यदि लग्न, कार्य कार्येशको और कार्येश यदि कार्य, लग्न, लग्नेशको देखता हो तो कार्य सिद्ध होता है, एवं पापग्रहरहित पूर्ण चंद्रमा लग्नेश, कार्येशको देखता हो तो निश्चय ही सब प्रयोजन और कामोंकी सिद्धि होती है ॥ १० ॥

तनुकार्यपचंद्रतः कंबूलं यदि सर्वार्थकरं ततश्च दृष्टिः ॥
मिथ इष्टफलार्द्धदं यदेष्टं निजनाथोक्षितमुग्रदृष्टिहीनम् ॥ ११ ॥

यदि लग्नेश कार्येशका चंद्रमाके साथ कंबूल योग होवे तो सब काम सिद्ध करता है और जो परस्पर दृष्टि हो अथवा अपने स्वामीकरके देखा गया हो, पापग्रहकी दृष्टिरहित हो तो इष्ट कार्य सिद्ध होता है ॥ ११ ॥

सचतुःशुभदृक्समग्रसिद्धिर्यदि तद्द्वित्रिशुभस्वनाथदृष्टम् ॥
स्वपदोनफलप्रदं यदेष्टं सशुभस्वेशदृशार्द्धसत्फलं स्यात् ॥ १२ ॥

यदि लग्न वा कार्यपर चार शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो समग्र कार्य सिद्ध होता है, अथवा दो तीन शुभ ग्रह तथा निज नाथसे दृष्ट हो तो पादोन कार्य सिद्ध होता है और कार्यको यदि एक शुभ ग्रह अथवा जिन स्वामी देखता हो तो आधा कार्य सिद्ध होता है ॥ १२ ॥

यदि सौम्ययुगिष्टमंगनाथे क्षणवत्पादफलप्रदं प्रदिष्टम् ॥
प्रबलावुदितौ च लग्नकार्याधिपती तत्फलदौ न चास्तनष्टौ ॥ १३ ॥

लग्न कार्य यदि शुभ ग्रहसे युक्त हो और लग्नेशसे दृष्ट हो तो चौथाई कार्य सिद्ध होता है, यदि लग्नेश कार्येश बलवान् होकर उदयको प्राप्त हों और अस्त, विनष्ट (क्रूराक्रान्त) न हों तो कार्यकी सिद्धि देते हैं ॥ १३ ॥

युगपद्बहुप्रश्ने विचारः

प्रथमे तनुभं द्वितीय इन्दोस्तरणेर्भे त्रितयं गुरोश्चतुर्थे ॥
अनुयोगगते वदेच्च नीचास्तगताद्वक्रविवर्जिताद्गुरोर्नो ॥ १४ ॥

प्रथम प्रश्नमें लग्नसे, द्वितीयमें चंद्रमासे तृतीयमें सूर्यसे, चतुर्थमें बृहस्पतिसे विचार करना चाहिये, परन्तु यदि बृहस्पति अस्त अथवा नीच और वक्र ग्रहसे वर्जित न हो। भावार्थ यह है कि चतुर्थ प्रश्नमें बृहस्पतिस्थ भावको लग्न मानकर प्रश्न बताना चाहिये, यदि बृहस्पति नीच वा अस्तका हो तो जहां कहीं वक्र ग्रह हो उसके भावको

लग्न मानकर, यदि बृहस्पति ही वक्री हो तो उसके ही भावको लग्न मानकर प्रश्न बताना चाहिये, उस समय अस्तत्व नीचत्वपर ध्यान नहीं देना चाहिये ।। १४ ।।

भृगुभौमविदां च पंचमे भं सबलस्यैव न चान्यखेचरस्य ।।
अथ कायचतुर्मदांबरस्वैः क्रमतो वात्र वदेत्तनुं मनीषी ।। १५ ।।

पंचम प्रश्नमें शुक्र, मंगल, बुध इन तीन ग्रहोंमें जो अधिक बलवान् हो उसके भावको लग्न मानकर और षष्ठ प्रश्नमें उस पूर्वोक्त अधिक बलवान ग्रहसे कुछ न्यून बली ग्रहके भावको लग्न मानकर और सप्तम प्रश्नमें इस पूर्वोक्त न्यून बली ग्रहसे भी जो हीनबली ग्रह है, उसके भावको लग्न मानकर पृच्छकका प्रयोजन बताना चाहिये, भावार्थ इस प्रकार समझना चाहिये कि शुक्र, मंगल बुध इन तीनोंमें सबसे अधिक बली शुक्र, इससे कुछ न्यून बली मंगल और मंगलसेभी हीनबली बुध है तो पांचवें प्रश्नमें शुक्रयुक्त भावको लग्न मानकर पृच्छकका प्रयोजन बताना और छठे प्रश्नमें मंगलयुक्त भावको तथा सातवें प्रश्नमें बुधयुक्त भावको मानकर प्रश्नभाव वर्णन करना और अन्य ग्रहके भावको लग्न मानकर पञ्चमादि प्रश्नोंका नहीं कहना, इसके बाद लग्न चौथा, सातवां, दसवां, दूसरा इन भावोंको लग्न मानकर क्रमसे पांच प्रश्न बुद्धिमान् पंडित कहे ।। १५ ।।

इदानीं किं लग्नमिति प्रश्ने विचारः

प्रश्नाद्यक्षरवर्गेशो लग्नेशस्तत्समाक्षरैः ।।
समं लग्नं च विषमैस्तैरेवं विषमं वदेत् ।। १६ ।।

प्रश्नके आद्य अक्षरका जो वर्गेश और लग्नेश इन दोनोंके अक्षरोंकी सम संख्या हो तो सम और विषमसंख्या हो तो विषम लग्न कहे ।। १६ ।।

प्रारम्भे सर्वकार्याणां गणयेल्लग्नभावधि ।।
सूर्यभादेः क्रमात्संपद्विपच्चेति फलं वदेत् ।। १७ ।।

सब कार्योंके प्रारम्भमें सूर्यकी राशिसे लग्नकी राशितक गिनकर क्रमसे संपत् तथा विपत् फल कहे ।। १७ ।।

अथ सामान्यप्रश्ने विचारः

पृच्छकस्तनुपतिः कृतिनाथः प्रश्नपः खलु तयोः क्रमशश्च ।।
जातिरूपगुणवर्णवयांसि प्रोच्चरेत्तदनु तत्फलमिष्टम् ।। १८ ।।

पूछनेवाला लग्नेश है और प्रश्नका पति कार्येश है; क्रमसे उन दोनोंकी जाति, रूप, गुण, वर्ण और अवस्था वर्णन करे, तत्पश्चात् उसका इष्ट फल बतावे ।। १८ ।।

तनुकार्यपती स्वभावयातौ यदि वा कार्यपतिस्तनौ च लग्नेट् ।।
कृतिभावगतोऽथवांगकार्याधिपतिलग्नगतौ हि वाक्कृतिस्थौ ।। १९ ।।

लग्नेश, कार्येश अपने भावमें स्थित हों अथवा कार्येश लग्नमें हो, लग्नेश कार्यभावमें हो अथवा लग्नेश कार्येश लग्नमें हों वा यदि कार्यभावमें हों तो वांछित कार्यकी सिद्धि होती है ।। १९ ।।

यदि वाञ्छितसिद्धिरत्र योगे विधुदृष्टिः खचरद्वयेऽतिसाध्वी ।।
यदि नेंदुनिरीक्षणं हि सौम्यग्रहदृष्टिस्तदिहान्यकार्यसिद्धिः ।। २० ।।

यदि इन्हीं योगोंमें (खचरद्वये) दोनों ग्रह कार्येश लग्नेशपर चंद्रमाकी दृष्टि हो तो बहुत अच्छी कार्यकी सिद्धि होती है, यदि चन्द्रमा नहीं देखता हो और अन्य किसी शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो किसी अन्य कार्यकी सिद्धि होगी, इष्ट कार्यकी नहीं ऐसा कहे ।। २० ।।

प्रष्टा कीदृश इति प्रश्ने विचारः

तनौ विधौ कंटकगेऽर्कसूनौ बुधेऽर्कलुप्ते च कुजेन्दुजाभ्याम् ।।
समेक्षणेनेक्षितशीतभानौ प्रष्टा भवेद्वै कुटिलस्तदानीम् ।। २१ ।।

लग्नमें चंद्रमा, केन्द्र (१।४।७।१०) में शनि हो, बुध अस्तका हो, चन्द्रमाको मंगल, बुध पूर्ण दृष्टिसे देखते हों, पूछनेवाला कुटिल है इस प्रकार उस समय कहे ।। २१ ।।

लग्नेशुभेस्या त्सरलोऽन्यथा नहि यदींदुजीवौ हितदृष्टिवीक्षकौ ।।
तनुस्त्रियोः स्यात्सरलो यदाऽस्तपे हिमेज्ययोरेकतमस्य वैरिदृक् ।।
तदास्ति वक्रो यदि चंद्रगीष्पती किलैकभस्थौ सरलो नरो भवेत् ।। २२ ।।

लग्नमें शुभ ग्रह हो तो सरल है, अन्यथा सरल नहीं है । यदि चंद्रमा बृहस्पति लग्न, सप्तम स्थानको मित्रदृष्टिसे देखते हों तो प्रष्टा सरल है और जो उस काल सप्तमेशपर चन्द्रमा बृहस्पतिमेंसे किसी एककी वैरिदृष्टि हो तो वक्र है । यदि चन्द्रमा बृहस्पति एक राशिपर स्थित हों तो सरल है ।। २२ ।।

भूतं भवद्भविष्यं सौख्यं न वेति प्रश्ने विचारः

तदित्थसाले तनुपेऽस्ति सौख्यं भविष्यति स्यात्परथात्र कष्टम् ।। २३ ।।

यदि उन दोनों चन्द्रमा बृहस्पतिका इत्थसालयोग सप्तमेशके साथ हो तो वर्तमानसमय सौख्य है, आगे भी होगा और अन्य प्रकारसे हो तो इस समय कष्ट है और आगे भी होगा ।। २३ ।।

तनुकार्यपमुत्थशिलावसरस्य दिने कृतिपस्तनुभेत्युदितः ।।
तनुकार्यपती परिपश्यति चेत्कृतिसिद्धिरिहैव दिने नियता ।। २४ ।।

लग्नेश कार्येशका इत्थशाल जिस दिन हो और कार्येश उदय होकर लग्नमें प्राप्त हो तथा कार्येश और लग्नेश परस्पर देखते हों तो उसी दिन नियत कार्यकी सिद्धि होती है ।। २४ ।।

अथ स्थिरादिफलम्

लग्नेंदुस्थिरभे मृतं न निहतं बद्धो न नैवागतो
न स्थानाच्चलितो न वै रिपुभयं नो रोगशांतिश्च नो ।।
कष्टं केवलमेव च स्थिरतरं कर्मादि तत्तच्चरे
वैलोम्यद्द्वितनौ विमिश्रितफलं सद्वीक्षितं चेच्छुभम् ।। २५ ।।

लग्न चन्द्रमाकी स्थिर राशि होतो न मारा, न बँधा, न आया, न स्थानसे चला, न शत्रुका भय, न रोगशांति, न कष्ट है, केवल अच्छी तरह ठहरा हुआ है। लग्न चंद्रकी स्थिर राशि होनेपर तत्तत् स्थिर कर्मादिभी सिद्ध होते हैं और लग्न चन्द्रकी चर राशि होनेसे विलोम जानना अर्थात् प्रवासी आदि चल पडा, तथा सब चर कार्य सिद्ध होते हैं और चन्द्रमा लग्नकी द्विस्वभाव राशि हो तो मिला जुला फल कहना और जो शुभ ग्रह देखते हों तो शुभ फल बताना चाहिये ।। २५ ।।

पापैर्दृष्टमसत्फलं यदि शुभाः केंद्रत्रिकोणायगाः ।।
संसिद्ध्यैव खलास्त्रिगाः शुभकरास्ते केवलं कीर्त्तिताः ।। २६ ।।

इति श्रीत्रिपाठिरुद्रधरकल्पिते प्रश्नशिरोमणी संक्षेपाध्यायः ।। १ ।।

यदि पात ग्रह देखते हों तो अशुभ फल होता है और यदि शुभ ग्रह केंद्र (१।४।७।१०) त्रिकोण (९।५) में हों तो सिद्धि करते हैं और पाप ग्रह केवल तीन स्थानों (३।६।११) में हों तो शुभकारक कहे हैं ।। २६ ।।

इति श्रीमत्पण्डितवेर्णीरामात्मजपंडितरामदयालुकृतप्रश्नशिरोमणिभाषा-
टीकायां संक्षेपध्यायः समाप्तः ।। १ ।।

धनलाभप्रश्ने विचारः

धनपतिर्विधुना तनुपेन वा स्वभवनोच्चगतः शुभवीक्षितः ।।
द्रुततरं धनदो यदि वित्तलग्नपहिमा नवपञ्चधनाङ्गगाः ।। १ ।।

धनेश यदि चंद्रमा अथवा लग्नेशके साथ अपने स्थानमें वा उच्चका हो और शुभ ग्रह उसको देखते हों तो बहुत शीघ्र धन देता है, यदि धनेश लग्नेश और चंद्रमा नवम, पंचम, द्वितीय और लग्नमें स्थित होकर ।। १ ।।

प्रचलिता मिथ ईक्षितसंयुता बहुधनाय यदा बलिनः शुभाः ।।
तनयकण्टकपुण्यधनोपगाः सपदि लाभकरा न खलोपगाः ।। २ ।।

आपसमें एक साथ प्रचलित हों अथवा आपसमें देखते हों तो या युक्त हों तो बहुतसे धनको देते हैं और बलवान शुभ ग्रह पंचम केंद्र नवम द्वितीय स्थानोंमें स्थित हों तो शीघ्र ही धनलाभ करते, हैं, परन्तु पापग्रहके साथ न हों ।। २ ।।

तनौ शुभः सुतगैः स्वतुंगखेटैर्भवगृहगोच्चभृगौ पुरादिलाभः ।।
स्वगृहे तनु पतिस्तनौ स्वपत्या परिदृष्टो नृपतेःस्वलाभदश्चेत् ।। ३ ।।

लग्नमें शुभ ग्रह हो और पंचममें उच्चके ग्रह हों, ग्यारहवें भावमें उच्चका शुक्र हो तो पुर, मकान आदिका लाभ करते हैं। लग्नेश अपने ग्रहका होकर लग्नसे अपने स्वामीसे दृष्ट हो तो राजासे धनकी प्राप्ति कराता है ।। ३ ।।

इह सौम्यदृशा विपापदृष्टाः शुभयुक् चेद्द्रव्यपस्तनौ सुखांगेट् ।।
धनदो यदि लग्नपस्तनौ ग्लौर्भवगौ लाभयुक् सुखार्थलाभः ।। ४ ।।

यदि लग्नमें धनेश, चतुर्थेश शुभग्रहयुक्त होकर शुभ ग्रहोंसे दृष्ट पाप ग्रहोंसे अदृष्ट हों तो धनको देते हैं। यदि लग्नेश लग्नमें और चंद्रमा लाभेशयुक्त ग्यारहवें हों तो सुखपूर्वक धनकां लाभ करते हैं ।। ४ ।।

लग्नेशवित्ताधिपयोश्च नक्तयोगेऽन्यमर्त्याद्धनमेति पृच्छकः ।।
वित्तं च विन्देद्यमयाख्ययोगे द्वयोश्च पापार्दितयोर्न वित्तम् ।। ५ ।।

लग्नेश और धनेशका नक्तयोग होवे तो पूछनेवाला धन पाता है तथा यमया-योग होनेपर भी द्रव्यका लाभ होता है। यदि लग्नेश धनेश पाप ग्रहोंसे पीडित हों तो धनका लाभ नहीं होता ।। ५ ।।

स्वभोच्चचंद्र सकलो विहीनः पापैर्दृशा पार्श्वगतः शुभैश्च ।।
युतेक्षितो भूमिगृहार्थदः स्याद्यदा सितेज्येंदुभवा हि कश्चित् ।। ६ ।।

पूर्ण चंद्रमा पुष्ट होकर अपनी उच्च राशिका हो, पापग्रहोंकी दृष्टिसे रहित, शुभ ग्रहोंके साथ हो अथवा उनसे दृष्ट हो तो पृथ्वी, मकान, धनको, देता है और जो शुक्र बृहस्पति, बुध इनमेंसे कोई ।। ६ ।।

तनुत्रिकोणार्थगतोंबरे वा स्वभोच्चगः शीघ्र मवाप्तिदः स्यात् ।।
बली स्वभोच्चे सुतनुः सुरेज्यः शुक्रो बुधो वायगचंद्रदृष्टः ।। ७ ।।

लग्न, नवम, पंचम, द्वितीयमें हो अथवा चतुर्थमें उच्चका हो तो शीघ्र ही धनका लाभ करता है। बृहस्पति वा शुक्र वा बुध बली, पुष्ट होकर एकादशस्थ चन्द्रमासे दृष्ट हो तो ।। ७ ।।

बह्वर्थलाभो यदि पूर्णवीर्याः केंद्रेषु सौम्या द्रुतमर्थदाः स्युः ।।
केंद्रत्रिकोणायगताश्च पापा विनाधिकारं धनहानिदाः स्युः ।। ८ ।।

वहुत द्रव्यलाभ होता है। यदि पूर्ण शुभ ग्रह केंद्रोंमें हो तो शीघ्र ही धन देते हैं केंद्र। (१।४।७।१०) त्रिकोण (९।५) आय (११) मे पाप ग्रह हों तो विना अधिकारके धनकी हानि करते हैं ।। ८ ।।

शुभदृष्टियुतं नवमं प्रबलं निजनाथदृशालभर्चिततदम् ।।
धनयोगमुपेत्य वपुः पतिना कृतमुत्थशिलः शुभदृष्टियुतः ।। ९ ।।

नवम भाव शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो और निज नाथसेभी दृष्ट हो तो चिंतित वस्तुका लाभ देता है और यदि शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त लाभेश धनस्थानमें युक्त होकर लग्नेशके साथ इत्थसाल करता हो तो ।। ९ ।।

सकलाप्तिकरो यदि लाभपतिर्भवगोंऽगममुत्थशिली नृपतेः ।।
धनमानहयांबरदः सुहृदः सुखकृच्च विनष्टधनानुगदः ।। १० ।।

सब प्रकारकी प्राप्ति करता है और यदि लाभेश लाभभावमें स्थित होकर लग्नेशके साथ इत्थसालयोगवाला हो, तो राजासे धन मान, घोडेकी, सवारी, वस्त्र और मित्रोंसे सुख तथा विनष्ट धन, सेवक आदिका लाभ देता है ।। १० ।।

यस्मिन् भावेंऽगस्वनाथे सालःऽदृष्टस्तद्वा ततोऽर्थस्य लाभः
मृत्यौ युद्धादाहवाद्बंधनाद्वालाभे मित्रात्स्याद्व्ययाद्द्वादशे च ।। ११ ।।

शुभ ग्रहोंसे दृष्ट लाभेश जिस किसी भावमें स्थिर होकर लग्नेश धनेशके साथ इत्थसाल करता हो तो उसी भाववाले मनुष्योंसे धनका लाभ होता है, जैसे माता, पिता, भाई, स्त्री आदिके भावमें हो तो उन्हींके द्वारा लाभ कहना और जो आठवें भावमें हो तो युद्ध, झगडा, बंधनसे और ग्यारहवें भावमें हो तो मित्रसे और बारहवें भावमें हो तो खर्च करनेसे द्रव्यलाभ होता है ।। ११ ।।

अथ सततिप्रश्ने विचारः

त्रिकोणकेन्द्रगो गुरुस्तदाशु संततिप्रदो यदा सितः सुतेशयुक्
तनौ भवेऽथवा सुते ।। प्रजाप्रदो यदा चलस्तनौ गुरुः सुखार्थगः
सदन्वितैश्च कंटकैर्विलंबतो हि संततिः ।। १ ।।

यदि बृहस्पति नवम पंचममें हो तो शीघ्र ही अच्छी संतान देते हैं। यदि पंचमेशयुक्त शुक्र लग्नमें, ग्यारहवें, पांचवें हो तो संतान देते हैं और जो पाप ग्रह लग्नमें, बृहस्पति चौथे, दूसरे स्थानमें हों केंद्रोंमें शुभ ग्रह हों तो विलम्बसे संतान होती है ।। १

यदा तनोर्विधोस्तु वा सुतेऽलिगो हरिस्त्रियोऽल्पसंततिर्यदा
सुतः खलैर्युतोऽथवेक्षितः ।। स्वभाष्टगौ यमोष्णगू स्त्रियं च
वन्ध्यिकां वदेद्यदेंदुचन्द्रजौ मृतौ सदोषकाकवंध्यिकाम् ।। २ ।।

यदि लग्नेश वा चन्द्रमासे पांचवें घरमें वृश्चिक, वृष, सिंह, कन्या राशि हो तो थोडी संतान होती है और यदि पांचवां घर पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो और शनि सूर्य अपनी राशिके आठवें घरमें हों तो स्त्रीको वंध्या कहे और यदि चन्द्र ,बुध आठवें स्थानमें हों तो दोषसहित काकवंध्या कहे ।।। २ ।।

यदेज्यभार्गवौ मृतौ मृतप्रजां यदा कुजो हि दोहदश्रुतिप्रसुं
यदाष्टगोऽष्टपो बलिः ।। विपुष्पिणीं यदा खला धनान्त्यमृत्युसंस्थिताः
पुरोद्भवप्रजाक्षयस्ततः परं न संततिः ।। ३ ।।

यदि वृहस्पति शुक्र, अष्टम भावमें हों तो स्त्रीकी संतान होकर मर जाती है और मंगल हो तो स्त्रीका गर्भस्राव हो जाता है और यदि बलवान् अष्टमेश अष्टममें हो तो त्रिगुणिणी अर्थात् स्त्रीके रजोधर्म नहीं होता है और जो पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश, अष्टम स्थानमें स्थित हों तो प्रथम हुई संतानकी हानि फिर संतान नहीं होती है ।। ३ ।।

सुतपतिनिजनाथनिरीक्षितः सशुभदृष्टयुतः सदपत्यदः ।।
द्वितनुगा विधुसौम्यसिताः पुरा ददति संततिमेव यदा त्विमे ।। ४ ।।

पञ्चमेश यदि अपने स्वामीसे दृष्ट वा शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो अच्छी सन्तान देता है और यदि चन्द्रमा, बुध, शुक्र द्विस्वभाव राशिपर हों तो प्रथम हुई सन्तान को ही देते हैं और जो ये ।। ४ ।।

धनुषिगा न कदाप्यथ पञ्चमेक्षकनृनार्यभिधप्रमितैः क्रमात् ।।
सुतसुताश्चभवन्ति सतां दृशो द्विगुणदास्त्वसतां परथाऽफलाः ।। ५ ।।

धनुराशिपर स्थित हों तो कदापि संतान नहीं होती । पंचम स्थानपर जितने पुरुष ग्रहोंकी दृष्टि हो उतने पुत्र और जितने स्त्रीग्रहोंकी दृष्टि हो उतनी कन्या होती है । यदि शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो दुगुनी संतान कहे और अशुभ ग्रहोंकी हो तो उतनी सन्तानकी हानि अथवा निष्फल कहे ।। ५ ।।

उभयथा यदि मिश्रफलप्रदा यदि सुते गुरुभं सुतसौख्यहृत् ।।
सुतगृहांकसमापि च संततिर्भवति वाथ नवांशसमापि वा ।। ६ ।।

यदि शुभ अशुभ दोनों प्रकारके ग्रहोंकी दृष्टि हो तो मिश्र फलकी देनेवाली है अर्थात् संतानकी हानि और प्राप्ति दोनों फल होते हैं । यदि पञ्चम स्थानमें बृहस्पतिकी राशि हो तो पुत्रसुखकी हानि होती है । पञ्चम भावके अंककी अथवा नवांशके समान संतानसंख्या बतलावे ।। ६ ।।

सितलवे च युते सितवीक्षिते बहुलसंततिरेवमपीन्दुतः ।।
सुतपनंदलवोन्मितसंततिर्भवति दास्युदराच्च धृतोदरात् ।। ७ ।।

यदि पञ्चम भावमें शुक्रका नवांश शुक्रसे दृष्ट हो तो दासी वा धरी हुई स्त्रीके उदरसे बहुतसी संतानकी प्राप्ति होती है, इसी प्रकार चंद्रमासे जनाना अर्थात् चंद्रमाका नवांश पञ्चममें चंद्रमासे दृष्ट हो तो भी उक्त स्त्रीसे बहुत संतानकी प्राप्ति हो, अथवा सुतेशके नवांशके सामान सन्तानसंख्या होती है ।। ७ ।।

यदि सुते शनिभं विधुवीक्षितं सशनिलब्धसुतो विधुवद्बुधात् ।।
शनिगणो यदि चेन्दुगणः सुते तरणिकाव्यदृशा च पुनर्भवः ।। ८ ।।

यदि पञ्चममें शनिकी राशि चन्द्रमासे दृष्ट अथवा युक्त हो तो (लब्धसुतः) किसी दूसरे मनुष्यका पुत्र गोद लिया जाता है, एवं चंद्रमासे तुल्य बुधसे भी चंद्रमाका वर्ग पञ्चम भावमें सूर्य शनिसे दृष्ट हो तो दूसरे विवाहकी पत्नीसे पुत्रलाभ होता है ।। ८ ।।

तनयदो यदि मंदगणः सुते सबुधदृक् विकुजार्कनिरीक्षतः ।।
भवति विप्रसुतोऽस्य तथा विदोऽपि च गणे रविजेन निरीक्षितः ।। ९ ।।

यदि पंचम स्थानमें शनिका वर्ग बुधसे दृष्ट और सूर्य मंगलसे अदृष्ट हो एवं पंचममें बुधका वर्ग शनिसे दृष्ट हो और मंगल बुधसे अदृष्ट हो तो उस मनुष्यको ब्राह्मणादिके पुत्रका लाभ होता है ।। ९ ।।

नवलवः सुतगश्च यदुन्मितैः खलखगैरवलोकितसंयुतः ।।
भवति तन्मितगर्भनिपातनं यदि शुभग्रहदृष्टिविवर्जितः ।। १० ।।

पञ्चम ग्रहका नवांश जितने पाप ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो तो उतने गर्भ गिर जाया करते हैं, परन्तु शुभ ग्रह न देखते हों तो ।। १० ।।

सुतलवेण्मृतिगश्च यदुन्मितग्रहयुतो हि तदुन्मितपुत्रहा ।।
यदि सुतेट्कुजराहुयुतोऽथवागुकुजमध्यगतः सुतनाशनः ।। ११ ।।

यदि सुतेश मङ्गल ग्रहके साथ अथवा इनके मध्यमें हो तो पुत्रोंका नाश होता है। यदि पञ्चमेश अष्टम घरमें जितने ग्रहोंके साथ हो तो उतने ही पुत्रोंकी हानि होती है ।। ११ ।।

प्रष्टुः किमायुः शिष्टं वा गतमिति प्रश्ने विचारः

यावल्लवैर्ल ग्नप एति चंद्रं तावत्समादायमितैर्हि शिष्टाः ।।
यावल्लवैरत्यजदिंदुमंगेट् तावत्समादायमितैर्गताः स्यु ।। १ ।।

लग्नेश जितने अंशोंसे चन्द्रमाको प्राप्त होता है उतने वर्ष आयुर्दायके बाकी रहे वतलावे। और लग्नेश जितने अंशोंसे चन्द्रमाको त्याग चुका है उतने वर्ष आयुर्दायके व्यतीत हो चुके हैं ऐसा कहे ।। १ ।।

अथार्कादिग्रहगुणादिवर्णनम्

अथार्कादिग्रहणां हि गुणवर्णविनिर्णयः ।।
आकारोऽपि शरीरस्य प्रोच्यते मुनिसंमितः ।। २ ।।

इसके बाद सूर्यादि ग्रहोंका गुण, वर्ण, शरीरका आकार जो कि मुनियोंने माना है उसका वर्णन करते हैं ।। २ ।।

चतुरशूरगभीरसुरूपकः प्रकृतिपैत्तिकवृत्ततनुर्नृपः ।।
मितकचोऽस्थ्यधिको मधुपिंगदृक् कटुतरः स्थविरः पुरुषो रविः ।। ३ ।।

चतुर, शूर, गम्भीर, सुंदर रूपवाला, पित्तप्रकृति, गोल शरीरवाला, थोडे बालोंवाला, हड्डीसार, मधु पिङ्गल नेत्रवाला, अतिकटु, वृद्ध, पुरुषजाति सूर्य है । ३ ।।

विमलधीः सुतनुमृदुवाग्धरो रुधिरसारसुनेत्रकफानिलः ।।
प्रकृतिकुंचितकेशधरो घृणी सुभगगौरपृथुः स्त्र्यधिपो विधुः ।। ४ ।।

निर्मल बुद्धि, सुन्दर शरीर, मृदु वाणी, रुधिरसार, सुन्दर नेत्र, कफवातप्रकृति, घुंघराले केशवाला, दयालु, सुन्दर गौरवर्ण, मोटे शरीरवाला, स्त्रियोंका अधिपति चन्द्रमा है ॥ ४ ॥

अरुणगौर उदारतमोगुणी कटुनरश्चपलः पशुपालकः ॥
तरुणपैत्तिकपिंगदृगुग्रधीर्गतदयो बहुगर्व इलासुतः ॥ ५ ॥

लाल, गौर, वर्ण, उदारचित्त, तमोगुणी, कटुस्वभाव, पुरुषः चपल, पशुपालक, युवा, पित्तप्रकृति, पिङ्गनेत्र, उग्रबुद्धिवाला, निर्दय, बहुत गर्ववाला मङ्गल है ॥ ५ ॥

करुणदृङमृदुवाक् त्रिमलाधिकस्त्वसितमध्यशिरालतनुः सुखी ॥
त्वचि सुपुष्टतरोऽतिकुतूहली बहुकलिश्चतुरोऽल्पतनुर्बुधः ॥ ६ ॥

दयालु, नेत्र, मृदु वाणी, वातपित्तकफप्रकृति, काली कमरवाला, नाडियोंसे व्याप्त शरीर, सुखी, अति पुष्टत्वचावाला, अति कुतूहल करनेवाला, बहुत कलह करनेवाला, चतुर, सूक्ष्म शरीरवाला ऐसा बुध है ॥ ६ ॥

रुचिरपर्वसुवर्णमहातनुर्बहुवसाकफिपिंगकचेक्षणः ॥
गुरुरथेभगतिः कफवातुलो जलदनीलरुचिर्बहुशुक्लः ॥ ७ ॥

सुन्दर पोरुए, सुन्दर वर्ण; महाशरीर, बहुत चर्बीवाला, कफप्रकृति, सुनहरी बाल और नेत्रोंवाला ऐसा बृहस्पति है, और हाथीकीसी चालवाला, कफ वात प्रकृति, नील मेघसा वर्ण, बहुवीर्य ॥ ७ ॥

कुवलयाक्षिकचो भृगुजोऽस्त्यथोमलिनकृष्णशिरालकृशो जटी ॥
परुषरोमकचः कपिलेक्षणः सपवनः खल उच्चनखः शनिः ॥ ८ ॥

कमलसे नेत्र, सुन्दर केशवाला शुक्र है । मलीन, काला शरीर, जटाधारी, कठोर रोम और बाल, कपिल नेत्र, वातप्रकृति, दुष्ट स्वभाव ऊंचे नखोंवाला शनि है ॥ ८ ॥

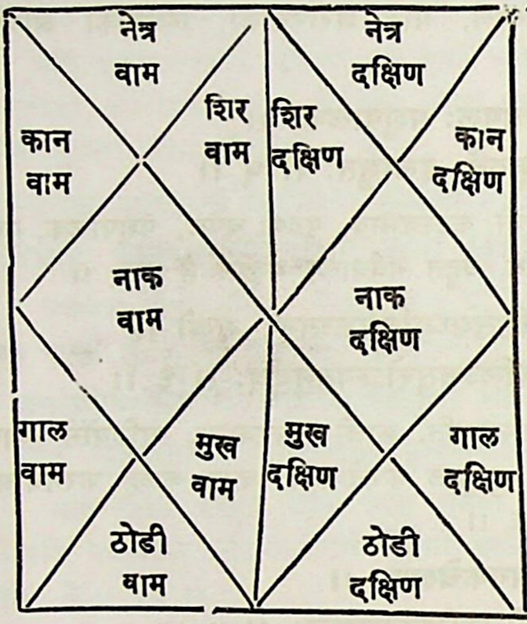
तनुनवांशपतेर्बलिनोऽथवा वपुरथेन्दुनवांशपतेः प्रभा ॥
भवति सत्त्वमिनेज्यहिमा रजो बुधभृगू तम आरशनी मतौ ॥ ९ ॥

लग्नका नवांशपति अथवा बलवान् ग्रहसे जीवके शरीरका वर्णन करे और चन्द्र नवांशपति ग्रहसे वर्ण (रंग) बतलावे, सूर्य, बृहस्पति, चन्द्रमा सत्त्वगुणी हैं, बुध शुक्र रजोगुणी हैं, मंगल शनि तमोगुणी हैं ॥ ९ ॥

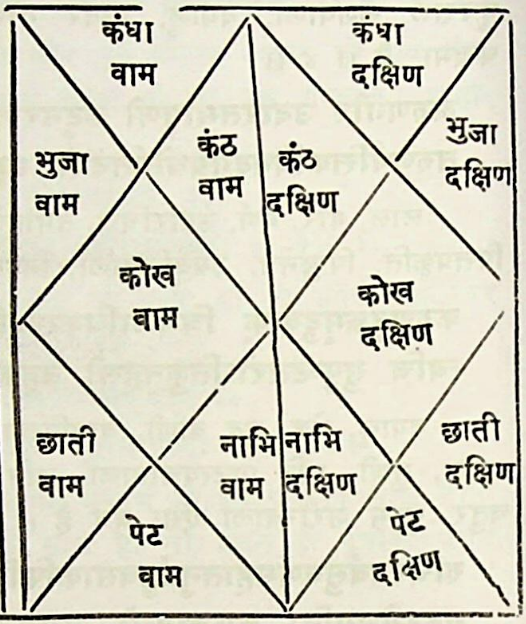
रविखराममितांशपतेर्गुणो यदिति जीवसितौ च तमोंऽगगौ ॥
अथ शिरोऽक्षिककर्णनसाकपोलहनुवक्त्रमिति त्रिलवादिमे ॥ १० ॥

सूर्यका त्रिंशांशपति ग्रहका जो गुण है सो जीवका गुण बतलावे और यदि बृहस्पति शुक्र लग्नमें हों तो तमोगुणी है ऐसा कहे । इसके अनन्तर शिर, नेत्र, कान, नाक, गाल, ठोडी, मुख ये प्रथम द्रेष्काणका अंग विभाग हैं ॥ १० ॥

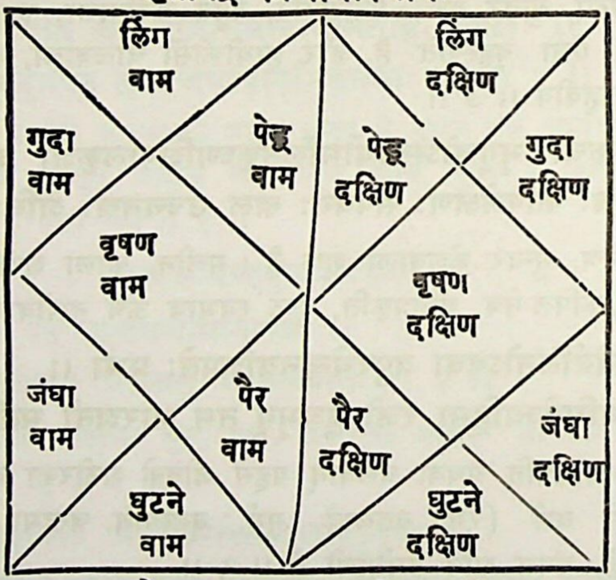
प्रथमद्रेष्काणांगविभाग



द्वितीयद्रेष्काणांगविभाग



तृतीयद्रेष्काणांगविभाग.



अथ गलांसभुजद्वयकुक्ष्युरोजठरनाभय आत्रिलवद्वये ।।
तदनु बस्तिरुदस्थगुदे तथा वृषण ऊरुकजानुपदः क्रमात् ।। ११ ।।

कण्ठ, कन्धा, दोनों भुजा, कोख, छाती, पेट, नाभि ये दूसरे द्रेष्काणका अंग-विभाग है । इसके वाद पेडू, लिंग, गुदा, वृषण, जंघा, घुटने, पैर य क्रमसे ।। ११ ।।

त्रिलवकत्रितयेऽथ तनोः पुरापरदलेऽङ्गमदक्षिणदक्षिणाम् ।।
इह खलैर्व्रणदृष्टयुतेक्षिते मशकपूर्वकलक्षणमादिशेत् ।। १२ ।।

तीसरे द्रेष्काणका अंगविभाजन है। लग्नके पूर्व और पर दलमें वाम तथा दाहिने अंग वर्णन किये गये हैं। जो अंग पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो मस्सा आदि चिह्न कहे ।। १२ ।।

स्वभलवस्थिरगे सहजोऽन्यथा त्रयगताश्च रवौ खलु काष्ठजः ।।
शशिनि शृंगिजलोत्थभवःकुजेनलविषायुधजःशनितोऽश्मजः ।। १३ ।।

अपने राशिनवांशमें अथवा स्थिर राशिमें शुभ ग्रह वा पाप ग्रह होवें तो स्वाभाविक जन्मसेही पूर्वोक्त चिह्न बतलावे और यदि अपने नवांशमें हों अथवा चर द्विस्वभाव राशिके हों तो अन्यथा कहे अर्थात् पश्चात् हो जाना चाहिये। यदि उन अंगराशियोंपर सूर्य हो तो काष्ठसे, चन्द्रमा हो तो शींगवाले अथवा जलचर जीवसे, मंगल हो तो अग्नि विष शस्त्रसे और शनि हो तो पत्थरसे ।। १३ ।।

पवनजश्च शुभैः शुभजोऽथयत्पदगतास्त्रिखलाश्चबुधान्विताः ।।
भनियमाद्व्रणचिह्नकरा यदा रिपुखलो व्रणकृत्स च दृष्टयुक् ।। १४ ।।

वा पवनसे उत्पन्न हुआ चिह्न कहे। शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो उसी अंगपर शुभ वस्तुका चिह्न बतलावे और बुध तीन पाप ग्रहोंसे साथ जिस अंगराशिपर हो उसी राशिके अनुसार अंगपर व्रणका चिह्न करता है । छठे स्थानमें स्थित पाप ग्रह व्रणचिह्नको उत्पन्न करते हैं और यदि वे ही पापग्रह शुभ ग्रहोंसे दृष्ट युक्त हों तो तिलका चिह्न बतलावे ।। १४ ।।

शुभखगैस्तिलकृच्च तथा वदेल्लघु भगेऽङ्गमणुत्वपरे परम् ।।
तनुपतिःस खलोष्टषडन्त्यगस्तनुसुखंन षडन्त्यमृतीट् स्वभे ।। १५ ।।

अपरे (कोई आचार्य) ऐसा कहते हैं कि, पाप ग्रह लघुसंज्ञक राशिपर हों तो अंग पर अणु (अत्यन्त सूक्ष्म) होता है। लग्नेश पाप ग्रहोंके साथ आठवें, छठे, बारहवें स्थानमें हो तो उस जीवके शरीरको सुख नहीं होता तथा छठे, बारहवें आठवें स्थानके अधिपति ग्रह अपनी राशिके हों ।। १५ ।।

तनुसुखं न यदा विबलोंऽगपो वपुषि पापखगे त्वधिरुग्यदा ।।
तनुपतिः स्वगृहे बुधजीवयुक् भृगुयुतश्च चतुष्टयगोऽथवा ।। १६ ।।

तोभी शरीरसुख नहीं होता है। जो लग्नेश निर्बल हो और पाप ग्रह लग्नमें हो तो अधिक रोगी रहता है और यदि लग्नेश बुध बृहस्पतिसे युक्त हो अथवा शुक्रके साथ अथवा केंद्रमें ।। १६ ।।

भवति तुंगगृहे शुभभेऽथवा हितदृशा सुखराज्ययशोऽर्थभाक् ।।
सुरुचिरःसुकृतीश्रुतसत्यवान्यदिविधुः क्रियभे कलशे शनिः ।। १७ ।।

अथवा उच्चका या शुभ ग्रहकी राशिका अथवा मित्र दृष्टिसे दृष्ट हो तो वह मनुष्य सुख, राज्य, धन, यशसे युक्त, सुन्दर शरीर, पुण्यवान् तथा, सत्यवान् होता है। यदि चंद्रमा मेषके, शनि कुंभके ।। १७ ।।

धनुषि भानुरदेवगुरुर्मृगे निजभुजार्जितवित्तयशास्तदा ।।
यदि समस्तचतुष्टयगाःखला धनगताश्च शुभाःकुलहृत्सुहृत् ।। १८ ।।

सूर्य धनुके, शुक्र मकरके हों तो अपनी भुजाओंसे धन और यशका इकट्ठा करनेवाला होता है। यदि चारों केन्द्रोंमें समस्त पापग्रह और दूसरे घरमें शुभ ग्रह होवें तो वह मनुष्य कुल तथा शुभ वस्तुओंका हरनेवाला होता है ।। १८ ।।

तनुगतो यदि वासुतगो गुरुर्दशविधुर्नृपतिः सुमतिर्दमी ।।
क्रियगतो भृगुजो यदि वांगना तुलगुरुश्च बुधःशुभवीक्षितः ।। १९ ।।
अलिगतः प्रभटश्चतुरः सुधीः कुलपतिर्मुदितः समुदारदः ।।
यदि रविर्मदने च मृतौ शनिः सुरगुरुश्च धने भृतको भवेत् ।। २० ।।

यदि बृहस्पति लग्न वा पञ्चममें चन्द्रमा दशममें होवे तो वह मनुष्य, राजा, सुबुद्धिमान् और जितेन्द्रिय होता है। शुक्र मेष के, कन्या वा तुलाके बृहस्पति, वृश्चिकके बुध शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवे तो वह मनुष्य पराक्रमी, शूरवीर, चतुर, बुद्धिमान् कुलपति, सदैव प्रसन्न रहनेवाला तथा उदारचित्त होता है। यदि सूर्य सप्तम, शनि अष्टम, बृहस्पति द्वितीयमें होवें तो नौकर होता है ।। १९ ।। २० ।।

रविविधू नवमे व्ययगे त्वगौ नृपसमीपचरः सततं भवेत् ।।
गुरुरवी मृतिभे रविजःखभे खशिखिवर्षमितौ च नृपार्थभाक् ।। २१ ।।

सूर्य चन्द्रमा नवम, राहु बारहवें हों तो हमेशा राजाके समीप रहनेवाला होता है। बृहस्पति सूर्य अष्टम, शनैश्चर दशम होवें तो ३० वर्षकी अवस्थाके राजाके धनका भागी अर्थात् नौकर हो जाता है ।। २१ ।।

कुजरवी रिपुभे कुटिले शनौ हिमकरे च सुखे नृपदर्शनी ।।
धनशनौ शशिभे गुरुचंद्रयोर्यदि नरः स भवेत्क्रयविक्रयी ।। २२ ।।

मंगल सूर्य छठे, वक्री शनैश्चर और चंद्रमा चौथे होवें तो राजाओंका दर्शन करनेवाला और यदि धनस्थानमें शनि, कर्कके बृहस्पति चंद्रमा होवें तो वह पुरुष वस्तुओंका खरीदने बेचनेवाला व्यापारी होता है ।। २२ ।।

निजगृहोच्चसुरद्विषि केंद्रषड्व्ययनवात्मजगे बहुधा सुखी ।।
शशिनि सप्तमकोशगतेऽर्कजे वपुषि शूरतरो बहुपुत्रवान् ।। २३ ।।

यदि शुक्र स्वगृही वा उच्चके होंकर केंद्र (१।४।७।१०) ६।१२।९।५ स्थानमें होवें तो बहुधा सुखी रहता है। चंद्रमा ७।२ स्थानमें और शनि लग्नमें होवे तो अतिशूरवीर, बहुपुत्रवान् होता है ।। २३ ।।

गुरुररिव्ययगो यदि पूजितः परभटश्च कुजः कुलरंध्र कृत् ।।
अगुगुरू भवभे शनिरष्टमे यदि भवेत्सुभटो बहुयुद्धवित् ।। २४ ।।

यदि बृहस्पति ६।१२ में होवें तो पराये यह सत्कार पानेवाला मल्ल और ६।१२ में मंगल होवे तो कुलका दोष लगानेवाला होता है। यदि राहु बृहस्पति ११ में, शनि ८में हो तो वडा पराक्रमी, बहुत युद्ध जाननेवाला होता है ।। २४ ।।

यदि गुरुर्मदनव्ययगो रविर्नवमगः कुसुतो मृतिगः सुधीः ॥
यदि च भानुगुरू सुतधामगौ भवति शास्त्रपटुर्धनधान्यवान् ॥ २५ ॥

यदि बृहस्पति ७।१२, सूर्य ९, मंगल ८ में होवे तो बुद्धिमान् और जो सूर्य बृहस्पति ५ में होवें तो शास्त्रोंका पण्डित ,धनधान्यवान् होता है ॥ २५ ॥

यदि चतुष्टयगौ भृगुमंत्रिणौ विदपि वा सधनः श्रुतिपारगः ॥
मदनगे हिमगौ च सुते गुरौ दशमधर्मगते विदि लेखकः ॥ २६ ॥

यदि शुक्र, बृहस्पति, बुध केंद्र (१।४।७।१०) में होवे तो धनवान्, वेदका पारगामी और चन्द्रमा ७, बृहस्पति ५, बुध १०।९ घरमें होवें तो लेखक होता है ॥ २६ ॥

विधुविदोःशनिभास्करयोस्तथेज्यसितयोर्व्ययधजो बहुलोभवान् ।
यदि विधुःसखलो गुरुवीक्षितो भवति पातककृत्कुलदूषणः ॥ २७ ॥

चंद्रमा, बुध, शनि, सूर्य तथा बृहस्पति शुक्रके परस्पर वेधमें उत्पन्न पुरुष अतिलोभी होता है, पाप ग्रहोंके साथ चंद्रमा यदि बृहस्पतिसे दृष्ट हो तो पातकोंका करनेवाला और कुलदूषण होता है ॥ २७ ॥

यदि शनिर्मदनेऽवनिजस्त्वगुमृतिनवांत्यसुखे गुरुतल्पगः ॥
विधुभतो द्वितये तपनस्ततः शनिरतोऽवनजो यदि तस्करः ॥ २८ ॥

यदि शनि सप्तम, मंगल राहु ८।९।१२।४ में होवें तो गुरुतल्पग होता है और यदि चन्द्रमाकी राशिसे द्वितीय सूर्य, सूर्यसे द्वितीय शनि, शनिसे द्वितीय मंगल होवे तो चोर होता है ॥ २८ ॥

बुधकुजौ सबलौ रिपुभावगौ यदि निकृत्तकरः किल तस्करः ॥
मृगकुजश्च कुलीरशनिस्तनौ भवति दस्युविधैरसिखण्डितः ॥ २९ ॥

यदि बुध, मंगल बली होकर छठे घरमें होवें तो चोरीके कर्ममें उस पुरुषके हाथ कट जाते हैं। मकरके मंगल और कर्कके शनैश्चर लग्नमें हों तो वह मनुष्य चोरीके कर्ममें तलवारसे कट जाता है ॥ २९ ॥

मिथुनमीनधनुष्कलशे खला अशनितो मरणाय कुचेष्टितैः ॥
वपुषि वित्रिलवे च चतुष्टयेंदुदृशिते नृपजोऽप्यतिनीचकृत् ॥ ३० ॥

मिथुन, मीन, धनु, कुंभ राशियोंपर पाप ग्रह होवें तो बुरे कर्मोंके करनेमें वज्रसे मृत्यु होती है और जो लग्नमें बुधका द्रेष्काण केंद्रस्थ चन्द्रमाकी दृष्टिसे देखा गया हो तो राजवंशमें पैदा हुआ भी अतिनीच कर्म करनेवाला होता है ॥ ३० ॥

मदकुजः खविधुर्द्वितये रवेर्यदि शनिश्च तदोनतनुर्नरः ॥
यदि परस्परनंदलवोपगो रविविधू मिलितौ च दरिद्रितः ॥ ३१ ॥

यदि सप्तम मंगल, दशम चन्द्रमा, सूर्यसे दूसरे शनैश्चर होवे तो वह पुरुष हीनशरीरवाला दुर्बल होता है और जो चन्द्रमा सूर्य परस्पर एक दूसरेके नव शमें अथवा एकही घरमें स्थित हों तो दरिद्री होता है ॥ ३१ ॥

यदि खलान्तरगो विधुरर्कजः स्मरगतो विकलात्मनरो भवेत् ।।
उदरगुल्मकफक्षयरोगतः प्रकथितो मुनिभिर्निजबोधतः ।। ३२ ।।

यदि चन्द्रमा पाप ग्रहोंके मध्यमें और शनैश्चर सप्तम स्थानमें होवे तो वह मनुष्य उदर, गुल्म, कफ, क्षयी आदि रोगोंसे विकल शरीरवाला होता है । ये योग मुनियोंने अपने ज्ञानसे कहे हैं ।। ३२ ।।

गर्भे किमिति प्रश्ने विचारः

तिथिप्रहरवारर्क्षयोग एकोनितो हृतः ।।
सप्तभिर्विषमे शेषे पुत्रः पुत्री समे भवेत् ।। १ ।।

तिथि, प्रहर, वार, नक्षत्र इनके जोडमें एक कम करके सातका भाग दे, जो विषम अंक बचे तो पुत्र और सम बचे तो पुत्री होगी ।। १ ।।

यदि तनुतनयेशौ पुंभगावोजभांशें नरविषमपदेवार्किः
सुतोंऽगार्कजीवाः ।। विषमभ इह पुत्रस्त्वन्यथा स्त्री
यदार्को नरभवनगतो वै लग्नगश्चेत्सुतः स्यात् ।। २ ।।

यदि लग्न और लग्नेश परुषराशी (१।३।५।७।९।११) अथवा विषम राशिके नवांशमें हों तथा पुरुष या विषम राशिमें शनैश्चर हो तो पुत्र होता है और लग्न सूर्य बृहस्पति विषम राशिके हों तो पुत्र होता है, अन्य प्रकारसे कन्या होती है अर्थात् सम तथा स्त्रीसंज्ञक लग्न लग्नेश, शनैश्चरादि होवें तो कन्या होती है और यदि सूर्य नरराशिगत लग्नमें स्थित हो तो पुत्र होता है।। २ ।।

सुतलवेण्नरि पूर्णबलः पुमान् सुशुभदृक् सुतजन्मकरः स्मृतः ।।
यदि सुतेट् कुजराहुयुतोऽथवाऽगुकुजमध्यगतोऽस्तगतोऽपि वा ।।
भवति दोहदहृद्यदि पञ्चमे शुभखगो द्वितनुस्तनुगस्तथा ।। ३ ।।

यदि पंचम गृहका नवांशाधिपति पूर्ण बली होकर पुरुषराशिपर हो अथवा उसको शुभ ग्रह देखते हों तो पुत्रका जन्म होता है । यदि सुतेश मंगल राहुसे युक्त अथवा राहु मंगलके मध्यमें अथवा अस्तका हो तो गर्भकी हानि करता है और यदि पंचम गृहमें शुभ ग्रह हो ।। ३ ।।

समराशौ शशिसितयोर्विषमे गुरुमंदभास्करावनिजाः ।।
भोगेऽस्मिन् गर्भगतं नूनं मिथुनं तु विज्ञेयम् ।। ४ ।।

एक योग १ सम राशिके चन्द्रमा शुक्र और विषम राशिके बृहस्पति शनैश्चर सूर्य मंगल हों दूसरा योग २ इनमें निश्चयही गर्भस्थ दो पुत्र समझने चाहिये ।। ४ ।।

लग्नेन्दूवासमगौ पुंग्रहदृष्टौ च मिथुनयोगकरौ ।।
तद्वज्ज्ञवक्रगुरवो बलिनः समराशिगास्तथैवोक्तम् ।। ५ ।।

अथवा सम राशिके चन्द्रमाको पुरुष ग्रह देखते हों तो पुत्रका योग करते हैं, इसी तरह बलवान् बुध, शनि, बृहस्पति सम राशिके होकर ग्रहों से दृष्ट हों तो भी दो पुत्रोंका योग समझना चाहिये ।। ५ ।।

सुतयुगं यदि पुंभगतेन्दुना खचरमुत्थसिलं सुतसम्भवः ॥
यदि पुमांस्तनुपः पुरुषर्क्षगः सुतभवाय यदा स नृखेचरः ॥ ६ ॥

यदि पुरुप राशिस्थ चन्द्रमासे किसी पुरुषग्रहका इत्थसाल हो तो पुत्र होता है और यदि लग्नेश पुरुष ग्रह हो तथा पुरुष राशिका हो तो पुत्रोत्पत्तिके लिये कहा गया है ॥ ६ ॥

तरणिरात्मजकृत्सुतभे समे बुधहिमांशुसिता रमणप्रदाः ॥
खचरयोर्युगलं युगलं यदा पदचतुष्कगतं युगलोद्भवः ॥
नरगृहे नृयुगं परथाऽन्यथा द्वितनुभे च सुता तनयद्वयम् ॥ ७ ॥

सूर्य भी पुरुष राशिस्थ हो तो पुत्र होता है तथा पंचम गृहमें सम राशि हो एवं बुध चंद्रमा शुक्रभी सम राशिके हों तो कन्याके देनेवाले होते हैं और यदि दो दो ग्रह चार स्थानोंमें स्थित हों तो दो संतति पैदा होती है, परन्तु इतना विशेष है कि जो पुरुष राशिके हों तो दो पुत्र और स्त्रीराशिके हों अथवा द्विस्वभाव राशिके हों तो दो कन्या उत्पन्न होती हैं ॥ ७ ॥

पूर्वाह्ले भास्कराच्चंद्रे पुरस्ताद्गर्भगः सुतः ॥
अपराह्लेरवेः पृष्ठे गर्भे कन्या तदाभवेत् ॥ ८ ॥

पूर्वाह्लमें सूर्यसे चन्द्रमा अग्रवर्त्ती हो तो गर्भस्थ पुत्र और अपराह्लमें सूर्यसे चन्द्रमा पीछे हो तो कन्या होती है ॥ ८ ॥

दक्षिणकुक्षौ वर्तुलगर्भःपुरुषः परथा रमणी मध्ये ॥
खण्डश्चौभयकुक्षिगगर्भश्चेद्युगलं नियतं नृपशूनाम् ॥ ९ ॥

यदि दाहिनी कोखमें गोलाकार गर्भकी प्रतीति हो तो पुत्र और बाईं कोखमें होवे तो कन्या और दोनों कोखोंके मध्यमें होवे तो नपुसक यदि दोनों कोखों हीमें होवे तो युग्म होता है इस प्रकारसे मनुष्य और पशुओंके गर्भकी पहिचान यथावत् जाननी ॥ ९ ॥

गर्भभ्रांतिप्रश्ने विचारः

यदात्मजेऽङ्गे च शुभोऽस्ति गुर्विणी स्मरांगनाथावथवा सुते तथा ॥
स्मरात्मजेशौ यदि वा तनुस्थितौ तदाङ्गनागर्भवती च नान्यथा ॥ १ ॥

यदि पंचम लग्नमें शुभ ग्रह होवे तो गर्भवती और सप्तमेश लग्नेश पंचम घरमें हों अथवा सप्तमेश पञ्चमेश लग्नमें हों तो स्त्री गर्भवती है और इसमें अन्यथा हो तो गर्भ नहीं है ऐसा कहे ॥ १ ॥

लग्नायपुत्रेषु शुभैर्बलान्वितैरवक्रनीचास्त गतैर्हि गुर्विणी ॥
यदीन्दुलग्नाधिपतो सुतस्थितौ सुतोदयर्क्षे परिपश्यतोऽथवा ॥ २ ॥

लग्न, एकादश, पंचम स्थानोंमें बलवान् शुभ ग्रह होवें और वक्री, नीच, अस्तके न होवें तो गर्भवती है। यदि चंद्रमा और लग्नाधिपति पंचममें हों अथवा पंचम, लग्नस्थानको देखते हों तो भी गर्भवती है ॥ २ ॥

तदाङ्गना गर्भवती यदा विधुः खलेसराफी नहि गुर्विणी तदा ।।
यदांगपेन्दू हि चतुष्टयस्थितौ कृतेत्थसालौ सुतपेन गुर्विणी ।। ३ ।।

जो चन्द्रमा पाप ग्रहके साथ इशराफयोगवाला हो तो गुर्विणी नहीं है तथा लग्नेश, चंद्रमा केंद्रोंमें स्थित हों अथवा पञ्चमेशके साथ इत्थसालयोग करते हों तो गर्भवती है ।। ३ ।।

पुत्रनाथेन चन्द्रांगपत्योदृष्टीत्थसालतः
आपोक्लिमे न गर्भः स्यादेवं क्षीणेन्दुयोगतः ।। ४ ।।

पंचमेशके साथ चंद्रमा और लग्नेशका आपोक्लिम स्थानमें दृष्टीत्थसाल हो तो गर्भ नहीं है, इसी तरह क्षीण चंद्रमाके योगसे भी बतावे ।। ४ ।।

गर्भक्षेमप्रश्ने विचारः

व्ययपतौ शुभदृष्टयुते चतुष्टयगते नहि गर्भपरिच्युतिः ।।
यदि खलास्तनयेऽशुभलग्नपे हिमकरे खलमुत्सिलिनिच्युतिः ।। १ ।।

यदि व्ययेश शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त होकर केंद्रमें हो तो गर्भ गिरता नहीं और जो पाप ग्रह पञ्चममें और लग्नेश भी अशुभ हो तथा पाप ग्रहके साथ चंद्रमा इत्थसालयोग हो तो गर्भ गिर जाता है ।। १ ।।

वक्रिपापकृतमुत्थसिलौ चेल्लग्ननाथहिमगू च्युतिहेतू ।।
पुत्रपे सति शुभान्वितदृष्टे सद्बले सुखमतो न विलोमे ।। २ ।।

यदि लग्नेश, चंद्रमाका वक्री अथवा पाप ग्रहके साथ इत्थसालयोग हो तो गर्भ गिर जाता है और पुत्रेश शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो, और शुभ ग्रह भी बलवान् हों तो गर्भ सुखपूर्वक स्थिर रहता है और इससे विलोम अर्थात् उक्त योग न होवें तो गर्भ नहीं ठहरता ।। २ ।।

बालानां जीवितप्रश्ने विचारः

केंद्रे व्ययेशे शुभदृष्टयुक्ते पुत्रेऽथ पूर्णे हिमगौ हि केंद्रे ।।
जीवत्यथेज्ये खलदृष्टयुक्ते व्यये ऽशुभैदृष्टयुते न जीवेत् ।।
व्ययेश्वरे पापयुते न जीवेदापोक्लिमस्थे म्रियते हि जातः ।। ३ ।।

यदि शुभ ग्रहोंसे दृष्ट युक्त द्वादशेश, केंद्र वा पञ्चममें और पूर्ण चंद्रमा केंद्रमें हो तो जीवता है और बृहस्पति पाप ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो एवं बारहवां घरभी अशुभ ग्रहोंसे दृष्ट युक्त हो तो नहीं जीवता है और व्ययेश पाप ग्रहोंसे युक्त आपोक्लिम स्थानमें हो तो जातक मर जाता है ऐसा बतावे ।। ३ ।।

गर्भः कस्येति प्रश्ने विचारः

तनुसुताधिपती शुभदृग्युतौ स्वपतिगर्भ इतः परथाऽन्यतः ।।
स्थिरभगैः कलुषैः स्वपतेर्भवेच्चरभगैः परतो द्वितयर्क्षगैः ।। १ ।।

लग्नेश पञ्चमेश शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हों तो अपने पतिका और इससे अन्य प्रकार अर्थात् लग्नेश पञ्चमेश अशुभ ग्रहोंसे दृष्ट युक्त हों तो दूसरे पुरुषका गर्भ है

और जो पाप ग्रह स्थिर राशिके हों तो अपने पतिका और चर राशिके हों तो अन्य पुरुषका और द्विस्वभाव राशिके हों तो ॥ १ ॥

स्वधवजारभवो द्विलवक्रमाद्भवति गर्भ उतात्मज ईक्षणम् ॥
यदि दिनेशशनैश्चरयोर्भवेन्न शुभदृक् परतोऽस्ति हि दोहदः ॥ २ ॥

अपने पति और जार पुरुषका गर्भ है ऐसा बतलावे, परन्तु इतना विशेष समझना चाहिये कि द्विस्वभाव राशिका यदि प्रथम होरा हो तो अपने पतिका और दूसरा होरा हो तो जार पुरुषका गर्भ कहे। अथवा पंचम गृहपर सूर्य शनैश्चरकी दृष्टि हो और शुभ ग्रहोंकी दृष्टि न हो तो परपुरुषसे गर्भ कहे ॥ २ ॥

प्रसवप्रश्ने विचारः

तनोर्गतैर्नंदलवैर्गताः स्युर्भोगैश्च भोग्या इह जन्ममासाः ॥
बली भृगुर्यत्पदगस्तनोः स्यात्तत्तुल्यमासा यदि वा गताः स्युः ॥ १ ॥

लग्नके जितने नवांश गत होगये उतने ही गर्भके मास व्यतीत और जितने नवांश भोगनेमें बाकी हैं उतनेही मास शेष रहे बतलावे अथवा बलवान् शुक्र लग्नसे जिस घरमें हो उतनेही मास गर्भ व्यतीत हो गये ऐसा कहे ॥ १ ॥

द्रेष्काणभागे च नवांशकस्य दिने भवेच्चितितमासकस्य ॥
तनौ विनर्क्षं दिनभे वपुष्पतौ दिनग्रहे जन्मदिनेऽन्यथा निशि ॥ २ ॥
दिवानिशोश्चाधिबलस्यसाम्येबालस्यजन्माऽत्रचसन्ध्ययोःस्यात् ।

लग्नके द्रेष्काण वा नवांशका जो दिन है वही महीनेका दिन है उसी दिन जन्म कहे और लग्नमें दिवाबली राशि हो तथा दिवाबली राशिपर दिवाबली ग्रह हो तो बालकका जन्म दिनमें और अन्य प्रकारसे हो तो रात्रिमें बतलावे और दिवाबली तथा रात्र्यधिबली ग्रह और राशि बराबर हों तो बालकका जन्म संध्या समय होगा ॥ २ ॥

मम भ्रात्रादयः स्वस्था न वेति प्रश्ने विचारः

यद्गृहं स्वपति सौम्यवीक्षितं चेत्पतिश्च सुपदे सुदृष्टयुक् ॥
तस्य सौख्यमभयंच तत्पतावस्तगे खलविमर्दितेऽन्यथा ॥१ ॥

जिसकी कुशल पूछी है उसका घर अपने पतिसे दृष्ट हो अथवा उस घरका अधीश ग्रह शुभ स्थानमें शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो उसके भ्रात्रादिको सुखी और निर्भय कहे और यदि स्थानका पति अस्त वा ग्रहोंसे पीडित हो तो अन्यथा कहे अर्थात् जिसकी कुशल पूछी है वह दुःख और भयसे युक्त है ॥ १ ॥

षष्ठे शतं नाथकृतेत्थसाले षष्ठे स्थिते वापि तदीश्वरे वा ॥
षष्ठे स्थिरे तद्गृहगे च पापे क्रूरेक्षिते चात्र गृहे गदार्त्तः ॥ २ ॥

यदि षष्ठेश तथा भ्रात्रादि स्थानेशका परस्पर इत्थसाल योग हो अथवा दोनों छठे घरमें हों अथवा भ्रात्रादि स्थानेश छठे घरमें स्थिर राशिका हो अथवा भ्रात्रा-

दिके घरमें पाप ग्रह हों अथवा भ्रात्रादिका घर क्रूर ग्रहोंसे दृष्ट हो तो रोगसे पीडित है ऐसा कहे ।। २ ।।

तदीश्वरे पंचमलाभयाते भवेत्ततस्तद्वसतिश्च दूरम् ।।
एवं सुतेशे सुतगे सुतेन योगः सुखं रोगभयं क्षतिश्च ।। ३ ।।

यदि भ्रात्रादि स्थानेश पांचवें ग्यारहवें हों तो उस प्रश्नकर्त्ताके भ्रात्रादि उससे बहुत दूर रहते हैं तथा इसी प्रकार पुत्रेश पंचम घरमें हो तो पुत्रसे मिलाप और सुख होता है और पूर्वोक्त रीतिसे अशुभ योग हो तो रोग, भय, हानि होती है ऐसा प्रकार कहे ।। ३ ।।

विवाहप्रश्ने विचारः

तनोश्चेत्समे स्थान ऐनिर्वधूदस्तथोजे वरप्राप्तये मंद एकः ।।
दशायारिधीन्दुर्दशेशार्कदृष्टोविवाहाय वा केंद्रधीभाग्यसौम्याः ।। १।।

यदि लग्नसे सम स्थानमें शनैश्चर हो तो वरको वधूको देनेवाला है और जो विषम राशिका हो तो अकेलाही शनैश्चर वधूको वरको देनेवाला है । १० । ११ । ६ । ५ इन स्थानोंमें चंद्रमा दशमेश तथा सूर्यसे दृष्ट हो तो विवाह होता है अथवा १ । ४ । ७ । १० । ५ । ९ इन घरोंमें शुभ ग्रह हों ।। १ ।।

त्रयाऽस्तारिचंद्रो बुधेज्यार्कदृष्टोविवाहाय शीघ्रं खपत्या प्रदृष्टः ।।
यदांगेविधुर्वार्थभाक्शुक्रदृष्टः खलावीक्षितः स्त्रीप्रदश्चेच्चरर्क्षे ।। २ ।।

चन्द्रमा ३ । ७ । ६ में बुध बृहस्पति सूर्यसे दृष्ट हो तो शीघ्र ही विवाहके लिये कहा है । जो लग्नमें चंद्रमा दशमेश दृष्ट हो अथवा द्वितीयस्थ चंद्रमा शुक्रसे दृष्ट हो और पाप ग्रहोंसे अदृष्ट हो तो स्त्रीको देनेवाला है ।। २ ।।

वधूशीतगुः शुक्रदृष्टश्च केंद्रे खला भूरिनारीपतिः स्यात्तदा वै ।।
यदांगे विधुर्द्वादशेशार्कदृष्टस्तदा स्त्रीवरोद्वाह एव प्रदिष्टः ।। ३ ।।

यदि सप्तम घरमें चर राशिका चंद्रमा शुक्रसे दृष्ट हो, केंद्रोंमें पाप ग्रह हों तो वर वहुत स्त्रियोंका पति होता है और जो लग्नमें चंद्रमा द्वादशेश तथा सूर्यसे दृष्ट हो तो स्त्रीवरका विवाहकारक है ।। ३ ।।

तनुसप्तमलाभकर्मशुक्रः शुभदृष्टः सुभगांगनाप्रदः स्यात् ।
तनुसप्तममुत्थसिलो वधूदस्त्रिनवस्त्रीदशधीविधुप्रदृष्टः ।। ४ ।।

१ । ७ । ११ । १० घरोंमें शुक्र शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो तो सुदर स्त्रीका देनेवाला है और लग्न सप्तमस्थ शुक्र चंद्रमाके साथ इत्थसाल करता हो अथवा ३ । ९ । ७ । १० में स्थित चन्द्रमासे दृष्ट हो तो वधूका देनेवाला है ।। ४ ।।

शुभगै रमणीप्रदो यदोच्चादिशुभाः कंटकलाभगाः प्रवीर्याः ।।
शुभवीक्षणितास्तदांगनाप्तिर्यदि जीवो वपुषि स्मरे चरर्क्षम् ।। ५ ।।

यदि शुक्र शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो तो रमणी स्त्रीका देनेवाला है और यदि उच्चादि शुभ ग्रह १।४।७।१०।११ में बलवान् होकर स्थित हो तथा शुभ ग्रहोंसे दृष्टा हो तो स्त्रीकी प्राप्ति होती है। यदि बृहस्पति लग्नमें और सप्तममें चर राशि।५॥

विखलेऽष्टमकंटकेधनाढ्या ललिता स्त्रीजयधर्मिणी प्रलभ्या॥
दशसप्तगते विधौ निजोच्चे भृगुणेज्येन च वीक्षिते सुरूपा॥६॥

तथा ८।१।४।७।१० घरोंमें पाप ग्रह न हों तो सुन्दरता, धन जय धर्मसे युक्त स्त्री मिलती है। दशम सप्तममे उच्चका चंद्रमा शुक्र बृहस्पति दृष्ट हो तो सुरूपवती॥६॥

सधना बहुसंततिर्वधूः स्यान्मद उग्रा यदि वाऽरिभे शुभाश्च॥
मृतिमेति विवाहिता स्त्री किल जीवत्यथ सप्तमाम्बुपापैः॥७॥

सधना, संतानवती वधू होती है और सप्तममें पाप ग्रह, छठे शुभ ग्रह हों तो विवाहिता स्त्री मर जाती है और यदि जीवित रहे तो इस प्रकार समझना चाहिये कि, सप्तममें पाप ग्रह हो तो विवाहिता॥७॥

परिणीतधृतस्त्रियोः प्रणाशो यदि राहुर्मद उद्वहेत यां याम्॥
मृतिमेति मदे मदांगपौ चेत्त्रिलवैकोपगतो तदा बहुस्त्री॥८॥

और चतुर्थमें हो तो धृत स्त्री मर जाती है। यदि सप्तममें राहु हो तो जिस जिस स्त्रीका व्याह करता है वही मर जाती है। सप्तमेश लग्नेश एक द्रेष्काणस्थित हों तो बहुत स्त्रियां होती हैं॥८॥

यदि सुखं शुभवल्ललना धृता स्मरगृहं सशुभं च विवाहिता।
उभयतः खलयुग् विवधूर्भवेद्धृतविवाहिताराडुभये शुभे॥९॥

यदि चतुर्थ शुभ ग्रह हों तो धरेवा और सप्तम शुभ ग्रह हो तो विवाहित स्त्री हो और यदि दोनों घरोंमें पाप ग्रह हों तो विवधू (वधूरहित) हो, दोनों जगह शुभ ग्रह हो तो धरेवा और विवाहिताका पति होता है॥९॥

मृतिचतुष्टयलाभगते विधौ सखलमुत्थसिले यदि वा खलैः॥
मृतिचतुष्टयगैर्न वधूर्भवेद्यदि सुखे दितिजो म्रियते धृता॥१०॥

८।१।४।७।१०।११ इन स्थानोंमें चंद्रमा पाप ग्रहोंके साथ इन्थसाल करता हुआ स्थित हो अथवा ८।१।४।७।१० में पाप ग्रह हो उस पुरुषको वधू नहीं मिलती है यदि चतुर्थमें राहु हो तो धृता स्त्री मर जाती है॥१०॥

तनुगते भृगुजे तु मनोहरा सुरगुरौ सघना विदि वक्रधीः॥
धरणिजे च सरुग्विधवा शनौ दिनकरे तु खरा हिमगौ जडा॥
युगशुभो दशमे च शुभास्तनौ परिणयावसरे जलवर्षणम्॥११॥

लग्नमें शुक्र हो तो सुन्दरी, बृहस्पति हो तो धनवती, बुध हो तो कुटिलबुद्धि, मंगल हो तो रोगिणी, शनैश्चर हो तो विधवा, सूर्य हो तो क्रूर स्वभाववाली, चंद्रमा

हो तो मूर्खा स्त्री होती है और जो ४।१०।११ घरोंमें शुभ ग्रह हो तो विवाहके समय जलकी वर्षा होती है ॥ ११ ॥

स्त्री सती न वेति प्रश्ने विचार:

शत्रुक्षेत्री यदा लग्नेट् स्त्रियां देवरगामिनी ॥
यदैकभे पुरो भौमो लग्नाद्वा लग्ननाथतः ॥ १ ॥

यदि लग्नपति शत्रुक्षेत्री होकर सप्तमस्थ हो तो वह स्त्री देवरगामिनी है और लग्न वा लग्ननाथसे ॥ १ ॥

अन्यदेशे पतिं त्यक्त्वा परेण सह तिष्ठति ॥
जायेशवीक्षकैस्तुल्या जारा वाच्याः स्त्रिया मताः ॥ २ ॥

एक राशि आगे मङ्गल हो तो वह स्त्री अन्य देशमें पतिको छोडकर परपुरुषके साथ रहती है। सप्तमेशको देखनेवाले ग्रहोंके तुल्य स्त्रीके प्यारे जार पुरुष कहने चाहिये ॥ २ ॥

यदा कुजश्चंद्रमसांगपेन वा कृतेत्थसालः स्वगृहे परं भजेत् ॥
कुजे स्वभेयाततदीयमंदिरं यदासपापार्कहिमांशुमुत्सिलम् ॥ ३ ॥

जो मंगल चन्द्रमा अथवा लग्नेशके साथ इत्थसाल करता हो तो स्त्री अपनेही घरमें पर पुरुषका सेवन करती है। जो मंगल अपनी राशिका हो तो उसी जार पुरुषके घर पहुंच जाया करती है। यदि पाप ग्रह वा सूर्यके साथ चन्द्रमाका इत्थसाल हो तो ॥ ३ ॥

नृपेण भुक्ता नृपसन्निभेन वा यदांगनेशस्य यमेन मुत्सिलम् ॥
कुदासकैश्चेद्बुधशुक्रमुत्सिलं सुलेखकब्राह्मणवैश्यपूर्वकैः ॥ ४ ॥

राजाने अथवा राजाके समीप रहनेवाले ने स्त्री भोगी है और जो सप्तमेशका शनैश्चरके साथ इत्थसाल हो तो खोटे दासलोगोंने और बुध शुक्रसे साथ इत्थसाल हो तो अच्छे लिखनेवाले ब्राह्मण वैश्यादिकोंने भोगी है ॥ ४ ॥

भावीत्थसाले स्मरपस्य भाविनी सदीशराफे कृतजारहा-
रिणी ॥ वपुःपतीन्द्वोर्गुरुमुत्सिले सती चतुष्टये वांकधि-
योर्गुरौ सती ॥ ५ ॥ खलविरहितवित्ते सद्भिरंगेन्दुसंस्थैः
स्थिरगतखलखेटैः कैन्द्रतुंगैश्च साध्वी ॥ ६ ॥

जो सप्तमेशका उक्त ग्रहोंके साथ (भावी) आगेको होनेवाला इत्साल हो तो वह स्त्री उक्त पुरुषोंसे भोगी जायगी ऐसा कहे और सप्तमेशका शुभ ग्रहोके साथ इशराफ हो तो किये हुए जार पुरुषको भगा ले जाती है। लग्नपति और चन्द्र-माका बृहस्पतिके साथ इत्थसाल हो, अथवा केन्द्र, नवम, या पञ्चमस्थानमें बृहस्पति हो तो स्त्री पतिव्रता है. दूसरे घरमें पाप ग्रह न हों और लग्नमें चन्द्रमाके साथ शुभ-

ग्रह स्थिर हों, स्थिर राशिके पाप ग्रह हों तथा केन्द्रोंमें उच्च ग्रह हों तो वह स्त्री साध्वी है ॥ ५ ॥ ६ ॥

कन्याशुद्धत्वप्रश्ने विचारः

स्थिरर्क्षे लग्नानाथेन्दू स्थिरलग्नं तदक्षता ॥
चरर्क्षे क्षतयोनिः स्याद्यदा चंद्रो द्विमूर्तिभे ॥ १ ॥

लग्नपति, चन्द्रमा स्थिर राशिके हों तो वह कन्या अक्षता है और जो चर राशिके हो तो क्षत (पुरुषसे संगम की हुई) है, यदि चन्द्रमा द्विस्वभाव राशिका हो ॥ १ ॥

चरे लग्ने सदोषा स्त्री यदा केंद्रे सितेन्दुजौ
चंद्रदृष्टौ सदोषा स्यादथवा वृश्चिकोपगौ ॥ २ ॥

और लग्न चर हो तो स्त्री दोषवती है और यदि केन्द्रमें शुक्र बुध चन्द्रमासे दृष्ट हों तो भी दोषवती अथवा वृश्चिकके शुक्र बुध हों तो भी दोषवती है ॥ २ ॥

हित्वा स्थिरं मुत्थसिलं कुजेन्द्वोनुप्तास्ति भुक्ता यदि मंदचंद्रौ ॥
तनुस्थितौ सा प्रकटोपभुक्ता द्विदेहगो चंद्रतनू च भुक्ता ॥ ३ ॥

यदि स्थिर राशिको छोडकर अन्यराशिस्थ मंगल चंद्रमाका इत्थाल हो तो गुप्त भोगी हुई है। यदि चंद्रमा, शनैश्चर लग्नमें स्थित हों तो प्रकट भोगी हुई है और चन्द्रमा लग्न द्विस्वभाव राशिके हों तो भोगी हुई है ॥ ३ ॥

वरप्राप्तिप्रश्ने विचारः

पुंल्लग्ने तनुभवयोर्जीवः कन्या लभेत वरम् ॥
स्मरभवयोःवितचंद्रौ शुभदृष्टाढयौ वरप्रदौ स्त्रीणाम् ॥ १ ॥

पुरुषसंज्ञक लग्न हो, लग्नमें वा ग्यारहवें बृहस्पति हो, तो कन्याको वरकी प्राप्ति होती है। सातवें ग्यारहवें शुक्र चन्द्रमा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हों तो स्त्रियोंको वर देनेवाले हैं। ॥ १ ॥

वधू कीदृशीति प्रश्ने विचारः

चेज्जीवसौम्यौ सुतकंटकेषु यद्वा त्रिकोणायचतुष्टयेषु ॥
सौम्येःसुखार्थात्मजदीर्घदायाभवेद्यदा स्वोच्चभगौ कुजार्कौ ॥ १ ॥
तनौ स्मरे वित्तवती च रण्डा सूते खलैर्निःस्वकुला विसौख्या ॥
शनिःस्मरेऽगे त्वसती च लग्नमृत्यस्तगैःपापखगैर्हि रण्डा ॥ २ ॥

यदि बृहस्पति बुध ५।१।४।७।१० में हों अथवा ५।९।११।१। ४।७।१०। में शुभ ग्रह हों तो सुख, धन, पुत्र, दीर्घ भाग्यशाली स्त्री है, यदि मंगल शनि अपने उच्चके होकर ॥ १ ॥लग्न, सप्तम घरमें हों तो धनवती रण्डा है, पंचममें पापग्रह हों तो निर्धन कुलकी सौख्यहीन है। शनि सप्तम, लग्नमें हो तो व्यभिचारिणी और १।८।७ में पाप ग्रह हों तो रण्डा है ॥ २ ॥

व्यये खलाश्चेद्विधवा षडष्टस्थेन्दौ मृतिः स्त्रीवरयोरिनाष्टे ।।
तनौ विधौ सप्तमगे कुजे चेद्वरस्त्रियोःस्यान्मृतिरष्टमासैः ।। ३ ।।

बारहवें पाप ग्रह हों तो विधवा है, छठे आठवें चंद्रमा हो तो स्त्री वरकी मृत्यु हो । सूर्य आठवें, चंद्रमा लग्नमें, मंगल सातवें हों तो आठवें महीनेमें वर स्त्रीकी मृत्यु हो ।। ३ ।।

चरलग्ने चरचंद्रे केंद्रे पापैर्बलान्वितैर्मदने ।।
शुभयुतिवीक्षणहीने स्त्रीवरमरणं भवेच्छनैश्चरर्क्षे ।। ४ ।।
लग्ने भार्गवचंद्रौ पापदृशा पुंश्चली च लग्नेन्दू ।।
पापद्वयमध्यगतौ पापैर्दृष्टौ कुलक्षयाय वधूः ।। ५ ।।

लग्न चंद्रमा चर राशिके हों, केंद्रोंमें पापग्रह बलवान् हो, सप्तम घर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि युक्तिसे रहित हो तो स्त्रीवरका मरण हो ।। ३ ।। लग्नमें शनैश्चरकी राशि मकर, कुंभके शुक्र चंद्रमा पाप ग्रहोंसे दृष्ट हों तो पुंश्चली है लग्न चंद्रमा दो पाप ग्रहोंके मध्यमें अथवा पाप ग्रहोंसे दृष्ट हो तो कुलकी क्षय करनेवाली वधू है ।।४।।५।।

तुष्टा स्त्री ममेष्यति प्रश्न विचारः

सुखादधोऽर्के सित ऊर्ध्वगे तु तुष्टांगना नैति च वक्रशुक्रे ।।
समेति शुक्रे च विनिर्गतेऽर्कान्न सैति चेत्पूर्णविधुस्तदा प्राक् ।।
समेति तुष्टा च कृशे विलंबात्सुते रवौ भर्तृनिपीडिता स्त्री ।। १ ।।

यदि चतुर्थ घरसे नीचे स्थानमें सूर्य और ऊपरकेमें शुक्र हो तो वह प्रसन्न स्त्री नहीं आवेगी । यदि शुक्र वक्री हो तो आवेगी । जो सूर्यसे शुक्र निकल गया हो तो तुष्टा स्त्री नहीं आवेगी और यदि पूर्ण चंद्रमा सूर्यसे पूर्व हो तो आवेगी । यदि चंद्रमा क्षीण हो तो विलम्वसे आवेगी, पांचवें घरमें सूर्य हो तो वह स्त्री पतिसे पीडित है ऐसा कहे ।। १ ।।

स्त्रीपुसयोः प्रीतिप्रश्ने विचारः

चेदंगनालग्नपमित्थसालं प्रीतिर्यदांगास्तपयोस्तु दृष्टिः ।।
पुंस्त्रीयुगप्रीतिरथांगनाथे लग्नस्थिते भर्तृनिदेशगा स्त्री ।। १ ।।

यदि सप्तमेश लग्नेशका इत्थसाल हो अथवा दोनोंकी परस्पर दृष्टि हो तो स्त्री-पुरुषमें प्रीति होती है अथवा लग्नमें लग्नेश हो तो स्त्री भर्त्ताकी आज्ञाकारिणी रहती है ।। १ ।।

स्मरेऽगनाथो रमणीनिदेशगो यदांगनांगाधिपति तनुस्थितौ ।।
स्मरस्थितौ वा मिथ एव मित्रता द्वयोर्यदा लग्नमदेश्वरारिदृक् ।। २ ।।

यदि लग्नेश सातवें घरमें हो तो पति स्त्रीका आज्ञाकारी होता है । यदि सप्तमेश लग्नेश लग्नमें अथवा सातवें घरमें स्थित हो तो स्त्री पुरुषकी आपसमें मित्रता होती है और जो लग्नेश सप्तमेशकी परस्पर वैरिदृष्टि हो तो ।। २ ।।

तदा विरोधो द्वितयस्य चेत्सुखं शुभेक्षितं स्त्रीधनवान्पतिर्भवेत् ।
यदा सुखं सौम्ययुतं भवेत्तदा ददाति वित्तं पतिरेव च स्त्रियै ।
मदे बलिष्ठे रमणी सवीर्या लग्ने बलिष्ठे पुरुषो बलिष्ठः ।। ३ ।।

दोनोंमें विरोध रहता है और चतुर्थ स्थान शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो तो पति स्त्रीके धनका भोगनेवाला होता है। यदि चौथा घर शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो पति अपना समस्त धन स्त्रीके लिये दे देता है। सातवां घर बलवान् हो तो स्त्री बलवती और लग्न बलवान् हो तो पुरुष बलिष्ठ होता है ।। ३ ।।

विषकन्याप्रश्ने विचारः

रिपौ शुभग्रहद्वयं शुभान्यथा विषांगना ।। ४ ।।

छठे घरमें दो शुभ ग्रह हों तो शुभ कन्या है, यदि नहीं हों तो विषकन्या है ऐसा बतावे ।। ४ ।।

आगमनप्रश्ने विचारः

तनुपतिस्तनुतुर्यगतेन चेन्मुथसिलं विदधाति तथांगपः ।।
कुटिलकेंद्रगतस्तनुमीक्षते स सुखमेति तदा पथिको ध्रुवम् ।। १ ।।

लग्नेश यदि लग्नस्थ वा चतुर्थस्थ ग्रहसे इत्थसाल करता हो अथवा वक्री लग्नेश केन्द्रमें बैठकर लग्नको देखता हो तो पथिक सुखपूर्वक आवेगा ।। १ ।।

तनुधनसहजस्थाः सर्वखेटा यदि स्युस्तदु पथिक उपैति
स्युर्यदा तत्र सौम्याः ।। हृतगतनरवस्त्वाप्तिर्यदा जीवशुक्रौ
द्रुततरमुपयात्येव स्वदेशे हि पान्थः ।। २ ।।

लग्न, द्वितीय, तृतीय घरोंमें सब ग्रह हों तो पथिक आवेगा. यदि उक्त घरमें केवल शुभ ग्रह ही हों तो नष्ट वस्तुकी प्राप्ति तथा गये हुए का आगमन होगा, यदि केवल बृहस्पति शुक्र ही पूर्वोक्त घरोंमें हों तो पथिक बहुत जलदी अपने घर आवेगा ऐसा कहे ।। २ ।।

कश्चिद्ग्रहःसप्तमगोऽरिगो वा केंद्रे गुरुश्चागमनं करोति ।।
त्रिकोणगो ज्ञो यदि वा भृगुःस्यात्पांथागमश्चेद्धिमगुर्मृतिस्थः ।। ३ ।।

यदि कोई ग्रह सातवें वा छठें घरमें हो, केंद्रमें बृहस्पति हो तो पान्थ आवेगा. । ९ ५ में बुध अथवा शुक्र हो तो भी गया हुआ आवेगा, यदि आठवें घरमें स्थित चन्द्रमा ।।३।।

केंद्रैर्विपापैः सुखमेति सौम्यैर्युक्तैः सलाभी सुखमभ्युपैति ।।
वित्ततृतीयाष्टमधर्मसंस्थैः सौम्यैश्चरैर्मार्गगतः प्रवासी ।। ४ ।।

केंद्रोंमें शुभग्रह हों, पाप नहीं हों तो पथिक लाभ सहित सुखपूर्वक घर आवेगा ।। २।३।८।९ घरोंमें शुभ ग्रह चर राशिके हों तो प्रवासी पुरुष मार्गमें है ऐसा बतावे ।। ४ ।

चंद्राङ्गराण्मुत्थसिले व्ययेंऽगे समेति शीघ्रं परथा विलम्बात् ।।
चंद्रे तनूजे त्रिगतेत्थसाले सप्ताष्टवित्तांबुषु वैति चंद्रे ।। ५ ।।

चन्द्रमा, लग्नेश बारहवें अथवा लग्नमें स्थित होकार इत्थसाल करते हों तो प्रवासी आवेगा. यदि अन्य प्रकारसे हो तो विलम्बसे आवेगा। पांचवें घरमें स्थित चन्द्रमाका तृतीयस्थ ग्रहके साथ इत्थसाल हो अथवा ७।८।२।४ घरोंमें चंद्रमा हो तो प्रवासी आवेगा ।। ५ ।।

लग्नविधू चरभे चरभांशे केंद्रेसुतायसहोत्थशुभाश्चेत् ।।
एति यदा त्रिसुतारिनवस्त्रीवक्रखगा द्रुतमागमनाय ।। ६ ।।

लग्न चन्द्रमा चर राशि अथवा चर राशिके नवाशमें हों और १।४।७।१०।५।११।३ घरोंमें शुभ ग्रह हों तो प्रवासी आवेगा । यदि ३।५।६।९।७ घरोंमें वक्री ग्रह हों तो प्रवासीका शीघ्र आगमन होगा ।। ६ ।।

पृष्ठोदये लग्नगतेत्थसाले निशाकरे शीघ्रमुपैति पान्थः ।
धर्माम्बुवित्तास्तपतीसराफे चंद्रे ततो मुत्थसिले समेति ।। ७ ।।

पृष्ठोदयराशिस्थ चन्द्रमाका लग्नस्थ ग्रहके साथ इत्थसाल हो तो पथिक शीघ्र ही आवेगा. ९।४।२।७ इन घरोंके स्वामियोंके साथ चन्द्रमाका इशराफ अथवा मुथसिल योग हो तो प्रवासी भले प्रकार आवेगा ।। ७ ।।

मार्गाधिपो भस्य परे दले चेद्विदेशगो ना द्रुतमेति नूनम् ।।
धर्माम्बुवित्तास्तपतीत्थसाले चंद्रे सुखाधःस्कखगेत्थसाले ।।
वीर्यप्रकर्षाचिरकालतः स्याद्विदेशगस्यागमनं नरस्य ।। ८ ।।

यदि मार्गेश राशिके परार्धमें हो तो विदेश गया हुआ पुरुष शीघ्र ही निःसंदेह आवेगा. ९।४।२।७ इन घरोंके स्वामियोंके साथ अथवा चतुर्थ घरसे नीचेके घरमें स्थित ग्रहके साथ चन्द्रमाका इत्थसाल हो तो बलकी अधिकतासे अर्थात् ग्रहोंके अधिक बलवान् होनेसे विदेश गये हुए पुरुषका आगमन थोडी देरमें होगा इस प्रकार बतावे ।। ८ ।।

पान्थश्चलितो न वेति प्रश्ने विचारः

लग्नेश्वरे शीतकरे च केंद्राद्विनिर्गते केंद्रगतेसराफे ।।
तनुतृतीयाष्टमगैर्ग्रहैर्वा विधौ स्मरे वा चलितःपदात्स्वात् ।। १ ।।

लग्नेश और चन्द्रमा केन्द्रोंसे निकलकर अन्य स्थानमें स्थित हों और केन्द्रस्थ ग्रहके साथ इशराफ योग करते हों एक योग, १।३।८ घरोंमें समस्त ग्रह हों दूसरा योग. तथा सप्तममें चन्द्रमा हो तीसरा योग इनमेंसे कोई एक योग होवे तो प्रवासी अपने स्थानसे चल दिया है ।। १ ।।

वित्ते तृतीयाष्टमधर्मसंस्थे लग्नेश्वरे मार्गगतः प्रवासी ।।
चरोदये स्वामिशुभान्वितेक्षितेऽथवान्यखेटेक्षणयोगवर्जिते ।। २ ।।
च्युतिर्नहि स्यात्परथा भवेदथो स्थिरे तनौ नैव कदा द्विमूर्तिभे ।
शुभेशभूरीक्षणयोगतो नहि च्युतिःखलावीक्षणयोगतोभवेत् ।। ३ ।।

२।३।८।९ घरोंमें लग्नेश हो तो प्रवासी मार्गमें है और यदि चर लग्न स्वामी वा शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो पाप ग्रहोंसे अयुक्त और अदृष्ट हो तो नहीं चला है। यदि अन्य प्रकारसे हो अर्थात् पाप ग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो चल पडा है और जो स्थिर लग्न हो तो नहीं चला और यदि द्विस्वभाव लग्न अपने स्वामी शुभ ग्रहसे पूर्ण दृष्ट वा युक्त हो तो नहीं चला और यदि पाप ग्रहोंका पूर्ण दृष्टि वा युति हो तो चल दिया है ॥ २ ॥ ३ ॥

किमध्वा पान्थेनातिवाहित इति प्रश्ने विचारः

तनोर्भुक्तांशकैस्तुल्यः पथिकेनातिवाहितः ॥
पंथाः शेषांशकैः शिष्टश्चलितस्यैव चिन्तयेत् ॥ ४ ॥

लग्नके भुक्तांशोंके तुल्य मार्ग तै कर लिया और भोग्यांशोंके समान चलनेका बाकी रहा विचारे ॥ ४ ॥

यदसौ गृहं नागतो हतो बद्धो नवेति प्रश्ने विचारः

मूर्नौ क्रूरे न हतो बद्धो नान्त्ये वा मदने हतबद्धः ॥
यदि मूर्तिवपुषोर्वा मदवपुषोः पापैर्निहतो बद्धः पान्थः ॥ ५ ॥

यदि मूर्तिमें, बारहवें, सातवें घरमें क्रूर ग्रह हों तो न मारा गया न बांधा गया, यदि आठवें लग्नमें अथवा सातवें और लग्नमें पाप ग्रह हों तो प्रवासी मारा गया वा बांधा गया कहे ॥ ५ ॥

कदैष्यतीति प्रश्ने विचारः

यदालग्नतो नूनमायाति सौम्यस्तृतीयं तदाऽस्येति पान्थो यदीन्दुः ।
विवाहस्मरं कंटकादग्रिमक्षं व्रजेदागमस्तत्क्षणे ह्यन्यदेशात् ॥ १ ॥

लग्नगत शुभ ग्रह जब कभी तीसरे घर पहुँचेगा उसी समय पथिक अपने घर आवेगा, यदि चंद्रमा सातवें घरको छोडकर केंद्र (१।४।७।१०) से आगेके घरमें जिस समय जावेगा उसी समय प्रवासी प्रदेशसे आवेगा ॥ १ ॥

लग्नाद्बली तिष्ठति यत्र कश्चिद्ग्रहस्तद्गृहसंमितांकाः ॥
सूर्याहतास्तैर्दिवसैः समेति वक्री स चेत्तै. पुनरेव गन्ता ॥ २ ॥

ज़ो कोई बलवान् ग्रह लग्नसे जिस घरमें स्थित हो उस घरकी संख्याको बारह (१२) से गुणा करनेसे जो हो उतनेही दिनोंमें प्रवासी आवगा, जैसे दूसरे घरमें हो तो दूसरे घरकी संख्या २ को १२ से गुणा करनेसे २४ दिनमें आवेगा। यदि वह् वक्री हो तो गुणा किये हुए दिनोंमें आकर फिर लौट जावेगा ॥ २ ॥

यदांगनेशस्तनुमेति यद्वा लग्नाधिनाथेन कृतेत्थसालः ॥
तदा प्रवासी स्वगृहं समेति चरर्क्षयोगे स विशेषतश्च ॥ ३ ॥

सप्तमेश लग्नमें जिस समय पहुँचेगा अथवा लग्नेशके साथ इत्थसाल करेगा उसी समय प्रवासी अपने घर आवेगा और जो चर राशिका योग हो तो विशेष

करके अर्थात् चर लग्न हो, लग्नेश सप्तेश भी चरराशिके हों तो प्रवासी सुखपूर्वक धनसहित आवेगा ।। ३ ।।

दूरस्थ एव चेज्जीवविच्छुक्राश्चरभेऽम्बुनि ।।
आगन्ता तत्क्षणे गेहं नात्र कार्या विचारणा ।। ४ ।।

यदि चतुर्थ स्थानमें चर राशिके बृहस्पति ,बुध, शुक्र हो तो प्रदेशमें बहुत दूर गया हुआ भी प्रवासी उसी समय घर आवेगा इसमें कुछ विचार नहीं करना चाहिये ।। ४ ।।

स्वस्थोऽयं प्रवासी गृहमागतो न वेति प्रश्ने विचारः

चरर्क्षे चरमांशे च चतुर्थे शीतदीधितिः ।।
गृहं प्राप्तः प्रवासी वा चतुर्थे स्वामिसंयुते ।। ५ ।।
सौम्यान्विते दिनातीतभोग्यं खेटगतैष्यवत् ।।
यदहस्तत्र संयोगश्चंद्रतस्तत्क्षणे गृहम् ।। ६ ।।

चन्द्रमा चौथे घरमें चर राशि वा चरराशिके नवांशमें हो तो प्रवासी अपने घर आ गया अथवा चौथा घर अपने स्वामी वा शुभ ग्रहसे युक्त हो तोभी प्रवासी अपने घर आ गया है ऐसा कहे। किस समय आ गया इसका विचार इस तरह करना चाहिये कि, ग्रहके भुक्त भोग्यके समान दिनोंका भोग्य होता है, जैसे चौथे घरमें चन्द्रमाका संयोग जिस दिन हुआ है उसी रोज प्रवासी अपने घर आया जानकर प्रश्नके समय तक गिनती करके भुक्त दिनोंकी संख्या बतावे कि प्रवासीको आये हुए इतने दिन बीते, यदि पूछे किस रोज आवेगा तो उक्त प्रकारसे ही भोग्य दिनोंकी संख्या कहे, जैसे कि प्रश्नकुण्डलीमें चन्द्रमा जिस किसी घरमें हो वहांसे चलकर जितने दिनोंमें पहुँचेगा उतने भोग्य दिनोंमें प्रवासी निज घरपर आवेगा इसी प्रकार और भी जानना ।। ५ ।। ६ ।।

दूरस्थजीवितप्रश्ने विचारः

तनुनाथविधू षडष्टतुर्ये यदि वा नीचभगौ न चास्तगौ वा ।।
मृतिराट्कृतमुत्सिलौ सपापौ मरणायैव सुदूरगम्य नूनम् ।। ७ ।।

लग्नेश, चन्द्रमा ६।८।४ इन घरोंमें नीचराशिगत हों और अस्तके न हों तथा अष्टमेषके साथ इत्थसाल करते हों अथवा पाप ग्रहोंसे युक्त हों तो दूरदेशगत पुरुषके मरणार्थ निश्चय ही होते हैं ।। ७ ।।

यदेन्दुः सुखाधस्थवक्रीत्थसाली शुभावीक्षितौ मृत्यवे
चेद्विवीर्याः ।। शुभाः षण्मृतिद्वादशे पापदृष्टास्तनौ द्वौ
हिमार्कौ विदेशी मृतः स्यात् ।। ८ ।।

यदि चंद्रमा चतुर्थ गृहसे नीचेके स्थानस्थित वक्री ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो और शुभ ग्रहोंसे अदृष्ट हो तो दूरस्थ पुरुषकी मृत्युके लिये समझना और जो

शुभ ग्रह ६।८।१२ घरोंमें निर्बली होकर पाप ग्रहोंसे दृष्ट हों एवं चन्द्रमा सूय लग्नमें स्थित हों तो विदेशी मर गया ॥ ८ ॥

पृष्ठोदये पापयुते त्रिकोणे पापैश्च केन्द्राष्टमषष्ठसंस्थैः ॥
विसद्दृशा मृत्युगतः प्रवासी यदा रविर्धर्मगतो गदी स्यात् ॥ ९ ॥

पृष्ठोदय लग्न त्रिकोण (१।५।९) ये घर पापग्रहोंसे युक्त हों अथवा १।४।७।१०।८।६ इन घरोंमें पाप ग्रह शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे रहित हों तो प्रवासी मर गया और सूर्य नवम स्थानमें हो तो प्रवासी रोगयुक्त है ॥ ९ ॥

यदि शुभान्वितवीक्षितशीतगुः सुखगृहोर्ध्वगखेचरमुत्सिली ॥
तदु विदेशगतः सुखकोशवान् नियतमेव हि जीवति मानवः ॥१०॥

यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होकर चतुर्थ स्थानसे ऊपरके घरमें स्थिति करनेवाले ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो विदेशगत पुरुष सुख धनसे युक्त जीता है ऐसा कहे ॥ १० ॥

यात्राप्रश्ने विचारः

उदये यदि चरराशिर्द्रेष्काणे वा नवांशके लग्ने ॥
यद्वा खेटे चरभे दशमाद्भ्रष्टे प्रवासचिंता स्यात् ॥ १ ॥

लग्नमें यदि चर राशि हो अथवा लग्नमें चर राशिका द्रेष्काण वा नवांश हो अथवा चर राशिका कोई ग्रह दशम घरसे आगेके घरमें गया हो तो पूछनेवालेको यात्राकी चिंता है ऐसा कहे ॥ १ ॥

लग्नविधू चरभे यदि सौम्यैर्दृष्टयुतौ गमने जयलब्धिः॥
तौ स्थिरभे यदि सद्युतदृष्टौ नो गमनं स्थितितश्च जयाप्तिः ॥ २ ॥

लग्न चंद्रमा चर राशिके होकर सौम्य ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हों तो पूछनेवालेका जाना होगा और वहांसे जयकी प्राप्ति होगी। यदि वे दोनों लग्न चन्द्रमा स्थिर राशिको हों और शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्ट हों तो जाना अच्छा नहीं है। अपने स्थानपर रहनेसे विजयप्राप्ति होगी ॥ २ ॥

तौ द्वितनौ यदि केवलपापैर्दृष्टयुतौ कुगतेर्विनिवृत्तिः ॥
विघ्नपराभवतो यद्वि तौ द्वौ द्व्यगगृहे शुभवीक्षितयुक्तौ ॥ ३ ॥

यदि लग्न चन्द्रमा द्विस्वभाव राशिके हों तथा केवल पाप ग्रहोंसे दृष्ट युक्त हों तो यात्रा करनेमें कुगति, विघ्न पराजय होनेसे लौट आना होगा, यदि वे दोनों लग्न चन्द्रमा द्विस्वभाव राशिके होकर शुभ ग्रहोंसे दृष्ट युक्त हों तो ॥ ३ ॥

अल्पसुखार्थकरी तदु यात्रा चेत्सखलं चरभं गमने स्यात् ॥
क्लेशरुजौ यदि च द्वितयाङ्गं जीवयुगर्द्धपथो विनिवृत्तिः ॥ ४ ॥

यात्रा करनेसे अल्प सुख, धन मिलेगा और जो पाप ग्रहोंसे युक्त चर लग्न हो तो जानेवालेको क्लेश और रोग होगा। यदि द्विस्वभाव लग्न बृहस्पतिसे युक्त हो तो आधा मार्ग चलकर लौट आना होगा ॥ ४ ॥

तनौ स्थिरे चोग्ररिपुप्रदृष्टान्विते बलिष्ठे न गमोऽतिविघ्नतः ।।
शीर्षोदये स्याद्गमनं स्थिरेऽपि पृष्ठोदये चंद्रतनू न यात्रा ।। ५ ।।

जो बलवान् स्थिर लग्न हो, पाप ग्रह वा शत्रुग्रहोंसे दृष्ट हो तो अतिविघ्न होनेसे जाना नहीं होगा और जी शीर्षोदय राशिका लग्न हो तो जाना होगा और यदि लग्न स्थिर हो तो भी जाना होगा और यदि चन्द्रमा लग्न पृष्ठोदय राशिका हो तो यात्रा नहीं होगी ।। ५ ।।

पृष्ठोदये स्थिरर्क्षे तु प्रतीपं गमनं चिरात् ।।
चरे शीघ्रं भवेद्यात्रा द्विस्वभावो विलम्बतः ।। ६ ।।

जो लग्न स्थिर तथा पृष्ठोदय राशिका हो तो बहुत कालमें उलटी यात्रा होगी अर्थात् जिधर जानेका विचार किया है उधर जाना नहीं होगा अन्यत्र जाना होगा. यदि चर लग्न हो तो शीघ्र यात्रा होगी, द्विस्वभाव हो तो विलंबसे जाना होगा ।। ६।।

नवाधिपौ लग्न पशीतगुभ्यां यदेत्थसाल्यस्ति तदैव यात्रा ।।
नवस्थिते लग्नपतौ विधौ वा द्रुतं गतिर्धर्मपतौ तनुस्थे ।। ७ ।।

नवमेशका लग्नेश वा चन्द्रमाके साथ जब कभी इत्थसाल होगा उसी समय जाना होगा और यदि लग्नेश वा चन्द्रमा नवम घरमें स्थित हों तो शीघ्र ही जाना होगा । नवमेश लग्नमें ।। ७ ।।

लग्नेश्वरे केंद्रतृतीयगे वा यात्रा भवेद्वा तनुधर्मपत्योः ।।
लग्ने यदा मुत्थसिलं गतिःस्याद्धर्मांगपौ चेद्विबलौ न यात्रा ।। ८ ।।

और लग्नेश केंद्र वा तीसरे घरमें स्थित हो तो यात्रा होगी । यदि लग्नमें लग्नेश नवमेशका इत्थसाल हो तो जाना होगा और यदि नवमेश लग्नेश निर्बल हों तो यात्रा नहीं होगी ।। ८ ।।

लग्नाधिनाथस्य च धर्मपस्य सौम्येत्थसाले च खलस्तनुस्थः ।।
केंद्रेषु केंद्राधिपतीत्थसाले शीतांशुलग्नेश्वरयोर्न यात्रा ।। ९ ।।

लग्नेश नवमेशका शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल हो और पाप ग्रह लग्नमें हो अथवा केन्द्रमें चन्द्रमा लग्नेश का केन्द्राधिपति ग्रहके साथ इत्थसाल हो और पूर्वोक्त पाप ग्रह भी लग्नमें हो तो यात्रा नहीं होगी ।। ९ ।।

चेदित्थसालः खललग्नपत्योर्न स्याद्गतिर्वा नवमेऽप्यदृष्टे ।।
धर्मेड्विधुभ्यां च खलेस्मरस्थे यात्रार्थकार्यक्षयतो न यात्रा ।। १० ।।

यदि लग्नेशका पाप ग्रहके साथ इत्थसाल हो तो जाना नहीं होगा । नौवां घर नवमेश तथा चन्द्रमासे अदृष्ट हो, पाप ग्रह सातवें घरमें हो तो जानेवालेका अर्थ कार्य नाश होनेसे जाना नहीं होगा ।। १० ।।

पापैर्दशस्थैर्न गतिः प्रदिष्टा स्वज्येष्ठबंध्वीश्वरयोर्निषेधात् ।।
लग्नस्थितैस्तैः शुभदा तु यात्रा नास्तीह वा दौर्धरिकाख्ययोगे ।। ११ ।।

जो पाप ग्रह दशवें घरमें हों तो अपने ज्येष्ठ बंधु वा स्वामीके मना करनेसे जाना नहीं होगा और यदि वे पाप ग्रह लग्नमें स्थित हों तो यात्रा शुभदायक नहीं होगी अथवा लग्नमें दुर्धरायोग हो गया हो तो ।। ११ ।।

ज्येष्ठाधिपालस्य निषेधतोऽस्मिन् पापोद्भवे तस्कररोगभीतिः ।।
त्रिषष्टलाभेषु खला रिपूणां क्षयाय यात्रासु रसातलंस्थाः ।। १२ ।।

सबसे बडे अपने घरके मुखियाके मना करनेसे जाना नहीं होगा। जो यदि लग्नमें पाप ग्रहका उदय हो तो और रोगसे भय होगा और पाप ग्रह ३।६। ११ घरोंमें हों तो शत्रुओंका नाश होता है और यात्रामें चौथे घर पाप ग्रह हों तो ।। १२ ।।

मार्गान्निवृत्त्यैव चतुष्टयस्थाः पापा हि कार्यस्य विनाशनाय ।।
चेन्मुत्थसीलं तनुधर्मपत्योर्दृष्टं शुभैर्मित्रदृशा सुखेन ।। १३ ।।

मार्गसे लौट आना होता है और जो केंद्रोंमें हों तो कार्यका विनाश होता है। यदि लग्नेश नवमेशका इत्थसाल शुभ ग्रहोंने मित्रदृष्टिसे देखा हो तो सुखसे ।। १३ ।।

जयार्थसिद्ध्यै परथाऽन्यथा स्यात्क्रूरेऽरिपे बंधरुजो व्ययेशे ।।
विलग्नपे मृत्युरथ स्मरेशे क्रूरेऽष्टपे वा रिपुचौरभीतिः ।। १४ ।।

जय और अर्थकी सिद्धि होती है। यदि अन्य प्रकारसे हो तो अन्यथा फल कहे, अर्थात् नवमेश लग्नेशका इत्थसाल न हो, पाप ग्रहोंकी वैरिदृष्टि हो तो पराजय और अर्थहानि होती है। यदि षष्ठेश द्वादशेश क्रूर हों तो बन्धन, रोग लग्नेश क्रूर हो तो मृत्यु, सप्तमेश अष्टमेश क्रूर हों तो शत्रु तथा चोरसे भय होता है ।। १४ ।।

व्ययाष्टगे तस्कररोगभीतिर्लग्नाधिपे चोग्रयुते मृतेर्भीः ।।
शुभेऽगपे वीर्ययुते शुभं स्याल्लग्नेशधर्माधिपतीत्थसाले ।। १५ ।।

यदि लग्नेश १२। में हो तो चोर और रोगसे भय और जो लग्नेश पाप ग्रहसे युक्त हो तो मृत्युभय होता है और शुभ ग्रह लग्नेश बलवान् हो तो अथवा लग्नेश नवमेशका इत्थसाल हो तो शुभ फल होता है ।। १५ ।।

चतुष्टयस्था गमनं शुभाय धने तु लाभाय सुखेऽथ सिद्ध्यै ।।
चंद्रादपीत्थं प्रवदेत्फलं वा ततो वदेद्भावफलानि तत्र ।। १६ ।।

यदि शुभ ग्रह केंद्रोंमें स्थित हों तो जाना शुभदायक होता है, दूसरे हो तो धनलाभ, चौथे हो तो सिद्धि है, इसी प्रकार चन्द्रमासे भी फल कहे, तदनन्तर भावोंका फल वर्णन करे ।। १६ ।।

सौम्ये तनौ कायसुखं सुखार्थभोज्येष्टसिद्धिश्च सुखे सुखेन ।।
जयार्थलाभश्च सुतेऽर्थसिद्धिः पदाम्बराप्तिर्मदने धनाप्तिः ।।
स्याद्वाहनाप्तिर्दशमे च कार्यसिद्धिर्भवेत्सौख्यधनार्थलाभः ।। १७ ।।

यदि लग्नमें शुभ ग्रह हों तो शरीरसुख, चौथे हों तो सुख, अर्थ, भोज्यवस्तु, मनोरथकी सिद्धि, पांचवे हों तो सुखसे विजय और अर्थलाभ, सातवें हों तो अर्थसिद्धि,

स्थान वस्त्रादिकी प्राप्ति, दशवें हो तो धन वाहनकी प्राप्ति, ग्यारहवें हो तो कार्य-सिद्धि सुख, धन, अर्थका लाभ होता है ।। १७ ।।

कदा चलिष्यतीति प्रश्ने विचारः

यदा नवेशस्तनुमेति यद्वा लग्नाधिनाथेन कृतेत्थसालः ।।
प्रष्टुस्तदा स्याद्गमनं च तत्र चरर्क्षयोगे सविशेषतः स्यात् ।। १ ।।

जिस समय नवमेश लग्नमें पहुँचेगा अथवा लग्नेशके साथ इत्थसाल करेगा तो उसी समय पूछनेवालेका जाना होगा और जो चर राशिका योग हो अर्थात् लग्न, लग्नेश और नवमेश चर राशिके हों तो विशेष करके जाना होगा ।। १ ।।

विश्रामप्रश्ने पौरयात्रायां विचारः

लग्नेन्दू चरथे ह्येकः स्थिरे द्वौ द्वितनौ त्रयः ।।
बहवो यदि वा वाच्या विश्रामा बलवद्वशात् ।। २ ।।

लग्न चन्द्रमा चर राशिके हों तो एक, स्थिरके हों तो दो, द्विस्वभावके हों तो तीन बहुत विश्राम होंगे ऐसा कहे, अथवा बलवान् ग्रहसे विश्राम कहे ।। २ ।।

लग्नभोदितनंदांशात्तुर्यसप्तनवांशके ।।
यत्र खेटो हितर्क्षादौ सुस्थो विश्रामकृद्भवेत् ।। ३ ।।

जो पूछे कि सुखके साथ विश्राम होगा वा नहीं तो विचारे कि लग्नके उदित नवांशके चौथे, सातवें, नौवें नवांशमें ग्रह मित्रकी राशि आदिका हो तो जानेवाला सुखपूर्वक विश्राम करेगा ।। ३ ।।

स च वक्री पुनर्याति योऽतीचार्याशुयानदः ।।
तन्मध्यांशेषु विश्रामाः श्रेष्ठाः सौम्यैस्तदन्तरा ।
पापैस्तदन्तरा दोषो बलवल्लग्नपात्तु वा ।। ४ ।।

यदि वह ग्रह वक्री हो तो फिर चल देगा यदि अतीचारी हो तो बहुत शीघ्र जायगा, उक्त नवांशके मध्यस्थ नवांशोंमें अर्थात् पांचवें, छठे, आठवें नवांशोंमें शुभ ग्रह हो तो मार्गमें सुखपूर्वक श्रेष्ठ विश्राम और जो पाप ग्रह हो तो दोषयुक्त दुःख-पूर्वक होंगे अथवा बलवान् लग्नेशसे विश्रामका हाल कहे ।। ४ ।।

गन्तुरभिमुखं कः करिष्यतीति प्रश्ने विचारः

तनावजेऽजो गवि गौर्नृयुग्मे दिव्यांगना कर्किणि चाग्निभृत्स्त्री ।।
प्रदक्षिणे कुक्कुटनिःस्वनं वा सिंहेमिलेदोतुरु कन्यकायाम् ।। १ ।।

मेष लग्नमें मेंढा, बकरा, वृषमें बैल, मिथुनमें दिव्य स्त्री, कर्कमें अग्नि लिये स्त्री वा दाहिनी और मुर्गेका शब्द, सिंहमें बिलाव, कन्यामें ।। १ ।।

वधूर्दिवाभीतककाकशब्दो दक्षेऽथवा तौलिनि नोनकांगः ।।
शिवारवो वा कपिलोऽलिराशौ नरश्च चापे सुनरो मृगे स्त्री ।। २ ।।
नीचा चषो वा कलशे च दासी मीने च रण्डाभिमुखं प्रयातुः ।।
नराङ्गनासंङ्गमसंयुतेऽङ्गे क्रमान्नरस्त्रीकुनरा मिलन्ति ।। ३ ।।

वधू अथवा दाहिनी ओर उल्लू और काकका शब्द, तुलामें पूर्ण अंगवाला पुरुष वा लोखडीका शब्द, वृश्चिकमें कपिल पुरुष, धनमें सुन्दर पुरुष, मकरमें नीच स्त्री वा पपिया पक्षी, कुंभमें दासी, मीनमें रांड स्त्री जानेवालेको सामने मिलेंगी। पुरुषमें स्त्रीसंज्ञक राशिका लग्न हो तो क्रमसे पुरुष, स्त्री अथवा खोटे नर मिलेंगे ऐसा कहे ॥ २ ॥ ३ ॥

कस्य समीपे यातीति प्रश्ने विचारः

इत्थसाले विधोर्भानुना भूपतेश्चामरेज्येन साधोःसितेन स्त्रियाः ॥
सौरिणा नीचपानांचसौम्येवाणिज्यलेख्यादिपांडित्यभूमीभृताम् ॥१॥

चंद्रमाका सूर्यके साथ इत्थसाल योग हो तो राजाके समीप, बृहस्पतिके साथ हो तो साधुके पास, शत्रुके साथ हो तो स्त्रीके पास, शनैश्चरके साथ हो तो नीच पुरुषोंके पास, बुधके साथ हो तो वाणिज्य करनेवाले लिखनेवाले पांडित्य करनेवाले अथवा राजाके पास ॥ १ ॥

कुजेनैति मंत्रोग्रपापेश्वराणां समीपे प्रयात्यैनिना चेशराफे ॥
विधोर्व्याश्रयेणारतःस्वेशभीतेर्दिनेशेनचोर्वीशशंकाकुलत्वात् ॥ २ ॥

मंगलके साथ हो तो उग्र पाप करनेवाले राजाओंके पास जाता है और चन्द्रमाका शनैश्चर साथ इशराफ योग हो तो विशेष आश्रयसे, मंगलके साथ हो तो अपने स्वामीके भयसे, सूर्यके साथ हो तो राजशंकासे व्याकुल होकर ॥ २ ॥

खलेनेंदुजेनार्थशून्यं प्रयातीशराफे शुभैर्मध्यमार्थाय याति ॥ ३ ॥

पाप ग्रह वा बुधके साथ हो तो विना प्रयोजन और शुभ ग्रहोंके साथ इशराफ योग हो तो मध्यम अर्थके लिये जाता है ॥ ३ ॥

गंता पुनः कदैष्यतीति प्रश्ने विचारः

यदा सप्तमपो वक्री खेटो भूयात्तदागमः ॥
इह नक्षत्रवक्रेण ग्रहवक्रं विचारयेत् ॥ १ ॥

सप्तमेश जिस रोज वक्री होगा उसी दिन जानेवालेका आना होगा, परंतु यहांपर नक्षत्रके वक्रसे ग्रहका वक्र विचारना चाहिये ॥ १ ॥

मार्गफलम्

शुभस्तनुपतिर्यत्र भवेत्तस्मात्सुखार्थदः ॥
लग्नेशेन्दू च जलभे पापार्त्तौ जलचारितः ॥ २ ॥

शुभ ग्रह लग्नेश जिस भावमें हो उसी भावसे सुखी और अर्थकी प्राप्ति होनी बतावे। यदि लग्नेश चंद्रमा जलराशिस्थ होकर पाप ग्रहोंसे पीडित हो तो जलचारी जीवसे ॥ २ ॥

सिंहे सिंहादलौ सर्पात्तुर्यपादे चतुष्पदात् ॥
नृभे तस्करवैरिभ्यां भयं चालिकुजे विषात् ॥ ३ ॥

सिंह राशिके हों तो सिंहसे, वृश्चिकके हों तो सर्पसे, चतुष्पाद राशिके हों तो चौपायेसे ,नरराशिके हों तो चोरों अथवा वैरियोंसे, वृश्चिकके मंगलके साथ हों तो विषसे ।। ३ ।।

निर्जलर्क्षे तृषाभीतिर्निरम्बुनिं पदे भवेत् ।।
शनिना पीडितश्चंद्रो जलाशयभयं वदेत् ।। ४ ।।

निर्जलराशिके हों तो निर्जल स्थानमें तृषासे भय होय । शनैश्चरसे पीडित चंद्रमा हो तो जलाशयसे भय हो ।। ४ ।।

लग्नाद्वा लग्ननाथाद्वा यावन्तः क्रूरखेचराः ।।
नवमे द्वादशे वापि तत्संख्योपद्रवाः स्मृताः ।। ५ ।।

लग्नसे वा लग्नेशसे नौवें बारहवें स्थानमें जितने क्रूर ग्रह हों उतने ही उपद्रव मार्गमें होने चाहिये ऐसा कहे ।। ५ ।।

यावन्तश्च शुभा मार्गे तावन्तः सुखभोगदाः ।।
क्रूरयुक्तेक्षितो मंदः सौम्यदृग्योगवर्जितः ।। ६ ।।

जितने शुभ ग्रह नवम घरमें हों उतने ही सुखभाग देनेवाले होते हैं और क्रूर ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट और शुभ ग्रहोंसे अयुक्त वा दृष्ट शनैश्चर ।। ६ ।।

नवस्थो रोगकृन्मृत्यौ मृत्युदः परिकीर्तितः ।।
रवौ वा मंगले मृत्यौ पथि चोरभयं मृतौ ।। ७ ।।

नवम घरमें हो तो रोग और आठवें हो तो मृत्यु करता है । सूर्य मंगल आठवें हों तो मार्गमें चोरोंसे भय हो और आठवें घर ।। ७ ।।

यावन्तः खेचरा मार्गे तावन्तः स्युरुपद्रवाः ।।
कुजोऽष्टमे समंदेक्षश्चद्रे शस्त्राहतिस्तदा ।। ८ ।।

जितने ग्रह हों मार्गमें उतने ही उपद्रव होते हैं । आठवें घर मंगल हो तथा चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो तो शस्त्रसे मृत्यु हो ।। ८ ।।

चंद्रार्कयोरष्टगयोर्यमेन सदृष्टयोः शस्त्रभयं च मार्गे ।।
रन्ध्रे सिते ज्ञे च सुखाप्तिरारे मन्दे भयं पापयुगीक्षिते स्यात् ।। ९ ।।

अष्टमस्थ चन्द्र सूर्यको शनैश्चर देखता हो तो मार्गमें शस्त्रभय हो, नववें आठवें घरमें शुक्र बुध हों तो सुखप्राप्ति और पाप ग्रहोंसे युक्त दृष्ट मंगल शनैश्चर हों तो भय हो ।। ९ ।।

लग्नलग्नेशयोः पार्श्वे यावन्तश्च शुभग्रहाः ।।
तावत्पदेषु सौख्याप्तिः परथापरथा ततः ।। १० ।।

लग्न और लग्नेशके पार्श्वमें जितने शुभ ग्रह हों उतने ही स्थानोंमें सुखकी प्राप्ति हो और जो पाप ग्रह हों तो उतने ही स्थानोंमें दुःखोपद्रव हों ।। १० ।।

रवौ वा मंगले मृत्यो पथि चौरभयं मृतौ ।।
यावन्तः खेचरास्तावच्चौराः सिंहेऽथ चेद्रविः ।। ११ ।।

सूर्य वा मंगल आठवें घर हों तो मार्गमें चोरभय हो तथा आठवें घर जितने ग्रह हों तो उतने ही चोर बताने चाहिये। यदि सिंहके सूर्य हों ॥ ११ ॥

कुजोऽष्टमे भयं छेदश्चंद्रः शस्त्राहतिस्तदा ॥
तनौ शुक्रे गुरौ वापि सुखं वा प्रबलेंऽगपे ॥ १२ ॥

और मंगल आठवें हो तो भय, अंगच्छेद हो, यदि चन्द्रमा मंगलके साथ आठवें हों तो शस्त्रसे भय हो, लग्नमें बृहस्पति वा शुक्र हो और लग्नेश बलवान् हो तो सुखकी प्राप्ति हो ॥ १२ ॥

भृगौ वा गुरौ वांगपे वैरि चोराहवेभ्यो भयं नो भवेद्वा प्रहारः ॥
पथिस्याद्भृगौवाविधौसप्तमस्थेवधूभिर्विलासोबलिष्ठेऽधिभोगः ॥ १३ ॥

यदि शुक्र वा बृहस्पति वा लग्नेश बलवान् हो तो वैरी चोरोंके युद्धसे भय वा प्रहार नहीं हो और नववें शुक्र, सातवें चन्द्रमा हो तो वधूजनोंके साथ विलास हो और जो अधिक बलवान् हों तो अधिक भोग मिले ॥ १३ ॥

स्वभे य ईज्यो गगने नृपालाद्गतार्थलाभो भृगुजे च लब्धिः ॥
चंद्रे च सौम्ये सुखप्राप्तिरुक्ता पृष्ठेदयर्क्षं खलवीक्षितं चेत् ॥ १४ ॥

जो अपनी राशिके बृहस्पति दशम स्थानमें हो तो राजासे गत द्रव्यका लाभ हो और यदि शुक्र हो तो धनकी प्राप्ति, चन्द्रमा बुध हों तो सुखप्राप्ति हो और जो पृष्ठोदय राशि पाप ग्रहोंसे दृष्ट हो तो ॥ १४ ॥

वधश्च बंधस्त्विह पापखेटा यदा तृतीये न शुभेक्षिताः स्युः ॥
मृतो गतोन्यत्र हि वा प्रवासी वान्यत्र गेहे पथ उक्तयोगे ॥
मृतो यदा पापखगा हि केंद्रे शुभैरदृष्टा मुषितः स चौरैः ॥ १५ ॥

वध और बन्धनकारक कही हैं और यदि तीसरे स्थानमें पाप ग्रह शुभ ग्रहोंसे न देखे गये हों तो प्रवासी मर गया वा कहीं अन्यत्र चला गया (मार्गका घर) नौवेमें वा अन्य स्थानमें उक्तयोग हो तो प्रवासी मर गया। यदि केंद्रोंमें पाप ग्रह शुभ ग्रहोंसे अदृष्ट हों तो वह प्रवासी मार्गमें चोरोंने लूट लिया है ऐसा कहे ॥ १५ ॥

पुरप्रवेशादकस्मात्फलमस्ति न वेति प्रश्ने विचारः

नगरप्रवेशलग्नाद्धनपो वक्री ततोऽर्थसंसिद्ध्यै ॥
न स्थित्यै त्वतिवक्री किञ्चित्स्थितिकृन्नचार्थसंसिद्ध्यै ॥ १ ॥

नगरमें प्रवेश करनेकी लग्नसे दूसरे स्थानका स्वामी ग्रह वक्री होवे तो वहांसे अर्थकी सिद्धि होगी और जो अतिवक्री हो तो उस जगह अच्छी तरह ठहरना नहीं होगा किन्तु थोडी देर ठहरना होगा और अर्थकी सिद्धि नहीं होगी ॥ १ ॥

अतिमंदगतिः शुभकार्यकरो यदि कोशपतिस्तनुकोशभवे ॥
निखिलार्थकरो यदि तिग्मकरस्त्रिनवे पुनरेति कृतार्थधनः ॥ २ ॥

अतिमंदगति हो तो कार्य सिद्ध होगा। यदि धनेश लग्न दूसरे ग्यारहवें हो तो

सकल अर्थकी सिद्धि होगी यदि सूर्य तीसरे नौवें हो तो फिर अर्थ और धनकी सिद्धि करके आवेगा ।। २ ।।

धनपतौ सखले सुखगे गदी स्वगृहमेति मृतिं लभतेऽथवा ।।
मदनगे कलहोऽत्र चतुष्टयेः हिमकरे सखले भवति क्षतिः ।।
यदि तनुनवपेन्दवो हि केंद्रे शुभदृष्टाः शुभदा न चात्र पापाः ।। ३ ।।

यदि धनेश पापग्रहयुक्त चतुर्थमें हो तो रोगी होकर अपने घर आवेगा वा मर जायगा । जो धनेश सातवें हो तो लडाई होगी और केंद्रमें पापग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो घाव वा चोट लगेगी । यदि पाप ग्रहोंसे रहित लग्नेश, नवमेश, चन्द्रमा केंद्रोंमें शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हों तो शुभ फल होगा ऐसा कहे ।। ३ ।।

इदं स्थानं कीदृगिति प्रश्ने विचारः

शुभेन चंद्रस्य यदीशराफः पापेन वा मुत्थसिलं पदं सत् ।।
यस्मादगतं चेदशुभेशराफं शुभेत्थसालो यदि वापरस्तात् । १ ।।

यदि चन्द्रमाका शुभ ग्रहके साथ इशराफ योग अथवा पापग्रहके साथ मुत्थसाल योग हो तो स्थान शुभ है । यदि चन्द्रमाका अशुभ ग्रहके साथ इशराफ योग हो तो पहिले शुभ था और शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल योग हो तो आगेको किसी समय शुभ होगा किन्तु इस समय शुभ नहीं है इस प्रकार वतलावे ।। १ ।।

अमुकपार्श्वे यामि स मिलति न वेति प्रश्ने वचारः

केंद्रस्थिते बलयुते स्मरपे स्वगेहे स्यात्संयुतिः पणफरे च नि-जोपगेहे ।। आपोक्लिमे च मिलनं न भवेत्परत्र संस्थः स यस्य मिलने व्रजति प्रवासी ।। १ ।।

सप्तमेश बलवान् होकर केंद्रमें स्थित हो तो अपनेही घर मिलेगा, पणफरमें हो तो अपने घरके समीपवाले घरमें मिलेगा और आपोक्लिम स्थानमें हो तो जिससे मिलनेको जाता है वह कहीं अन्यत्र स्थित है, नहीं मिलेगा ।। १ ।।

राज्यलाभप्रश्ने विचारः

विधुलग्नपती बलिनौ दशगौ शुभदृष्टियुतौ च तनौ दशपे ।।
पदलब्धिरथांबरपो विधुना तनुपेन हि वा कृतमुत्थसिलः ।। १ ।।

चन्द्रमा और लग्नेश बलवान् होकर दशवें घरमें शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त और दशमेश लग्नमें हो तो राज्यकी प्राप्ति होगी और दशमेशका चन्द्रमा वा लग्नेशके साथ इत्थसाल हो ।। १ ।।

अथवोच्चमुखो हि शुभोऽबरदृक् पददो यदि वा विधुलग्नखपाः ।।
शुभदृष्टयुताश्च शुभा निजतुंगमुखा नियतं पदलाभकराः ।। २ ।।

अथवा उच्चका शुभ ग्रह दशम घरको देखता हो तो राज्यकी प्राप्ति होगी, अथवा चन्द्रमा लग्नेश, दशमेश शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हों तथा शुभ ग्रह अपने उच्चके हों तो निश्चयही राज्यकी प्राप्ति होगी ।। २ ।।

बलान्विते देवगुरौ विपामरेऽथवा शुभैर्दृष्टयुते निशापतौ ।।
समौजसि स्वल्पबलेऽथवा भवेत् यदाप्तिकृच्चंक्रमनेन पृच्छतः ।। ३ ।।

अथवा बृहस्पति बलवान् उच्चके हो, नीचके न हो अथवा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट युक्त चन्द्रमा समवली वा अल्पवली हो तो पूछनेवालेको भ्रमण करनेसे राज्य प्राप्त होगा ।।३

तनौ तनुपतिः स्वक्ष तुंगे वा स्वाच्चपेक्षितः ।।
क्रमेण राज्यलाभाय यदा स्वांगपतिस्तनौ ।। ४ ।।

लग्नमें लग्नेश अपनी राशिका वा उच्चका वा अपने उच्चसे दृष्ट हो तो क्रमसे राज्यका लाभ होगा, अथवा दशमेश लग्नेश लग्नमें हो ।। ४ ।।

शुभःशेषैस्त्रिकोणा ये बलिभिः परमोन्नतिः
अचिंतिता स्वभादिस्थैः किञ्चिदूना प्रकीर्तिता ।। ५ ।।

शेष शुभ ग्रह बलवान् होकर ९।५।११ में हों तो विना विचारे परम उन्नति होगी, यदि अपनी राज्यादिमें हों तो पूर्वोक्तसे कुछ कम उन्नति होगी ।। ५ ।।

मीने तनौ जीववितान्विते बुधे भवेत्पदाप्तिश्च गुरौ चतुष्टये ।।
शीर्षोदये चंद्रवितेन्दुजायुताः सुराज्यलाभोयदिकर्मपस्तनौ ।। ६ ।।

मीन लग्नमें बृहस्पति, शुक्र, बुध हों तो राज्यप्राप्ति और यदि बृहस्पति केंद्रमें हो तथा शीर्षोदय राशियोंपर चन्द्र, शुक्र, बुध युक्त हों तो अच्छे राज्यकी प्राप्ति और यदि दशमेश लग्नमें स्थित होकर ।। ६ ।।

शुभेत्थसाली पददायकस्तथा खगः प्रहृष्टोदयगः पदप्रदः ।।
यदा खभेंऽगे तनुपःस्वतुंगगःकुजःपदाप्तिर्यदि रात्रिभूपतिः ।। ७ ।।

किसी शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो राज्यप्राप्ति, इसी प्रकार कोई ग्रह हर्षावस्थित उदयका हो तो राज्यप्राप्ति और यदि लग्नेश दशम वा लग्नमें हो मंगल उच्चका हो तो राज्यप्राप्ति और यदि चन्द्रमा ।। ७ ।।

बली हि केन्द्रे स शुभो विपामरःपदप्रदो निन्द्यविधुः कदापि नो ।।
सुरेज्यलग्नेश्वररात्रिपा यदा परार्दिता अन्यनृपः पदं हरेत् ।। ८ ।।

बली होकर केंद्रमें शुभ ग्रहों के साथ नीचका न हो तो राज्यप्राप्ति, यदि निदित चन्द्रमा हो तो कदापि राज्य नहीं मिलेगा, यदि बृहस्पति, लग्नेश, चन्द्रमा शत्रु-ग्रहों वा पाप ग्रहोंसे पीडित हों तो अन्य राजा राज्यको छीन लेगा । ।।८।।

लग्नेश्वराधिष्ठिशुभर्क्षगःशुभो राज्यार्थदोऽस्तादिगतः कदापि नो ।।
यदांगपोऽरिव्ययगोऽतिदुर्बलः खलेयशोभयलब्धमुत्सिलः ।। ९ ।।

लग्नेशयुक्त शुभ राशिपर शुभ ग्रह हो तो राज्य और अर्थकी प्राप्ति, यदि वह लग्नेश और शुभ ग्रह अस्त आदिके हों तो कदापि राज्यकी प्राप्ति नहीं होगी, यदि लग्नेश निर्बली होकर ६।१२ में स्थित हो अथवा दशमेश अष्टमेश दोनोंके साथ इत्थसाल करता हो ।। ९ ।।

चतुष्टये वा निधने खलैर्युते पदस्य लाभो नृपतेश्च बंधनम् ।।
व्यायाम्बरेशोग्रजमुत्सिलेऽबरे भवेद्धि राज्ये नृपतेश्च बंधनम् ।।
शनौ सुखे वा लघुतत्स्मरे तथा परत्र राज्याद्द्रुतमेव नश्यति ।। १० ।।

अथवा केंद्र वा आठवां घर पाप ग्रहोंसे युक्त हो तो राज्यप्राप्ति हो जाने बाद राजाका बन्धन हो जायगा और व्ययेश दशमेशका शनैश्चरके चतुर्थ वा सप्तममें हो तो वह राज्य थोडा मिलेगा किंतु फिर राजा उस राज्यसे शीघ्र ही विनष्ट हो जायगा ऐसा कहे ।। १० ।।

नृपमंत्रिप्रीतिप्रश्ने विचारः

शुभदृशा तनुसप्तपमुत्सिले नृपतिमंत्रिहितत्वमनुत्तमम् ।। ११ ।।

यदि शुभ दृष्टिसे लग्नेश सप्तमेशका इत्थसाल हो तो राजा और मंत्रिमें बहुत अच्छा प्रेम है ।। ११ ।।

राज्यं चरं स्थिरं वेति विचारः

दशपतौ स्वगृहे शुभवीक्षिते सुविधुमुत्थसिले यदि वा गुरौ ।।
निजभतुंगचतुष्टयगेऽथवा दशपमुत्थसिलेतु पदं स्थिरम् ।। १ ।।

यदि दशमेश अपने घरमें शुभ ग्रहसे दृष्ट हो अथवा पूर्ण चन्द्रमाके साथ इत्थसाल करता हो अथवा बृहस्पति अपनी राशिक वा उच्चके होकर केन्द्रमें हो अथवा दशमेशके साथ इत्थसाल करते हों तो राज्य स्थिर रहेगा ।। १ ।।

भवति तत्परथापरथा यदाम्बुनि खलग्नपचंद्रमुसरिफम् ।।
कुचलने तनुराज्यपरिच्युतिर्यदि वपुःपतिनीचपमुत्सिलम् ।।२।।

यदि इस पूर्वोक्त योगसे अन्यथा योग हो तो राज्य स्थिर नहीं रहेगा, दूसरे राजाके वशमें हो जायगा । जो चतुर्थ घरमें स्थित दशमेश लग्नेशका चन्द्रमाके साथ इत्थसाल योग हो तो खोटे चलनसे राज्य निकल जायगा । यदि लग्नेशके नीचेशका इत्थसाल चन्द्रमाके साथ हो तो भी ।। २ ।।

कुचलनात्पदहानिरथो खपे पदहर्तिर्निजनीचपमुत्सिले ।।
यदि नवत्रिगतस्तनुपस्त्रिधर्मपतिमुत्थसिली नृपतारकः ।।
यदाङ्गेश्वरस्त्र्यंबकनाथेशराफी भवेत्केन्द्रगः प्राप्नुयाद्भ्रष्ट राज्यम् ।।३।।

कुचलनसे राज्यकी हानी होगी, अथवा दशमेशका अपने नीचेशके साथ इत्थसाल हो तो राज्यकी हानि होगी । यदि लग्नेश नवम तृतीयमें स्थित तृतीयेश नवमेशके साथ इत्थसाल करता हो तो राजाकी वृद्धि होगी । यदि तृतीयेश नवमेशके साथ इशराफ योग करता हुआ लग्नेश हो तो रजाको भ्रष्ट (गये हुए) राज्यकी प्राप्ति होगी ।। ३ ।।

मम राजदर्शनं भविष्यति न वेति प्रश्ने विचारः

लग्नेशेन दिवाकरेण यदि वा खेशेत्थसालं तदा
भूयाद्भूपतिदर्शनं सबहुमानं लग्नलाभेशयोः ।।

अन्योन्यं हितदृक् तथा मुथसिलं वा भूपतोऽर्थागमो
वैरालोकनतश्चिरेण यदि केन्द्रेऽगायपेन्दू ध्रुवम् ॥१॥

लग्नेश सूर्यके साथ दशमेश का इत्थसाल हो तो राजदर्शन वहुमानके साथ होगा और जो लग्नेश लाभेशकी परस्पर मित्रदृष्टि हो अथवा दोनोंका इत्थसाल हो तो राजासे अर्थका लाभ होगा, यदि दोनोंकी परस्पर वैरदृष्टि हो तो वहुत कालमें राजदर्शन होगा और जो केंद्रस्थित लाभेशका चन्द्रमाके साथ ॥ १ ॥

कंबूलं स्थिरभे चिरान्नरपतेराप्तिश्चरे चंद्रमा
वारैकं द्वितनावुपर्क्षवशतः स्याच्चामरेज्येऽबले ॥
आशाहानिरथात्र सोजसि गुरौ केन्द्रे निजोच्चे नृपा-
त्पूर्णाशा विपदा स्वभे तु दलिता हद्दे त्वकेंद्रे लघुः ॥ २ ॥

कंवूलयोग स्थिर राशिपर हो तो राजासे वहुत कालमें लाभ होगा । यदि चन्द्रमा चर राशिका हो तो एक वार राजदर्शन होगा । यदि द्विस्वभाव राशिका हो तो समीपकी राशिके वशसे राजदर्शन कहे, यदि बृहस्पति निर्बल हो तो आशाकी हानि, यदि बृहस्पति वलवान् होकर केंद्रमें उच्चके हों तो राजासे वहाँसे आशा पूरी होगी, यदि अपनी राशिके हों तो चौथाई कंम और अपने हद्दामें हो तो आधी और केंद्रवर्जित स्थानमें हो तो वहुत थोडी आशा सिद्ध होगी ॥ २ ॥

जयपराजयप्रश्ने विचारः

तनुसप्तदशोपगाः शुभाश्चेत्पुरनाथस्य जयाय चेत्कुजार्की ॥
नवमे किल पृच्छकस्य नेष्टौ ज्ञसितेज्या इह तज्जयाय नूनम् ॥ १ ॥

लग्न ,सप्तम, दशममें शुभ ग्रह हों तो पुरके राजाकी जय और जो मंगल शनैश्चर नवम घरमें हों तो पूछनेवालेकी पराजय और जो नवम घरमें बुध, शुक्र, बृहस्पति हों तो पूछनेवालेके पुरके राजाकी जय होगी ॥ १ ॥

त्रिसुखसुतरिपुस्त्रीमृत्युगाः सत्वगाश्चेत्पुरनृपतिविजयदाः
शेषगा यातृराज्ञः ॥ विजयकृत उतान्ये तु प्रभंगं दिशन्ति
व्ययभवदशपापाश्चापि यातुर्भयाय ॥ २ ॥

३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ इन स्थानोंमें यदि शुभ ग्रह हों तो पुरके राजाको विजय देते हैं और जो शेष स्थानोंमें हों तो जानेवाले राजाकी विजय करते हैं । पाप ग्रह जिसके घरोंमें हो उसका भंग करते हैं । १२ । ११ । १० में पाप ग्रह हो तो जानेवाले राजाको भय होता है ॥ २ ॥

शुभा नृक्षे केंद्रे यदि शुभदृशा सन्धिरथ च वपुर्लग्नेशेशावुदि-
तबलिनौ पौरजयदौ ॥ तनौ नृक्षे सौम्या व्ययभवगताश्चा-
पिनृपयोर्भवेत्संधिः पापैर्द्वितनुभगतैः पूर्णकलहः ॥ ३ ॥

यदि शुभ ग्रह पुरुषसंज्ञक राशियोंपर केंद्रोंमें स्थित हों और उनको शुभ ग्रह ही

देखते हों तो दोनोंमें मिलाप हो जाता है । अथवा लग्नेश और लग्नेशका स्वामी यह उदय होकर बलवान् हों तो पुरके राजाको विजय देते हैं और जो लग्नमें पुरुषसंज्ञक राशि हों और शुभ ग्रह १२ । ११ भवनमें हों तो दोनों राजाओंका मिलाप हो जाता है और जो पाप ग्रह द्विस्वभाव राशियोंपर हों तो पूरी लड़ाई होती है ।। ३ ।।

यदा स्त्रीस्त्रीशेशावुदितबलिनौ यायिजयदौ यदा लग्नस्त्री
शोर्मुथसिलमयुद्धं हितदृशा ।। यदा दृष्टचा हीनं तनुमदप-
मुत्सरिफमलं रणश्चेल्लग्नेशश्चरमदगृहे वीर्यरहितः ।। ४ ।।

यदि सप्तमेश और सप्तमेशका स्वामी ग्रह उदित और बली हों तो यायी राजाको विजय देते हैं । यदि लग्नेश सप्तमेशका मित्रदृष्टिसे इत्थसाल योग हो तो युद्ध नहीं होता और जो मित्रदृष्टिसे रहित लग्नेश सप्तमेशका इत्थसाल हो तो पूर्ण युद्ध हो और यदि लग्नेश चर राशिका होकर सप्तम ग्रहमें निर्बल हो तो ।। ४ ।।

पुराधीशो वीर्योद्यमविरहितश्चेत्स्मरपतिश्चरे लग्ने यायी तदु
गतसुवीर्योद्यमबलः ।। स्थिरे लग्ने लग्नेट् पुरपतिरलं वीर्यसु-
बलोद्यमी चैवं स्त्रीशो मदन उ परो वीर्यसहितः ।। ५ ।।

पुरका राजा पराक्रम तथा उद्यमसे रहित जानना और यदि सप्तमेश चर राशिके लग्नमें स्थित हो तो जानेवाला राजा वीर्य उद्यम बलसे रहित जानना और जो लग्नेश स्थिर लग्नमें स्थित हो तो पुरका राजा पूर्ण वीर्य, सुन्दर, बल और उपयुक्त जानना इसी प्रकार सप्तमेश सप्तम स्थानमें हो तो जानेवाला राजा वीर्ययुक्त जानना ।। ५ ।।

कर्मेट् तनौ स्थायिबलं सहायं तुर्येट् स्मरे यायिबलं च तद्वत् ।।
चेदम्बरात् षट्कगृहेषु सौम्येंदुलग्नपाः पौरजयाय नूनम् ।। ६ ।।

यदि दशमेश लग्नमें हो तो स्थायी राजाकी सेना सहाय करनेवाली और जो चतुर्थेश सप्तममें हो तो यायी राजाकी सेना सहाय करनेवाली है । यदि दशम स्थानसे लेकर छः घरोंमें शुभ ग्रह, चन्द्रमा और लग्नेश हों तो पुरके राजाकी जय ।। ६ ।।

चेच्छेषषट्के विधुसप्तमेशसौम्यास्तदा यायिपतेर्जयाय ।।
भौमेन्दुमन्दार्कतमांसि लग्ने त्रिभिश्चतुर्भिर्यदि वा प्रयायी ।। ७ ।।

और जो शेष छः घरोंमें चन्द्रमा, सप्तमेश, शुभ ग्रह हों तो यायी राजाकी विजय निश्चय होती है और यदि मंगल, चन्द्रमा, शनि सूर्य, राहु ये सब, अथवा इनमेंसे तीन वा चार ग्रह लग्नमें हों तो यायी राजा ।। ७ ।।

पौरं द्रुतं हन्ति मदे च पौरः प्रयायिनं चेद् भृगुजीवसौम्याः ।।
लग्ने बलाढचा यदि वेज्यशुक्रौ लग्ने पुरेड् यायिबलं निहन्ति ।। ८।।

पुरस्थायीको मार देता है और जो ये पूर्वोक्त ग्रह सातवें घरमें हों तो पुरस्थायी राजा यायीको मार देता है । यदि शुक्र, बृहस्पति, बुध ये तीनों अथवा बृहस्पति शुक्र दोनों बलवान् होकर लग्नमें बैठे हों तो पुरस्थायी राजा यायी राजाकी सेनाको मार देता है ।। ८ ।।

सौम्येन्दुशुक्रामरपूजितानां सर्वैस्त्रिभिर्वा स्मरगबलाढ्यैः ।।
यायी द्रुतं स्थायिनमेव हन्यात्सुखांबरस्थैश्च शुभैर्हि संधिः ।। ९ ।।

बुध, चन्द्र, शुक्र, बृहस्पति ये सब अथवा इनमेंसे तीन ग्रह बलवान् होकर सातवें घरमें बैठे हों तो यायी राजा स्थायीको शीघही मार देता है और जो चौथे दशवें घरमें शुभ ग्रह हों तो दोनोंमें मिलाप हो जाता है ।। ९ ।।

तनौ च केत्वर्ककुजैः स्मरेंऽगेण्मंदेंदुभिर्वात्र विपर्ययस्थैः ।।
सद्भिःप्रवीर्यैरुभयोः प्रणाशो यदा तनौ चंद्रकुजेत्थसालः ।। १० ।।

लग्नमें केतु, सूर्य, मंगल और सातवें घरमें लग्नेश ,शनैश्चर, चन्द्रमा अथवा विपर्यस्थ हों अर्थात् लग्नमें लग्नेश, शनि, चन्द्र और सातवें घरमें केतु, सूर्य, मंगल हों और शुभ ग्रह बलवान् हों तो दोनोंका नाश हो और लग्नमें चन्द्रमा, मंगलका इत्थसाल हो तो ।। १० ।।

पौरस्य बंधो निधनं रणे वा स्मरेऽत्र योगे किल यायिमृत्युः ।।
तदा तनौ रात्रिपती रविर्वा खलेत्थसाली दृढसंगराय ।। ११ ।।

युद्धमें पुरस्थायी राजाका बंधन वा मरण हो और जो सातवें घरमें यह योग हो तो यायी राजाकी मृत्यु हो । यदि लग्नमें चन्द्रमा वा सूर्यका पाप ग्रहके साथ इत्थ-साल योग हो तो बडा प्रवल युद्ध हो ।। ११ ।।

वक्रे बलोने प्रबले त्ववक्रे केंद्रे शनौ दैत्यसुते रणश्च ।।
स्वर्क्षे स्वतुंगे च धरासुतार्कौ चंद्रोऽपि खेयावदहो रणः स्यात् ।। १२ ।।

और वक्री ग्रह निर्बली और अवक्री बलवान् हो, केंद्रमें शनि शुक्र हों तो भी युद्ध हो, यदि अपनी राशिके वा उच्चके मंगल सूर्य हों और चन्द्रमा दशवें हो तो जबतक दिन रहे तबतक युद्ध हो ।। १२ ।।

केन्द्रे स्थिरे भूमिसुते रणोऽल्पो द्व्यंगे चरेऽतीव लघुः प्रदिष्टः ।।
दिवाकरोपग्रहमुत्थसीलं स्यात्सैनिकानां मरणं च संधिः ।। १३ ।।

केंद्रमें स्थिर राशिका मंगल हो तो अल्प, द्विस्वभाव, चरमें हो तो अत्यंत अल्प युद्ध हो और सूर्यका उपग्रह केतु, राहुके साथ इत्थसाल हो तो योद्धाओंका मरण होनेके वाद मिलाप हो जावे ।। १३ ।।

लग्ने स्थिरे स्वोच्चभगैर्बलिष्ठैः सद्भिर्विपापैश्च शुभे विलग्ने ।।
शुभेत्थसाले हिमगो रणश्चेदवाप्तिकोशौ शुभदृष्टयुक्तौ ।। १४ ।।

लग्न स्थिर हो तथा शुभ ग्रह अपनी उच्च राशिके होकर बलवान् हों, पाप ग्रहोंसे रहित हों, शुभ ग्रह लग्नमें हो, चंद्रमाका शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल हो तो युद्ध होवे । यदि ग्यारहवां, दूसरा घर शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो तो ।। १४ ।।

पौरस्य सेनोपचयश्च रन्ध्रे सुते शुभैर्दृष्टयुते च यातुः ।।
लग्नस्वकर्मायगतैश्च सौम्यैः पौरस्य नूनं प्रबलः सहायी ।। १५ ।।

पुरके राजाकी सेनाका बल बढता है और आठवां ,पांचवां घर शुभ ग्रहोंसे दृष्ट युक्त हों तो यायी राजाकी सेनाका बल बढता है। लग्न, द्वितीय, दशम, एकादश घरोंमें शुभ ग्रह हों तो पुरस्थायी राजाका सहायक बलवान् होता है ।। १५ ।।

तनुपे मृतौ मृतिपमुत्थसिले नगराधिपस्य च धने स्मरपे ।।
धनपेत्थसालिनिपरस्य मृतिस्तनुपोंऽत्यगश्चरगृहे प्रबलः ।। १६ ।।

लग्नेश आठवें स्थित होकर अष्टमेशके साथ इत्थसाल करता हो तो नगरके राजाकी मृत्यु हो और जो सप्तमेश दूसरे घरमें स्थित होकर धनेशके साथ इत्थसाल करता हो तो यायी राजाकी मृत्यु हो और लग्नेश बलवान् होकर बारहवें घरमें चरराशिगत हो तो ।। १६ ।।

पुरपो विनश्यति विजित्य पुरः स्मरपो यदैवमितरः क्षयात् ।।
तनुनाथसप्तमपमध्यगतः प्रबलः खगश्च निजवर्गनरात् ।। १७ ।।

पुरका राजा मृत्युको प्राप्त होता है और यदि सप्तमेश बलवान् होकर बारहवें घरमें चरराशिगत हो तो यायी राजा पुरको जीतकर मृत्युको प्राप्त होता है। लग्नेश और सप्तमेशके मध्यमें जो कोई बलवान् हो वह अपने वर्गके पुरुषद्वारा ।। १७ ।।

नृपयोश्च संधिकृदिनो नृपतेर्विधुरत्र कंचुकिन इन्दुभवः ।।
बुधलेखतोऽप्यवनिजोनृपतो भृगुजः स्त्रियाः प्रवरतश्चगुहः ।। १८ ।।

दोनों राजाओंमें संधि करा देता है अर्थात् जो सूर्य मध्यमें हो तो राजासे, चंद्रमा हो तो कंचुकी (अन्तःपुरपाल) से, बुध हो तो पंडित चतुर पुरुषके लेखसे, मंगल हो तो राजासे, शुक्र हो तो स्त्रीसे, राहु हो तो प्रवरसे ।। १८ ।।

जरिस्त्रियाः शनिरथांगपतिर्वपुषि स्मरेशकृतमृत्थसिलः ।।
तदुयायिराड् भवतिसंधिकरोमदनेऽपिवाखसुखयोस्त्वपरः ।। १९ ।।

शनि हो तो वृद्ध स्त्रीसे सन्धिप्रबन्ध हो। यदि लग्नमें स्थित होकर सप्तमेशके साथ इत्थसाल करता हो तो यायी राजा संधि कर लेता है। यदि लग्नेश सातवें, दशवें, चौथे घरमें स्थित होकर सप्तमेशके साथ इत्थसाल करता हो तो स्थायी राजा संधि कर लेता है ।। १९ ।।

समता द्वयोरिह खले मदने सबलेंऽत्यगे च पुरपो हि धनम् ।।
अपराय यच्छति विलोमतः किल यायिपः पुरमवाप्य पुनः ।। २० ।।

यदि सातवें घरमें पाप ग्रह हो तो दोनों राजाओंमें समता होजाती है, यदि बलवान् पाप ग्रह बारहवें घरमें हो तो पुरका राजा यायीको धन देता है और इससे विलोम हो अर्थात् छठे घरमें वलवान् पाप ग्रह हो तो यायी रजाजा पुरमें पहुँकर।।२०।।

प्रददाति नागरनृपाय खगः प्रबलोऽत्र यस्य फलदो न परः ।।
व्ययगेंऽगपे पुरपतिर्मदपेऽरिगते परश्च हि पलायनकृत् ।। २१ ।।

नगरके राजाको धन देता है। उक्त स्थानमें जिसका जोग्रह बलवान् हो वह ही ग्रह फलदायक होता है अन्य नहीं। लग्नेश बारहवें हो तो पुरका राजा और सप्तमेश छठे हो तो यायी राजा भाग जाता है ।। २१ ।।

अथ चारप्रश्ने विचारः

सुर्येत्थसाले विधुजे सुगुप्ताश्चाराः स्मृता भूमिसुते शराफात् ।।
ग्रहाःशशांकेन खलेन युक्तास्तदान्यवेषाः प्रचरन्ति चाराः ।। १ ।।

चन्द्रमाका सूर्यके साथ इत्थसाल हो तो चार पुरुष (सुखविर) छिपे हुए हैं और चन्द्रमाका मंगलके साथ इशराफ योग हो और ग्रह चंद्रमा पाप ग्रहोंसे युक्त हो तो चार पुरुष अन्यके वेषमें विचरते हैं ऐसा कहे ।। १ ।।

दिग्विजयप्रश्ने विचारः

सिते तनौ सुते गुरौ सुखे बुधे त्रये रवौ ।।
परैः खगभवे नृपो विजित्य चैत्यरीन् द्रुतम् ।। २ ।।

लग्नमें शुक्र, पांचवें बृहस्पति, चौथे बुध, तीसरे सूर्य, शेष ग्रह ग्यारहवें हों तो राजा शीघ्रही वैरियोंको जीतकर स्थानपर आ जाता है ।। २ ।।

तनौ कुजार्कौ च गुरुस्तनूजे लाभेऽथ खे वित्सितत्तो रविः खे ।।
प्रष्टुर्जयः संगरतोऽत्र योगे सितेऽष्टमे द्राग्वशमेति शत्रुः ।। ३ ।।

लग्नमें मंगल, शनि, पांचवें बृहस्पति, ग्यारहवें बुध, दशवें शुक्र वा सूर्य हो तो पूछनेवालेकी युद्ध करनेसे विजय होती है । इसी योगमें जो शुक्र आठवें हो तो शत्रु शीघ्र ही वशमें आ जाता है ।। ३ ।।

शशिनि कर्मणि लग्नगते गुरौ रिपुगते तरणौ जयलब्धयः ।।
उदयिवैरिगुरौ भृगुजेऽष्टमे शशिनि वा तरणौ जयलब्धयः ।। ४ ।।

चंद्रमा दशवें, बृहस्पति लग्नमें ,सूर्य छठे होवे तो जयप्राप्ति होती है, देवताओंके वैरियोंके गुरु शुक्र वा चंद्रमा, सूर्य आठवें हों तो जयप्राप्ति होती है ।। ४ ।।

रवौ भवेऽम्बरे कुजे त्रये शनौ विधौ रिपौ ।।
तनौ परेषु पृच्छको जयार्थलाभवान् भवेत् ।। ५ ।।

सूर्य ग्यारहवें, मंगल दशवें, शनि तीसरे, चंद्रमा छटे, शेष ग्रह लग्नमें हों तो पूंछनेवालेको जय तथा द्रव्यका लाभ होता है ।। ५ ।।

आरार्कौ प्रबलिगुहो भवे सितज्ञौ लग्ने श्रीजयसुखलाभवाँस्तदा स्यात् ।। शुक्रेऽस्ते शशिनि मृतौ च केंद्रभागे तुर्येशे भवति जयर्द्धिसिद्धिलाभः ।। ६ ।।

मंगल सूर्य और बलवान् राहु ग्यारहवें ,शुक्र बुध लग्नमें हो तो पूछनेवालेको लक्ष्मी, जय, सुखका लाभ होता है । शुक्र सातवें, चंद्रमा आठवें, चतुर्थेश केंद्रमें हो तो जय और ऋद्धि सिद्धिका लाभ होता है ।। ६ ।।

वपुषीज्यशुक्रविधुजैस्त्रितये शशिभौमभानुभिरलं विजयः ।।
तनुगे गुरौ दशमगे तरणौ मदने विधौ भुवि बुधेऽर्थजयौ ।। ७ ।।

लग्नमें बृहस्पति, बुध, शुक्र और तीसरे चंद्रमा, सूर्य हों तो पूर्ण विजय होती है। लग्नमें बृहस्पति, दसवें सूर्य, सातवें चन्द्र, चौथे बुध हो तो अर्थ और जयका लाभ होता है ॥ ७ ॥

पापैर्भवांबरगतैर्वपुषीज्यशुक्रौ युद्धं जयाय यदि जीवसितौ विलग्ने। सूर्ये चरे रिपुगृहे बलिनोः कुजार्क्योर्विच्छुक्रयो-र्व्ययगृहे विजयाप्तिलाभः ॥ ८ ॥

पाप ग्रह ग्यारहवें, दशवें, बृहस्पति, शुक्र लग्नमें हों तो युद्धमें विजय होती है। यदि बृहस्पति, शुक्र, लग्नमें, सूर्य चर राशिके हों, छठे घरमें बली होकर मंगल, शनैश्चर, बारहवें बुध शुक्र हों तो विजय और द्रव्यका लाभ हो ॥८ ॥

तनौ गुरौ भास्वति लाभसंस्थे मंदे तृतीये च कुजे रिपुस्थे ॥
चंद्रे सुखस्थे दशमे भृगौ च बुधेऽपि खे प्रष्टुरलं जयः स्यात् ॥ ९ ॥

लग्नमें बृहस्पति, ग्रारहवें सूर्य, तीवरे शनि, चौथे चंद्रमा, दशवें शुक्र तथा बुध हों तो पूछनेवालेकी परिपूर्ण जय होती है ॥ ९ ॥

जीवे तनौ स्मरविधौ बुधशुक्रतः खे तुर्येऽथवा त्र्यरिभवेषु ख-लेषु तद्वत् ॥ खे शीतगौ भृगुविदोः सुखपुत्रयोः खे तुर्येऽथवा त्र्यरिभवेषु खलैर्जयः स्यात् ॥ १० ॥

बृहस्पति लग्नमें, चंद्रमा सातवें अथवा बुध शुक्रसे दशवें वा चौथे हों तथा ३। ६। ११ वें पाप ग्रह हों तो भी पूर्ण जय होती है। चन्द्रमा दशवें, शुक्र बुध चौथे, पांचवें अथवा दशवें, चौथे हों और पाप ग्रह ३। ६। ११ में हों तो विजय होती है ॥ १० ॥

खे शीतगौ भृगुविदो सुखपुत्रयो षष्ठेऽर्के गुरौ वपुषि चारिभवे कुजार्क्योः ॥ प्रष्टुर्जयो यदि गुहः प्रथमे शनिः खेऽर्कारौ सुखे बुधसितौ विजयस्वराज्यम् ॥ लग्ने सितेऽम्बुनि बुधौ मदने सुरेज्ये भौमे भवे त्रयशनौ जयवाहराज्यम् ॥ ११ ॥

चन्द्रमा दशवें शुक्र बुध चौथे, पांचवें, सूर्य छठे बृहस्पति लग्नमें ,मंगल शनि छठे ग्यारहवें हों तो पूछनेवालेकी जय होती है। यदि राहु शनि लग्नमें ,सूर्य मंगल दशवें, बुध शुक्र चौथे हों तो विजय, धन, राज्यकी प्राप्ति होती है। लग्नमें शुक्र चौथे बुध, सातवें बृहस्पति, ग्याहवें मंगल, तीसरे शनि हो तो जय, वाहन और राज्यका लाभ होता है ॥ ११ ॥

गुहो लग्ने स्वोच्चेऽतिरिपुगतयोर्मंदकुजयोः स्वतुंगेऽर्केलाभे बुध-विधुसितैः खे पतिजयः ॥ वपुर्नाथेन्दू चेच्छुभमुथसिले वित्त-सुखदौ प्रयातुर्वैलोम्यादतिभयकरौ तौ ह्यरिकुलात् ॥ १२ ॥

उच्चका राहु लग्नमें, शनि मंगल अतिशत्रुके घरमें उच्चगे सूर्य ग्यारहवें, बुध चंद्र शुक्र दशवें हों तो राजाकी विजय होती है और लग्नेश चंद्रमा शुभ ग्रहके इत्थ-

सालमें हों तो जानेवाले राजाको धन और सुख देते हैं और विलोम होनेसे अर्थात् लग्नेश चंद्रमाका पाप ग्रहके साथ इत्थसाल हो तो शत्रुकुलसे अतिभय पहुँचता है ।। १२ ।।

व्यधिकृति कुजे धनस्थे नृपपृष्ठबलस्य कष्टमत्र भवेत् ।।
वादानिलतोभीतिः सौरे चोराम्बुतोऽर्कके़ऽग्निरणात् ।। १३ ।।

अधिकारहीन मंगल दूसरे घरमें हो तो राजाकी पृष्ठरक्षक सेनाको कष्ट होता है और दूसरे शनि हो तो विवाद और पवनसे, सूर्य हो तो चोर, जल, अग्नि और युद्धसे भय होता है ।। १३ ।।

अधिकृतकुजे च कोशे नरमृत्युभयं धनेशनीचेऽस्ते ।।
यानं विफलं भंगं यदि कुजचंद्रार्कयोऽगधर्मसुते ।। १४ ।।

यदि अधिकारयुक्त मंगल दूसरे हो तो मनुष्योंको मृत्युका भय, हो और जो धनेश नीच वा अस्तका हो तो राजाका जाना निष्फल तथा भंग होता है । यदि मंगल चन्द्र शनि लग्न, पंचम, नवममें हों तो ।। १४ ।।

प्रष्टुर्भंगाय यदांगे मंदेन्दू कुजेक्षितौ मृत्युः ।।
यदि मंदारौ मृत्यौ सूर्यो लग्ने तदा रणे मृत्युः ।। १५ ।।

पुछनेवालेका भंग करते हैं । यदि लग्नमें शनि और चन्द्र मंगलसे दृष्ट हों तो मृत्यु हो। यदि शनि, मंगल आठवें और सूर्य लग्नमें हों तो युद्धमें मृत्यु हो ।। १५ ।।

अत्र व्ययमृत्युस्थे चंद्रे सूर्यान्विते रणे मृत्युः ।।
विधुबुधभौमा मदने यातुः पृष्ठे रणे नाशः ।। १६ ।।

और इसी योगमें बारहवें, आठवें चंद्रमा और सूर्य हों तो युद्धमें मृत्यु हो और चंद्र, बुध, मंगल सातवें हों तो जानेवाले राजाका पीछे युद्धमें नाश हो ।। १६ ।।

यदारशुक्रौ वपुषोऽरिवृद्धि क्षुधाभयं चेत्तनुचंद्रजीवौ ।
मंदेक्षितौ स्यात्समरे प्रभंगो यदा खलाः पंचमलग्नसंस्थाः ।। १७ ।।

यदि मंगल, शुक्र लग्नमें हों तो शत्रुओंकी वृद्धि और क्षुधासे भय हो और यदि लग्नमें चन्द्रमा बृहस्पति, शनैश्चरसें दृष्ट हों तो युद्धमें प्रभंग हों । यदि पाप ग्रह पांचवें लग्नमें स्थित हों तो ।। १७ ।।

प्रष्टू रणे पुत्रमृतिर्यदास्ते मृत्यो रविः शीतकरस्तनौ वा ।।
रिपोर्भयात्रासवधोग्रबंधा यदा खला द्वित्रिचतुष्टयस्थाः ।। १८ ।।

युद्धमें पूछनेवालेके पुत्रकी मृत्यु हो । यदि सूर्य और चन्द्रमा सातवें ,आठवें वा लग्नमें हों तो शत्रुके भयसे त्रास, वध, या उग्र बन्धन हों । यदि पाप ग्रह दूसरे, तीसरे या केंद्रमें हों तो ।। १८ ।।

सौम्या विवीर्या हिमगुर्मृतिस्थो रणे प्रयातुर्वधबंधभीतिः ।।
सद्भिर्बलिष्ठै सुतधर्मकेंद्रेऽनिष्टेऽपियोगे समवत्फलं स्यात् ।। १९ ।।

और शुभ ग्रह वीर्यहीन हों, चन्द्रमा आठवें हो तो जानेवालेका वध वा बंधनका भय

हो । शुभ ग्रह बलवान् होकर ५।९।१।४।७।१० में बैठे हों तो अनिष्ट योग होनेपरभी समवत्फल (न बहुत अच्छा न बहुत अनिष्ट फल) होता है ।। १९ ।।

शीतांशौ मदगे रवौ तनुगते मंदारयोरष्टमे,
सौम्ये भ्रातरि मंत्रिणा सह गृहीत्वा हन्यते भूपतिः ।।
सौम्याका तनुगौ स्मरे कुजविधू भंगः स्वदेशे यदा,
द्यूने मंदकुजौ तनौ रविविधू युद्धे प्रभंगस्तदा ।। २० ।।

चन्द्रमा सातवें ,सूर्य लग्नमें, शनि और मंगल आठवें, शुभ ग्रह तीसरे हों तो राजा मंत्री समेत पकडकर मारा जाता है । शुभ ग्रह और सूर्य लग्नमें, मंगल और चन्द्रमा सातवें हों तो अपने देशमें भंग हो । यदि सातवें शनि और मंगल, लग्नमें सूर्य और चन्द्रमा हों तो भी युद्धमें भंग हो ।। २० ।।

अर्कार्क्यारैः स्मरायात्मजनवमगतैर्लग्नगे शीतभानौ,
प्रष्टा शत्रुं निहन्यात्सचिवपुरयुतं चेद् ज्ञशुक्रौ रिपुस्थौ ।।
भानुर्मृत्यौ कुजेन्दू बपुषि ससचिवार्यृक्षयोगेऽर्कमंदौ,
भौमेक्षाप्तौ त्वशेषैर्बलिभिरिह शुभैर्वाहिनीनाथनाशः ।। २१ ।।

सूर्य शनि, मंगल ७।११।५।९ में हों, चन्द्रमा लग्नमें हो तो पूछनेवाला शत्रुको पुर और मन्त्रीसमेत मार देता है । यदि बुध और शुक्र छठे, सूर्य आठवें; मंगल चंद्रमा लग्नमें, सूर्य और शनि मंत्रीसहित शत्रुकी राशिपर मंगलकी दृष्टिसे युक्त हों और सब शुभ ग्रह बलवान् हों तो सेनापतिका नाश हो ।। २१ ।।

यायिनां शुभाशुभप्रश्ने विचारः

चरोदये शुभाः शुभाय यायिना परत्रनो ।।
स्थिरोदयेऽपि वा शुभं निजेशदृष्टियोगतः ।। १ ।।

चर लग्नमें शुभ ग्रह हों तो जानेवालेको शुभके लिये अन्यथा अशुभके लिये होते हैं और जो स्थिर लग्नमें निजेशसे दृष्ट हों तो भी शुभ फल होता है ।। १ ।।

यातुर्निवृत्तिप्रश्ने विचारः

सर्वाधिबलः खेटो यन्मितपदगो भवेत्समायातः ।।
तन्मितमासैर्यातुर्विन्निवृत्तिश्चात्र चरभागे ।। १ ।।

सबसे अधिक बली ग्रह जौनसे घरमें हो उतनेही महीनोंमें जानेवाला आवेगा, अथवा बलवान, ग्रह चर राशिके नवांशमें हो तो पूर्वोक्त महीनोंमें ही आवेगा ।। १ ।।

स्थिरभागे विनिवृत्तिः सा द्विगुणा द्व्यंगभागगे त्रिगुणा ।।
यदि वा स्मरपतिवक्रे पुनरावृत्तिः प्रयातुरुद्दिष्टा ।। २ ।।

यदि स्थिर राशिके नवांशमें हो तो उससे दूने और द्विस्वभाव राशिके नवांशकमें हो तो पूर्वोक्त माससंख्याके तिगुने महीनोंमें आवेगा । अथवा जब कभी सप्तमेश वक्री होगा उसी समय जानेवालेका लौटना होगा ।। २ ।।

शत्रोरागमने श्रुते आगमनं भविष्यति न वेति प्रश्ने विचारः

इन्दुः स्थिरे चेच्च तनौ चरोदयोऽर्यनागमस्य श्रवणेऽपि चागमः ।।
चरे विधुः स्याच्च तनौ स्थिरोदयो द्विडागमस्य श्रवणेऽपि नागमः ।।१ ।।

यदि चन्द्रमा स्थिर राशिका हो और लग्नमें चर राशिका उदय हो तो शत्रुका अनागमन भी सुना हो तथापि आवेगा और यदि चन्द्रमा चर राशिका तथा लग्नमें स्थिर राशि हो तो शत्रुका आगमन भी सुना गया हो परन्तु नहीं आवेगा ।। १ ।।

भानुभानुजसितेन्दुभुवा चेदंगगश्चरगृहे खचरेन्द्रः ।।
आगमंरिपुनृपस्य विदध्याद्वक्रतोऽत्र न कदापि विदध्यात् ।। २ ।।

सूर्य, शनि, शुक्र, बुध इनमेंसे कोई एक ग्रह चर राशिका हो तो शत्रु राजाका आगमन करता, है, यदि वह ग्रह वक्री हो तो कदापि आगमन नहीं करता ।। २ ।।

स्थिरे तनौ जीवशनीक्षिते गमागमौ न योगेऽत्र त्रिपंचषष्ठगाः ।।
खला रिपोः संगमदा इहैव चेच्चतुर्थगा वैरिपतेर्निवृत्तये ।। ३ ।।

स्थिर लग्न बृहस्पति शनिसे दृष्ट हो तो जाना आना नहीं होगा और इसी योगमें तीसरे पांचवें और छठे पाप ग्रह हों तो शत्रुका संगम करते हैं तथा इसी योगमें चौथे पापग्रह हों तो शत्रु राजाकी निवृत्ति करते हैं अर्थात् लौटकर चला जाता है ।। ३ ।।

चेद्भानुचंद्रौ हिबुके न चागमो रिपोः सुखास्ते च गुरुज्ञभार्गवाः ।।
द्विडेति तूर्णं यदि भानुशीतगू द्विषोंऽबुगौ जीवसितौ तदैत्यरिः ।। ४ ।।

यदि सूर्य और चन्द्रमा चौथे हों तो शत्रुका आगमन नहीं होता और बृहस्पति, बुध, शुक्र चौथे, सातवें हों तो शत्रु शीघ्रही आवेगा । यदि सूर्य चन्द्रमा छठे बृहस्पति और शुक्र चौथे हों तो शत्रु आवेगा ।। ४ ।।

हिमगुर्द्वितनौ स्थिरं वपुश्चेदपि दूरागमितो निवर्ततेऽरिः ।।
वपुषि द्वितनुर्विधुश्चरे चेन्नियतं चार्थपथो निवर्ततेऽरिः ।। ५ ।।

यदि चंद्रमा द्विस्वभाव राशिका और स्थिर लग्न हो तो बहुत दूर आया हुआ भी शत्रु लौट जावेगा और लग्नमें द्विस्वभाव राशि तथा चार राशिस्थ चंद्रमा हो तो शत्रु आधे मार्गतक आकर लौट जावेगा ।। ५ ।।

द्वितनौ हिमकृच्चरं च लग्नं बलयुग्मेन तदैति वैरिभूपः ।।
जयतीह यदा खलेक्षणं स्यात्प्रतिभूपस्य बलात्तिरस्कृतिःस्यात् ।। ६ ।।

द्विस्वभाव राशिका चंद्रमा और लग्न चर हो तो शत्रु राजा दो सेना लेकर आवेगा और जीतेगा । यदि लग्न चंद्रमाको पाप ग्रह देखते हों तो भी शत्रु राजाकी सेनासे अपनी पराजय होगी ।। ६ ।।

मेषवृषसिंहधनुषामेकतमेंऽगे चतुर्थे वा ।।
तत्काले विनिवृत्तिर्यदि चरलग्ने रविश्च जीवो वा ।। ७ ।।
शत्रोरागमनं चेत्स्थिरलग्ने भास्करो गुरुर्वाऽपि ।।

नागमनं यदि तनुभाच्चंद्रोडुर्यन्मितैर्दिनैर्भवति ।। ८ ।।
आगमनं स्याच्छत्रोर्यदि नहि मध्ये ग्रहः कश्चित् ।।
द्वितये यदि वा त्रितये जीवसितौ चेत्परागमो नूनम् ।। ९ ।।

मेष, वृष, सिंह, धनु इनमेंसे कोई एक राशि लग्नमें वा चौथे हो तो उसी समय शत्रु लौट जायगा । यदि चर लग्नमें सूर्य वा बृहस्पति हो तो शत्रु आवेगा । यदि स्थिर लग्नमें सूर्य वा बृहस्पति हो तो शत्रुका आगमन नहीं होगा । लग्नकी राशिसे चंद्रमाकी राशि जितनी संख्यापर हो तो उतने ही दिनोंमें शत्रुका आगमन होगा । परन्तु लग्न चंद्रमाकी राशिके मध्यमें कोई ग्रह न होवें तो । और जो होगा तो आवेगा । दूसरे वा तीसरे बृहस्पति, शुक्र हों तो शत्रुका आगमन निश्चय ही होगा ।। ७ ।। ८ ।। ९ ।।

सुते रिपौ वा यदि पापिनोऽध्वतो रिपोर्निवृत्त्यै यदि तुर्यगाःखलाः ।।
दुरोपकण्ठोपगतोऽपि पीडितो निवर्तते चेत्सुतषष्ठयोः खलाः ।।
पलायनायारिपतेर्यदा झषालिकुम्भकर्का भुवि वैरिधर्षणा ।। १० ।।

यदि पांचवें ,छटे पाप ग्रह होवें तो शत्रु मार्गसे लौट जायगा और जो चौथे पापग्रह हों तो पुरके समीप आया हुआ भी पीड्ति होकर लौट जायगा । यदि पांचवें, छठे पाप ग्रह हों तो शत्रु राजा भाग जायगा और यदि मीन, वृश्चिक, कुंभ, कर्क चौथे हों तो शत्रुसे भय होगा ।। १० ।।

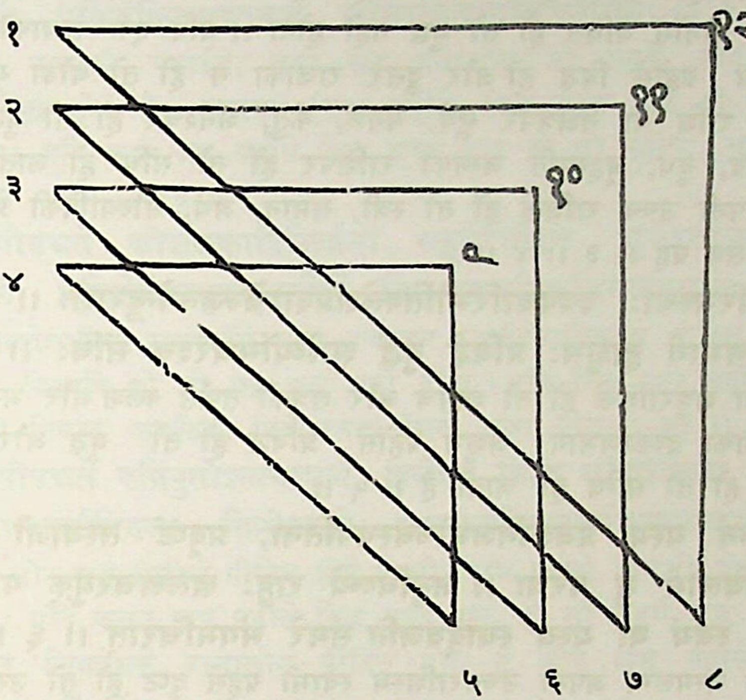
अथ संघट्टचक्रम्

क्रियादिभिर्द्वादशभिस्त्रिकोणं संघट्टचक्रं विलिखेत्सखेटम् ।।
तिर्यक्तथा संमुखवक्रवेधो मीनाजयोर्वृश्चिकमेषयोश्च ।। १ ।।
एवं परत्रापि नृपोड्डुवर्क्षं चेत्पापविद्धं समरस्तदोग्रः ।।
अतोऽन्यथा सन्धिरथो यदृक्षं क्रूरैःप्रविद्धं स रणाभिलाषी ।। २ ।।

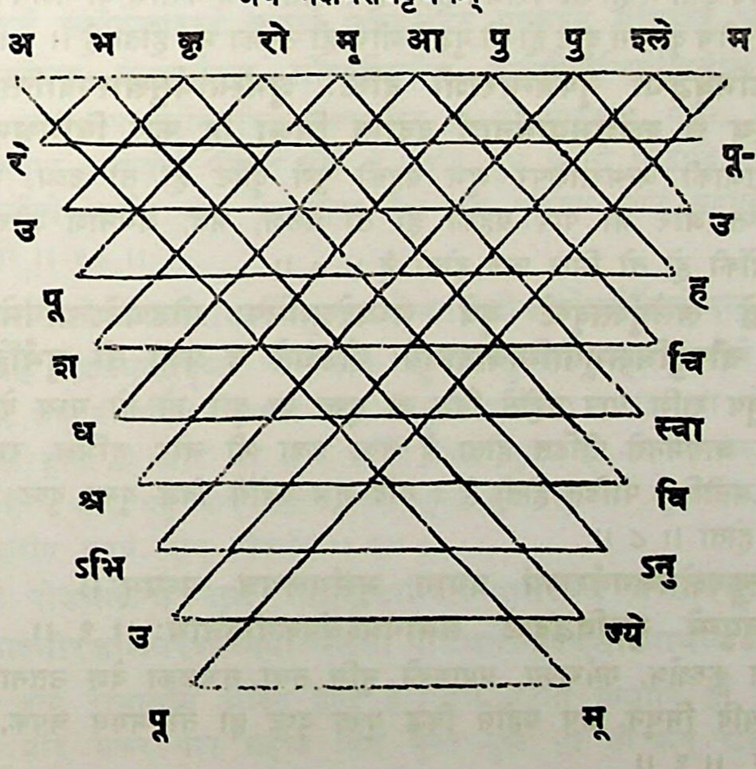
मेषादि बारह राशियुक्त त्रिकोणसंघट्टचक्र लिखकर जो ग्रह जिस राशिपर हो उसको उसीपर धरे, तब तिरछा और सामनेका वक्र वेध कहाता है, जैसे मीन और मेषका, वृश्चिक और मेषका इसी प्रकार अन्य राशियोंका भी चक्रमें समझ लेना चाहिये और इसी प्रकार नक्षत्रसंघट्टचक्र भी विचारा जाता है जिसको आगे लिखेंगे । यदि राजाकी जन्मराशि वा जन्मका नक्षत्र पाप ग्रहोंसे विद्ध हो तो उग्र युद्ध हो और जो उससे अन्यथा हो अर्थात् शुभ ग्रहोंसे विद्ध हो तो संधि हो जावे और जिसकी राशि वा नक्षत्र क्रूर ग्रहोंसे प्रविद्ध हो तो वह ही युद्धाभिलाषी है ।। १ ।। २ ।।

सौम्यैश्च सन्धीच्छुरथो विमिश्रैर्वक्रातिचारास्तगतैर्न युद्धम् ।।
वाल्पं भवेदेकतमेऽपि विद्धे यदा जनुर्भेऽर्ककुजाहिमंदाः ।। ३ ।।
युद्धप्रदाश्चेद्भृगुचंद्रचांद्रिजीवास्तु सन्धिर्यदि जन्मराशौ ।।
स्वतुंगभर्क्षे सकला यदा स्त्रीमानार्थसौख्याय यदा च सर्वे ।। ४ ।।

अथ राशिसंघट्टचक्रम्



अथ नक्षत्रसंघट्टचक्रम्



जो शुभ ग्रहोंसे वेधित हों तो संधि चाहता है और यदि वक्र, अतिचार, अस्तगत पाप शुभ ग्रह दोनोंसे वेधित हों तो युद्ध नहीं होगा ।। यदि एक राजाकी जन्मराशि वा नक्षत्र पाप ग्रहोंसे विद्ध हो और दूसरे राजाका न हो तो थोडा युद्ध होगा। यदि जन्मकी राशि वा नक्षत्रपर सूर्य, मंगल, केतु, शनैश्चर हों तो युद्ध देते हैं। यदि शुक्र, चंद्र, बुध, बृहस्पति जन्मकी राशिपर हों तो संधि हो जाती है। यदि समस्त ग्रह अपनी उच्च राशिके हों तो स्त्री, संमान, अर्थ, सौख्यादिकी प्राप्ति होती है और यदि सब ग्रह ।। ३ ।। ४ ।।

नीचारिभस्थाः श्वपचारिभीतिक्लेशप्रदाश्चेज्जननेन्दुराशेः ।।
द्रेष्काणभागे ह्यशुभः प्रविद्धे युद्धं शुभैर्व्योमचरैश्च संधिः ।। ५ ।।

नीच वा शत्रुराशिके हों तो श्वपच और शत्रुकी तर्फसे क्लेश और भय देते हैं। यदि जन्मराशिका द्रेष्काणभाग अशुभ ग्रहोंसे प्रविद्ध हो तो युद्ध और जो शुभ ग्रहोंसे प्रविद्ध हो तो सन्धि हो जाती है ।। ५ ।।

जनुर्लग्नं यस्य प्रबलनिजभोच्चस्थपतिना, प्रदृष्टं तस्याजौ जय
इह विलोमे तु परथा ।। जनुर्धिष्ण्ये राहुः खलखचरयुक् पामर-
दृशा, स्वयं वा यस्य स्याद्व्रजति समरे भंगमचिरात् ।। ६ ।।

जिसका जन्मलग्न अपनी उच्चराशिस्थ स्वामी ग्रहसे दृष्ट हो तो उसी राजाकी युद्धमें जय, यदि ऐसा न हो तो पराजय होती है। जिसकी जन्मराशि वा नक्षत्रपर राहु पाप ग्रहसे युक्त वा नीच दृष्टिसे दृष्ट हो तो युद्धमें शीघ्र ही उसका भंग होता है ।। ६ ।।

यदाऽभिवृद्ध्या नृपजन्मराशौ दृष्टिः शुभस्यार्थसुखास्पदाप्तिम् ।।
पापस्य च क्लेशभयार्थनाशं ददाति मिश्रा हि फलं विमिश्रम् ।। ७ ।।

यदि राजाकी जन्मराशिपर शुभ ग्रहकी पूर्ण दृष्टि हो तो द्रव्य, सुख, स्थान आदिकी प्राप्ति और जो पाप ग्रहकी हो तो क्लेश, भय, अर्थनाश और यदि पाप शुभ ग्रह दोनोंकी हो तो मिश्र फल होता है ।। ७ ।।

प्रविद्धे खलैर्युक्तदृष्टे वृषे मध्यदेशाधिपः पीडचतेऽन्यागमेन ।।
तदा चौरदुर्भिक्षभूपाग्निवादानयैः पीडचते च प्रजा नो शुभैर्हि ।। ८ ।।

यदि वृष राशि पाप ग्रहोंसे विद्ध वा युक्त वा दृष्ट हो तो मध्य देशका राजा अन्य राजाके आगमनसे पीडित होता है तथा प्रजा भी चोर, दुर्भिक्ष, राजा, अग्नि, विवाद और अनीतिसे पीडित होती है। यदि शुभ ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो यह फल नहीं होता ।। ८ ।।

यावत्कुरुक्षेत्रकगर्गराज्यं प्रयाग भूसंभलमत्र मध्यम् ।।
खलैर्नृयुग्मे युतविद्धदृष्टे समागधश्चंपकगौडनाथः ।। ९ ।।

जितना कुरुक्षेत्र, गर्गराज्य, प्रयागकी भूमि तथा संभलका देश उतना मध्य देश कहाता है। यदि मिथुन पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो मगध चंपक, गौड इन देशोंके राजा ।। ९ ।।

निपीड्यतेऽन्यागमतश्च लोकमहर्घरुग्दस्युभिरन्यथा नो ॥
खलैः प्रविद्धेक्षितयुक्तकर्के कलिंगचक्रांगतिलिंगभूपः ॥ १० ॥

अन्य राजाकी चढाईसे, तथा सब प्रजालोग भी महर्घ, रोग, चोर, डाकू आदिसे पीडित होते हैं; अन्यथा (शुभ ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो) यह फल नहीं होता । यदि कर्क पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो कलिंग, चक्रांग, तिलिंग-देशके राजा लोग ॥ १० ॥

निपीड्यते कोशलकादिभिर्जनो महर्घरोगैश्च शुभैरतोऽन्यथा ॥
खलैः प्रविद्धेक्षितयुङ्मृगाधिपे निषादकर्णाटकविन्ध्यभूपतिः ११ ॥

कोशलदेशादिके राजाओंसे तथा प्रजाजन महर्घरोगादिकोंसे पीडित होते हैं और शुभ ग्रहोंसे विद्धादि हो तो यह फल नहीं होता । यदि सिंह पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो निषाद, कर्णाटक, विन्ध्याचल देशके राजा लोग ॥ ११ ॥

निपीड्यते रुग्रिपुतोऽन्यथाशुभैः खलैश्च विद्धा सहितेक्षिता वधूः ॥
तदामहर्घारिरुजा निपीड्यते समालवश्चित्रनृपोऽन्यथाशुभैः ॥ १२ ॥

रोग और शत्रु आदिसे पीडित होते हैं और शुभ ग्रहोंसे विद्धादि हो तो उक्त फल नहीं होता । यदि कन्या पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो महर्घ, शत्रु और रोगादिसे मालव और चित्रदेशके राजालोग पीडित होते हैं और शुभ ग्रहोंसे विद्धादि हो तो यह फल नहीं होता ॥ १२ ॥

प्रविद्धे खलैर्युक्तदृष्टे तुलर्क्षे मरूगुर्जरेट् पुष्करेट् पीड्यते च ॥
अदृष्टैश्च दंतावलैरत्र सौम्यैर्विलोमं खलैर्युक्तविद्धेक्षितेऽलौ ॥ १३ ॥

यदि तुला पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो मारवाड, गुर्जर, पुष्कर देशोंके राजालोग अदृष्ट हाथियोंसे पीडित होते हैं । यदि शुभ ग्रहोंसे विद्धादि हो तो विलोम समझना चाहिये अर्थात् शुभ फल होता है । यदि वृश्चिक पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो ॥ १३ ॥

महर्घारिरोगैर्वितस्ताख्यसिंधुक्ष्मागोमतीट्पीड्यतेऽन्यैर्विलोमम् ॥
प्रविद्धे खलैर्युक्तदृष्टे च चापे खुरासांतुरक्केण्महर्घारिरोगैः ॥ १४ ॥

महर्घ, शत्रु रोगादिसे वितस्ता और सिंधुकी पृथ्वीका राजा तथा गोमती नदीका राजा पीडित होता है और जो शुभ ग्रहोंसे विद्ध युक्त हो तो विलोम अर्थात् शुभ फल होता है । यदि धनु पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो खुरासान, तुरकिस्तान देशके राजालोग महर्घ, शत्रु रोगादि ॥ १४ ॥

परैः पीड्यतेऽन्यैः शुभे विद्धदृष्टान्विते पामरैरत्र नक्रेऽरिभूपात् ॥
सकाश्मीरजालंधरेण्मध्यपालस्तथा पीड्यतेऽन्यैश्चसौख्यार्थलाभः ॥१५॥

तथा अन्य राजाओंसे पीडित होते हैं । शुभ ग्रहोंसे विद्धादि हो तो शुभ फल होता है । यदि मकर पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो शत्रु राजासे काश्मीर

जालंधर और मध्यदेशके राजालोग पीडित होते हैं और शुभ ग्रहोंसे विद्धादि हो तो सौख्य अर्थका लाभ होता है ।। १५ ।।

कुंभे खलैर्विद्धयुतेक्षिते स्यात्कुलूत्तकेदारखसोत्तरेशान् ।।
अरातिरोगैस्तपनं हि सौम्यैः सुखार्थवृद्धिश्च खलैः प्रविद्धे ।। १६ ।।
मीने च दृष्टे सहिते हिमाद्रिर्निपीड्यतेऽन्यैश्च समृद्धिमेति ।।
मेषे खलैर्विद्धयुतेक्षिते वै नैपालगंगातटतीरभुक्तीट् ।। १७ ।।

यदि कुंभ पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो कुलूत्त, केदार, खस और उत्तर देशोंके राजा लोगोंको शत्रुओं तथा रोगोंसे ताप पहुँचता है, शुभ ग्रहोंसे विद्धादि हो तो सुख और अर्थकी वृद्धि होती है । यदि मीन पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो हिमालयका राजा पीडित होता है, शुभ ग्रहोंसे विद्ध हो तो समृद्धिको प्राप्त होता है । यदि मेष पाप ग्रहोंसे विद्ध युक्त दृष्ट हो तो नैपाल तथा गंगातटके समीप देशके राजालोग ।। १६ ।। १७ ।।

प्रपीड्यतेऽलं सरयूपसंस्थितैः शुभैः समर्घार्थधनैः प्रवर्द्धते ।।
यद्राशिवेधी खलयुक् तमोऽथवा शर्निहि तद्देशनृपादिनाशकः ।। १८ ।।

सरयूनदीके राजाके आगमनसे पीडित होते हैं और शुभ ग्रहोंसे विद्धादि हो तो समर्घ, अर्थ और धनसे वृद्धि होती है। जिसकी राशिको वेधित करनेवाला राहु वा शनि पाप ग्रहसे युक्त हो तो उसी देशके राजादिका नाश करता है ।। १८ ।।

चारातिवक्राद्रविजः कुजश्च केतुगतिस्पर्शनदर्शनाच्च ।।
उल्काभिघाताद्ग्रहणाद्रवींद्वोश्चारात्तमः पीडयतीह धिष्ण्ये ।। १९ ।।
कृशानुधिष्ण्यात्क्रियतोऽथवापि क्रूरग्रहाणामुडुपीडनेन ।।
क्षत्रस्य भंगः खलु मध्यदेशात्खंडस्य च द्वादशके विभागे ।। २० ।।

चारका अति और वक्र होनेसे शनि, मंगल, केतु और गतिका स्पर्शन दर्शन होनेसे, सूर्य चंद्रमाका ग्रहण होनेसे राहु कृत्तिका नक्षत्र वा मेषके क्रमसे अपने चारद्वारा नक्षत्र वा राशिको पीडित्त करता है । क्रूर ग्रहकी नक्षत्र वा राशिपीडासे मध्यदेशसे किसी खंडके वारहवें हिस्सेमें क्षत्रभंग होता है ।। १९ ।। २० ।।

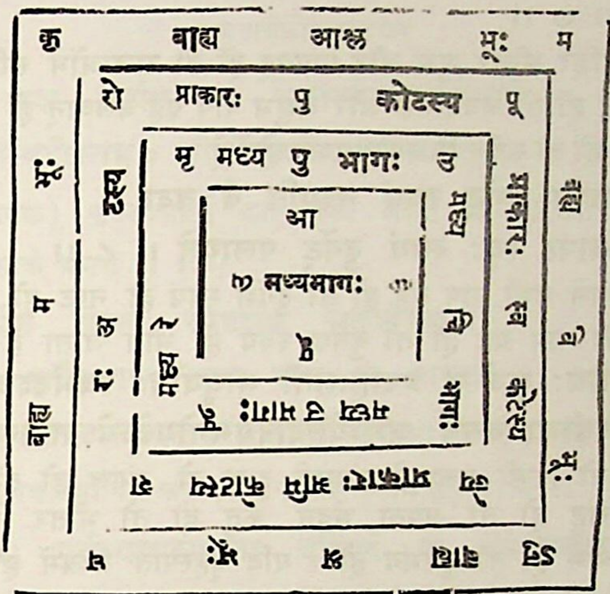
अथ कोटचक्रम्

त्रिनाडिचक्रे चतुरस्र आयते शैवीक्रमात्कोटभतोऽन्तरा न्यसेत् ।।
बहिश्च कोटेतरमध्ययोस्ततो विनिर्गमोभ्यन्तरकोटबाह्यतः १ ।
इति क्रमादत्र तु वक्रिणो यदा सुरेज्यभौमज्ञसिताः पुरा क्रमात् ।।
प्रभंगता स्युर्जलदिक्क्रमादिमे तु रक्षका वक्रिण एवं संततम् ।। २ ।।

तीन नाडीका चौकोर चक्र लिखे, उसके भीतर ईशान दिशामें कोटका नक्षत्र धरके भीतर वाहिर नक्षत्रोंको इस क्रमसे स्थापित करे कि कोटके भीतरसे बाहिरी तर्फको विनिर्गम और कोटकी बाहिरी तर्फसे मध्यभागमें प्रवेश इस रीतिसे लिखना

चाहिये । यदि इसमें बृहस्पति, मंगल, बुध और शुक्र वक्री हों तो क्रमसे पूर्वादि दिशाओंमें भंग देते हैं, तथा पश्चिमादि दिशाओंमें निरन्तर रक्षा करते हैं ।। १ ।। २ ।।

अथ कोटचक्रम्



यदा रविर्मंदयुतो न भंगदाः स्मृता इमे वेष्टकभूपतिर्यदा ।।
प्रवेशभे संगरमारभेत्तदा जयी भवेन्निर्गमभे च तत्परः ।। ३ ।।

यदि सूर्य शनियुक्त हो तो पूर्वोक्त वक्री ग्रह भंग नहीं देते । यदि इच्छा करनेवाला राजा प्रवेशके नक्षत्रमें युद्ध प्रारम्भ करे तो विजयी और निर्गम नक्षत्रमें करे तो उसका शत्रु विजयी होता है ।। ३ ।

अन्तः सौम्या बहिःक्रूरा यायिनो भंगनाशदाः ।।
परथा दुर्गभंगाय पापाश्चेद्बाह्यकोटके ।। ४ ।।
अन्तः शुभास्तदाखण्डो दुर्गभंगो न जायते ।।
बाह्यकोटे शुभाः पापा मध्ये दद्यात्पुरेड् गढम् ।। ५ ।।

मध्यभागमें शुभ ग्रह और बाह्यभागमें क्रूर ग्रह हो तो यायी राजाका भंग और नाश करते हैं । यदि अन्य प्रकारसे हो तो किलेका भंग करते हैं । यदि पाप ग्रह कोट वाहिर और शुभ ग्रह भीतर हों तो दुर्ग अखण्ड रहता है, भंग नहीं होता । यदि शुभ ग्रह कोटके वाहिर और पाप ग्रह भीतर हों तो पुरेश गढको दे देता है ।। ४ ।। ५ ।।

यदा कोटे शुभाः पापा बहिरन्तर्द्वयोः क्षयः ।।
बाह्ये मध्ये खलाः कोटे तदा खंडरणौ समौ ।। ६ ।।

यदि कोटमें बाहिर भीतर शुभ और पाप ग्रह स्थित हों तो दोनों राजाओंका नाश

होता है । यदि कोटके बाहिर भीतर केवल पाप ग्रह हों तो अखंड युद्ध हो परंतु दोनों राजा समान रहते हैं, अर्थात् न कोई जीतता है न हारता है । ६ ।।

बहिरन्तरा शुभखला हि यदा नृपसंधये यदि शुभाः सबलाः ।।
जयदाःखला अशुभदा विमिश्रिताः खचरा विमिश्रितफला
निरन्तराः ।। ७ ।।

यदि कोटमें बाहिर भीतर शुभ और पापग्रह हों तो राजाओंमें सन्धि हो जाती है । यदि शुभ ग्रह बलवान् हों तो जयदायक और अशुभ पाप ग्रह बलवान् हों तो अशुभ दायक, यदि मिश्रित पाप ग्रह हों तो सदैव मिश्रफलदायक होते हैं ।। ७ ।।

मध्ये वक्रिखला दुर्गेट् स्वयं नश्यति वै तदा ।।
दुर्गभे वक्रिपापा स्युः स्वयं दुर्गेट् पलायते ।। ८ ।।

यदि मध्य भागमें वक्री पाप ग्रह हों तो दुर्गेश स्वयं ही नष्ट हो जाता है । यदि कोटके नक्षत्रपर वक्री पाप ग्रह हों तो दुर्गेश स्वयं ही भाग जाता है ।। ८ ।।

रवौ बन्धशोषः कुजे च प्रदाहःशनौ मृत्युयोगः स्वभेदश्च राहौ ।।
ध्वजेऽन्त विषंस्याच्चसर्वे चमध्येतदादुर्गभंगोयदेज्येऽन्तरास्यात् ।। ९।।

जो सूर्य हो तो किसी प्रकारसे बंधनसे दुःख हो, मंगल हो तो अतिदाह, शनि हो तो मृत्युयोग, राहु हो तो अपना भेदन, केतु हो तो भीतर विषदान और जो समस्त पाप ग्रह मध्यमें हों तो दुर्गभंग हो । यदि बृहस्पति मध्यमें हो तो ।। ९ ।।

प्रभूतंसमर्घंजलंस्यात्सितोज्ञस्तथेन्दुः ससौम्यस्तथासर्वसौम्यः ।।
जयोदुर्गपस्याथचेदेककोऽपिखलोमध्यगोबाह्यकोटेच सौम्याः ।। १० ।।

बहुत समर्घ तथा जल होता है । यदि शुक्र ,बुध, शुभग्रहयुक्त चंद्रमा तथा सब शुभ ग्रह हों तो दुर्गपतिकी जय होती है । यदि अकेला ही कोई पाप ग्रह कोटके मध्यमें और शुभ ग्रह बाह्य कोटमें हो ।। १० ।।

तदा दुर्गपो द्राक् त्यजदेव दुर्गं यदा मंदयानाःस्वभोच्चादिसौम्याः ।।
स्थिरर्क्षे विपापाः प्रवीर्याश्च मध्ये जयो दुर्गिण श्चेद्बहिस्ते परस्य ।। ११ ।।

तो दुर्गका मालिक शीघ्र ही किलेको छोड जाता है । यदि कोटके मध्यमें मंदगति अपनी राशिके उच्चादिगत पाप ग्रहोंसे रहित बलवान् शुभ ग्रह स्थिर राशि वा नक्षत्रपर स्थित हों तो किलेके मालिककी और जो बाह्य भागमें हो तो दूसरे शत्रु-राजाकी जय होती है ।। ११ ।।

चेदन्तरं विषममल्पबलः सहायैर्हीनः पुरेश इह यावदथो शुभा
स्यात् ।। तावद्बली गढपतिश्च यदैव पापा आयान्ति नूनमिह
पौरभयं तदा स्यात् ।। १२ ।।

यदि अन्तर विषम हो तो पुरेश अल्पबली और सहायहीन होता है और जब-तक कोटके मध्यमें शुभ ग्रह रहता है तबतक गढपति बली और जब पाप ग्रह आ जाते हैं तो निश्चयही पुरपति राजाको भय होता है ।। १२ ।।

इह कृतिकादित्वमुपलक्षकं ततः पुरभाविक्रम उचितः ।। १३ ।।

इस चक्रमें कृत्तिकादि नक्षत्रोंका लेख तो उपलक्षकमात्र है, किन्तु प्रथम पुरके नक्षत्रक्रमसे लिखना चाहिये ।। १३ ।।

अथ सर्वतोभद्रकक्रम्

दशोर्ध्वं दश तिर्यक् च रेखास्त्रैलोक्यदीपके ।।
अकारादिस्वराँस्तत्र कोष्ठेऽथैशीक्रमाल्लिखेत् ।। १ ।।

(त्रैलोक्यदीपक) सर्वतोभद्रमें दश खडी और दश तिरछी रेखा, खींचे, तहाँ कोटोंमें ईशानदिशाके क्रमसे ।। १ ।।

सृष्टिमार्गेण नियतं षोडशैवं चतुर्भ्रमम् ।।
पूर्वादितः कृत्तिकातः सप्त सप्त च तारकाः ।। २ ।।

सृष्टिमार्ग करके चार घुमाव पूर्वक सोलह स्वरोंको लिखे, पूर्वादि दिशाओंमें कृत्तिकासे लेकर सात सात नक्षत्र स्थापित करे (यह पहला घुमाव है) ।। २ ।।

अवकहडाः पूर्वस्यामटपरता दक्षिणे च नयभजखाः ।।
पश्चिमदिशि गसदचला उत्तरदिक्स्थाः परिज्ञेयाः ।। ३ ।।

अ, व, क, ह और ड पूर्वमें; अ, ट, प, र और त दक्षिणमें; न य, भ, ज और ख पश्चिममें; ग, स, द, च, और ल उत्तरमें लिखे (यह दूसरा घुमाव है) ।। ३ ।।

पूर्वादितो वृषाद्याः स्युः क्रमादेव त्रयस्त्रयः ।।
शेषेषु काष्ठाकोष्ठेषु नंदाद्यास्तिथयः क्रमात् ।। ४ ।।

पूर्वादि दिशाओंमें क्रमसे वृषको आदि लेकर तीन तीन राशि लिखे (यह तीसरा घुमाव है) और शेष दिशाओंके कोठोंमें नंदादि तिथि क्रमसे लिखे (यह चौथा घुमाव है) ।।४।।

वाराणां सप्तकं लेख्यं भौमाद्यं पूर्वविक्रमात् ।।
शन्यकराहुकेत्वाराः पापाः शेषाः शुभाः खगाः ।। ५ ।।

पूर्वादि दिशाओंमें क्रमसे मंगलको आदि लेकर सात वार स्थापित गरे । शनि सूर्य, राहु, केतु और मंगल ये पाप और शेष शुभ ग्रह कहाते हैं ।। ५ ।।

सर्वतोभद्रचक्रम् ।

ईशान कोण — पूर्वदिशा — अग्नि कोण

उत्तर दिशा (बाईं ओर) — दक्षिण दिशा (दाईं ओर)

अ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	अश
भ	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
भ	ल	लृ	वृष	मिथुन	कर्क	लृ	म	पू
रे	च	मेष	ओ	नंदा १।६।११ सू. मं.	औ	सिंह	ट	
उ	द	मीन	रिक्ता ४।९।१४ शु.	पूर्णा ५।१०।१५ शनि	भद्रा २।७।१२ बु. चं.	कन्या	प	ह
पू	स	कुंभ	अः	जया ३।८।१३ गु.	अं	तुला	र	चि
श	ग	ऐ	मकर	धन	वृश्चिक	ए	त	स्वा
ध	ॠ	ख	ज	भ	य	न	ऌ	वि
ई	श्र	अ	उ	पू	मू	ज्ये	अ	इ

वायव्य कोण — पश्चिम दिशा — नैर्ऋत्य कोण

बुधोऽपि क्रूरयुक्क्रूरश्चंद्रमाश्च कृशस्तथा ।।
यत्रभे खचरस्तिष्ठेत्ततो वेधत्रयं भवेत् ।। ६ ।।
खगेक्षणवशादत्र वामदक्षिणसंमुखाः ।।
शीघ्रे वामोन्मुखी मध्ये ज्ञेया वक्रे च दक्षिणा ।। ७ ।।

क्रूरयुक्त बुध तथा कृश चंद्रमा भी क्रूर कहाता है, जिस नक्षत्रपर ग्रह स्थित हो वहांसे उस ग्रहकी दृष्टिवशसे वाम, दक्षिण और सन्मुख ये तीन वेध होते हैं । शीघ्रगति ग्रहमें वाम और मध्यगति ग्रहमें सन्मुख और वक्रमें दक्षिणदृष्टि होती है ।। ६ ।। ७ ।।

भौमादिष्वथ सूर्येन्दुकेत्वहीना च दृक्त्रयम् ।।
सदैव वक्रिणौ दैत्यौ सूर्येन्दू शीघ्रगौ यतः ।। ८ ।।

मंगल आदि क्रूर ग्रहोंमें सूर्य, चंद्र, केतु और राहु इनकी तीनों दृष्टियाँ होती हैं, क्योंकि राहु केतु दोनों सदैव वक्री और सूर्य चंद्रमा शीघ्री रहते हैं ।। ८ ।।

सूर्यान्मुक्ता उदीयन्ते शीघ्राः खेटाः धने रवेः ।।
तृतीये च समाः प्रोक्तारचतुर्थे मंदगामिनः ।। ९ ।।

सूर्यसे मुक्त शीघ्र ग्रह सूर्यसे दूसरे घरमें उदय होते हैं, तीसरेमें समगति और चौथेमें मंदगामी ।। ९ ।।

भानोः खेटात्पञ्चमे च वक्राश्चाष्टमसप्तमे ।।
अतिवक्राः स्मृताः धर्मदशके मार्गगामिनः ।। १० ।।

पांचवें वक्री, सातवें, आठवेंमें अतिवक्री और नौवें, दशवें मार्गगामी ।। १० ।।

लाभद्वादशके शीघ्री यदा वक्रो भवेत्खगः ।।
सौम्योऽतिसौम्यश्चोग्रोऽतिपापः शीघ्रः स्वभाववत् ।। ११ ।।

ग्यारहवें, बारहवें शीघ्री हो जाते हैं और सौम्य ग्रह जब वक्री होता है तब अतिसौम्य और पाप ग्रह वक्री होता है तो अतिपाप और शीघ्री स्वभावके तुल्य होता है ।। ११ ।।

तुंगस्थानं तुङ्गभं स्यात्तस्मान्नीचं च सप्तमम् ।।
नीचाच्चोच्चात्तुर्यभं यत्समं सोऽग्रशुभः खलः ।। १२ ।।

उच्चस्थानकी उच्चराशि और उच्चसे सातवीं नीच और नीच तथा उच्चसे चौथी समराशि कहाती है। पाप ग्रहके साथ शुभ भी पाप होजाता है ।। १२ ।।

ऊर्ध्वदृष्टी च सूर्यारौ बुधशुक्रौ च केकरौ ।।
चन्द्रेज्यौ समदृष्टी च मन्दराहू त्वधोदृशौ ।। १३ ।।

सूर्य, मंगल ऊर्ध्वदृष्टिवाले; बुध, शुक्र काने; चन्द्र, बृहस्पति समदृष्टि और शनि राहु अधोदृष्टिवाले हैं ।। १३ ।।

ऊर्ध्वदृष्टिग्रहे कुर्यात्कुण्डलीयन्त्रसाधनम् ।।
समे च साधयेत्पिण्डं रन्ध्रपातमधोदृशि ।। १४ ।।

ऊर्ध्वदृष्टि ग्रह होवे तो कुण्डलीयन्त्र बनावे, समदृष्टि होतो पिण्ड और अधोदृष्टि हो तो छिद्रपातयन्त्र बनावे ।। १४ ।।

सुहृदोऽर्केन्दुभौमेज्या ज्ञशुक्रशनिराहवः ।।
अन्योन्यं वैरिणो ह्यन्ये राहोः सर्वे तु शत्रवः ।। १५ ।।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बृहस्पति और बुध, शुक्र, शनि और राहु ये चार चार ग्रह आपसमें मित्र और अन्य ग्रहमें शत्रु एवं राहु ग्रहके सब शत्रु हैं ।। १५ ।।

घङछा रौद्रगे वेधे षणठा हस्तगे तथा ।।
धफढा पूर्वाषाढायां शझथा भाद्र उत्तरे ।। १६ ।।

घ ङ छ आर्द्राके, ष ण ठ हस्तके, ध फ ढ पूर्वाषाढाके, श झ थ उत्तराभाद्रपदाके वेधमें लिखने चाहिये ।। १६ ।।

वबौ शसौ षखौ चैव जयौ ङञौ परस्परम् ।।
एकेन द्वितयं विद्धं सदसद्ग्रहवेधने ।। १७ ।।

शुभ वा अशुभ ग्रहका वेध होनेपर व ब, श, स, ष, ख, ज, य, ङ ञ इन दो दो वर्णोमें एकका वेध होनेसे दूसरा विद्ध हो जाता है ।। १७ ।।

अवर्णादिस्वरद्वन्द्वे ह्येकवेधे द्वयोर्व्यधः ।।
युक्तस्वरात्मके वेधे त्वनुस्वारविसर्गयोः ।। १८ ।।

अवर्णादि द्वंद्वस्वर (अ आ, इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ, ऌ ॡ,) इनमें एकका वेध होनेपर दोनोंका वेध समझना चाहिये, युक्त स्वर (ए, ऐ, ओ, औ) इनके वेधमें अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अः) का भी वेध हो जाता है ।। १८ ।।

घङछा षणठाश्चैव धफढास्थझञास्तथा ॥
एतत्रिकं त्रिकं विद्धं विद्धैः कपदभैः क्रमात् ॥ १९ ॥

नक्षत्रके प्रथम चरणादिके विद्ध होनेसे क्रमसे ये तीन तीन वर्ण भी विद्ध होते हैं, जैसे—आर्द्रा नक्षत्रका प्रथम चरण विद्ध हो तो घ ङ छ, हस्तका विद्ध हो तो ष ण ठ, पूर्वाषाढाका विद्ध हो तो ध फ ढ और उत्तरभाद्रपदाका प्रथम चरण विद्ध हो तो थ झ ञ, ये भी विद्ध हो जाते हैं ॥ १९ ॥

भरण्यन्तपदस्थायी कृतिकाद्यांघ्रिगोऽपि वा ॥
वेधयेत्तु अउलूऊकारं पूर्णां तिथिं तथा ॥ २० ॥

यदि ग्रह भरणीके अन्त और कृत्तिकाके आदि चरणको वेधता हो तो अ उ लृ ऊ और पूर्णा तिथि इनको भी वेधित करता है ॥ २० ॥

एवं कोणभयोर्मध्ये चान्त्यादिपदगे खगे ॥
अस्वरादिचतुष्कस्य वेधः पूर्णतिथेस्तथा ॥ २१ ॥

इसी प्रकार दोनों कोणके दो नक्षत्रोंके अन्त्य आदि चरणपर स्थित ग्रह उन दोनों नक्षत्रोंके मध्यस्थ अकारादि चार स्वर और पूर्णा तिथिको वेधित करता है ॥ २१ ॥

एकादिपादवेधेन भीर्हानी रुङमृतिः क्रमात् ॥
धिष्ण्ये विद्धे भ्रमो वर्णे हानिर्व्याधिः स्वरे तिथौ ॥ २२ ॥

नक्षत्रके प्रथमादि चार चरणोंके विद्ध होनेसे क्रमसे भय, हानि, रोग, तथा मृत्यु होती है। नक्षत्रवेधमें भ्रम, वर्णमें हानि, स्वरमें व्याधि, तिथिमें ॥ २२ ॥

भयं राशौ परो विघ्नः पंचवेधे मृतिर्भवेत् ॥
उग्रस्यैकस्य वेधेन भीद्वयोश्च व्रणो रणे ॥ २३ ॥

भय, राशिमें अतिविघ्न और जो पांचों वेध हों तो मृत्यु होती है। एक पाप ग्रहका वेध होनेसे भय, दोका वेध होनेसे युद्धमें घाव ॥ २३ ॥

खलत्रयव्यधाद्भंगश्चतुःपापव्यधान्मृतिः
आधी रवेर्व्यधे द्रव्यहानि र्भौमस्य रुक् शनेः ॥ २४ ॥

तीनका वेध होनेसे भंग, चारका होनेसे मृत्यु होती है। सूर्यका वेध हो तो व्याधि, मंगलका हो तो द्रव्यहानि, शनैश्चरका हो तो रोग ॥ २४ ॥

राहुकेत्वोर्महाविघ्नः पुष्टेन्दोश्च शुभं फलम् ॥
क्षीणेन्दोरशुभं चांद्रेर्बुद्धिर्जीवस्य वाञ्छितम् ॥ २५ ॥

राहु केतुका हो तो महाविघ्न, पूर्ण चन्द्रमाका हो तो शुभफल, क्षीण चन्द्रमाका हो तो अशुभ फल, बुधका हो तो बुद्धिवृद्धि, बृहस्पतिका हो तो मनोरथ सिद्धि ॥ २५ ॥

रतेः शुक्रस्य वृद्धयै स्यात्पूर्णं स्वोच्चर्क्षगे फलम् ॥
त्रिकोणे चाष्टमे वार्द्रौ समर्द्धं चाद्रिवद्रिपौ ॥ २६ ॥

शुक्रका हो तो रतिवृद्धि होती है। यदि ग्रह अपनी उच्चराशिका या त्रिकोण

(९।५) में हो तो पूर्ण फल होता है और आठवें वा सातवें हो तो भले प्रकार आधा फल और छठे घरमें हो तो सातवें घरके तुल्य फल वर्णन करे अर्थात् आधा फल कहे ।। २६ ।।

स्थानवेधसमायोगाद्यत्संख्यं जायते बलम् ।।
तत्तुल्यं वेधवस्तूनां फलं ब्रूयादशंकितः ।। २७ ।।

स्थानवेधके जोडनेसे जितना बल हो उतना ही वेध वस्तुओंका फल निःसंदेह कहे ।। २७ ।।

वक्रे द्विगुणमुच्चस्थे त्रिगुणं शीघ्र उक्तवत् ।।
नीचेऽर्द्धं च सदा निन्द्यो वेधः कार्येषु सत्सु च ।। २८ ।।

यदि वक्र ग्रह हो तो दूना, उच्चका हो तो तिगुना, शीघ्री हो तो पहले कहे हु एके तुल्य, नीचका हो तो आधा फल बतावे और शुभ कार्योंमें वेध सदा निंदित है ।। २८ ।।

रोगकाले वक्रिपापवेधे मृत्युश्च पापिनि ।।
शीघ्रे रोगी भवेज्जय्यो वेधस्थाने भटे क्षतिः ।। २९ ।।

रोगकालमें वक्री और पाप ग्रहका वेध हो तो मृत्यु, शीघ्र पाप ग्रहका वेध होवे तो योद्धा, रोगी और यदि योद्धा वेधके स्थानमें हो तो क्षय होता है ।। २९ ।।

कवौ प्रवेशनं युद्धे भंगः खंडो भवेद्गढे ।।
वामदक्षे सतोर्वेधो दुर्गहानिर्हि संमुखे ।। ३० ।।

यदि शुक्रका पाप ग्रहके साथ वेध हो तो युद्धमें प्रवेश, यदि शुभ ग्रहका पाप ग्रहके साथ वाम वेध हो तो युद्धमें भंग, जो दक्षिण वेध हो तो गढमें खंड और सामने वेध हो तो दुर्गहानि होती है ।। ३० ।।

वृषादिराशित्रयभानुभोगाद्दिशाचतुष्कं क्रमतोऽस्तमैंद्याः ।।
ऐंद्री यदास्तंसमुपैतिशैवीतथाफलावाच्यनलस्यदिक् च ।। ३१ ।।

वृषादि तीन तीन राशियोंपर सूर्यका भोग होनेसे क्रमसे पूर्वादि चारों दिशा अस्तको प्राप्त होती हैं अर्थात् २।३।४ राशिमें पूर्व, ५।६।७ में दक्षिण, ८।९।१० में पश्चिम और ११।१२।१ में उत्तर दिशा अस्त हो जाती है । पूर्व दिशा जब अस्त होती है तो इशान और जव दक्षिण दिशा अस्त होती है तो आग्नेय दिशा भी अस्त होजाती है ।। ३१ ।।

तद्वत्प्रतीची निर्ऋतेर्दिशा स्यात् तथोत्तरा वायुदिशा तथा स्यात् ।।
भेऽस्ते रुजो हानिरिहाक्षरे च शोकः स्वरे विघ्न मलं च राशौ ।। ३२ ।।

एवं पश्चिम दिशा अस्त होती है तब नैर्ऋत्य और उत्तर दिशा अस्त होती है तब वायव्य दिशा भी अस्त हो जाती है । नक्षत्र अस्त हो तो रोग, अक्षर हो तो हानि, स्वर हो तो शोक, राशि हो तो वहुत विघ्न होते हैं ।। ३२ ।।

भयं तिथौ पञ्चसु मृत्युरेव यात्रां विवादं च रणं गृहस्य ।।
द्वारं शुभं चाप्यपरं समस्तमस्तोन्मुखं नैव कदा विदध्यात् ।। ३३ ।।

तिथि हो तो भय, यदि पांचों अस्त हों तो मृत्यु होती है । यात्रा, विवाद, युद्ध ग्रहका द्वार और सब शुभ कर्म अस्तके सामने नहीं करने चाहिये ।। ३३ ।।

यन्नामाद्यक्षरं ह्यस्तं स दैवनिहतः सदा ।।
पुष्टिर्धिष्ण्ये समुदिते लाभो वर्णे सुख स्वरे ।। ३४ ।।

जिसके नामका आदि अक्षर अस्त हो वह सदा ही दैवसे निहत रहता है, नक्षत्र उदय हो तो पुष्टि, वर्ण हो तो लाभ, स्वर हो तो सुख ।। ३४ ।।

राशौ जयस्तिथावोजः स्थानाप्तिः पंचकोदये ।।
प्रश्नेऽगं सत्फलं यच्च पापैर्विद्धं न सद्धि तत् ।।
शुभैः शुभं समैर्मध्यं ज्ञेयमत्र पुरोक्तवत् ।। ३५ ।।

राशि हो तो जय, तिथि हो तो बल और पांचों उदय हों तो जय प्राप्ति होती हैं । प्रश्नमें जो अंग शुभफलदायक भी हो वह यदि पाप ग्रहसे विद्ध हो तो शुभ नहीं होता, शुभ ग्रहोंसे विद्ध हो तो शुभ, सम ग्रहोंसे विद्ध हो तो मध्यम फल पहलेकी तरह समझना चाहिये ।। ३५ ।।

भूरिकालात्मके वेधे यदा चंद्रो व्यये भवेत् ।।
तदा वेधफलं वाच्यं शुभाशुभमसंशयम् ।। ३६ ।।

बहुत कालके वेधमें चन्द्रमा जब कभी बारहवें घर होगा तभी वेधका शुभाशुभ फल निःसंदेह जानना चाहिये ।। ३६ ।।

क्रूरैरुभयतो विद्धं यस्य भं तस्य देशपः ।।
देशदुर्गगढस्थानपुरो नश्यति वस्तु च ।। ३७ ।।

दोनों तर्फ क्रूर ग्रहोंसे जिसका नक्षत्र विद्ध हो उसका देशपति, देश, गढ, स्थान, पुर और वस्तु नष्ट हो जाते हैं ।। ३७ ।।

कृत्तिकादित्रयं मध्ये तथार्द्रादित्रिकं त्रिकम् ।।
पूर्वादिक्रमतो लेख्यं तत्र वेधे हि तत्क्षयः ।। ३८ ।।

कृत्तिकासे आदि लेकर तीन नक्षत्र मध्यमें तथा आर्द्रासे लेकर तीन तीन नक्षत्र पूर्व आदि दिशाओंमें क्रमसे लिखे, जहां वेध हो उसीका क्षय जाने ।। ३८ ।।

अयोध्या मिथिला चंपा कौशांबी कौशिकी तथा ।।
अहिच्छत्रं गया विंध्यमंतर्वेदिश्च मेखला ।। ३९ ।।

कृत्तिकादि तीन नक्षत्र विद्ध हों तो अयोध्या, मिथिला, चंपा, कौशाम्बी, कौशिकी अहिच्छत्र, गया, विन्ध्याचल, अन्तर्वेदि, मेखला ।। ३९ ।।

कान्यकुब्जः प्रयागश्च मध्यदेशोऽग्निभत्रये ।।
विद्धे नश्यति तत्रापि यत्र वेधो भवेत्क्षयः ।। ४० ।।

कान्यकुब्ज, प्रयाग, मध्यदेश नाशको प्राप्त होते हैं और जहां वेध हो वहां भी क्षय होता है ।। ४० ।।

अग्नौ पुष्ये च रेवत्यां नक्षत्रे च पुनर्वसौ ।।
विद्धे यथाक्रमं वेधो वर्णेषु ब्राह्मणादिषु ।। ४१ ।।

कृत्तिका, पुष्य, रेवती और पुनर्वसु ये नक्षत्र विद्ध हों तो यथाक्रमसे ब्राह्मणादि वर्णोंमें दुःखादि उत्पन्न होते हैं ।। ४१ ।।

तैलं भांडं रसो धान्यं वाहेभादिचतुष्पदम् ।।
यावत्पापव्यधस्तावत्सर्वं गच्छेन्महर्घताम् ।। ४२ ।।

जबतक पाप ग्रहका वेध रहता है तवतक तेल, भांड (बर्तन), रसवाली बस्तु, धान्य घोडा और हाथी आदि चतुष्पद ये सब महर्घताको प्राप्त होते हैं ।। ४२ ।।

क्रूरवेधसमादयोगे यस्योपग्रहसंभवः ।।
तस्य मृत्युर्न संदेहो रोगिणो निर्बलस्य च ।। ४३ ।।

क्रूर ग्रहके वेधमें जिस रोगी वा निर्बल पुरुषके जन्मनक्षत्रपर उपग्रहयोगकी उत्पत्ति हो तो उस पुरुषकी निःसंदेह मृत्यु होती है ।। ४३ ।।

सूर्यभात्पञ्चमाष्टाख्यमशुभं चैकविंशतेः ।।
चतुष्कं जन्मभं चेत्स्यात्तदा भूयादुपग्रहाः ।। ४४ ।।

सूर्यके नक्षत्रसे पांचवा ,आठवां नक्षत्र अशुभ है तथा इक्कीससे आगे चार २२। २३। २४।२५ वां यदि नक्षत्र हो तो उपग्रह दोष होता है ।। ४४ ।।

अनिष्टं जनुर्भे प्रविद्धे दशर्क्षे हि कर्मक्षयश्चाष्टमे स्यात्प्रभेदः ।।
धृतौ द्रव्यनाशस्त्रयोविंशतौ रुक् तथा पंचविंशेऽतिदुःखं खलैः स्यात् ।। ४५ ।।

यदि जन्मका नक्षत्र पाप ग्रहोंसे विद्ध हो तो अनिष्ट, १० वाँ हो तो कर्मनाश, ८ वां हो तो प्रभेद, १८ वाँ हो तो द्रव्यनाश २३ वाँ हो तो रोग, २५ वाँ विद्ध हो तो दुःख होता है ।। ४५ ।।

तमोभतः पंचमगं नृपस्य भ पलायते राट् सचिवो निहन्यते ।।
भटर्क्षतश्चेद्दशमेऽवनीसुतः स्वपक्षतो मृत्युमवाप्नुयान्नृपः ।। ४६ ।।

राहुके नक्षत्रसे राजाका पांचवा नक्षत्र होवे तो राजा युद्धसे भाग जाता है तथा मंत्री मारा जाता है । योद्धाके नक्षत्रसे दशवें नक्षत्रपर मंगल हो तो राजा अपने पक्षवालोंसे मृत्युको प्राप्त होता है ।। ४६ ।।

विद्धे राज्ञो ज्ञातिभे ज्ञातिनाशो राजर्क्षे स्याद्बंधनं देशभे च ।।
देशत्यागो ह्यूनविंशे प्रवासश्चेदत्रैवोपग्रहो मृत्युहेतुः ।। ४७ ।।

यदि राजाकी ज्ञातिके नक्षत्रपर मंगल हो तो जातिका नाश और जो राजाके नक्षत्रपर हो तो राजाका बन्धन, यदि देशके नक्षत्रपर हो तो देशत्याग, उन्नीसवें नक्षत्रपर हो तो यह उपग्रह भी मृत्युका कारण है ।। ४७ ।।

अथवा तुरङ्गराहुर्विचारणीयः

राहोर्भतः सप्तकमानने स्यात्स्कन्धे ततः सप्त तथोदरे च ।।
सप्त त्रिके सप्तयथाक्रमेण लिखेच्च योद्धर्क्षमु तत्र चिन्त्यम् ।। ४८ ।।

अथवा तुरंगराहु इस प्रकारसे विचारना चाहिये कि, राहुके नक्षत्रसे सात सात नक्षत्र मुख, सात स्कन्ध, सात उदर, और सात कटिपर लिखे । इस प्रकारसे चक्रमें योद्धाका जन्मनक्षत्र विचारे कि, किस अंगपर आया है ।। ४८ ।।

मृतिं वक्त्रे स्कन्धे भयमुदरदेशे हि विजयं,
कटौ घातं स्याद्वै भवति यदि भं योद्धृजनिभम् ।
सजीवं मध्यत्वं यदि सशनि मूर्धक्षतिमथो,
सभौमं तद्धातं सविधु मरणं चेद् बुधयुतम् ।। ४९ ।।

यदि मुखपर हो तो मृत्यु, स्कंधपर भय, उदरपर विजय और कमरपर घात होता है । यदि तुरङ्गमुखस्थित योद्धाके जन्मनक्षत्रपर बृहस्पति हो तो मध्यम फल, शनि हो तो शिरमें घाव, मंगल हो तो घात, चन्द्रमा हो तो मरण, बुध हो तो ।। ४९ ।।

अभव्यं शुक्राढ्यं रणविमुखतां केतुसहितं,
रणे शस्त्रत्यागं सरवि रिपुतामेव तनुते ।
यदांसस्थं सेज्यं दिशति विजयं चेत्क वियुतं,
रणे शस्त्रत्यागं यदि सशनि भंगं सविधु तत् ।। ५० ।।
तदा शस्त्रभ्रंशं स रवि रिपुवश्यं कुजयुतं,
तनुच्छेदं विद्युत् स्खलनमु सकेत्वात्महननम् ।
भमौदय सेज्यं दिशति विजयं चेत्कवियुतं,
रिपोर्वैमुख्यं तत्सशनि समतां साकमु जयम् ।। ५१ ।।
ससौम्यं शूरत्वं खलु सविधु चेद्भीतिमतुलां,
सपुच्छं चेत्संधिं यदि रिपुर्मृतिं भौमसहितम् ।
कटिस्थं भं सेज्यं दिशति विजयं सेन्द्वपचयं,
सशुक्रं तत्साम्यं सशनि हि भयं सेन्दुतनयम् ।।
परं क्लेशं सारं मृतिमथ ससूर्यं रिपुवशं,
सकेतु श्रीहानिं समरविमुखत्वं च दिशति ।। ५२ ।।

अकल्याण, शुक्र हो तो युद्धसे विमुखता, केतु हो तो युद्धमें शस्त्रत्याग और सूर्य हो तो शत्रुताको बढाते हैं । इसी प्रकार स्कंध, उदर तथा कटिस्थित नक्षत्रपर ग्रहस्थितिका फल चक्रोंमें समझ लेना चाहिये ।। ५० ।। ५१ ।। ५२ ।।

स्कंधफलम् ।

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	के
शत्रुके वश होना	शस्त्रभ्रंश	शरीर छेदन	स्खलन	विजय	युद्धमें शस्त्रत्याग	भंग	आत्मघात

उदरफलम् ।

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	के
जय	अतुल भय	शत्रुमृति	शूरता	विजय	शत्रुकी विमुखता होनी	समता	सन्धि

कटिफलम् ।

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	के
शत्रुके वश होना	अपचय	मृत्यु	परमक्लेश	विजय	समता	भय	श्रीहानि और युद्धमें विमुखता

रवेर्भात्तिथ्यंकत्रिनखमितमिष्टर्क्षमथवा ।।
त्रयोविंशं केतोमृतिसमुचितोपग्रह इति ।। ५३ ।।

सूर्यके नक्षत्रसे १५ । ९ । ३ । २० वां इष्ट नक्षत्र हो; अथवा केतुका तेईसवां हो तो यह मृत्युका करनेवाला उपग्रह कहा है ।। ५३ ।।

सेनापतेः शुभाशुभज्ञानम्

राजा मंत्री च सेनानीः कोटपालो यथाक्रमम् ।।
शनिः सूर्यस्तथा सोमो बुध एभ्यः फलं वदेत् ।। ५४ ।।

राजा, मंत्री, सेनापति, कोटपाल क्रमसे शनि, सूर्य, चंद्र, बुध हैं इनसे शुभाशुभ फल कहे ।। ५४ ।।

शीघ्रगाश्चरराशिस्थाः पालयन्ति निशाश्चमूम् ।।
शनौ नीचगते पौरा रवौ नीचगतेऽध्वगाः ।। ५५ ।।

यदि शीघ्रगतिवाले ग्रह चरराशिस्थ हों तो अपने पुरुष और जो शनि नीचका हो तो पुरवासी लोग और यदि सर्व नीचका हो तो रस्तागीर मनुष्य सेनाकी रक्षा करते हैं ।। ५५ ।।

बंधनं वाहिसंयुक्ते मृत्युः शत्रुनिरीक्षिते ।।
सक्षतो रिपुसंयुक्ते वरयुक्तो हि निर्भयः ।। ५६ ।।

शनि वा सूर्य राहुसे युक्त हो तो बंधन, शत्रुसे दृष्ट हो तो मृत्यु, शत्रुसे युक्त हो तो घाव और शुभग्रहयुक्त हो तो सेनापति निर्भय होता है ।। ५६ ।।

शीघ्रगा मित्रसंयुक्ता मित्रेणालोकिता यदि ।।
तदा संधिं विजानीयात्सैनयोरुभयोरपि ।। ५७ ।।

यदि शीघ्रगति ग्रह मित्र ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो दोनों सेनाओंमें सन्धि हो जाती है ।। ५७ ।।

अबलांशगते चंद्रे स्त्रीखेटप्रविलोकिते ।।
अबलर्क्षगते वापि स्त्री स्यात्सैन्यस्य पालिका ।। ५८ ।।

यदि स्त्रीग्रहके नवांशमें चंद्रमा स्त्रीग्रहसे दृष्ट हो; अथवा स्त्रीराशिगत हो तो सेनाकी रक्षा करनेवाली स्त्री होती है । ५८ ।।

कस्यांगस्य घात इति प्रश्ने विचारः

अकर्क्षतो भटर्क्षं दशमं तज्जन्मपादश्च ।।
दक्षकरोदरघातो द्वादशभं चेत्तु हस्तघातश्च ।। ५९ ।।

यदि सूर्य नक्षत्रसे योद्धाका जन्मनक्षत्र वा जन्मनक्षत्रका चरण दशवां हो तो दाहिने हाथ और उदरपर घाव लगा है। यदि बारहवां हों तो हाथपर लगा है ।। ५९।।

जीवति चतुर्दशं चेज्जन्मांघ्रिश्चात्र दोर्निहतिः ।।
पंचदशं भुजघाताद्भूपतिर्विंशं तथैकविंशं चेत् ।।
कायहर्तोम्रियते चेत्सिद्धभमादक्षपादपृष्ठहतेः ।। ६० ।।

और जो चौदहवां नक्षत्र व जन्मचरण हो तो जीवता है तथा भुजामें प्रहार होता है और यदि पन्द्रहवां हो तो भुजाकी चोटसे मृत्युको प्राप्त होता है, यदि १६ । २० । २१ वां हो तो शरीरकी चोटसे और जो चौबीसवां हो तो दाहिने पैरसे लेकर पीठमें चोट लगनेसे मृत्यु हो ।। ६० ।।

लग्नाद्वावीरजन्मर्क्षाद्देहेऽर्के शिरसि क्षतिम् ।।
चंद्रे व्यये मुखे भौमे लाभे वक्रहृदोर्बुधे ।। ६१ ।।
खे स्तने च गुरौ भाग्य ऊर्वौः शुक्रेऽष्टमे गुदे ।।
शनौ चतुर्थगे जान्वोर्धियि राहौ भुजद्वये ।। ६२ ।।

अथवा यदि लग्नसे वा वीरकी जन्मराशिसे सूर्य लग्नमें हो तो शिरमें घाव हो चंद्रमा बारहवें हो तो मुखमें, मंगल ग्यारहवें हो तो मुख और हृदयमें, बुध दशवें हो तो छातीमें, बृहस्पति नवें हो तो जंघाओंमें, शुक्र आठवें हो तो गुदामें, शनि चौथे हो तो घुटनामें, राहु पांचवें हो तो दोनों भुजामें ।। ६१ ।। ६२ ।।

केतौ षष्ठे हनोमूले शीर्षे वा भटजन्मतः ।।
अष्टमेशे मृतौ हस्ते ज्येष्ठ भ्रात्रगराट् त्रिभे ।।
कण्ठे स्वगृहनिर्माणेलग्ने शेषे भवेच्छ्रुतौ ।। ६३ ।।

केतु छटे हो तो ठोढीमें वा शिरमें; अथवा योद्धाकी जन्मराशिसे अष्टमेश आठवें हो तो वडे हाथमें अर्थात् दाहिनेमें, तृतीयेश और लग्नेश तीसरे घरमें हो तो कण्ठमें और अपने गृहनिर्माणकी लग्नमें शेष ग्रह हों तो कानमें घाव हो ।। ६३ ।।

दुर्गभंगप्रश्ने विचारः

खलेऽबले वासबले तनौ नो दुर्गस्य भंगोऽष्टमभे हि भंग ॥
भौमे तनौ वा दितिजे न भंगो यदा सुरः सप्तम आशु भंगः ॥ १ ॥

बलवान् वा निर्वली पाप ग्रह लग्नमें हो तो दुर्गभंग नहीं हो। यदि आठवें पाप ग्रह हो तो भंग होता है और मंगल वा राहु लग्नमें हो तो भंग नहीं होता। यदि राहु सप्तममें हो तो शीघ्र ही भंग हो ॥ १ ॥

तनौ खलो दुर्गशुभाय चौग्री दृष्टिर्न चातः परथाऽन्यथा च ॥
विवादसंग्रामरिपुप्रणाशदुर्गप्रभंगादिषु चेत्खलोऽङ्गे ॥ २ ॥

यदि लग्नमें पाप ग्रह हो तो शुभ फल और जो पापदृष्टि हो तो अशुभ फल होता है। इससे दूसरी तरहपर हो तो अन्यथा फल होता है अर्थात् शुभ ग्रह लग्नमें हो तो दुर्गभंग और जो शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो दुर्गरक्षा हो। विवाद, संग्राम, शत्रु-नाश, दुर्गभंग इत्यादिकोंमें पाप ग्रह लग्नमें हों तो ॥ २ ॥

शुभाय नो दृक् यदि सप्तमूर्त्योः खलाः षडष्टस्वमतोंऽगनाथः ॥
नदुर्गभंगो यदि रिष्फवित्ते खला न भंगोऽप्यरिवेष्टितानाम् ॥ ३ ॥

शुभ और जो दृष्टि हो तो अशुभ फल होता है। यदि लग्न सप्तममें पाप ग्रह हों और छठे, आठवें और दूसरे लग्नेश हो तो दुर्गभंग नहीं होता। यदि बारहवें, दूसरे, पापग्रह हों तो शत्रुसे घेरे हुए पुरुषोंका भंग नहीं होता ॥ ३ ॥

खलैश्चतुः कर्मगतैश्च येन प्रवेष्टितं दुर्गमतोऽस्य नाशः ॥
पलायनं वा तनुपुत्रकर्मजीवेऽरिसैन्यं प्रबलं गृहीत्वा ॥ ४ ॥
दुर्गं क्षणेनैव पराङ्मुखः स्याद्यदा तनुस्थस्तनुवीक्षको वा ॥
जीवो हितालोकनतोऽर्कशुक्रौ चंद्रेक्षितौ चोदयिभिः प्रवीर्यैः ॥ ५ ॥
शुभैर्गढस्थस्य जयप्रहर्षक्षेमोद्गमश्चेत्तनुगोंऽगनाथः ॥
शुक्रोऽथवेज्यो भवगः शुभं स्याद्दुर्गस्थितानां शुभमित्रदृष्टः ॥ ६ ॥

यदि पाप ग्रह चतुर्थ, दशममें हो तो जिसने किला घेर लिया है उस राजाका नाश वा पलायन हो। १ । ५ । १० में बृहस्पति हो तो शत्रुकी प्रबल सेना क्षणमात्रमें दुर्गको लेकर लौट जाती है। यदि बृहस्पति लग्नमें स्थित हो वा मित्रदृष्टिसे लग्नको देखता हो और बलवान् उदयके शुभ ग्रहों तथा चंद्रमासे सूर्य और शुक्र दृष्ट हों तो गढपति राजाको जय, प्रहर्ष, कल्याणकी प्राप्ति होती है। यदि लग्नेश लग्नमें शुक्र वा बृहस्पति ग्यारहवें, शुभग्रह अथवा मित्रग्रहोंसे दृष्ट हों तो दुर्गस्थित पुरुषोंको शुभदायक होते हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

विशेषतः स्वोदयिसौम्यदृष्टो जयाय चेद् वृश्चिकसिंहसंज्ञे ॥
तातारिलग्ने सबलो गढस्थो बहिः स निर्गम्य रणाज्जयाय ॥ ७ ॥

यदि विशेषकरके अपने उदयके शुभ ग्रहसे दृष्ट हो तो विजय होती है। यदि दशम, छठे, या लग्नमें वृश्चिक, सिंहराशिपर बलवान् लग्नेश वा शुक्र वा बृहस्पति हों तो गढस्थित राजा बाहिर निकलकर युद्धसे जय पाता है ।। ७ ।।

स्थिरे केंद्रगे पूर्णवीर्येऽङ्गनाथे पुरेशो बली सप्तमे चैवमन्यः ।।
य आपोक्लिमेयोऽस्तगोवक्रगोवाबलोनोंऽगसप्तेशयोर्निर्बलोऽसौ ।। ८ ।।

यदि लग्नेश पूर्ण बली होकर स्थिरसंज्ञक केन्द्रमें हो तो पुरेश बली और जो सप्तमेश इस प्रकारसे हो तो यायी राजा बली होता है। यदि लग्नेश सप्तमेश दोनों-मेंसे कोई आपोक्लिममें हो, अथवा अस्तका हो वा वक्री हो, वा न्यूनबली हो तो वही राजा निर्बल होता है ।। ८ ।।

स्वभेशोंऽगमंगेश्वरं मित्रदृष्टचा प्रपश्येद्बली दुर्गपश्चेत्सुखेशः
स्मरारीश्वरौ मित्रदृष्टचा प्रपश्येद्बलीयान् रिपुश्चेत्तनौ नाधिकारः ।।९।।
दशेशस्य वार्कस्य वै दुर्गभङ्गश्चरेंऽगे खले वोक्तयोगेऽतियत्नात् ।।
यदांगे स्वभोच्चादिगानां कबूलं सितेज्येन्दुजानां च वा सुत्थशीलम् ।।१०।।

यदि स्वराशिपति लग्न वा लग्नेशको मित्रदृष्टिसे देखता होतो दुर्गेस बली और यदि चतुर्थेश ,सप्तमेश, षष्ठेशको मित्रदृष्टिसे देखता हो तो शत्रु बली होता है। यदि लग्नमें दशमेश वा सूर्यका अधिकार नहीं हो तो दुर्गभंग हो, अथवा इसी उक्त योगमें चरलग्नस्थ पाप ग्रह हो तो अतियत्नसे दुर्गभंग हो। यदि लग्नमें अपने उच्चराशिगत ग्रहोंका कंबूल अथवा शुक्र, वृहस्पति, बुधका इत्थसाल योग हो तो ।। ९ ।। १० ।।

न दुर्गस्थ भंगो रवीन्द्वारमंदेत्थसाले द्विदेहोदये दुर्गभंगः ।।
चरर्क्षे विशेषप्रयत्नेन भूयाद्यदांगे विधुः पापयुक् कर्मगेन ।। ११ ।।
खलेनेक्षितो यत्नतो दुर्गभंगो यदा द्व्यादयः पापिनःसेन्दवोंऽगे ।।
स्मरे वा रणे पार्थिवस्य क्षयः स्याच्छुभस्येक्षणादत्र नूनं जयः स्यात् ।। १२।।

दुर्गका भंग नहीं होता। यदि द्विस्वभाव लग्नमें सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और शनिका इत्थसाल हो तो दुर्गभंग हो। यदि चर राशिपर हों तो विशेष यत्नसे दुर्गभंग हो यदि लग्नमें पापयुक्त चन्द्रमा दशमस्थ पाप ग्रहसे दृष्ट हो तो यत्नसे दुर्गभंग हो। यदि दो वा तीन आदि पाप ग्रह चन्द्रमाके साथ लग्नमें वा सातवें हों तो युद्धमें राजाका नाश होता है। किन्तु यदि शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो निश्चिय ही जय होती है ।। ११ ।। १२ ।।

शुभैर्मंदगैः पूर्णवीर्यैः स्मराम्बापदे यायिभिर्नैव भंगश्च भग्नाः ।।
याय्याशु नश्येद्यदांगे च संस्था पृथग्भानुदैत्यारमंदाभिधानाः ।
शुभाःसप्तमे दुर्गभंगोऽस्य यत्नाच्चरेंगेऽत्र दुर्गेट् व्रजेत्त्यक्तदुर्गः ।। १३ ।।

यदि पूर्ण बली शुभ ग्रह मंदगति होकर सातवें ,चौथे घरमें प्राप्त हों तो दुर्गभंग नहीं होता, किन्तु यायी राजा भग्न होकर शीघ्र नाशको प्राप्त हो जाता है। यदि

लग्नमें सूर्यके भिन्न राहु, मंगल, शनैश्चर और सातवें, शुभ ग्रह हों तो यत्नसे गढपतिका दुर्गभंग हो । यदि चर लग्नमें उक्त योग हों तो दुर्गपति किलेको छोडकर भाग जाता है ।। १३ ।।

भानौ वा भानुसूनौ कुभुवि तनुगते यंत्रपातोऽति दुर्गा,
च्चेदुग्रः केंद्रगो वेष्टकमनुजपतेर्बंधुहा यंत्रघातैः
चेल्लग्नेट् केंद्रसंस्थः शुभमुथसिलकृद् दुर्गभंगाय सेनौ,
जोभेदात्पापलग्नांतरलवसमघस्राष्टमासैः प्रभंग ।। १४ ।।

सूर्य, वा शनि वा मंगल लग्नमें हों तो किलेसे यन्त्रोंका अतिपात हो अर्थात् बहुतसे शस्त्रकलें युद्धके लिये चलाई जावें । यदि पाप ग्रह केन्द्रमें हो तो घेरनेवाले राजाके बन्धुका यन्त्रपातसे नाश होता है । यदि लग्नेश केन्द्रमें स्थित होकर शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो सेनाका बल भेदन होनेसे दुर्गभंग हो सकता है; किन्तु पापग्रह और लग्नके अन्तरके अंशोंके समान दिनों तथा आठ महीनेमें दुर्गभंग होता है ।। १४ ।।

नेऽनलदाहतः खण्डचार्कसुते संगरतः कुजे बुधे च ।।
शनिभौमयुते र्दिते वा गढभंगो हि लेन भेद स्योः ।। १५ ।।

यदि (लगनेश) सूर्य केंद्रमें स्थित हो तो अग्निदाहसे, शनैश्च हो तो खण्डन करनेसे, मंगल और बुध हो तो युद्ध करनेसे, शनि और मंगलसे युक्त वा पाप ग्रहसे पीडित (लग्नेश) हो तो भेदन तथा खण्डनके बलसे ।। १५ ।।

राहौ पाखण्डच्छलाभ्यां च भंगः केतौ दुर्गेडेवदुर्गं हि जह्यात् ।।
सार्क्यब्जेम्बुक्षीणतो दुर्गलाभः सार्क्यारे न्रंगे रणाग्न्यन्ननाशात् ।। १६ ।।

राहु हो तो पाखण्ड और छलसे दुर्गभंग हो और यदि केतु हो तो दुर्गपति गढको त्याग जाता है । शनियुक्त चन्द्र हो तो जलक्षय होनेसे, शनियुक्त मंगल पुरुष-राशिके लग्नमें हो तो युद्धकी अग्निसे अन्ननाश हो जानेके कारण दुर्गलाभ हो ।। १६ ।।

तपनदृष्टधनाधिपराज्यता तनुधने तु शुभा गढनायकः ।।
बहुसहायबलो सुदृशा यदा स्मरपदृष्टहिमोंऽगपमुत्सिली ।। १७ ।।

यदि सूर्यसे दृष्ट धनेश हो तो राज्य बना रहता है और यदि लग्न द्वितीयमें शुभ ग्रह हों तो बहुत सहायसे गढपति बलवान् बना रहता है । यदि सप्तमेशकी शुभ दृष्टिसे दृष्ट चंद्रमा लग्नेशके साथ इत्थसाल करता हो तो ।। १७ ।।

अधिगतेट् प्रहिणोति वचोहरं तदुदितं नगरेडभिमानयेत् ।।
हितदृशांगपदृष्टविधुः स्मरेण्मुथसिली यदि पौरवचोहरम् ।।१८।।

यायी राजा अपने दूतको नगरपतिके पास भेजता है और फिर उसके कहे वाक्य नगरपति भी मान लेता है । यदि लग्नेशकी मित्र दृष्टिसे दृष्ट चन्द्रमा सप्तमेशके साथ इत्थसाल करता हो तो पुरवासी राजा दूतको भेजता है ।। १८ ।।

अपर ईरितसंधिमुतानयेद्यदि विधुः शनिभौमयुतस्तदा ।।
वचनहृद्वधबंधनिपीडितो यदि स लग्नपवीक्षितसौम्ययुक् ।। १९ ।।

और उसके सन्धिपत्रको यायी राजा मान लेता है। यदि चंद्रमा शनि और मंगलसे युक्त हो तो वचनका ले जानेवाला दूत वध तथा बंधनसे पीडित होता है। यदि चंद्रमा लग्नेशसे दृष्ट और शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो ।। १९ ।।

बहुधनांबरलाभकरोऽथ केंद्रगखलस्तुलग्नपपीडकः ।।
प्रथयति प्रभयं प्रवदेत्ततः खलु गढस्य पुरादिदिशः क्रमात् ।। २० ।।

बहुत धन और वस्त्रका लाभ हो। यदि केंद्रस्थ पाप ग्रह लग्न और लग्नपतिको पीडित करता हो तो पूर्वादि दिशाओंके क्रमसे गढको अवश्य अधिक भय पहुँचता है ।। २० ।।

लग्नेशफलम्

लग्नपतिर्यदि षष्ठे त्रिपुरात्मैव मृत्युभे मृतिकृत् ।।
व्ययभे व्ययकृत्सततं प्रश्नकृतोऽन्यर्क्षगः स शुभः ।। २१ ।।

यदि लग्नेश छठा हो तो प्रश्नकर्ताका आत्मा ही शत्रु होता है और आठवें हो तो मृत्यु, बारहवें हो तो व्यय करता है, जो अन्य स्थानगत हो तो शुभ होता है ।। २१ ।।

सखलो यः खलाक्रांतः सूर्ययुक्तश्च यो ग्रहः ।।
हतरश्मिः स नष्टः स्यान्नष्टाङ्गोऽत्राङ्गपः पुमान् ।। २२ ।।

जो ग्रह पापयुक्त पापाक्रान्त, सूर्ययुक्त वा हतरश्मि हो वह नष्ट कहाता है। यदि लग्नेश नष्ट हो तो प्रश्नकर्ता पुरुष नष्टांग होता है ।। २२ ।।

क्रूरेण जीवमानो यो राहुपार्श्वे यथा रविः ।।
क्रूराक्रान्तः स विज्ञेयः क्रूरयुक्तः समेंऽशके ।। २३ ।।

क्रूर ग्रहसे जीवमान जो ग्रह जैसे राहुके समीप सूर्य हो तो व क्रूराक्रान्त और क्रूर ग्रहसे समान अंशोंपर क्रूरयुक्त जानना चाहिये ।। २३ ।।

पूर्णया वीक्षितो दृष्टया पापदृष्टः स उच्यते ।।
प्रविविक्षुः प्रविष्टो वा सूर्यराशौ विरश्मिकः ।। २४ ।।

जो पूर्ण दृष्टिसे देखा गया हो वह पापदृष्ट और सूर्यकी राशिमें प्रवेशकी इच्छा वाला वा प्रविष्ट ग्रह विरश्मि कहाता है ।। २४ ।।

अथ वादप्रश्ने विचारः

विवादेखलोऽङ्गेजयीप्रश्नकृत्स्यात्स्मरेचेत्तदन्योद्वयोर्यद्बलः स्यात् ।।
विवादावसानेबलीयान्जयीचेद्विहायोदयास्तेस्थितौक्रूरखेटौ ।। १ ।।

यदि प्रश्नलग्नमें पाप ग्रह हो और प्रश्नकर्ता सातवें हो तो प्रतिवादी विवादमें जय पाता है। यदि दोनों स्थान यानी लग्न सप्तममें पाप ग्रह हो तो जिसका बली ग्रह हो वही अन्तमें बलवान् होता और विजय पाता है। लग्न और सप्तमको छोडकर अन्य स्थानोंमें स्थित दो पाप ग्रह ।। १ ।।

मिथः शत्रुदृष्टीतदावादिनौ द्वौ मिथःखड्गपुत्रीप्रहारं विधत्तः ।।
स्मरांगेशचंद्रेशराफेविवादश्चिरंद्विस्वभावेस्वगेऽन्येशसंसत् ।। २ ।।

परस्पर शत्रु दृष्टिवाले हों तो दोनों वादी आपसमें छुरीका प्रहार करते हैं। सप्तमेश और लग्नेशका चन्द्रमाके साथ इशराफ योग हो तो बहुत समयतक विवाद रहता है और द्वितीय घरमें द्विस्वभाव राशिपर सप्तमेश और लग्नेश हों तो राजाके स्थानमें सभा हो ।। २ ।।

अणुभुक्तौ तनुनाथे सबले केंद्रस्थिते बली प्रष्टा ।।
एवं मदपे वादी यदि लग्नास्तेशचंद्रमुत्थसिलम् ।। ३ ।।

सूक्ष्मभोगवाला अर्थात् जिसके बहुत थोडे अंशादिक बीते हों ऐसा लग्नेश बलवान् होकर केंद्रमें स्थित हो तो पूछनेवाला बली, इसी प्रकार सप्तमेश हो तो वादी बली होता है। यदि लग्नेश सप्तमेश का चन्द्रमाके साथ इत्थसाल हो तो ।। ३ ।।

तूर्णं विवादशान्तिर्यद्वा तन्वस्तनाथमित्रदृशा ।।
यदि कर्मेश्वरवर्गे लग्नस्मरनाथयोर्हि मुत्थसिलम् ।। ४ ।।

शीघ्र ही विवादकी शान्ति हो जाती है। अथवा लग्नेश सप्तमेशकी मित्रदृष्टिसे दशमेशके वर्गमें लग्नेश और सप्तमेशका इत्थसाल हो ।। ४ ।।

यद्वांबुपयुतदृष्टं तत्पतियुग्मं विवादहृन्नृपतिः ।।
वक्री तनुमदपत्योः संसदि विबलः खपेन यो दृष्टः ।। ५ ।।
ससद्यन्यायी स्याद्यश्चार्केणेत्थसालकृत्स बली ।।
यः स्वर्क्षोच्चे केंद्राधिपमुत्थसिली नृपः सहायः स्यात् ।। ६ ।।

अथवा चतुर्थेशसे युक्त वा दृष्ट लग्नेश सप्तमेश हों तो राजाके द्वारा दोनोंका विवाद शांत किया जाता है और लग्नेश, सप्तमेश दोनोंमें जो वक्री हो सभामें वही निर्बल और जो दशमेशसे दृष्ट हो वह सभामें अन्यायी और जो सूर्यके साथ इत्थसाल करता हो वह बली होता है। जो अपनी उच्च राशिका होकर केंद्राधिपतिके साथ इत्थसाल करता हो तो उसका सहायक राजा होता है ।। ५ ।। ६ ।।

चेत्कर्मपे वीर्ययुतेऽर्कपुत्रे क्षोणीजदृष्टे हि चतुष्टयस्थे ।।
न्यायस्तदा धर्मपरो न पूर्णदण्डेन युक्तोऽवनिजे दशस्थे ।। ७ ।।
ईज्ये सिते धर्मपरश्च पूर्णो न्यायो बुधे राज्यगते विमिश्रः ।।
भानौ सदंडः सशुभे हिमांशौ शुभः सदण्डस्त्वशुभेऽशुभश्च ।। ८ ।।

यदि शनि दशमेश होकर बलवान् हो तथा मंगलसे दृष्ट केंद्रस्थित हो तो न्याय धर्मयुक्त नहीं होता; किन्तु पूर्ण दण्डयुक्त होता है। यदि मंगल ,बृहस्पति और शुक्र दशवें हों तो धर्मयुक्त पूर्ण न्याय होता है। यदि बुध दशवें हो तो मिलाजुला, सूर्य हो तो दण्डसहित, शुभयुक्त चन्द्रमा हो तो शुभ, अशुभयुक्त हो तो दण्डसहित और अशुभ होता है ।। ७ ।। ८

**तनुमदनपशीतांशवीशराफे विवादश्चिरमशुभतनौ खे भूपसंस-
त्ततोऽन्या ।। ९ ।।**

लग्नेश और सप्तमेशका चन्द्रमाके साथ इशराफ योग हो तो विवाद चिरकाल-तक रहता है। यदि लग्न दशम स्थान अशुभ ग्रहयुक्त हो तो फिर राजाकी दूसरी सभा होती है ।। ९ ।।

रोगप्रश्ने विचारः

**वैद्य आद्यं खभं रोगवान् भेषज तुर्यभं रुग् रिपुः सत्पदं
यच्छुभम् ।। पापयुक् चेत्त्रिकस्थो विधुः पापिनः कोशसप्ता-
न्त्यगा रोगिणो मृत्यवे ।। १ ।।**

पहिला घर वैद्यका, दशवां रोगीका, चौथा औषधिका और छठा रोगका है। जो घर शुद्ध वा शुभग्रहयुक्त हो तो शुभ होता है, यदि पापयुक्त चंद्रमा ४।८।१२ वें हों और पाप ग्रह २।७।१२ वें हों तो रोगीकी मृत्यु होती है ।। १ ।।

**यदैवात्र योगे रविर्लग्नयातो बुधः सप्तमे स्याद् द्रुतं रोगिमृत्युः ।।
विरोगस्य कष्टं यदांगे खलः स्याद्भिषक् निर्गुणस्तत्कृता रोगवृद्धिः ।।२।।**

यदि इसी योगमें सूर्य लग्नमें ,बुध सातवें हों तो शीघ्र ही रोगीकी मृत्यु होती है और यदि रोगरहित हो तो कष्ट होता है। यदि लग्नमें पाप ग्रह हों तो वैद्य निर्गुणी होता है और उसके इलाजसे रोग बढ जाता है ।। २ ।।

**शुभेऽस्मिन् सुखी चेत्सुखे स्यादसौम्ये भिषग्भेषजैस्तस्य वै
दीर्घरोगः ।। शुभैरत्र सद्वैद्यदत्तौषधीभिः सुखी चेत्स्मरे पापि-
नोऽन्यः कुरोगः ।। ३ ।।**

यदि लग्नमें शुभ ग्रह हो तो सुखी हो जाता है। यदि चौथे घरमें पाप ग्रह हों तो वैद्यकी औषधिसे उसका दीर्घरोग हो जाता है। यदि चौथे घरमें शुभ ग्रह हों तो सद्वैद्यकी दी हुई औषधियोंसे सुखी हो जाता है। यदि सातवें पाप ग्रह हों तो औषधी और वैद्यसे कोई अन्य रोग पैदा हो जाता है ।। ३ ।।

**भिषग्भेषजाभ्यां विलोमे सुखी स्यात् खलैः कर्मगै रोग-
वृद्धिः स्वबुद्ध्या ।। कुपथ्याद्विलोमे सुखं चेद्धिमांशुः
शुभैर्दृष्टयुक्केंद्रगो लग्नपेन ।। ४ ।। विधायेत्थसालं हरेद्रोग-
जालं यदा केंद्रयातो विधुर्लग्ननाथः ।। शुभैः केवलैर्दृष्ट-
युग्वक्रगास्ताष्टपार्केर्विहीनो गदानाशु हन्यात् ।। ५ ।।**

यदि इसका विलोम हो अर्थात् सातवें शुभ ग्रह हों तो सुखी हो जाता है। जो पाप ग्रह दशवें हो तो अपनी बुद्धिसे कुपथ्य करनेसे रोगवृद्धि हो, यदि विलोम हो तो सुखी हो जाता है। यदि चंद्रमा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट युक्त होकर केंद्रस्थ हो और लग्नेशके साथ इत्थसाल करता हो तो रोगजालको हर लेता है। यदि केंद्रस्थ लग्नेश

और चंद्रमा केवल शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो तथा वक्री सप्तमेश अष्टमेश सूर्यसे रहित हो तो शीघ्र ही रोगोंको नष्ट कर देता है ।। ४ ।। ५।।

चरे वा द्विदेहे तनौ चंद्रलग्नेट् शुभैर्वीक्षितो वा स्वराशौहिमांशौ ।।
खभे वा सुखे रोगनाशोऽथ चंद्रांगपत्योःशुभेनेत्थसाले सुदृष्टे ।। ६ ।।

यदि चर वा द्विस्वभाव लग्नमें चंद्रमा और लग्नेश शुभ ग्रहसे दृष्ट हों, वा अपनी राशिके चंद्रमा दशवें वा चौथे हो तो रोगका नाश हो जाता है और चंद्रमा लग्नेशके इत्थसालको शुभ ग्रहने शुभ दृष्टिसे देखा हो ।। ६ ।।

सुखं रोगहानिर्यदेन्दुः स्वभस्थेत्थसाली रुजं हन्ति वक्रेऽत्र गेहे ।।
विकारं पुनः कल्पयेत्सत्यपथ्याद्यदींद्वंगपावष्टमे मृत्युरेव ।। ७ ।।

तो सुख और रोगहानि होती है। यदि स्वराशिस्थ चंद्रमा शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो रोगका नाश करता है और जो चंद्रमाके घरमें कोई वक्री ग्रह हो तो सत्पथ्यसे ही फिर विकार पैदा कर देता है। यदि चंद्रमा और लग्नेश आठवें हों तो मृत्यु होती है ।। ७ ।।

लग्नाष्टपमुत्थसिले पापदृशा वाष्टायगे लग्नपतौ ।।
निधनस्थे रोगिमृतिश्चेत्सुखादधोंऽगपतिः ।। ८ ।।

लग्नेश और अष्टमेशका इत्थसाल हो, अथवा लग्नेश, अष्टमेश पाप दृष्टिसे युक्त आठवें, ग्यारहवें हों; अथवा लग्नपति अकेला ही आठवें हो तो रोगीकी मृत्यु होती है। यदि चौथे घरसे नीचके स्थानमें लग्नश हो ।। ८ ।।

षष्ठे विधुःस्मरेशकृतमुत्थसिलो मदेड्रिपौ च मृतिः ।।
लग्नपचंद्रौ केंद्रे निधने वा पापमुत्थसिले ।। ९ ।।

षष्ठस्थ चंद्रमा सप्तमेशके साथ इत्थसाल करता हो, सप्तमेश छठे हो तो मृत्यु हो। यदि लग्नेश और चंद्रमा केंद्रमें वा आठवें स्थित होकर पाप ग्रहोंसे इत्थसाल करते हों ।।९।।

अस्तमितौ खलदृष्टौ रोगिमृतिश्चेत्तनौ हिमगुः ।।
मंदो व्ययेऽष्टमेऽर्को भौमः खे रोगिणस्तदा मृत्युः ।। १० ।।

अथवा अस्तंगत होकर पाप ग्रहोंसे दृष्ट हों तो भी रोगीकी मृत्यु हो। यदि चंद्रमा लग्नमें, शनि बारहवें, सूर्य आठवें और भंगल दशवें हो तो रोगीकी मृत्यु हो ।।१०।।

केंद्रे सबले जीवति नो चेन्नो वै यदा खलाः सर्वे ।।
तन्वंबुव्ययमृतिधीष्वायुर्नाशो यदा खलाः केंद्रे ।। ११ ।।

केंद्रमें बलवान् शुभ ग्रह हों तो जीवता है। यदि न हों तो नहीं जीवता है। यदि सब पाप ग्रह १।४।१२।८।५ वें हों तो आयुका नाश होता है। यदि पाप ग्रह केंद्रोंमें हों ।। ११ ।।

पृष्ठोदयेऽष्टमस्थे चंद्रे मृत्युर्यदाष्टमांगमदे पापाः ।।
शुभा विवीर्या रोगिमृतिश्चेद्विधुः सुखाष्टमगः ।। १२ ।।

और पृष्ठोदय राशिपर अष्टमस्थ चन्द्रमा हो तो मृत्यु हो। यदि अष्टम, लग्न और सप्तम घरमें पाप ग्रह हों और शुभ ग्रह निर्बली हों तो रोगीकी मृत्यु हो। यदि चंद्रमा चौथे अथवा आठवें ।। १२ ।।

पापद्वयमध्यगतो मृत्युश्चेज्जन्मभे शनिर्विसौम्यदृशा ।।
पापेक्षितो मृतिश्चेन्निधने यज्जन्मभं खलैर्दृष्टम् ।। १३ ।।

स्थित होकर दो पाप ग्रहोंके मध्यमें स्थित हो तो मृत्यु हो। यदि जन्मराशिस्थ शनिको पाप ग्रह विषम दृष्टिसे देखते हों (शुभग्रह न देखते हों) तो मृत्यु हो। यदि आठवें घरमें जिसकी जन्मराशि पाप ग्रहोंसे दृष्ट हो तो ।। १३ ।।

तस्य मृतिर्यदि चंद्रो मंदकुजर्क्षे तनौ खले मृतिगे ।।
मंदे कुजे भृगौ वा सप्तमगे निर्बलैः शुभैर्मृत्युः ।। १४ ।।

उसकी मृत्यु और यदि शनि या मंगलकी राशिपर चंद्रमा और लग्नमें पाप ग्रह आठवें शनि और मंगल, सातवें शुक्र हो और शुभ ग्रह निर्बल हों तो मृत्यु होती है ।। १४ ।।

केंद्रे त्रिकोणेषु शुभाः सदंगं सद्वीक्षितं पूर्णविधुश्च केंद्रे ।
त्रिलाभयोर्वा सुखमेति रोगी यदा तनौ वित्सकलश्च चंद्रः ।।
केंद्रे स्थितौशुक्रगुरूखलाश्चषडायगाःसौख्यमुपैति रोगी ।। १५ ।।

यदि १।४।७।१०।९।५ में शुभ ग्रह हों, शुभ लग्नको शुभ ग्रह देखते हों, पूर्ण चन्द्रमा १।४।७।१०।३।११ में हो तो रोगी सुखी हो जाता है। यदि लग्नमें बुध, पूर्ण चन्द्रमा, केन्द्रोंमें शुक्र और बृहस्पति तथा पाप ग्रह छठे, ग्यारहवें हों तो रोगी सुखी हो जाता है ।। १५ ।।

अथ देवादिदोषज्ञानं संततबाधादिषु

रवौ हि देवा हिमगौ च देव्यः शुक्रेऽम्बुदेव्यः पितरो गुरौ च ।।
शाकिन्य आरे कुलजास्तथा ज्ञे भूताः शनौ गोत्रभवाश्च राहौ ।। १ ।।

बारहवें वा आठवें सूर्य हो तो देव, चंद्रमा हो तो देवी, शुक्र हो तो जलदेवी, बृहस्पति हो तो पितर, मंगल हो तो शाकिनी, बुध हो तो कुलके भूत, शनि हो तो अपने गोत्रकी देवी और राहु हो तो ।। १ ।।

प्रेता व्ययाऽष्टोपगते प्रबाधां कुर्वंति चोच्चक्षगते प्रवीर्ये ।।
साध्यां हिमांशौ च कुजे विवीर्ये साध्यां यदा केन्द्रखलाः सवीर्याः ।।
बाधामसाध्यां प्रददत्यपापाः केंद्रे प्रवीर्या जपसाध्यतां च ।। २ ।।

प्रेत बाधा करते हैं। उच्च राशिका बलवान् चन्द्रमा हो तो साध्य तथा मंगल निर्बली हो तो साध्य बाधा करता है। यदि केंद्रोंमें पाप ग्रह बलवान् हों तो असाध्य और केन्द्रोंमें शुभ ग्रह बलवान् हों तो जपसाध्य बाधा करते हैं।२ ।।

मित्रेण प्रीतिर्वा संगमो भविष्यति न वेति प्रश्नविचारः

लग्नभवाधिपमुत्थसिले सति संगमतेऽप्यथवेष्टदृशौ ।।
तनुपे भवगे भवपेतनुगे हितता यदि केंद्रगयोर्ग्रहयोः ।। १ ।।
हितदृक् हितता यदि कंटकतो द्वितये च तयोः सुदृढा प्रथमा ।।
हितता च ततस्त्रिनपेस्थितयोर्हिततः प्रभविष्यति पूर्णतरा ।। २ ।।

लग्नेश और एकादशेशका इत्थसाल हो, अथवा दोनोंमें परस्पर मित्रदृष्टि हो तो मिलाप होवेगा और लग्नेश ग्यारहवें, एकादशेश लग्नमें हो तो मित्रता होगी । अथवा केन्द्रस्थ होकर दोनोंमें परस्पर मित्रदृष्टि हो तो भी मित्रता होगी । यदि केन्द्रोंसे दूसरे घरमें स्थित होकर दोनोंकी मित्रदृष्टि हो तो पहिली मित्रता दृढ हो जावेगी और केंद्रोंसे तीसरे घरमें स्थित हों तो मित्रता पूर्णतर होवेगी ।। १ ।। २ ।।

गुप्तकार्यप्रश्ने विचारः

लग्नेशि चंद्रे च शुभेत्थसाले वा सद्दृशा पूर्णबले च केंद्रे ।।
केंद्राद्द्वितीयेऽपि च गुप्तसिद्धिर्नापोक्लिमस्थे त्वशुभेत्थसाले ।। १ ।।

लग्नेश और चन्द्रमाका शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल हो, अथवा केन्द्रोंमें शुभ दृष्टिसे पूर्ण वलवान् हों, अथवा केन्द्रसे दूसरे स्थानमें हो तो गुप्तसिद्धि और अपोक्लिम (३।६।९।१२) स्थानमें स्थित होकर अशुभ ग्रहके साथ इत्थसाल करते हों तो सिद्धि नहीं होती है ।। १ ।।

व्ययप्रश्ने विचारः

परिणयकुटुंबमित्राद्यर्थं सौम्यैः खलैर्नृपाग्निचौरार्थम् ।।
भौमे व्यभिचारार्थं सौम्ये वाणिज्यगोपदाश्वार्थम् ।। १ ।।

यदि बारहवें घरमें शुभ ग्रह हों तो विवाह, कुटुम्ब और मित्रादिकोंके अर्थ पाप ग्रह हों तो राजा, अग्नि और चौरोंके अर्थ, मंगल हो तो व्यभिचारके अर्थ; बुध हो तो वाणिज्य, गोपद और अश्वोंके अर्थ ।। १ ।।

जीवे धर्माय भृगौ पत्यर्थं भास्करे नृपस्यार्थम् ।।
चंद्रे केलिसुखार्थं शन्यग्वोरन्त्यभे व्ययो नेष्टः ।। २ ।।

बृहस्पति हो तो धर्मके अर्थ, शुक्र हो तो पतिके अर्थ, सूर्य हो तो राजाके अर्थ चंद्रमा हो तो क्रीडासुखके अर्थ और शनि राहु हों तो नेष्ट व्यय हो ।। २ ।।

स्वामिभृत्यप्रश्ने विचारः

तनुधनमृतिसप्तमेषु सौम्यैःपतिभृतकौ धनिना सुखार्थयुक्तौ ।
इह पापिभिरीशभृत्यनाशो यदि शीर्षोदयभं शुभेक्षितं वा ।। १ ।।

१।२।८।७ इन घरोंमें शुभ ग्रह हों तो स्वामी और भृत्य किसी धनी पुरुषके द्वारा सुख और अर्थसे युक्त होते हैं और इन पूर्वोक्त घरोंमें पाप ग्रह हों तो स्वामी और नौकरका नाश होता है । यदि शीर्षोदय राशि शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो ।। १ ।।

धनमृत्यरिगैः शुभैस्त्रिलाभारिषुपतितैर्भृतकस्य सौख्यलाभौ ।।
तनुकोशमदाष्टमेषु पापाः क्रमतश्चेद्व्ययविभ्रमार्तिनाशाः ।। २ ।।

अथवा २ । ८ । ६ में शुभ ग्रह और ३ । ११ । ६ में पाप ग्रह हों तो भृतकको सौख्य और लाभ होता है । १ । २ । ७ । ८ में पापग्रह हों तो क्रमसे व्यय, विभ्रम, दुःख और नाश होते हैं ।। २ ।।

प्रभोः कीदृशं चित्तमिति प्रश्ने विचारः

सौम्येन्दुदृष्टौतनुसप्तपौ चेत्पापैर्विना भूमिपतिप्रसादः ।। १ ।।

यदि लग्नेश और सप्तमेशको शुभ ग्रह और चंद्रमा देखते हों और पाप ग्रह न देखते हों तो भूमिपतिकी प्रसन्नता जाननी ।। १ ।।

अयमन्यो वा प्रभुर्भव्य इति प्रश्ने विचारः

यदांगपः केंद्रगतः षडीशा वान्त्याधिनाथेन कृतेत्थसालः ।।
परेश्वरोऽर्थाय्र विलोमतो नो चेद्धर्मसंस्थे न हि वा त्रिगेन ।। १ ।।
लग्नेश्वरो मुत्थसिलं तनोति वा लग्नगोऽन्यः प्रभुरर्थदः स्यात् ।।
पापान्तरस्थोऽस्तगतः खलेत्थसाली हि केंद्रे न परःप्रभुःस्यात् । २ ।।

यदि केंद्रगत लग्नेश षष्ठेश वा द्वादशेशके साथ इत्थाल करता हो तो परप्रभु अर्थदायक है और जो विलोम हो तो परप्रभु अच्छा नहीं है । यदि नवमेश वा तृतीयेशके साथ लग्नेश इत्थसाल करता हो; अथवा लग्नमें स्थित हो तो दूसरा प्रभु अर्थदायक है और यदि लग्नेश पाप ग्रहोंके मध्यमें अस्तंगत हो; वा केंद्रस्थ होकर पाप ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो दूसरा प्रभु अच्छा नहीं है ।। १ ।। २ ।।

अथ स्वपतिः शुभो वाऽन्यपतिरिति प्रश्ने विचारः

तनुपे बलिनि शुभेक्षितयुक्ते स्वोच्चभगे च चतुष्टयसंस्थे ।।
शीतगुमुत्थसिले निजनाथोऽर्थप्रद एव यदा मदनेशः ।। १ ।।

लग्नेश बलवान् होकर शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो, अपनी उच्चराशिका होकर केंद्रमें स्थित हो, चंद्रमाके साथ इत्थसाल करता हो तो स्वपति अर्थका देनेवाला है । यदि सप्तमेश ।। १ ।।

स्वोच्चभकेंद्रगतः शुभवीक्षायोगगतो विधुमुत्थसिली च ।।
अन्यपतिः फलदो यदि लग्नेण्मुत्सरिफी विधुना फलदोऽन्यः । २ ।।

अपनी उच्चराशिगत होकर केंद्रस्थ हो, शुभ ग्रहोंसे दृष्ट तथा चंद्रमाके साथ इत्थसाल करता हो तो अन्य पति फलदायक होता है । यदि लग्नेश चंद्रमाके साथ इशराफ करता हो तो अन्य पति फलदायक होता है ।। २ ।।

सप्तपतिर्विधुमुत्सरिफी चेत्स्वीयपतिः फलदो यदि लग्ने ।।
शीतकरे खलमुत्सरिफेऽन्यो राट् फलदः शुभमुत्सरिफे नो ।। ३ ।।

यदि सप्तमेश चंद्रमाके साथ इशराफ करता हो तो स्वपति फलदायक होता है । यदि लग्नमें चंद्रमा पाप ग्रहके साथ इशराफ योग करता हो तो अन्य पति फलदायक

होता है और जो शुभ ग्रहके साथ इशराफ योग करता हो तो अन्य पति फलदायक नहीं होता ।। ३ ।।

सेन्दुशुभैस्तनुगैर्निजभूपः सप्तमगैरपरोऽर्थितदः स्यात् ।।
लग्नपतिस्तनुगो निजभर्त्तार्थाय च सप्तमतिर्मदनेऽन्यः ।। ४ ।।

चंद्रमायुक्त शुभ ग्रह लग्नमें हों तो स्वपति जो सातवें हो तो अन्य पति अर्थका देनेवाला होता है। लग्नेश लग्नमें हो तो निज भर्त्ता अर्थका देनेवाला और सप्तमेश सप्तम हो तो अन्य राजा फलदायक होता है ।। ४ ।।

एवं पदगृहवाहनादिप्रश्ने विचारणीयः ।।

इसी प्रकार पद, घर, वाहनादिप्रश्नमें विचारना चाहिये ।।

वाटिकाक्षेत्रादिलाभप्रश्ने विचारः

तनौ वारिभे सौम्यखेटैश्च केंद्रे विपापैः स्वभोच्चादिगैः सद्युतीक्षे ।।
दधानैः सुखंकर्षकस्यान्नलाभोयदांगे खलोनाप्तिरल्पासबाधम् ।। १ ।।
नृपाच्चोरतोथोऽम्बुनि क्रूरयुक्ते कृषिं सन्त्यजेद्राजचौरादिभीत्या ।।
खलैः सप्तमस्थैरवृष्टयान्नशोषो यदाल्पं भवेदन्नमीशो हरेत ।। २ ।।

लग्नमें वा छठे शुभ ग्रह पाप ग्रहोंसे रहित केंद्रमें स्थित होकर अपनी उच्चादि राशिके हों तथा शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तो खेती करनेवालेको सुखपूर्वक अन्नलाभ देते हैं। यदि लग्नमें पाप ग्रह हों तो प्राप्ति नहीं होती। यदि हो भी तो बाधासहित थोडी होवे, राजा वा चोरसे हानि पहुँचे । जो चौथा घर क्रूरयुक्त हो तो राजा चौरादिके भयसे खेतीको छोड देवे। यदि सातवें घरमें पाप ग्रह हों तो वर्षा न होनेसे अन्न सूख जावे और कुछ थोडासा होवे उसको राजा ले लेता है ।। १ ।। २ ।।

तथा वैरिचोरा हरन्ति द्रुतं चेद्दशेशे खसप्ताष्टगे सौम्ययुक्ते ।।
शुभालोकिते वाटिकाक्षेत्रसिद्धिर्दिगीशे शुभे वक्रियुक्ते च वक्रे ।। ३ ।।

अथवा वैरी और चोर छीन ले जाते हैं। यदि दशमेश १० । ७ । इन घरोंमें शुभग्रहयुक्त वा दृष्ट हो तो वाटिका क्षेत्रादिकी शीघ्र सिद्धि होती है और यदि दशमेश शुभ ग्रह हो और वक्री ग्रहसे युक्त हो वा आप ही वक्री हो ।। ३ ।।

भवेद्वृक्षकक्षेत्रनाशोऽथ तस्मिन्न वक्रेऽस्तगे जीर्णवृक्षाः शुभाः स्युः ।।
तनौ मार्गगो बालवृक्षाः शुभाःस्युश्चरे खेशदृष्टे द्रुमाणां क्षयः स्यात् ।४।

तो वृक्षक्षेत्रका नाश हो। यदि वह दशमेश वक्री न होकर अस्तका हो तो पुराने वृक्ष अच्छे रहते हैं और लग्नमें (दशमेश) मार्गी हो तो बालवृक्ष अच्छे बने रहते हैं अर्थात् फलदायक होते हैं और चर लग्न दशमेशसे दृष्ट हो तो वृक्षोंका नाश होता है ।। ४ ।।

भूभाटकप्रश्ने विचारः

तन्वम्बुखास्तेषु शुभैधनाप्तिर्भूभाटकादत्र खलैन चैव ।। १ ।।

१।४।१०।७ इन घरोंमें शुभ ग्रह हों तो भूभाटकसे धनकी प्राप्ति होती है और यदि पाप ग्रह हों तो नहीं होती है ।।। १ ।।

भृत्यचतुष्पदप्रश्ने विचारः

षष्ठेश्वरोलग्नपचंद्रमोभ्यां यदेत्थसाली रिपुपोऽङ्गगो वा ।।
षष्ठस्थितौ वा रिपुलग्ननाथौ शुभेक्षितौ वाहनभृत्यलब्धिः ।। १ ।।

यदि षष्ठेश लग्नेश और चन्द्रमाके साथ इत्थसाल करता हो, अथवा षष्ठेश लग्नमें हो; अथवा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट षष्ठेश और लग्नेश लग्नमें स्थित हों तो वाहन और भृत्य की प्राप्ति होती हैं ।। १ ।।

अङ्गाङ्गपौ वीर्ययुतौ तदानीं भृत्याश्च वाहाप्तिरथ स्मरे च ।।
स्मरेश्वरो वीर्ययुतौ हि वाहभृत्यादिलाभो नियतं प्रदिष्टः ।। २ ।।

यदि लग्न और लग्नेश बलवान् हों तो वाहन और भृत्यकी प्राप्ति और जो सातवें घरमें सप्तमेश बलवान् हो तो वाहन भृत्यका लाभ निश्चय ही होता है ।। २ ।।

बन्धमोक्षप्रश्ने विचारः

केन्द्रे केन्द्राधिनाथेन तनुपस्येत्थसालतः ।।
बन्धमोक्षो न लग्नेशो लग्ने केंद्रे खलाश्चिरात् ।। १ ।।

केंद्रमें केन्द्राधिनाथके साथ लग्नेशका इत्थसाल योग होनसे बँधा हुआ नहीं छूटता और लग्नमें, पाप ग्रह केंद्रमें हो तो बहुत कालमें छूटता है ।। १ ।।

सतामित्थसालश्च कंबूलयोगो यदा कंटके बन्धमोक्षश्चिरात्स्यात् ।।
यदापोक्लिमे लग्नपोऽन्त्येशपापेक्षितो दीर्घबन्ध यदा लग्नपेन्दू ।। २ ।।

यदि केंद्रमें शुभ ग्रहोंका इत्थसाल और कंबूल योग हो तों बँधा हुआ बहुत कालमें छूटता है। यदि आपोक्लिम स्थानमें लग्नेशको पाप द्वादशेश देखता हो तो बहुत कालतक बंधन रहे। यदि लग्नेश और चन्द्रमा ।। २ ।।

शुभैःसंयुतौ स्याच्छुभं केंद्रसंस्थांगनाथेत्थसाले न मोक्षोऽर्थितोऽपि ।।
यदा केन्द्रगो लग्नपस्त्र्यन्त्यधर्मारियातेत्थसाली हठाद्बन्धमोक्षः ।। ३ ।।
सुखेनाथ चंद्रांगनाथेत्थसाले हि कष्टादथाष्टेशपापांगपत्योः ।।
सुखे मुत्सिलं बन्धनान्मृत्युरेवेत्थसाले खलेन्द्वोः सुखे मृत्युरेव ।। ४ ।।

शुभ ग्रहोंसे युक्त हों तो शुभ फल होता है और यदि केन्द्रस्थ लग्नेशके साथ चन्द्रमाका इत्थसाल हो तो मोक्ष चाहनेपर भी नहीं छूटता । यदि केंद्रस्थ लग्नेश ३। १२।९।६ स्थानस्थित ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो हठ करनेसे सुखपूर्वक बन्धनसे छूटता है। अथवा चन्द्रमा और लग्नेशका इत्थसाल हो तो कष्टसे छूटता है; अथवा अष्टमेश पाप ग्रह और लग्नेशका चौथे स्थानमें इत्थसाल हो तो बन्धनसे मृत्यु और चौथे घरमें पाप ग्रह और चन्द्रमाका इत्थसाल हो तो भी मृत्यु हो ।।३।।४।।

मृतीशक्षपानाथयोरित्थसाले मृतिर्वांगनाथेऽस्तगे क्रूरदृष्टे ।।
मृतिश्चैवमारेविनिष्कास्य गुप्तेः समाहन्यते चेद्वपुःशीतरश्मी ।। ५ ।।

अष्टमेश और चन्द्रमाका इत्थसाल हो तो मृत्यु, अथवा लग्नेश अस्तंगत वा क्रूर दृष्ट हो तो मृत्यु होती है। इसी प्रकार मंगल भी अस्तका वा क्रूर ग्रहसे दृष्ट हो तो रक्षास्थानसे निकालकर मारा जाता है। यदि लग्नेश और चन्द्रमा ।। ५ ।।

चरे बंधमोक्षश्च कर्के तु कष्टाच्चिरराद्बन्धमोक्षोऽथमत्स्ये हिमांशौ ।।
विलम्बाद्रिपुत्वं स्थिरेंदौ चिरात्स्याद्द्विदेहे न मोक्षो भवेद्बन्धकाले ।।६।।

चर राशिके हो तो बँधा हुआ छूट जाता है यदि कर्क राशिके हों तो बहुत दिनों में कष्टसे छूटता है और जो मीन राशिका चंद्रमा हो तो विलंबसे छूटता है। यदि स्थिर राशिका चन्द्रमा हो तो बहुत कालपर्यंत शत्रुता रहती है। यदि द्विस्वभाव राशिका हो तो बन्धनके समय नहीं छूटता किंतु अत्यधिक कालमें छूटता है ।। ६ ।।

चंद्रेंऽगपे वा नवमे तृतीयसंस्थेत्थसाले सुखतः प्रमोक्षः ।।
चंद्रेंऽगपे वा सहजे त्रिधर्मनाथेत्थसाले सुखतः प्रमोक्षः ।। ७ ।।

अथवा नवमस्थ चंद्रमा वा लग्नेशका तृतीयस्थ ग्रहके साथ इत्थसाल हो तो सुखपूर्वक छूट जाता है। अथवा तृतीयस्थ चंद्रमा वा लग्नेशका तृतीयेश वा नवमेशके साथ इत्थसाल हो तो सुखसे छूट जाता है ।। ७ ।।

चेत्खेऽन्त्यलग्नाधिपमुत्थसीलं यमस्य गेहं समुपैति बद्धः ।।
यदाङ्गराण्मुत्थसिलीत्रिपेनधर्मेश्वरेणान्त्यगृहे स नश्येत् ।। ८ ।।

यदि दशवें घरमें द्वादशेश लग्नेशका इत्थसाल हो तो बँधा हुआ पुरुष यमराजके घर पहुँचता है और यदि बारहवें घरमें लग्नेश तृतीयेश और धर्मेशके साथ इत्थसाल करता हो तो बँधा हुआ जन नाशको प्राप्त हो जाता है ।। ८ ।।

स्वर्क्षे खगते चंद्रे लग्नपतौ त्रिस्थमुत्थसिले मुक्तिः ।।
स्यादथ बन्धवास्पदगतमुत्थसिलं यदा तृतीयचंद्रस्य ।। ९ ।।

दशवें घरमें राशिके चन्द्रमा और लग्नेश तृतीयस्थ ग्रहके साथ इत्थसाल करते हों तो बन्धनसे छूट जाता है और यदि शनिसे युत दृष्ट तृतीयस्थ चन्द्रमाका ।। ९ ।।

शनियुतदृष्टस्य चिरं गुप्तिस्थितिरङ्गकष्टमाधिरथो ।।
कुजयुतदृष्टे केंद्रे चंद्रे घातश्च बन्धने पीडा ।। १० ।।

चतुर्थस्थ ग्रहके साथ इत्थसाल हो तो बहुत कालपर्यन्त हवालातमें रहकर शरीरकष्ट और रोग भोगता है, अथवा केंद्रस्थित चन्द्रमाको मंगल देखता हो तो बन्धनमें घात और पीडा होती है ।। १० ।।

यदाङ्गराण्मित्रदृशाङ्गनेशं संवीक्षते न्यायकरस्तदेशः ।।
अरीक्षणो ना यदि लग्ननाथो दुश्चिक्यधर्माभिपतित्थसाली ।। ११ ।।

यदि लग्नेश मित्रदृष्टिसे सप्तमेशको देखता हो तो राजा न्याय करनेवाला जानना।

यदि पुरुष ग्रह लग्नेश शत्रुदृष्टिसे देखनेवाला होकर तृतीयाधिपति तथा धर्माधिपतिके साथ इत्थसाल करता हो तो ।। ११ ।।

स्वयं हि मोक्षः स चतुष्टये चेच्चिराद्धनेशोऽम्बुनि दीर्घबन्धः ।।
सप्ताधिपःसौम्यखगःसुदृष्टया ल्लग्नेशदर्शी यदि बंधदायी १२ ।।

आपहीसे छूट जाता है। यदि वह लग्नेश केंद्रमें हो तो बहु कालमें छूटता है। यदि द्वितीयेश चौथे घरमें हो तो दीर्घकाल बन्धन रहता है। यदि शुभ ग्रह सप्तमेश शुभ दृष्टिसे लग्नेशको देखता हो तो बन्धनका देनेवाला होता है ।। १२ ।।

दाक्षिण्यकृच्चेद्गुरुभेन चंद्रो विकेन्द्रगः सौम्यशशीशदृष्टः ।।
मोक्षःसुखं चेत्स्मरपो नवस्थोऽस्ते सौम्यदृष्टिः स्वयमेव नश्येत् ।। १३ ।।

यदि चंद्रमा बृहस्पतिकी राशिसे दक्षिणता करनेवाला अर्थात् दाहिनी तर्फ हो और केंद्ररहित स्थानमें स्थित हो; शुभ ग्रह तथा अपने स्वामीसे दृष्ट हो तो सुखपूर्वक छूट जाता है। यदि सप्तमेश नौवें घरमें हो और सातवें घरपर शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो आप ही नष्ट हो जाता है ।। १३ ।।

दिनर्क्षतः चतुर्भान्तर्बद्धर्क्षं बद्धनाशनम् ।।
ततस्त्रिभान्तर्मासेन तन्मोक्षश्च भवेत्ततः ।। १४ ।।

अथवा दिनके नक्षत्रसे लेकर चार नक्षत्रोंके मध्यमें बद्ध पुरुषका जन्मनक्षत्र हो तो बँधे हुएका नाश और उन चार नक्षत्रोंसे आगेके तीन नक्षत्रोंके अन्तर्गत हो तो छूट जाता है ।। १४ ।।

आचतुर्भं तस्य मृतिस्ततो दण्डेन चात्रिभम् ।।
तन्मोक्षश्च ततो नूनमाचतुर्भं रिपुक्षयः ।।
ततस्त्रिभान्तरा मासचतुष्केन स मुच्यते ।। १५ ।।

इन तीनसे आगे चार नक्षत्रोंतक हो तो मृत्यु और उससे आगे तीन नक्षत्रों-पर्यंत हो तो दण्ड पाकर छूट जाता है तथा इससे आगे चार नक्षत्रतक हो तो शत्रुका नाश हो और इससे आगे तीन नक्षत्रोंके मध्यमें हो तो चार महीनेमें छूट जाता है ।। १५ ।।

ततश्चतुर्भमध्ये हि तन्मृतिस्तदनन्तरम् ।।
आभत्रयं तस्य मोक्षो बलैनैतद्वदेत्सुधीः ।। १६ ।।

इसके आगेके चार नक्षत्रोंमें हो तो मृत्यु, इसके बाद नीन नक्षत्रोंमें हो तो मोक्ष नाम छूट जाता है। बुद्धिमानको उचित है कि इसका फल, बल विचार कर कहे ।।१६।।

---

१ दिनके नक्षत्रसे अर्थात् सूर्यके नक्षत्रसे गिनना चाहिये

वद्धमोक्षचक्रम्

४	३	४	३	४	३	४	३
नाश	मोक्ष	मृत्यु	दण्डन मोक्ष	शत्रुनाश	मासचतुष्केन मोक्ष	मृत्यु	मोक्ष

सभायां नृपेण गुप्तदत्तो लेखः कीदृश इति प्रश्ने विचारः ।

विधुर्यस्येशराफेऽस्ति केंद्रे स्वोच्चर्क्षगः स चेत् ।।
नृपो लेखप्रदोऽसौ चेदुपकेन्द्रे च्युतः पदात् ।। १ ।।

चन्द्रमा जिस ग्रहके इशराफमें हो और वह चन्द्रमा यदि केंद्रमें अपनी उच्च राशिका हो तो उस लेखका देनेवाला राजाही है और यदि चन्द्रमा केन्द्रोंके समीपवर्ती स्थानोंमें हो तो लेख देनेवाला अपने पदसे भ्रष्ट है अर्थात् राज्यच्युत है ।। १ ।।

लग्नेशे शशिनि निजोच्चगे सुलेखो लग्नेन्दू स्थिरगृह आदरेण राज्ञा ।।
संदिष्टो यदि तनुशीतगुर्निजेशा सन्दृष्टःकपटलिपिर्निरर्थकश्च ।।२।।

यदि लग्नपति चन्द्रमा अपनी उच्च राशिका हो तो राजाने अच्छा लेख दिया है और जो लग्न चंद्रमा स्थिर राशिके हों तो राजाने आदरसे किसी कामके लिये आज्ञा दी है और लग्न तथा चन्द्रमा अपने स्वामीकी शुभ दृष्टिसे दृष्ट हों तो कपटका लेख और निरर्थक है ।। २ ।।

पापेन्दौ खलमुत्सरिफे कुवृत्तः पूर्णेंदौ शुभकृन्मुत्सरिफे
भवेत्सुवृत्तः ।। चेल्लग्ने विधुविधुजेशराफयोगो लेखो वै
कुशलहरोऽन्यथाऽन्यथा च ।। ३ ।।

पाप चन्द्रमा शुभ ग्रहके इशराफमें हो तो लेखमें कोई निन्दित वृत्तांत है और यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहके इशराफमें हो तो अच्छा वृत्तांत है । यदि लग्नमें चन्द्रमा और बुधका इशराफयोग हो तो लेख अपनी कुशलका नाशक है और इस योगसे अन्यथा हो तो कुशलकारक है ।। ३ ।।

अनिष्टयोगेऽत्र तनावनिष्टो लेखो विशेषादशुभाय नूनम् ।।
कोशादिभे यत्र गते हिमांशौ बुधेशराफोऽस्ति च तद्ग्रहस्य ।।
वार्त्तानुकूला कथिता च शस्ता शुभेक्षणात्सा नच पापदृष्टे ।। ४ ।।

यदि लग्नमें अनिष्टयोग हो तो लेख भी अनिष्ट हैं और विशेषकरके अशुभ फलदायक है । यदि दूसरे घरसे आदि लेकर जिस किसी घरमें चन्द्रमाके साथ बुधका इशराफ योग हो तो उसी घरकी वार्त्ता अनुकूल कही गई है और उस घरको शुभ ग्रह देखते हों तो अतिनेष्ट वार्त्ता जाननी ।। ४ ।।

राज्ञो ग्रामादिमुद्रालिखितप्राप्तप्रश्ने विचारः

यदार्कविद्भूयां दशपेत्थसालस्तदा समुद्रालिखितस्य लाभः ।। ५ ।।

यदि सूर्य बुधके साथ दशमेशका इत्थसाल योग हो तो मुहरसहित लिखी हुई वस्तुका लाभ होगा ।। ५ ।।

यस्मै लेखो दत्तः संप्राप्तस्तेन मानितो न वेति प्रश्ने विचारः

विधुलग्नमुत्सिली स्मरेट् चेद्यदि वा लग्नपशीतगू कलत्रे ।।
ननु यस्मै प्रहितः स तेन लब्धो यदि चंद्रोदयपस्मरेट् कंबूलम् ।।
शुभमित्रदृशेक्षितं स लेखः प्रहितस्तत्र गतः सन्मानितश्च ।। १ ।।

चन्द्रमा और लग्नेशके साथ यदि सप्तमेश इत्थसाल करता हो अथवा लग्नेश और चन्द्रमा सातवें घरमें हों तो जिसके वास्ते लेख भेजा गया था उसने वह लेख पा लिया है ऐसा कहे । यदि चन्द्रमा और लग्नेशके साथ सप्तमेशका कम्बूल योग शुभ ग्रहकी मित्रदृष्टिसे दृष्ट हो तो जो लेख भेजा गया था सो वहां पहुँच गया और उसे लेनेवाले ने मान लिया है ऐसा बतावे ।। १ ।।

पत्रोत्तरप्रश्ने विचारः

ज्ञेन्दू यदीत्थसाले स्वोच्चभगौ शुभौ शुभोत्तरं पत्रम् ।। २ ।।

यदि बुध और चन्द्रमा शुभ होकर इत्थसालयोगमें हों तथा अपनी उच्च राशिके हों तो उत्तरपत्र शुभ जानना ।। २ ।।

लेखग्राही कदैष्यतीति प्रश्ने विचारः

लग्नेश्वरे प्रीतकरेऽथ केन्द्राद्विनिर्गते सप्तपतीशराफे ।।
मार्गे वहत्याशु चरे स्थिरे नो सौम्यैर्ग्रहैर्द्वित्रिगतैस्तथैति ।। १ ।।

लग्नेश वा चंद्रमा केन्द्रसे निकलकर सप्तमेशके इशराफयोगमें हो तो लेखग्राही मार्गमें चल रहा है यदि चर राशिका हो तो बहुत शीघ्र आता है, स्थिरका हो तो नहीं आवेगा और शुभ ग्रह दूसरे तीसरे घरमें हों तो आ रहा है ।। १ ।।

वार्त्तेयं सत्या मिथ्या वेति प्रश्ने विचारः

शुभेत्थसाले विधुलग्ननाथौ केन्द्रे ससौम्यौ किल सत्यवार्ता ।।
विपर्ययेणात्र मृषैव वार्ता पापस्य योगे त्वशुभाऽन्यथान्या ।। १ ।।

यदि शुभ ग्रहके इत्थसालमें चंद्रमा और केंद्रमें शुभ ग्रहके साथ हों तो निश्चय ही वार्ता सत्य है और यदि इस योगसे विपर्यय हो तो झूंठी है और पापग्रहका योग हो तो अशुभ है और यदि इससे अन्य प्रकारका योग हो तो कोई अन्य वार्ता है ।। १ ।।

लग्ने विधुः स्यात्प्रबलः खगेनेत्थसालकृच्चेत्प्रकटैव वार्ता ।।
आविर्भविष्यत्युदयोगेनांबुस्थेन गुप्ता प्रकटास्तगेन ।। २ ।।

लग्नमें बलवान् चंद्रमा यदि दशमस्थ ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो वार्ता प्रकट ही है और लग्नस्थ ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो वार्ता प्रकट हो जायगी । यदि चतुर्थस्त ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो वार्ता गुप्त रहेगी और सप्तमस्थ ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो प्रकट हो जायगी ।। २ ।।

शीतांवश्वस्थाबलतो ब्रूयाद्वार्तीविनिर्णयम् ।। ३ ।।

चन्द्रमाकी अवस्थाके बलसे वार्त्ता निर्णय कहे ।। ३ ।।

उत्पातभयनाशो भविष्यति नवेति प्रश्ने विचारः ।

कृतशुभमुत्थसिले तनुनाथे केंद्रगते सबले शुभदृष्टे ।।
नैव भयं यदि पामरभस्थः साऽशुभदृक् तनुपा बहुभीतिः ।। १ ।।

यदि शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल करनेवाला लग्नेश बलवान् होकर केंद्रमें स्थित हो और शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो तो भय नहीं होगा । यदि अग्नेश पाप ग्रहकी राशिपर स्थित तथा अशुभ ग्रहसे दृष्ट हो तो बहुत भय होगा ।।१।।

खलोदयपरन्ध्रराण्मुथसिलं यदा कण्टके मृतेर्भयमिहैव चेद्विधु-
खलर्क्षलग्नेशयोः ।। भवेन्मुथसिलं सबंधुहितरुग् यदा वित्त-
राट्खलोदयपमुत्सिली भवति कण्टके वित्तहृत् ।। २ ।।

यदि पाप लग्नेश औंर अष्टमेशका इत्थसाल केंद्रमें हो तो मृत्युका भय होगा और इसी योगमें चंद्रमा और पापराशिस्थ लग्नेशका इत्थसाल योग हो तो बंधुसहित मित्रोंको रोग होगा ऐसा कहे । यदि द्वितीयेश पाप लग्नेशके साथ इत्थसाल करने-वाला केंद्रस्थानमें हो तो धनका हरनेवाला होता है ।। २ ।।

व्ययपतिखललग्नाधीशयोरित्थसालं व्ययमदनगृहे चेत्पापदृष्टे स
नश्येत् ।। यदि तनुर्हिमरश्मी साशुभौ यत्र गेहे भवति किल ततो
भीश्चेत्खलर्क्षे विशेषात् ।। ३ ।।

द्वादशेश और पाप लग्नेशका इत्थसाल पाप ग्रहसे दृष्ट बारहवें और सातवें घरमें हो तो उसका नाश होगा । यदि लग्न और चन्द्रमा अशुभ ग्रहके साथ जिस घरमें हो उसी घरसे भय होना बतावे । यदि वह लग्न चन्द्रमा पाप ग्रहकी राशिके हों तो विशेष करके भय कहे ।। ३ ।।

जिघांसया व्रजतो मे किं भविष्यतीति प्रश्ने विचारः

लग्नाम्बुचंद्राश्चरभे प्रयातुः पराभवश्चेत्खलमुत्सिलीन्दुः ।।
खलेक्षितस्तत्र कृतेऽपि कार्ये विनिःसृतो मृत्युवशं प्रयाति ।। १ ।।

लग्न, चतुर्थ घर और चन्द्रमा वे सब चर राशिके हों तो जानेवालेकी हार होगी। यदि पाप ग्रहके साथ इत्थसाल करनेवाला चन्द्रमा पाप ग्रहसे दृष्ट हो तो कार्य सिद्ध कर लेनेपर वहांसे चलेगा तब ही मारा जायगा ।। १ ।।

चरोदये चाशुभदृष्टिवर्जिते शुभेत्थसाले हिमगौ शुभेक्षिते ।।
निजेशदृष्टे विजयं च तोषतां समेत्य यायादभयं द्रुतं बली ।। २ ।।

अशुभ ग्रहकी दृष्टि वर्जित चर लग्न हो और भ ग्रहके साथ इत्थसाल करनेवाला चन्द्रमा शुभ ग्रहोंसे तथा निजेशसे दृष्ट हो तो विजय संतोष पाकर बली होता हुआ निर्भय शीघ्र ही आ जायगा ।। २ ।।

स्थिरे विलग्ने निधनं च बंधनं खलेत्थसाले हिमगौ मृतिं व्रजेत् ।।
खले निजोच्चर्क्षगतेऽत्र भूभुजाप्रगृह्यतेऽतेऽत्र चरे च मुच्यते ।। ३ ।।

यदि स्थिर लग्न हो तो मृत्यु अथवा बंधन होगा और यदि चन्द्रमाका पाप ग्रहके साथ इत्थसाल हो तो मृत्युको प्राप्त हो जायगा। यदि स्थिर लग्नमें पाप ग्रह अपनी उच्च राशिका हो तो राजासे पकडा जायगा और जो चर लग्नमें उच्चका पाप ग्रह हो तो छूट जायगा ।। ३ ।।

वहुषु कार्येषु कस्य सिद्धिरिति प्रश्ने विचार:

शुभे बलिन्यंगपतौ चतुष्टये पुरोक्तसिद्धिश्च परत्र तत्परा ।। ४ ।।

यदि शुभ लग्नेश बली होकर केन्द्रस्थ हो तो पहले कहे हुए कार्य और जो लग्नेश अन्यत्र हो तो उससे पिछले कार्यों की सिद्धि होगी ।। ४ ।।

निधिवस्तुसिंहादिसंशयप्रश्ने विचार:

केन्द्रेऽगनाथे शुभमुत्थसीले तत्रास्ति वित्तं खलसद्युतेऽत्र ।।
नीतं तदन्यैश्च निखन्ययद्वावपु:पतौ वाहिमगौ तनुस्थौ ।। १ ।।

केन्द्रस्थ लग्नेश ग्रहके साथ इत्थसाल करता हो तो उस स्थानमें द्रव्य है और यदि पाप शुभ ग्रहसे युक्त लग्नेश केंद्रमें हो तो अन्य जन खोदकर ले गये ऐसा कहे, अथवा लग्नेश वा चन्द्रमा लग्नमें स्थित होकर ।। १ ।।

खगेत्थसाले धनमेति किञ्च हिमांशुलग्नेश्वरमुत्थसीले ।।
विपापकेन्द्रे खननान्निधि:स्यादेवं हरिस्तत्र नवेति चिन्त्यम् ।। २ ।।

दशमस्थ ग्रहसे इत्थसाल करते हों तो थोडा धन प्राप्त होता है, चंद्रमा और लग्नेशका इत्थसाल हो और केंद्रोंमें पाप ग्रह न हों तो खजाना खोदनेसे मिलेगा, इसी प्रकार अमुक स्थानमें सिंह है वा नहीं इस प्रश्नका विचार करना चाहिये ।। २ ।।

सुमुत्सिली चेद्धनलाभकेन्द्रे पूर्णेन्दुरस्ति स्वमवाप्यते च ।।
तन्वम्बुखास्ते प्रबलेन्दुरिंद्रसोमान्तकाम्भ:पतिदिक्षु वस्तु ।। ३ ।।

यदि शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल करता हुआ पूर्ण चंद्रमा २।११।१।४।७।१० इन स्थानोंमे हों तो वहां धन है मिलेगा। यदि १।४।७।१० में बलवान् चंद्रमा हो तो क्रमसे इंद्र, चंद्र, यम और वरुणकी दिशाओंमें अर्थात् पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिममें वस्तु है ऐसा कहे ।। ३ ।।

क्रमाद्विदध्याद्यदि शीतभानु: पापेत्थसाली सखलश्च केन्द्रे ।।
पापैश्च केन्द्राष्टमसंस्थितं: स्यात्तत्रैव वित्तं खननाद्भयं च ।। ४ ।।

यदि चंद्रमा पापसे इत्थसाल करता हुआ पाप ग्रहके साथ केंद्रमें हो और पाप ग्रह १।४।७।१०।८ में स्थित हों तो जिस स्थानमेंका प्रश्न किया है वहां धन है, परन्तु खोदनेसे भय होगा ।। ४ ।।

यावन्त:स्यु:खेचरास्तुर्यसंस्थास्तावत्संख्य:स्यान्निधिस्तत्रगेहे ।।
यत्संख्यांशैस्तुर्यनाथोगतोवाचंद्रात्तावद्भू:करै:स्याद्धिखात: ।। ५ ।।

जितने ग्रह चौथ घरमें हों उतने ही निधि (द्रव्यसमूह) उस घरमें बतावे। चंद्रमासे चतुथश जितने अंशोंकरके दूर चला गया हो, उतने ही हाथ खोदनेसे द्रव्य निलेगा ।।५

इन्दुलग्नेशयोस्तुर्यट् यावदंशान्तरी ततः ।।

खातहस्ता निधेर्वाच्या एवं सिंहादिकान्तरम् ।। ६ ।।

चंद्रमा और लग्नेशसे चतुर्थेशका जितने अंशोंका अंतर हो उतने ही हाथ जमीन द्रव्यके लिये खोदनी चाहिये, इसी प्रकार सिंहादिका अंतर जानना चाहिये ।। ६ ।।

क्रियाद्धिमांशोर्गतभानि नेत्रहतानि पूर्णाग्निहृतानि लब्धम् ।।

पूर्वादिदिक् स्याद्विहृतस्यचौरैर्नष्टस्यसिंहस्यनिधेश्चनूनम् ।। ७ ।।

मेषके चंद्रमासे गत राशियोंको दोसे गुणा करके पूर्णाङ्कमें तीनका भाग लेनेपर जो लब्ध मिले वही पूर्वादिके क्रमसे चोरी गई, नष्ट हुई वस्तुकी तथा सिंह और निधिकी दिशा जाननी उचित है ।। ७ ।।

नौकागमप्रश्ने विचारः

विवीर्यैः खलैः षट्त्रिधर्मान्त्यसंस्थैःसवीर्यैः शुभैः

क्षेमतोऽभ्येति नौका ।। चरर्क्षोदये केंद्रगेन्दौ च शीघ्रं

यदा पापिनः केंद्रगा वीर्ययुक्त ।। १ ।।

निर्वली पाप ग्रह ६ । ३ । ९ । १२ इन स्थानोंमें हों और शुभ ग्रह बलवान् हों तो नौका कुशलसे आती है। और केन्द्रगत चन्द्रमा चर लग्नमें हो तो नौका शीघ्र आती है। यदि पाप ग्रह केंद्रोंमें बलवान् हों ।। १ ।।

विवीर्याःशुभाः सद्बलेनेशराफी विधुर्जीवकोऽर्कोंशुगोमज्जते नौः ।।

गदेन्दुः शनेर्मुत्सिले भूमिजोऽगे मृतौ कण्टके वार्कदृष्टः सपापाः ।।

तनुस्त्रीखबन्ध्वीश्वरा मज्जते नौनृवस्तुप्रपूर्णा यदा केन्द्रनाथाः ।। २ ।।

शुभ ग्रह निर्बल हों तथा सद्बलसे इसराफ करनेवाला चन्द्रमा हो और बृहस्पति अस्तंगत हो तो नौका डूब जाती है। यदि चन्द्रमा शनिके इत्थसालमें हो, मंगल लग्न वा आठवें अथवा केंद्रोंमें सूर्यसे दृष्ट हो और १ । ७ । १० । ४ इन घरोंके अधिपति ग्रह पापयुक्त हों तो मनुष्य और वस्तुओंसे भरी हुई नौका डूब जाती है। यदि केंद्रोंके स्वामी ।। २ ।।

कुजार्क्यन्विताःकेंचिदब्धौ म्रियन्ते यदेन्दुर्गुरुर्वाखलाढ्यस्तदा नौः

विभग्नैतिकष्टाद्यदा मृत्युयोगोऽत्र साप्तिःसुखादेत्यतो नो विलोमे ।। ३ ।।

मंगल और शनिसे युक्त हों तो कुछ मनुष्य समुद्रमें मर जाते हैं। यदि चन्दमा वा बृहस्पति पापयुक्त हों तो नौका टूटी बिगडी हुई कष्टसे आती है। यदि इस योगमें मृत्यु योग पाया जावे तो प्राप्तिके साथ सुखसे आती है और जो इस योगसे विलोम हो अर्थात् सिद्ध योग हो तो सुखसे नहीं आती है ।। ३ ।।

चेत्कण्टकेशा रविजेन संयुता जयन्ति बद्ध्वा प्लवगाश्च तस्करान् ।।

चेत्स्वे कुजो वाडववह्निनाश्विहप्रदह्यतेऽन्तर्दहनेन चाम्बुनि ।। ४ ।।

यदि केंद्रोंके स्वामी ग्रह शनिसे युक्त हों तो नौकाएँ चौरोंको बांधकर लाती हैं। यदि दूसरे घरमें मंगल हो तो जलके भीतर जलनेवाली वाडवाग्निसे शीघ्र ही भस्म हो जाती है ।। ४ ।।

चंद्रलग्नपयोः शत्रुदृष्टचा पोतपयोः कलिः ।।
अष्टमे नवमे नीचेऽरिभे चास्ते धनक्षयः ।। ५ ।।

यदि चंद्रमा और लग्नेशकी आपसमें शत्रुदृष्टि हो तो नौकाके स्वामियोंमें लडाई हो जाती है। यदि चन्द्रमा लग्नेश आठवें, नौवें, नीच वा शत्रुराशि वा अस्तके हों तो धनका क्षय होता है ।। ५ ।।

सबले लग्ने बिबले धनपे संग्रह उचितस्तनेभवनाथौ ।।
परमबलौ यदि विक्रयलब्धिर्वा सबलं भवभं शुभयुक्तम् ।। ६ ।।

बलवान् लग्न और निर्बल हो तो धनका संग्रह कना उचित है। यदि लग्नेश एकादशेश परम बली हों; अथवा ग्यारहवां घर बलवान् तथा शुभग्रहयुक्त हो तो बेचनेमें लाभ होता है ।। ६ ।।

शशांकलग्नाधिपमृत्युनाथैरेकक्षसस्थरशुभैर्विशेषात् ।।
मृत्योर्भयं पोतपपोतयोः स्याद्द्वयोश्च दैवादिह बंधभीतिः ।। ७ ।।

चन्द्रमा, लग्नेश और अष्टमेश एक राशिपर स्थित हों तो नौका और नौकापति दोनोंको प्रारब्धसे मृत्युका अथवा बन्धनका भय होता है। यदि उन स्थानोंके स्वामी पाप ग्रह हों तो विशेषकरके उक्त फल होता है ।। ७ ।।

उत्पातप्रश्ने विचारः

आसप्तघस्त्रं ग्रहणाद्रवीन्द्वोर्भू'कंपनिर्घातरजोऽतिपाताः
भवन्ति चोल्कापरिवेषचापायत्रैव तद्देशपतेः प्रणाशः ।। १ ।।

सूर्य चन्द्रमाके ग्रहणसे सात दिनतक जो भूकंप, निर्घात् रजका अत्यन्त पात अथवा उल्कापात, परिवेष ,इंद्रधनुष जिस देशमें हों उसी देशके राजाका नाश होता है ।। १ ।।

केतोः शिखा यद्दिशि यत्र चैति लब्धो दया यत्र च यानि भानि ।।
शिखा स्पृशेत्तन्नृपतीन् सदेशान् हन्याद्यदा भौमशनिप्रदृष्टः ।। २।।

केतुकी शिखा जिस दिशा और देशमें उदय हो और जिस देशमें नक्षत्रोंको स्पर्श करे उन देशों तथा वहांके राजाओंका नाश होता है। यदि मंगल और शनिसे दृष्ट ।। २ ।।

राहुः शनिर्वोदितधूम्रकेतुर्ज्येष्ठास्थितो युद्धरुजे प्रभंगम् ।।
भूपस्य कुर्याद्यदि वाप्यकाले निरंतरं सप्त दिनानि वृष्टिः ।। ३ ।।

राहु वा शनि हो, अथवा ज्येष्ठानक्षत्रपर धूम्रकेतुका उदय हो तो राजाका युद्ध ेर रोगमें भंग होता है। अथवा जिस देशमें विना समय निरन्तर सात दिनतक ।। ३ ।

अल्पाऽथवा भूरितराऽस्थिमांसांगाराज्यरक्तस्य च यत्र देशे ।।
भंगश्च तद्देशनृपस्य यद्वा वर्षासु वर्षा निसप्तकं चेत् ।। ४ ।।

हाड, मांस, अंगार, घी, राध तथा रुधिरकी वर्षा थोडी वा बहुत हो तो उस देश और राजाका भंग होता है। अथवा वर्षाऋतुमें सात दिन लगातार वर्षा हो तो ।। ४ ।।

क्षोभो ध्वजिन्यास्त्वचिरेण धान्यं चेद्यत्र वृक्षा अरुणादिवस्त्रैः ।।
वृता इवेक्ष्या हरिताः पतन्ति शुष्काः प्ररोहन्त्यथवेशभंगः ।। ५ ।।

सेनाका क्षोभ, जितने कालमें धान्य पकता है उससे आधे वा चौथाई कालमें धान्य पक जावे और जिसे देशमें वृक्ष अरुणादि वस्त्रोंसे ढके हुएसे दीखते हों तथा हरे ही गिर पडने लगें अथवा सूखे हरे हो जावें तो राजाका भंग होता है ।। ५ ।।

नद्यो विलोमयाना रोदनहास्यप्रलापिता वाप्यः ।।
शुष्यन्ति चेदशोष्याः कूपा नश्यन्ति भूपभंगभिये ।। ६ ।।

नदियाँ उलटी बहने लगें, वापियोंमें रोने और हँसनेकासा शब्द सुनाई देने लगे, अशोष्य कूप वापियाँ सूख जावें तो राजाका भंग होता है ।। ६ ।।

अकस्माद्यदा तोरणाङ्गारकेतुप्रपातोऽथवा निश्यभीक्ष्णं च रोदः ।।
भवेद्यत्र तद्देशभंगोऽथ भूमीविदारो विना वारिपातं च यत्र ।। ७ ।।

जिस देशमें यदि अचानक तोरण, अंगार, केतु ऊपरसे गिरें, अथवा रात्रिन नित्य ही रोनेका शब्द हो तो उस देशका भंग होता है। अथवा जिस देशमें विना जल वर्षनेके भूमि फट जाय ।। ७ ।।

अकस्माज्जलस्यागमो निर्जले वारुण वापि भूभूपभंगःसमृद्धात् ।
दिवा वन्यसत्त्वो विशेषादभीतो विशेद्यत्र तत्रत्यभूपक्षयः स्यात् ।। ८ ।।

अकस्मात् निर्जल स्थानमेंसे जल निकलने लगे, जलस्थानमें पृथ्वी पड जाय तो राजाका अन्य समृद्ध राजासे भंग होता है। यदि दिनमें कोई जंगली, अथवा अन्य जीव अत्यन्त निर्भय होकर जिस देश, शहर, ग्रामादिमें प्रवेश करे तो वहां के राजाका नाश होता है ।। ८ ।।

द्विपदपशुखगानां वामराणामकस्मात्तुमुलरणनिनादो
वा परस्त्रीरतिश्च ।। भवति च दिनभंगो वा रवेः सम्भवो
ऽस्ते सलिलसुरपकाष्ठायां तथा फेरुशब्दः ।। ९ ।।

मनुष्यों, पशुओं, पक्षियों अथवा देवताओंका अचानक तुमुल युद्धका शब्द, अथवा परस्त्रीके साथ रति, दिनका भंग, अस्तमें सूर्यका सम्भव, पश्चिम दिशामें लोखडीका शब्द ।। ९ ।।

यस्मिन्देशे वासरेशोऽतिकृष्णःखण्डो रूक्षो वा हि तद्देशनाशः ।
सन्ध्यायुग्मेरक्तमेघावृतोऽर्को वृत्यायुक्तो यत्र नूनं रणाय ।। १० ।।

जिस देशमें सूर्यनारायण अत्यन्त काले वा खण्डित अथवा रूखे दीख पडें तो उस देशका नाश होता है। यदि दोनों सन्ध्याओंमें लाल बादलोंसे ढके हुए सूर्यनारायण परिवेषयुक्त दीखते हों तो उस देशमें निश्चय ही युद्ध होता है ।। १० ।।

ग्रस्तं विधुं वाप्युदयस्थमर्कं लग्नस्थमिन्दुं परिवेषगं वा ।।
निरीक्ष्य तत्रत्यनृपस्य भंगो नूनं मृतिर्वासुयशःक्षयश्च ।। ११ ।।

ग्रहण पडते हुए चंद्रमा; वा उदय होते हुए सूर्य; अथवा परिवेषसहित लग्नस्थ चन्द्रमाको राजा देखे तो उस देशके राजाका भंग ,मृत्यु और सुयशका नाश होता है ।। ११ ।।

यत्र भानोर्ग्रहे वास्ते केतुका वा कबंधका ।।
श्यामकीलादयो दृश्या मण्डले भूपसंक्षयः ।। १२ ।।

ग्रहण पडते समय वा अस्तकालमें सूर्यमण्डलके बीच केतु वा कबन्ध वा श्याम-कील आदिका दर्शन होवे तो राजाका क्षय होता है ।। १२ ।।

सुनिर्मलेऽर्के चेच्छाया न प्रतीपारिभीतिदा ।।
देवपातप्रभंगाद्या दुर्भिक्षाग्न्यार्तिभंगदाः ।। १३ ।।

यदि सुनिर्मल सूर्यमें छाया प्रतीत हो तो प्रतिकूल शत्रुओंसे भय नहीं होता है, यदि देवमूर्ति स्थानसे गिर पडे, टूट जाय, तो दुर्भिक्ष और अग्निके दुःखसे भंग होता है ।। १३ ।।

आसप्ताष्टदशाहं चेच्चण्डवायुः सशर्करः ।।
स्यात्संकटं याम्यरक्षः पश्चिमोत्थमहारिभिः ।। १४ ।।

यदि सात, वा आठ, वा दश दिनतक लगातार कांकडी वर्षनेवाला प्रचण्ड पवन अर्थात् आन्धी चले तो दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम दिशावासी बडे शत्रुओंसे संकट प्राप्त होता है ।। १४ ।।

हस्त्यश्वगावो निशि हर्षहास्यारावार्त्तिपूर्णा व्यसना नृपार्त्यै ।।
धूमो विनाग्नि यदि वा गृहादिदाहो भवेद्यत्रतदीशभंगः ।। १५ ।।

यदि हाथी, घोडे, गऊ रात्रिमें प्रसन्न होनेकी चेष्टा करें, हँसे, रोवें, दुःखी हों, तृणादिक न खावें तो राजाको संकट प्राप्त होता है ।। जिस देशमें अग्नि विना सर्वत्र रात्रि दिन धुंआ रहे, अथवा गृहादिक जलने लगें तो उस देशके राजाका भंग होता है ।। १५ ।।

अहतवाद्यरवो यदि वोदकूपगिरिकुञ्जरवो नृपभंगदः ।।
अमलिनेऽह्निविभाति भमण्डलं निशि नवाकणधूमवदीशहृत् ।। १६ ।।

विना वजायें बाजेका शब्द हो, अथवा कूप, पर्वत, कुञ्जमेंसे भयानक शब्द होवें तो राजाका भंग होता है। निर्मल दिनमें नक्षत्रमण्डलका प्रकाश, रात्रिमें अप्रकाश होवे, अथवा सूक्ष्म धुँआसे धूसरा रहे तो राजाकी हानि होती है ।। १६ ।।

अह्नीन्द्रचापं जलदैर्विना यदा निशीन्द्रभागे सपयोधरं च तत् ।।
नृपस्य हानिं तनुते विशेषतो जलेतरावृष्टिविनाशनं परम् ।। १७ ।।

विना बादल दिनमें इन्द्रधनुष हो, अथवा रात्रिमें पूर्व दिशामें वादलोंसहित इन्द्र धनुष हो तो राजाकी हानि होती है और जल विना अन्य वस्तुकी विशेष वर्षा होनेसे अधिक नाश होता है ।। १७ ।।

मेघैर्विना गर्जितवृष्टिविद्युतो भवन्ति वा स्थावरजंगमात्मनोः ।।
विलोमतातत्रपतिच्युतिर्यदाऽथनिर्झरादेः स्थिरतातथाफला ।। १८ ।।

विना वादलोंके गर्जित वृष्टि और विजली होवे, अथवा स्थावरोंकी दशा जंगमों कीसी और जंगमोंकी दशा स्थावरोंकीसी होवे तो उस देशके राजाकी पदच्युति होती है। अथवा निर्झरादिकोंकी स्थिरता होवे तो निष्फल कही है ।। १८ ।।

चेद्गन्धर्वपुरं प्रधूमितदिशायां कोटकोचादिम-
द्रक्तं स्यान्नृपनाशनं यदि सितं शांतादिशायां भवेत् ।।
सूर्यास्तोदययोर्नृपार्थजयसिद्ध्यर्द्धिप्रदं चेद्ध्वजः
सौरो वावनिजो विधातृशकटं भिन्द्यज्जगत्संक्षयः ।। १९ ।।

यदि सूर्यके उदयास्तसमय धूमयुक्त दिशामें गन्धर्वपुर कोटके समान घिरा हुआ लाल रंगका दीखे तो राजाका नाश और यदि शांत दिशामें श्वेत रंगका होवे तो राजाको अर्थ, जय, सिद्धि और ऋद्धिकी प्राप्ति होती है। यदि शनि वा मंगल रोहिणीके शकटका भेदन करे तो जगत्का नाश होता है ।। १९ ।।

नक्तं दिनं प्राक् प्रहरद्वये चेद्भूमिप्रकंपोऽनिलवह्नि भागे ।।
दुःखाग्निदुर्भिक्षरुगीशयुद्धैः प्रजाक्षयो भूमिपतेश्च भंगः ।। २० ।।

रात्रि वा दिनके दो पहर भीतर वायव्य, अथवा अग्निकोणमें भूकंप हो तो बहुत दुःख, अग्नि, दुर्भिक्ष, रोग और राजयुद्धसे प्रजानाश और राजाका भंग होता है ।।२० ।।

नक्तं दिनं तुर्यतृतीययामे कंपो धरण्या वरुणेन्द्रभागे ।।
स्याद्भूरिवर्षा बहुसस्यसंपत्कंठास्यरोगैर्ज्वरतश्च पीडा ।। २१ ।।

रात्रि दिनके तीसरे चौथे प्रहर भीतर पश्चिमा वा पूर्वदिशामें भूकंप हो तो बहुत वर्षासे बहुतसी खेतीकी संपदा प्राप्ति; किन्तु कंठ और मुखके रोगों तथा ज्वरसे पीडा होती है ।। २१ ।।

कार्ति काश्विननभस्सु रवीन्द्वोरर्द्धपादलववद्ग्रहणं चेत् ।।
सेज्यदृग् हि शुभसस्यसमृद्धिर्दक्षिणे हि सकलं ग्रहणं चेत् ।। २२ ।।
ग्रस्तवत्समुदयास्तमये सच्चात्र भौमशनिदृगादिभिः क्षुत् ।।
चेत्तमोवदुदयास्तमये स्याद्भास्करस्य तिथिभानुदशाहात् ।। २३ ।।

यदि कार्तिक, क्वार और श्रावण महीनेमें सूर्य या चन्द्रमाका आधा वा चौथाई ग्रहण बृहस्पतिसे दृष्ट हो तो अच्छी खेतीकी बृद्धि होती है और जो दक्षिणमें सकल

ग्रहण अथवा ग्रहण पडता हुआ वा अस्त होवे उसपर मंगल शनिकी दृष्टयादिकरके क्षुत् दृष्टि हो, अथवा सूर्यके उदयास्तकालमें अन्धकाययुक्त ग्रहण होवे और १५। १२। १० दिनतक ॥ २२ ॥ २३ ॥

भूरिधूलिरवनीपतिभंगश्चेद्दिनपग्रहतो ग्रसितेन्दुः ॥
पक्षकान्त इह भूपतयो नाशं व्रजन्ति सुखमेति च लोकः ॥ २४ ॥

बहुत धूलि वर्षे तो राजाका भंग होता है। यदि सूर्य ग्रहणसे पंद्रह दिन पीछे चन्द्रग्रहण हो तो राजाओंका नाश और प्रजाको सुख होता है॥ २४॥

चंद्रग्रहणतः पक्षावसाने ग्रहणं रवेः ॥
तदा कोपात् क्षयं यान्ति भूपाः कष्टं तथा जनाः ॥ २५ ॥

यदि चन्द्रग्रहणसे १५ दिन पीछें सूर्यग्रहण हो तो कोपसे राजाओंका नाश और प्रजाको कष्ट होता है॥ २५ ॥

आसप्तघस्त्रं ग्रहणास्तयुद्धभूमीविदारात्परिवेषचापात् ॥
दिग्दाहकंपौ क्षुदवृष्टियुद्धरोगास्तदांतः प्रशमोऽम्बुपातात् ॥ २६ ॥

सात दिनतक ग्रहण, अस्तसमय ग्रहयुद्ध, भूमीविदार तथा परिवेष, इन्द्रधनुष होनेसे दिशादाह, भूकंप, अकाल, आवृष्टि, युद्ध, रोग ये सब होते हैं और तभीसे अर्थात् उक्त उत्पातोंके समय जल वर्षनेसे शान्ति बनी रहती है॥ २६ ॥

स्निग्धः सुवेषः परिवेष इन्दोर्भानोर्यदा माक्षिकशंखजाभः ॥
अखण्डितो रूप्यसमोऽथवा स्याद्वर्षासुकल्याणसमर्घवृष्टयै ॥ २७ ॥

यदि चन्द्रमाका परिवेष चिकना सुन्दर वेषवाला और सूर्यका सोनामक्खी तथा शंखकीसी कान्तिवाला अथवा अखंडित और चांदीके समान हो तो वर्षाकालमें अच्छी तरह कल्याण, समर्घ और वर्षा होती है॥ २७ ॥

रुक्षा रक्तश्यामसर्पप्रभोल्का या भूतायां सो निशायां दिवैकः ॥
दीप्तौ नूनं भूपभंगाय यद्वा भानोरग्रे स्याद्विनिर्घातपातः ॥ २८ ॥

रूखी, लाल, काले सर्पके समान कान्तिवाली जो उल्का गत रात्रिमें हो तो वह दिन दीप्त कहाता है। यह निसन्देह राजाका भंग ,अथवा सूर्यके आगे निर्घातपात करनेवाला है॥ २८ ॥

घस्रे रात्रौ वा सभूमीप्रकंपोऽथोल्कायुग्वै वा स्वयं भूपभंगः ॥
भूमीकंपाच्चेत्त्रितुर्याश्विघस्त्रे पक्षे मासेऽसौ पुनर्भूपभंगः ॥२९।

रात्रि वा दिनमें भूकंपसहित, अथवा उल्कायुक्त निर्घातपात हो तो स्वयंही राजा का भंग होता है। यदि भूकंपसे ३।४।२ दिनमें, पक्षमें अथवा निर्घातपात हो तो राजाका भंग होता है॥ २९ ॥

आषाढपूर्णिमायां सन्ध्यायां पूर्वरुद्रसौम्यदिशाम् ॥
वायुः सुभिक्षमतुलं वृष्टिं कुर्यात्समीरवारिदिशः ॥
मध्यं सस्यं हुतभुग्यमरक्षोऽभूदवृष्टिदुर्भिक्षम् ॥ ३० ॥

आषाढी पूर्णिमाको सन्ध्यासमय पूर्व ईशान तथा उत्तरदिशाका पवन चले तो सुभिक्ष और बहुत वर्षा होती है। वायव्य और पश्चिमका पवन चले तो मध्यम खेती है। अग्निकोण, दक्षिण तथा नैऋत्यका होवे तो अवृष्टि और दुर्भिक्ष होता है ॥ ३० ॥

अथ सस्यजातकम्

वृषार्कवेशे वृषकुंभसिंहालिगैः शुभैः स्त्रीमृगतौलिकर्के ॥
पापैर्भवेच्छारदधान्यवृद्धिर्गोभानुवेशे च हिमांशुजीवौ ॥ १ ॥

वृषके सूर्यके प्रवेशसमय २ । ११ । ५ । ८ इन राशियोंपर शुभग्रह और कन्या मकर, तुला तथा कर्कपर पाप ग्रह हों तो शरदृतुके धान्यकी वृद्धि होती है। यदि वृषके सूर्यके प्रवेशमें चन्द्रमा तथा बृहस्पति ॥ १ ॥

वीर्यान्वितौ सिंहघटालियातौ शुक्रेन्दुजौ मेषनृयुग्मयातौ ॥
स्याच्छारदान्नस्य परं समृद्धिर्गोभानुवेशे त्वबलैः शुभैश्च ॥ २ ॥

बलवान् होकर सिंह, कुंभ तथा वृश्चिकपर हों और शुक्र तथा मेष और मिथुनपर हों तो शरत्कालके अन्नकी परम समृद्धि होती है। वृषके सूर्यके प्रवेशमें शुभ ग्रह निर्बली हों ॥ २ ॥

पापैर्मृगेन्द्रालिवृषे च तुंगे स्याच्छारदान्नस्य परं विनाशः ॥
वृषार्कवेशेऽलिधनुर्वृषस्थैः पापैः शरज्जं परिशुष्यतेऽन्नम् ॥ ३ ॥

और पापग्रह सिंह, वृश्चिक तथा वृषराशियोंपर तथा उच्चके हों तो शारदान्नका अत्यन्त नाश होता है। वृषार्कके प्रवेशसमय वृश्चिक, धनु तथा वृषपर पाप ग्रह स्थित हों तो शरत्कालोत्पन्न अन्न सूख जाता है ॥ ३ ॥

वृषार्कवेशे मिथुनालिमेषे पापैः सदीक्षायुतिवर्जितैश्च ॥
संशुष्यतेऽन्नं शरदोऽथ भानोर्वृषस्य वेशे ज्ञभृगू च मीने ॥ ४ ॥

वृषार्कप्रवेशमें मिथुन, वृश्चिक तथा मेषपर पाप ग्रह शुभ ग्रहोंकी दृष्टि और युतिसे वर्जित हों तो शारदीय अन्न सूख जाता है। वृषार्कके प्रवेशकालमें बुध तथा शुक्र मीनपर ॥ ४ ॥

केन्द्रे शशीज्यौ सबलौ सदीक्षायुत्यन्वितौ स्याच्छरदोऽन्नवृद्धिः ॥
अल्यर्कवेशेऽलिमृगेन्द्रकुम्भवृषेषु सौम्यैर्मृगमेषकेन्द्रे ॥ ५ ॥

और केंद्रमें चन्द्रमा, बृहस्पति बलवान् होकर शुभ ग्रहोंसे दृष्ट या युक्त हों तो शरद्के अन्नकी वृद्धि होती है। यदि वृश्चिकार्कके प्रवेशमें वृश्चिक, सिंह, कुंभ तथा वृषराशियोंपर शुभ ग्रह मकर, मेष तथा केंद्रमें ॥ ५ ॥

पापैः परं ग्रैष्मिकसस्यवृद्धिरल्यर्कवेशे यदि सोमजीवौ ॥
कुंभस्थितौ वा वृषसिंहयातौ पृथग्ज्ञशुक्रौ तुलवृश्चिकस्थौ ॥ ६ ॥

पाप ग्रह हों तो ग्रीष्मऋतुकी खेतीकी वृद्धि होती है। वृश्चिकके सूर्यके प्रवेश

कालमें यदि चन्द्रमा तथा बृहस्पति कुंभराशिस्थ वा वृषराशिस्थ हों और बुध तथा शुक्र अलग अलग तुला तथा वृश्चिकराशिपर हों तो ।। ६ ।।

स्याद्‌ग्रैष्मिकान्नस्य परं समृद्धिरल्यर्कवेशे ज्ञभृगू कुमार्याम् ।।
केन्द्रे शशीज्यौ सबलौ सदीक्षायुत्यन्वितौ ग्रैष्मिकसस्यवृद्धि ।। ७ ।।

ग्रैष्मिकान्नकी परम समृद्धि होती है। वृश्चिकार्कके प्रवेशकालमें बुध तथा शुक्र कन्याराशिपर और केंद्रमें बली चन्द्रमा तथा बृहस्पति शुभ ग्रहोंसे दृष्ट या युक्त हों तो ग्रैष्मिक खेतीकी वृद्धि होती है ।। ७ ।।

अल्यर्कवेशे शनिभूमिजौ चेन्नृयुग्मगोस्थौ भवतो हि किंवा ।।
धनुस्तुलावृश्चिककुंभयातौ तदा भवेद्‌ग्रैष्मिकसस्यनाशः ।। ८ ।।

यदि वृश्चिकार्कप्रवेशकालमें शनि तथा मंगल मिथुन तथा वृषराशिपर; अथवा धन तुला, वृश्चिक तथा कुम्भपर हों तो ग्रैष्मिक खेतीका नाश होता है ।। ८ ।।

अल्यर्कवेशे हरिकुंभगौ चेत्कुजार्कजौ कुम्भमृगालिगोऽगुः ।।
ग्रीष्माऽन्नशोषःशुभवीक्षणेन नो सर्वशोषःपरथाऽन्यथा स्यात् ।। ९ ।।

यदि वृश्चिकार्कके प्रवेशकालमें सिंह तथा कुंभपर मंगल तथा शनैश्चर और कुंभ, ृष, अथवा वृश्चिकपर राहु हो तो ग्रीष्मान्न सूख जाता है। यदि शुभ ग्रह देखते हों तो सब नहीं सूखता है और इससे अन्य प्रकारसे हो तो अन्यथा फल कहना चाहिये ९

अथ प्रतिवर्षशुभाशुभज्ञानम्

मषाकवेशे लग्नेशः शुभः शुभयुतेक्षितः ।।
समर्घसुखदो नूनं विलोमे रुङमहर्घदः ।। १ ।।

मषके सूर्यके प्रवेशसमय शुभ लग्नेश शुभ ग्रहसे युक्त या दृष्टा हो तो समर्घ और सुखदायक होता है और यदि इस योगका विलोम हो अर्थात् पाप लग्नेश पापसे युक्त, दृष्ट हो तो रोग और महर्घदायक होता है ।। १ ।।

अथ मृगयाप्रश्ने विचारः

कुजबुधौ सबलौ मृगयाकरौ न गदितौ यदि वा पतितांशगौ ।।
न परथा खलविद्धदिनेऽपि वा न मृगया तनुसप्तमपौ यदा ।। १ ।।

यदि मंगल तथा बुध लबवान् हों तो शिकार करनेवाले नहीं कहे हैं।। अथवा मंगल तथा बुध पाप ग्रहके नवांशमें हो तो शिकार नहीं होती, अन्यथा पाप ग्रहसे विद्ध दिनमें भी शिकार नहीं होती। यदि लग्नेश और सप्तमेश ।। १ ।।

हतबलौ हि चतुष्टयगौ विपद्भयकरौ सबलौ हि शुभं तु तौ ।।
उदयसप्तमनाथयुतौ भवेन्न मृगया तनुपे शुभखेचरे ।। २ ।।
स्मरपतौ सबले त च सा भवेदिह महाबलिनि प्रभयोद्गमः ।।
बुधभृगू जलभे जलचारिणां तदपरत्र भवेत्स्थलचारिणाम् ।। ३ ।।

नष्ट बली होकर केंद्रोंमें हो तो विपत् और भय करते हैं और जो दोनों बली हों तो शुभ कहे हैं। यदि लग्नेश सप्तमेश युक्त हों तो शिकार नहीं होती। यदि लग्नेश शुभ ग्रह हो और सप्तमपति बलवान् हो तो मृगया नहीं होती। जो सप्तमेश महाबली हो तो भय प्राप्त होता है। बुध और शुक्रराशिके हों तो जलचरोंकी और उससे अन्य राशियोंपर हों तो स्थलचरोंकी शिकार करते हैं॥ २॥ ३॥

यदि गृहे मदने खलु यावतां तनुसदां द्युसदां च सतां दृशः॥
मृतिपथोत्सुकतत्समजन्तवो द्विगुणितः स्वगृहांशगतैर्ग्रहैः॥ ४॥

सातवें घरपर जितने लग्नस्थ और दशमस्थ शुभ ग्रहोंकी दृष्टी हो उतने ही जीव अवश्य सामने आकर मारे जाते हैं। यदि वे ग्रह अपने घरके नवांशमें हों तो दूने जीव मारे जाते हैं॥ ४॥

अनृजुतुंगखगैस्त्रितया हताः प्रकथिता मृगयास्विति पण्डितैः॥
हितदृशा तनुसप्तपमुत्सिले सुलभतोऽरिदृशा बहुकष्टतः॥ ५॥

कदाचित् वे वक्र और उच्चके हों तो शिकारमें तिगुने जीव मारे जाते हैं, यह बात पंडितोंने कही है। यदि मित्रदृष्टिसे लग्नेश सप्तमेशका इत्थसाल हो तो अति सुलभतासे और जो वैरिदृष्टि हो तो कष्टसे शिकार होती है॥ ५॥

द्यूनेश्वरेऽङ्गे तनुपे स्मरस्थे नूनं प्रभूताऽथ समंदखेटे॥
जायेश्वरे मित्रदृशाऽतिलघ्वी कुजेऽथवा भौमगृहे नभःस्थे॥ ६॥

यदि सप्तमेश लग्नमें और लग्नेश सातवें हो तो निश्चय ही वहुत शिकार मिले। यदि सप्तमेश मित्रदृष्टिसे मंद ग्रहके साथ हो तो थोडी शिकार होती है। मंगल वा मंगलकी राशि दशवें स्थानमें॥ ६॥

जीवज्ञदृष्टे मृगयाऽतिगुर्वी ज्ञेया हि वा ज्ञेज्यभमम्बरे चेत्॥
गुर्वी यदा सप्तपतिश्चतुर्थेखेचेत्तदा स्वल्पतराऽपि न स्यात्॥ ७॥

बृहस्पति और बुधसे दृष्ट हो तो भारी शिकार जाननी चाहिये। अथवा बुध और बृहस्पतिकी राशि चौथे घरमें हो तो भी भारी, यदि सप्तमेश चौथे वा दशवें हो तो वहुत हल्की भी शिकार नहीं होती॥ ७॥

स्मराधिनाथेन निशाकरेण यद्वेत्थसाली भृगुदृष्टभौमः॥
जलेचरर्क्षे यदि वा सितेन्दू जलेचरर्क्षे मृगया झषानाम्॥ ८॥

सप्तमेश अथवा चन्द्रमाके साथ इत्थसाल करनेवाला मंगल शुक्रसे दृष्ट जलचर-राशिपर हो; अथवा शुक्र तथा चन्द्रमा जलचरराशिपर हों तो मछलियोंकी शिकार होती है॥ ८॥

बुधशनी मृगकुम्भगतौ खभे बुधगृहे यदि वा हिमरोचिषा॥
मुथसिलं कुरुतस्तनुपेन वा खलु तदा मृगयाऽस्ति पतत्रिजा॥ ९॥

यदि बुध, शनि मकर और कुम्भपर और दशवें घरमें बुधकी राशि हो; अथवा चन्द्रमाका वा लग्नेशके साथ बुध और शनि इत्थसाल करते हों तो पक्षियोंकी शिकार होती है ।। ९ ।।

ताराबलेन मृगया शुभमशुभं वा वदेदथो तारा
सत्यपि विद्धा पापैः सिंहादिभ्यो ददाति भयम् ।। १० ।।

तारोंके बलसे मृगयाका शुभ वा अशुभ फल कहे । यदि शुभ तारा भी पाप ग्रहोंसे विद्ध हो तो सिंह आदिकोंसे भय देती है ।। १० ।।

स्खलनं जनुषि च विपदि प्रदृढं दुःखं तथा भवेन्निधने ।।
अंगविभेदः पतनं प्रत्यरिनाम्न्यां परासु शुभम् ।। ११ ।।

जन्मतारामें स्खलन, विपद्में बहुत दुःख, मृत्युमें अंगच्छेद, प्रत्यरिमें पतन और अन्य ताराओंमें शुभ फल होता है ।। ११।।

अन्तरा मृगयुभेन्दुभयोर्यावन्त्युडूनि यदि वापि गृहाणि ।।
पापयुञ्जि निजजातिसमस्तावन्त एव मृतये किल जीवाः ।।
सौम्ययुंजि यदि तानि च तावन्तःपलायनपरा इह जीवाः ।। १२ ।।

शिकारी और चन्द्रमाकी राशिके बीचमें जितने नक्षत्र वा घर पापग्रहयुक्त हों 'उन्हीं राशि वा नक्षत्रोंकी जातिसमान उतने ही जीव मारे जाते हैं; यदि वे नक्षत्र वा घर शुभ ग्रहयुक्त हों तो उतने ही जीव भाग जाते हैं ।। १२ ।।

तिथिवारपुरोवर्गे दलितः परिभाजितः ।।
इष्टनाडीभिरुच्छिष्टं प्राणिसंख्या स्मृता बुधैः ।। १३ ।।

अथवा तिथि, वार, पुरके वर्ण जोडकर वर्ग करे और फिर आधा कर इष्ट घडियोंका भाग देनेसे जो शेष रहे उसीके समान प्राणियोंकी संख्या पंडितोंने कही है ।। १३ ।।

अथवा वर्त्तमानर्क्षवारौ याततिथिं तथा ।।
एकीकृत्य त्यजदेकं वर्गितं दलितं भजेत् ।।
त्रिघनेन च शेषाङ्कसंख्या प्राणिवधं वदेत् ।। १४ ।।

अथवा वर्तमान नक्षत्र, वार और गततिथिको जोडकर एक कम करके वर्ग करे । उसके आधेको तीनके ऴन नौसे (९) भाग देनेपर शेषांकके समान जीवोंका वध बातवे ।। १४ ।।

शेषेऽत्र दलिते त्वेकशेषे ह्येकः पलायते ।।
वक्रग्रहेण विद्धे भे द्विगुणो हि पलायते ।। १५ ।।

और शेषको भाग देनेपर जो एक ही बचे तो एक जीव भाग जाता है । यदि राशि वक्र ग्रहसे विद्ध हो तो दूने भाग जाते हैं ।। १५ ।।

अथ राशिजातयः

मृगमहिषवानराद्याः कीटकनखसानरप्रमुखाः ।।
कपिसर्पगवयावाद्याः जलचरक्राण्डजाः क्रमतः ।। १६ ।।

मृग, महिष, वानरादिक, कीट, नखवाले वानर आदि वानर, और सर्प, सुरा-गौ आदि और जलचर, चक्र, अण्डज आदि जातियां मेषके क्रमसे जाननी ।। १६ ।।

अथ नक्षत्रजातयः

हयगजाजभुजंगमपन्नगश्ववृषदंशकमेषबिडालकाः ।।
तदनु मूषकमूषकधेनवो महिषरुर्वरिगोमृगभक्षकाः ।। १७ ।।
मृगमृगौ श्वकपी नकुलद्वयं कपिमृगेन्द्रहयाश्च मृगाधिपः ।।
पशुगजाविति योनिरुदीरिता प्रथमभक्रमतो मृगयोचिता ।। १८ ।।

घोडा, हाथी, मींढा, सर्प, सर्प, कुत्ता, बिलाव, मींढा, बिलाव, मूषक, गौ ,भैंसा रुर्वरी (व्याघ्र), गौ (महिष) व्याघ्र, मृग, मृग, कुत्ता, वानर, नकुल, नकुल, वानर, सिंह, घोडा, सिंह, गौ, हाथी ये योनिमां अश्विन्यादि नक्षत्रोंकी क्रमसे कही हैं, मृगयामें विचारना उचित हैं ।। १७ ।। १८ ।।

भग्नश्रृंगौ बुधादित्यौ श्रृंगहीनो हि चंद्रमाः ।।
तीक्ष्णश्रृंगः कुजो जीवशुक्रौ स्तो दीर्घश्रृंगकौ ।।
शनिराहू वक्रश्रृंगौ श्रृंगिणां श्रृङ्गनिश्चये ।। १९ ।।

बुध सूर्य टूटे सींगोवाले, चन्द्रमा, शृंगहीन, मंगल, पैने सींगवाला, बृहस्पति, शुक्र लम्बे सींगोंवाले, शनि राहु टेढे सींगोंवाले जानने, इसीसे श्रृंगवाले जीवोंके श्रृंग निश्चय करनेमें विचार करना चाहिये ।। १९ ।।

कुत्रांगे घात इति प्रश्ने विचारः

लग्नादिषट्कगैः पापैः पूर्वार्द्धे मदनस्थितैः ।।
पृष्टे शेषर्क्षगैरुत्तरार्द्धे घातं वदेत्सुधीः ।। २० ।।

लग्नादि छः घरोंमें स्थित पाप ग्रह हों तो पूर्वार्द्धमें, सातवे हों तो पीठमें और यदि शेष घरोंमें हो तो उत्तरार्द्धमें घाव लगा है ऐसा कहे ।। २० ।।

सपापनामनक्षत्रचरणस्य क्रमेण हि ।।
प्राक् च पार्श्वे पृष्ठतले प्रहारं प्रवदेत्सुधीः ।। २१ ।।

यदि नामके नक्षत्रका चरण पापयुक्त हो तो उसीके क्रमसे शरीरके ऊपरी अंगम करवटमें, पीठपर, नीचे प्रहार लगा है ऐसा पंडितजन कहे ।। २१ ।।

शत्रुरस्ति न वेति प्रश्ने विचारः

रिपुप्रश्ने रिपोर्लग्नाद्वैरकृच्च रिपुस्थितात् ।।
रिपुः कीदृक् च किंजातिः कथमित्यादिकं वदेत् ।। १ ।।

शत्रु संबन्धी प्रश्न होनेमें छठे घरकी लग्नसे तथा षष्ठस्थ ग्रहसे वैर करनेवाला कैसा है कौन जाति है और किस प्रकारसे वैर करता है इत्यादि फल कथन करे ।। १ ।।

अथ धातुवादप्रश्ने विचारः

लग्नेशो धातुरूपः स्याद्धातुवादी स्मराधिपः ।।
भानुशीतद्युती लाभकर्त्ताराविति चिन्तयेत् ।। १ ।।

लग्नेश धातुका रूप है, सप्तमेश धातुवादी है और सूर्य, चन्द्रमा लाभ करनेवाले हैं इस प्रकार इस प्रश्नमें विचार करे ।। १ ।।

खलो लग्ने शुभः पापेक्षणं नो यदि लग्नपः ।।
तनुं पश्येद्विना पापः कर्तुः सौख्यं न चान्यथा ।। २ ।।

यदि पाप ग्रहकी दृष्टि नहीं हो तो लग्नमें पाप ग्रह शुभ होता है और यदि लग्नेश लग्नको देखता हो, पाप ग्रह न देखते हों तो धातुवाद करनेवाले को सुख होता है; जो अन्यथा हों तो सुख नहीं होता है ।। २ ।।

तन्वीशोऽन्त्यधनारिस्थो मृतौ वा विखलेक्षणः
यथाक्रमंमृत्युहानिबंधनक्षयकृन्मतः ।। ३ ।।

पापदृष्टिवर्जित लग्नेश १२ । २ । ६ । ८ स्थानोंमें हो तो यथाक्रमसे मृत्यु ,हानि, बंधन तथा नाश करनेवाला जानना ।। ३ ।।

कांचनं कुजरवी सितचंद्रौ रूप्यकं बुधगुरू मणियुक्तम् ।।
कांचनं त्वगुशनी खलु लोहं लग्नगौ प्रकुरुतो बलयुक्तौ ।। ४ ।।

लग्नमें बलयुक्त हों तो मंगल, सूर्य, सुवर्ण, शुक्र, चन्द्रमा चांदी; बुध बृहस्पति मणियुक्त सुवर्ण और राहु, शनैश्चर लोहको करते हैं ।। ४ ।।

धातुं वित्ताद्वादसंस्थाचमृत्योर्ब्रूयात्स्त्र्यन्त्याभ्यांतयोः संस्थितिं च ।।
चेत्केन्द्रे वा ये शुभाः सोजसः स्युर्धातुज्ञः स्याद्धातुवाद्यन्यथा नो ।।
चेल्लग्नेन्दुः सौम्यपापैः समेतः शीर्षोत्थर्क्षे वाहितज्ज्ञानलाभः ।। ५ ।।

दूसरे घरसे धातु, आठवेंसे वादकी स्थिति कहे; एवं सातवें और बारहवें खरसे उन दोनोंकी स्थिति कहे । यदि केंद्रमें वा ग्यारहवें बलवान् शुभ ग्रह हों तो धातुवादी, धातुका पहिचननेवाला है; अन्यथा हो तो धातुको नहीं जानता है । यदि सौम्य पाप ग्रहोंसे युक्त लग्नमें चंद्रमा शीर्षोदयराशिके हों तो धातुज्ञानका लाभ होता है ।। ५ ।।

मूकमुष्टिप्रश्ने विचारः

धातुर्मूलं जीव ओजर्क्षगेऽङ्गे जीवो मूलं धातुरन्यत्र चेति ।।
नंदांशैस्त्रिः स्यात्क्रमाद्वोर्ध्वदृष्टिःप्रष्टाप्रश्नेस्यात्तदाजीवचिन्ता ।। १ ।।

विषम राशि (१ । ३ ।५ ।७ । ९ ।११) लग्न हो तो नवांशकी तीन वार गिनती करनेसे धातु, मूल, जीव प्रश्न क्रमसे बतावें । । जैसे–विषम लग्नका १ प्रथम

नवांशक हो तो धातु, २ में मूल ३ में जीव, ४ में धातु, ५ में मूल, ६ में जीव, ७ मेंमें धातु, ८ में मूल, ९ में जीवप्रश्न बताना चाहिये। इसी प्रकार अन्यत्र समराशि (२।४।६।८।१०।१२) लग्न हो तो नवांशोंकी तीन बार गणना करनेसे जीव, मूल, धातु, प्रश्न क्रमसे कहे। जैसे-समराशिके प्रथम १ नवांशमें जीव २, में मूल, ३ में धातु, ४ में जीव, ५ में मूल, ६ में धातु, ७ में जीव, ८ में मूल, ९ में धातु-चिंता कहनी चाहिये। अथवा पूछनेवाला ऊर्ध्वदृष्टि हो तो जीवचिन्ता ॥ १ ॥

मध्यालोकी धातुचिन्ता त्वधोदृक् मूला चिन्ता वाङ्वच्चन्द्रतोऽपि ॥
मुके मुष्टौ वा बुधांशेशयोर्नि नूनं ब्रूयादेव सत्योक्तमेतत् ॥ २ ॥

समदृष्टि हो तो धातुचिंता और अधोदृष्टि हो तो मूलचिंता कहनी चाहिये, अथवा लग्नके समान चंद्रमासे भी बतानी चाहिये। अथवा मूक और मुष्टिप्रश्नमें बुधके नवांशपतिकी जो योनि हो सो बतावे यह बात निश्चय ही सत्य कही है ॥ २ ॥

धातुः कुजार्कौ मूलं च शनीन्दू जीवसंज्ञकौ ॥
जीवगुर्कौ बुधो चांशे यत्र योनिं ततो वदेत् ॥ ३ ॥

मंगल और सूर्य धातु, शनि और चंद्रमा मूल, बृहस्पति, और शुक्र जीवसंज्ञक हैं। बुध जिस नवांशमें हो उससे योनि कहे ॥ ३ ॥

लग्नत्र्यंशे यदा धातौ धातुखेटयुतेक्षिते ॥
धातुचिन्ता तदा वाच्या जीवमूलादिकं तथा ॥
द्विपदादिविभागश्च जीवे तत्त्वांशगात् खगात् ॥ ४ ॥

लग्नका त्र्यंश अर्थात् द्रेष्काण धातु हो और धातुग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो धातुचिंता इसी प्रकार जीव मूल आदि कहे अर्थात् लग्नका द्रेष्काण जीवसंज्ञक हो तथा जीवग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो जीवचिंता और मूलसंज्ञक हो तथा मूलग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो मूलचिंता कहे। जीवप्रश्न निश्चय हो जानेपर, द्विपद है वा चतुष्पद है वा अपद है इत्यादि विभाग जो है सो तो नवांशस्थ ग्रहसे कहे। ४।

अथ सुगमोपायः

रविभौमौ बलयुक्तौ केन्द्रे धातुप्रदौ शनीन्दुसुतौ ॥
मूलकरौ शशिशुक्रामरगुरवो जीवकारकाः प्रश्ने ॥ ५ ॥

यदि सूर्य और मंगल बलवान् होकर केन्द्रमें बैठे हों तो धातु; शनि और बुध हों तो मूल, चन्द्र, शुक्र और बृहस्पति हों तो जीवप्रश्नकारक होते हैं ॥ ५ ॥

मेषालिसिंहलग्ने हि कुजार्काभ्यां युतेक्षिते ॥
धातुचिंता मृगद्वंद्वकन्याकुम्भे युतेक्षिते ॥ ६ ॥
मंदविद्भ्यां मूलचिन्ता कर्कमीनधनुस्तुले ॥
वृषे च भृगुचन्द्रेज्यैर्दृष्टे जीवस्य चिन्तना ॥ ७ ॥

१।८।५ लग्न मंगल सूर्यसे युक्त दृष्ट हो तो धातुचिंता, १०।३।६।११ लग्न शनि बुधसे दृष्ट हो तो मूलचिंता और ४।१२।९।७।२ लग्न शुक्र, चंद्र और बृहस्पति दृष्ट हों तो जीवचिंता कहे ॥ ६ ॥ ७ ॥

यस्य ग्रहस्य यद्वस्तु तद्वर्गे तद्युतेक्षिते ॥
धाम्यं धातुं मृतं जीवं शुष्कं मूलं वदेत्तनोः ॥ ८ ॥

जिस ग्रहकी जो वस्तु है सो बतानी चाहिये। यदि उस ग्रहका वर्ग उसी ग्रहसे युक्त दृष्ट होवे तो धाम्य (न पिघलनेवाले) धातु, मरा हुआ जीव, सूखा हुआ मूल लग्नसे कहे ॥ ८ ॥

स्वर्गेऽम्बुचरे लग्ने वांशे स्वामियुतेक्षिते ॥
धातुष्वधाम्यं जीवेषु सजीवं मूल आर्द्रकम् ॥
खलैर्निद्यं शुभैः श्रेष्ठं मिश्रैर्मिश्रं च तद्वदेत् ॥ ९ ॥

जलचरराशिका लग्न; अथवा जलचरराशिका नवांश अपने स्वामी ग्रहसे दृष्ट युक्त हो तो धातुओंमें अधाम्य (पिघलनेवाली) धातु, जीवोंमें सजीव, मूलोंमें गीमेली वस्तु है। यदि लग्न अथवा उसका नवांश पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो निन्दित, शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो श्रेष्ठ, मिश्र ग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो मिली-जली धात्वादि वस्तु कहे ॥ ९ ॥

चेज्जीवचिन्ता द्विपदश्चरेंऽशे स्थिरे चतुष्पाद्द्वितनौविपाच्च ॥
चरांशके पुंग्रहदृष्टियुक्ते पुमान् भवेदत्र वधूग्रहेण ॥ १० ॥
दृष्टान्विते स्त्री द्वितयांशके च नपुंसकैदृष्टयुते हि षण्ढः ॥
चेन्मूलचिन्ताऽथ रवेः क्रमेण मूलाणुमूलोद्धृतमूलसंज्ञाः ॥ ११ ॥

यदि जीवचिन्ता हो तो चर नवांशकमें द्विपद, स्थिरमें चतुष्पद, द्विस्वभावमें अपद जीवकी चिन्ता जाननी चाहिये। यदि चर नवांशक पुरुषग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो पुरुष, स्त्रीग्रहसे युक्त या दृष्ट हो तो स्त्री। यदि द्विस्वभाव नवांशक नपुंसक ग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो नपुसक जीव कहना चाहिये। यदि मूलचिन्ता हो तो सूर्यके क्रमसे मूल, अणुमूल, उद्धृत मूलका नाम बतावे। अर्थात् चर नवांशक सूर्यसे युक्त दृष्ट हो तो मूल, चन्द्रमासे युक्त दृष्ट हो तो अणुमूल (सूक्ष्ममूल) और मंगलसे युक्त दृष्ट हो तो उद्धृतमूल (उखडा हुआ मूल) बतावे। इसी प्रकार बुधादि ग्रहसे युक्त दृष्ट हो ता मूलादि संज्ञा कहें ॥ १० ॥ ११ ॥

चेद्धातुचिन्ता शुभवर्गदृष्टियुतेधाम्यः परथास्ति धाम्यः ॥
लग्नग्रहत्र्यंशकतः क्रमेण स्वर्भूमिपातालगतास्ति चिन्ता ॥ १२ ॥

यदि धातुचिन्ता हो तो शुभ ग्रहके वर्गमें हो अथवा शुभ ग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो अध्याम्य (न पिघलनेवाली) धातु है। और इससे विपरीत होनेपर धाम्य धातु

कहनी चाहिये। लग्न और ग्रहके द्रेष्काणके क्रमसे स्वर्ग, भूमि तथा पातालकी चिन्ता है ऐसा कहे ।। १२ ।।

लग्नोदितांशे लवलग्नपाभ्यां दृष्टे युते खं हितसौम्ययोश्च ।।
दृग्योगतो भूः खलवैरिदृष्टयाधस्तत्र लोकः खगलोकतश्च ।। १३ ।।

लग्नका उदित नवांश, नवांशेश और लग्नेशसे युक्त दृष्ट हो तो आकाश और मित्र तथा शुभ ग्रहकी दृष्टिके योगसे पृथ्वी और पाप ग्रहकी वैरिदृष्टिसे पाताललोक वताना चाहिये, अथवा ग्रहके लोकसे लोकचिन्ता कहे ।। १३ ।।

केचिच्छशांकार्कजराहुभौमैर्धातुं च शुक्रार्कवशेन मूलम् ।।
शुष्कं तदा स्यादुभयोर्बलीयस्त्वादंकुरं जातमिति प्रदिष्टम् ।। १४ ।।

कोई ज्योतिर्विद् लोग चन्द्र, शनि, राहु और मंगलसे धातु, शुक्र और सूर्यके वशसे सूखा मूल वणन करते हैं। यदि शुक्र और सूर्य दोनों अधिक बली हो तो अंकुर जात है ऐसा बतावे ।। १४ ।।

द्रव्यवहुत्वे चिन्त्यम्।

रक्तौ सूर्यकुजौ पीतो गुरुरिन्दुभृगू सितौ ।।
हरितो हि बुधः श्यामः शनिर्लग्नांशयोरिति ।। १५ ।।

इसी प्रकार द्रव्यकी बहुतायतमें विचार करना चाहिये; लग्न और लग्नक नवांशमें सूर्य मंगल हो तो रक्त, बृहस्पति पीत, चन्द्रमा शुक्र श्वेत, बुध हरित, शनि श्याम वर्णवाला जानना ।। १५ ।।

राहुयुक्ते तनौ वांशे वर्णं श्यामं वदेत्सुधीः ।।
वैडूर्यमुक्तापाषाणं ताम्रस्फटिकवद्रवौ ।। १६ ।।

लग्न वा नवांश राहुयुक्त हो तो श्यामवर्ण कहे; सूर्यकी वैडूर्य, मोती, पत्थर, तांबा, स्फटिकवाली वस्तु बतावे ।। १६ ।।

रूप्यक्षीरकपालेलीमुक्ताजलजवद्विधोः ।।
ताम्रवैडूर्यरत्नाश्मेष्टकाश्रृंगकश्रृङ्खलाः ।। १७ ।।

चन्द्रमाकी चांदी, दूध, कपाल, छुरी, मोती, कमलवाली चीज कहे और मंगलका तांबा, वैडूर्य, रत्न, पत्थर, ईंट, शींग, श्रृंखला ।। १७ ।।

सीसधाम्याग्निभृत्यादिशस्त्रभेदाः कुजे मताः ।।
काचचित्रसुवर्णानि गरुडोद्गारवद् बुधे ।। १८ ।।

सीसा, धाम्य, अग्निभृत्यादि शस्त्र अर्थात् तोप बन्दूक आदि शस्त्रभेद माने हैं। बुधको कांच, चित्र, सुवर्ण, हरिन्मणिवाली वस्तु हैं ।। १८ ।।

गोमेदस्वर्णमणयः पीतधातुश्च पुस्तकम् ।।
सूतशास्त्रादिवार्त्ता च गंधवद्वस्तु वाक्पतेः ।। १९ ।।

बृहस्पतिकी गोमेद, स्वर्ण, मणि, पीत धातु, पुस्तक, सूत, शास्त्रादिकी वार्त्ता और गन्धवाली वस्तु हैं ।। १९ ।।

रौप्यालंकारवैडूर्यस्फटिकाम्बुजमौक्तिकम् ।।
लक्ष्यस्वर्णादिपात्रं च प्रतिमा शुक्शुची भृगोः ।। २० ।।

शुक्रकी चांदीका गहना, वैडूय, स्फटिक, कमल, मोती, निशानी, स्वर्णादि पात्र, प्रतिमा तथा पवित्र और श्वेत वस्तु हैं ।। २० ।।

नीलाश्मलोहमहिषीचर्मसीसकचामरम् ।।
दंतशूकरसौवीरमद्यांबुजतिलं शनेः ।। २१ ।।

शनिकी नीला पत्थर, लोह, भैंस, चर्म, सीसा धातु, चँवर, दांत शूकर, सौवीर, मद्य, कमल, तिल ये वस्तु हैं ।। २१ ।।

कण्टकास्थिविषं चौर्यं राहोर्लग्नेशदृग्युतेः ।।
चंद्रेऽतिनिर्बले कांस्यं रूप्यवर्णसमं यतः ।। २२ ।।

राहुकी कांटा, हड्डी, विष, चोरी आदि हैं। निर्बल चंद्रमापर लग्नेशकी दृष्टिका योग होनेसे चांदीके वर्णसमान कांस्य कहे ।। २२ ।।

एवमतिनिर्बलानां बहुमौल्यं वस्तु
हित्वाल्पमौल्यं तत्सवर्णं वस्तु वदेत् ।।

इसी प्रकार अतिनिबल ग्रहोंकी बहुमूल्यवाली वस्तु छोडकर थोडे मूल्यकी उसके समान सवण वर्णवाली वस्तु कहे ।।

किं धात्वाद्यस्ति विज्ञानमिति यत्तद्दृकाणतः ।।
विशेषो हेमरत्नादि द्विपदान्नादि भागतः ।। २३ ।।

क्या धातु आदि वस्तु है इस बातका ज्ञान द्रेष्काणसे विशेष करके होता है कि, सुवर्ण और रत्न आदि है वा द्विपद आदि है वा अन्नादि है इस प्रकार विभागसे समझना चाहिये ।। २३ ।।

कविसुरवन्द्यौ द्विपदौ तुर्यपदावर्कभूमिजौ ज्ञशनी ।।
पत्रधरौ वी कथितौ राहुहिमांशू सरीसृपावपदौ ।। २४ ।।

शुक्र बृहस्पति द्विपद, सूर्य मंगल चतुष्पद ,बुध शनि पक्षवाले पक्षी, राहु चंद्रमा सर्प कहे हैं ।। २४।।

पुंस्त्रीकृशानुक्षितिवायुवारिचरस्थिरद्व्यंगगृहाश्च मेषात् ।।
मेषो हरिगौर्धनुषः पराद्धं मृगार्द्धमाद्यं चतुरंघ्रस्युः ।। २५ ।।

पुरुष, स्त्री और अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल तत्त्व, चर, स्थिर द्विस्वभाव संज्ञा मेषसे आदि लेकर कही है। मेष सिंह, वृष, धनुका पराद्धं, मकरका पूर्वार्द्ध चतुष्पदसंज्ञक है ।। २५ ।।

कुंभश्च मीनो विपदौ प्रभूतपादौ स्मृतौ वृश्चिककर्कटौ च ॥
तुला च कन्या मिथुनं हयाद्यं नरो मृगान्त्यं पदवर्जितं च ॥ २६ ॥

कुम्भ, मीन, अपद हैं, वृश्चिक, कर्क, बहुपद; तुला, कन्या, मिथुन ,धनुषका पूर्वार्द्ध नरमकरका परार्द्ध पदरहित है ॥ २६ ॥

द्विजौ गुरुभृगू भूपौ भूजार्कौ शूद्र इन्दुजः ॥
वैश्यश्चन्द्रोऽर्कजो राहुर्द्धवितौ म्लेच्छसंज्ञकौ ॥ २७ ॥

बृहस्पति शुक्र ब्राह्मण, मंगल सूर्य क्षत्रिय, बुध शूद्र, चंद्रमा वैश्य, शनि, राहु म्लेच्छ जाति हैं ॥ २७ ॥

चतुरस्रौ भौमरवी खण्डः काव्यश्च विद्गुरू ॥
वर्तुलौ हिमकृत्स्थूलो दीर्घौ राहुदिनेशजौ ॥ २८ ॥

मंगल सूर्य चौकोर, शुक्र खण्ड (टुकडा), बुध बृहस्पति वर्तुल (गोल), चंद्रमा स्थूल (मोटा) ,राहु शनि दीर्घ (लम्वा) है ॥ २८ ॥

लोहितसितहरिताभाः पाटलपांडाभचित्रकृष्णाभाः ।
हेमगर्भपिंगलकर्बुरबभ्रुस्वच्छाः क्रियादितो वर्णाः ॥ २९ ॥

लाल, श्वेत, हरित, पाटल (सफेद मिला लाल) ,पांडू (सफेद मिला पीला), चित्र (सब प्रकारका मिला) रंग, काला, पीला, पिंगल (लाल मिला पीला) कबरा बभ्रु (न्योलेकासा रंग) मलीन रंग ये मेषादि राशियोंके वर्ण हैं ॥ २९ ॥

शूक्रेन्दू जलचारिणौ बुधगुरू ग्राम्यौ कुजार्कार्कियो,
राहुश्च प्रथिता अरण्यविवरे प्रीत्याभिसंचारिणः ॥
पूर्वाह्णे बलिनौ तनौ बुधगुरू मध्याह्नकेऽर्कावनी
सूनू द्वावपराह्ण इन्दुभृगुजौ सायं हि राह्वर्कजौ ॥ ३० ॥

शुक्र चंद्र जलचारी; बुध, बृहस्पति, ग्रामीण, मंगल सूर्य, शनि और राहु बनकी झाडियोमें प्रीतिसे विचरनेवाले हैं । लग्नमें बुध बृहस्पति पूर्वाह्णवली, सूर्य मंगल मध्याह्न-बली, चंद्रमा शुक्र अपराह्णबली और राहु शनि सायंबली हैं ॥ ३० ॥

पित्तं दिनकरभौमौ शुक्रामृतद्युती ज्ञगुरू ॥
समधातू शनिराहू वातकरौ कीर्तितौ मुनिभिः ॥ ३१ ॥

सूर्य मंगल पित्त, शुक्र चंद्रमा कफ, बुध बृहस्पति समधातु और शनि राहु वात प्रकृतिवाले हैं ऐसा मुनियोंने कहा है ॥ ३१ ॥

कटुकौ दिनकरभौमौ मधुरो जीवस्तथा बुधो मिश्रः ॥
चंद्रभृगू लवणाम्लौ तीक्ष्णौ राह्वर्कनंदनौ गदितौ ॥ ३२ ॥

सूर्य, मंगल कडुआ, बृहस्पति मीठा, बुध कडुआ मीठा मिला हुआ, चन्द्रमा, शुक्र लवण खट्टा और राहु, शनैश्चर तीखे कहे हैं ॥ ३२ ॥

दिनेशभौमजीवाख्याः पुरुषा अपरे स्त्रियः ।।
बुधसौरी स्मृतौ केषांचिन्मते च नपुंसकौ ।। ३३ ।।

सूर्य, मंगल और बृहस्पति पुरुष, अन्य ग्रह स्त्री संज्ञक हैं। कुछेक आचार्योंके मतमें बुध और शनि नपुंसक कहे हैं ।। ३३ ।।

तरुणः कुजो हिमसुतश्च शिशुर्हिमकृत्कवी सुदृढमध्यनिभौ ।।
शनिसूर्यवाक्पतिभुजंगखगाःस्थविरामतास्तुनियतंमुनिभिः ।। ३४ ।।

मुनियोंने मंगल जवान; बुध बालक; चंद्रमा, शुक्र, दृढ मध्य अवस्थावाले; शनि सूर्य, बृहस्पति और राहु बूढे माने हैं ।। ३४ ।।

भृगौ चंद्रे ह्रदे देववसतौ वाक्पतौ रवौ ।।
चतुष्पदपथे सौम्ये चेष्टकानिचये कुजे ।। ३५ ।।
दग्धस्थाने शनौ राहौ बाह्यभूमौ चतुर्थके ।।
अमीभिनष्टवस्तूर्वीं दैवज्ञो हि विमर्शयेत् ।। ३६ ।।

शुक्र और चंद्रमा ह्रद (जलके कुंड) में, बृहस्पति देवताके निवासस्थानमें, सूर्य चौराहेमें, बुध ईंटोंके ढेरमें, मंगल दग्धस्थानमें, शनि और राहु बाह्यभूमिमें, (पर्वत वा बाहिर घर खेतोंमें) चौथे घरमें इन ग्रहोंसे दैवज्ञ नष्ट वस्तुकी निवासभूमि निश्चय करे ।। ३५ ।। ३६ ।।

नृपः सूर्यस्तपस्वीन्दुः कुजो हेमप्रियो बुधः ।।
वणिग्गुरुः कविर्वैश्यः शनिश्च वृषलोऽथवा ।। ३७ ।।
अन्त्यजातिश्चासुरौ च निषादाधिपती स्मृतौ ।। ३८ ।।

सूर्य राजा, चंद्रमा तपस्वी, मंगल सुनार, बुध वनिया, बृहस्पति शुक्र वैश्य, शनि शूद्र अथवा अन्त्यजाति (अन्त्यज धोबी चमार आदि) और राहु केतु निषाद (भीलोंके स्वामी) कहे हैं ।। ३७ ।। ३८ ।।

धातुनामेन्दुशुक्राभ्यां भूषणं गुरुसूर्ययोः ।।
भाजनं वित्कुजाभ्यां च शस्त्रं शेषेषु कीर्तितम् ।। ३९ ।।

चंद्रमा और शुक्रसे धातु; बृहस्पति और सूर्यसे भूषण; बुध और मंगलसे पात्र तथा शेपग्रहोंसे शस्त्र कहा है ।। ३९ ।।

मूर्द्धभूषणमिन्द्वर्कौ वाक्पतिः कर्णभूषणम् ।।
भूमीजकाव्ययोर्बाहुभूषणं च तथा बुधे ।। ४० ।।
हस्तस्य भूषणं राहौ चरणस्य प्रकीर्तितम् ।। ४१ ।।

चंद्रमा, सूर्य शिरोभूषण; बृहस्पति कर्णभूषण; मंगल, शुक्र बाहुभूषण; बुध हस्त-भूपण और राहु चरणका भूषण कहा है ।। ४० ।।४१ ।।

बुधेन्दुजीवभृगुभिः सरसं नीरसं परैः ।।
तैरेव भक्षणीयं स्यादभक्ष्यं परथा ग्रहैः ।। ४२ ।।

बुध, चंद्रमा, बृहस्पति और शुक्र रसयुक्त; अन्य ग्रह नीरस और इन्हीं पुर्वोक्त चार ग्रहोंसे भक्ष्य और अन्य ग्रहोंसे अभक्ष्य वस्तु कहे ।। ४२ ।।

दीर्घवर्तुलयोः कंदमूले तुर्यत्रिकोणयोः ।।
तृणं सगन्धि निर्गन्धि दीर्घवर्तुलयोः क्रमात् ।। ४३ ।।

चौथे, नौवें और पांचवें दीर्घ और वर्तुलसंज्ञक ग्रह हों तो कंद और मूल; इसी प्रकार सगंध और निर्गन्ध; तृण, दीर्घ, वर्तुल क्रमसे कहे ।। ४३ ।।

सौम्यैः फलयुता वृक्षाः क्रूरौ स्युः फलवर्जिताः ।।
पुंखगैस्तु तरुर्नारी ग्रहैरुक्ता लताः क्रमात् ।। ४४ ।।

शुभ ग्रहोंसें फलदार, क्रूर ग्रहोंसे फलरहित वृक्ष कहे तथा पुरुषग्रहोंसे वृक्ष, नारीग्रहोंसे लता क्रमसे कही है ।। ४४ ।।

धान्यगोधूमकौलत्थयवा घासोद्भवानि च ।।
धान्यमुद्गाश्च माषाश्च ग्रहाणां सूर्यतः क्रमात् ।। ४५ ।।

धान्य, गोधूम, कुलत्थ, जौ, घासोत्पन्न अन्न, धान्य, मूंग, उडद ये अन्न सूर्यादि ग्रहोंके क्रमसे कहे ।। ४५ ।।

सूर्ये चंद्रे गुरौ सौम्ये पक्वं शुक्रे शनैश्चरे ।।
अपक्वं च कुजे साम्बु शेषेषु कवलं मतम् ।। ४६ ।।

सूर्य ,चंद्र, बृहस्पति और बुध पक्व, शुक्र और शनैश्चरमें अपक्व, मंगलमें चलयुक्त और शेष ग्रहोंमें ग्रास कवल माना हैं ।। ४६ ।।

भानोः किंशुकशाखाद्यश्चंद्रे राजादनीमुखाः ।।
भौमे कंटकिनः सौम्ये शनौ बदरिकादयः ।। ४७ ।।

सूर्यकी ढाककी शाखादी, चन्द्रमाकी ढाक गोंदनी, खिन्नी आदिक, मंगलके कांटेवाले वृक्ष, बुध शनिके बेरी आदिक वृक्ष हैं ।। ४७ ।।

क्षीरिणौ वाक्पतौ शुक्रे रम्भाद्याः शनिसूर्ययोः ।।
शुष्काश्च खण्डिता वृक्षा विज्ञातव्या विवेकिभिः ।। ४८ ।।

बृहस्पति दूधवाले; शुक्र कदली आदि; शनि, सूर्य खंडित और सूखे वृक्ष विवेकी जनोंने कहे हैं ।। ४८ ।।

वामां चंद्रे रणं भौमे व्यवहारं बुधे गुरौ ।।
स्वजनं योषितं शुक्रे कलिं मंदे विचिन्तयेत् ।। ४९ ।।

चन्द्रमामे स्त्री, मंगलमें युद्ध बुधमें व्यवहार, बृहस्पतिमें स्वजन, शुक्रमें स्त्री, शनिमें कलिका विचार करें ।। ४९ ।।

मज्जास्थि भास्करे चित्तमिन्दौ रक्तं कुजे बुधे ।।
चैतन्यशुद्धिर्वागीशे प्राणाः शुक्रे च शुक्रकम् ।। ५० ।।

सूर्यमें चर्बी हड्डी, चन्द्रमामें चित्त, मंगलमें रक्त, बुधमें जीवशुद्धि, बृहस्पतिमें प्राण, शुक्रमें वीर्य ।। ५० ।।

शनौ मांसत्वचा रोम वसा अस्थि वदेदगौ ।।
शशिशुक्रौ जलाधारावार्किभौमदिनाधिपाः ।।
निर्जला ज्ञगुरू स्वल्पजलौ नूनं प्रकीर्त्तितौ ।। ५१ ।।

शनिमें मांस, त्वचा तथा रोम, राहुमें चर्बी हड्डी कहे । चन्द्रमा और शुक्र जलाधार, शनि, भौम, सूर्य, बुध, बृहस्पति स्वल्प जल कहे हैं ।। ५१ ।।

सौम्ये भूमेर्जलस्येन्दुर्वह्नेः काव्योऽर्कभूमिजौ ।।
वायोर्मन्दासुरौ व्योम्नो गुरुःस्वाम्यन्तराद्बहिः ।। ५२ ।।

बुध भूमिका, चन्द्रमा जलका, शुक्र अग्निका, सूर्य मंगल वायुका, शनि राहु आकाशका, बृहस्पति भीतरी स्थानसे बाहरका स्वामी जानना ।। ५२ ।।

अजगोयुग्मधनुस्तुलसिंहाः शब्दभृतः प्रमदाघटसंज्ञौ ।।
अर्द्धरवावपरे हि विशब्दा गोतुलकर्कवधूघटमीनाः ।। ५३ ।।
मत्स्ययुताःसजलाश्च तदन्ये स्युर्विजला अथ मूकनियोगे ।। ५४ ।।

मेष, वृष, मिथुन, धन, तुला और सिंह पूर्णशब्दवाले, कन्या, कुंभ अर्द्धशब्द और शेष राशि शब्दरहित हैं । वृष, तुला, कर्क, कन्या, कुंभ, मीन और मकर सजल और अन्य राशि निर्जल हैं । आगे मूकप्रश्नका विचार लिखते हैं ।। ५३ ।। ५४ ।।

स्वर्क्षेऽर्के स्वीयचिंतात्र च परगृहतो मातृतातीयचिंता,
स्वेन्दौ चिंता वधूनां त्वपरभ इति पुंसः कुजे जीवचिंता ।।
सौम्ये भ्रातृव्यचिंता सचिव उ पतिचिंता च शुक्रे सपिंडी,
चिंता मंदेऽस्यचिंता भवति पितृपितृव्यादिचिंता च राहौ ।। ५५ ।।

यदि सूर्य अपनी राशिके हो तो अपनी और अन्य राशिके हो तो माता पिता संवन्धी चिंता कहे । यदि चंद्रमा अपनी राशिके हो तो वधूजनोंकी और अन्यकी हो तो विदेश गये हुए पुरुषकी चिंता कहे । मंगल हो तो जीवचिंता, बुध स्वक्षेत्रमें राशिका हो तो चाचाकी चिंता, अन्यथा सचिव और स्वामिकी चिन्ता, शुक्र स्वक्षेत्री हो तो सपिण्डकी चिंता, शनि स्वक्षेत्री हो तो अन्य जनकी चिंता और राहु स्वक्षेत्री हो तो पिता चाचा तथा ताऊकी चिन्ता होती है ।। ५५ ।।

चंद्रो मर्त्ये दिवि ज्ञज्यौ वासिनोऽधः परे ग्रहाः ।।
ज्येष्ठः शुक्रोऽर्क आषाढश्चंद्रः श्रावणमासकः ।। ५६ ।।

चन्द्रमा मर्त्यलोकमें, बुध बृहस्पति आकाशमें, अन्य ग्रह पातालमें रहनेवाले हैं शुक्र ज्येष्ठ सूर्य आषाढ, चंद्रमा श्रावण ।। ५६ ।।

कुजो भाद्रपदः सौम्य आश्विनः कार्तिको गुरुः ।।
मार्गपौषौ भृगुमदो माघफाल्गुनकावगुः ।। ५७ ।।

मंगल भादों, बुध क्वार, बृहस्पति कार्तिक ,शुक्र अगहन पौष, शनि माघ फाल्गुन और राहु चैत्र वैशाख मास कहा है ।। ५७ ।।

चैत्रवैशाखकौ मासाश्चैत्राद्या मेषतः क्रमात् ॥
मेषालितुलकुम्भैश्च कर्केण प्राङ्गनिवासभूः ॥ ५८ ॥

यहां मेषसे लेकर चैत्रादिमहीने क्रमसे जानने । मेष, वृश्चिक, तुला, कुंभ तथा कर्कसे पूर्वमें रहनेका स्थान ॥ ५८ ॥

वृषेण पश्चिमे सिंहमृगयोरुत्तरे भवेत् ॥
गुरुसौम्यग्रहैर्दक्ष एवं शय्यासनेष्वपि ॥ ५९ ॥

वृषसे पश्चिममें, सिंह, मकरसे उत्तरमें, बृहस्पति तथा बुधकी राशियोंसे अर्थात् धनु, मीन, कन्या तथा मिथुनसे दक्षिणमें रहनेका निवास कहे । इसी प्रकार शय्या आसनमें भी विचारे ॥ ५९ ॥

रविसितकुजागुमंदाः शशिबुधजीवाः पुराक्रमात्पतयः ॥
अजगोमिथुनकुलीरास्त्रिः परिवर्तेन पूर्वतः पतयः ॥ ६० ॥

सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चन्द्रमा, बूध और बृहस्पति क्रमसे पूर्वादि दिशाओंक स्वामी हैं । मेष, वृष, मिथुन, कर्क राशि तीन वार गिननेसे पूर्वादि दिशाओंके स्वामी होते हैं ॥ ६० ॥

अजगोमिथुनकुलीरा हयमकरौ रात्रिपाः परे दिनपाः ॥
रविराशेः क्रियतो वा क्रमतोऽन्धो बधिरोमूकपंगू च ॥ ६१ ॥

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु और मकर रात्रिके स्वामी अन्य राशि दिनके स्वामी हैं । सूर्यकी राशिके वा मेषसे क्रमकरके अन्ध, बधिर, मूक और पंगु हैं ॥ ६१ ॥

वह्नेः कुजार्कावुपरिस्थितौ ज्ञौ मध्ये भुवः खे सकले गुरुश्च ॥
अधःसितेन्दू पयसो निरुक्तौ तिर्यक् शनिः केतुतमोयुगं च ॥ ६२ ॥

मंगल सूर्य अग्निके ऊपर रहनेवाले, बुध पृथ्वीके मध्यमें, वृहस्पति समस्त आकाशमें, शुक्र चन्द्रमा जलके नीचे और शनि, केतु और राहु तिरछे रहनेवाले हैं ॥ ६२ ॥

मीनक्रियवृषकुम्भा ह्रस्वा मध्या युग्ममृगाश्च कुलीराः ॥
शेषा दीर्घा अथ झषयुग्मालीन्दुगृहाण्यतिसंततिवन्ति ॥ ६३ ॥

मीन, मेष, वृष और कुभ ह्रस्व, मिथुन, मकर और कर्क मध्य और शेष राशि दीर्घ हैं । मीन मिथुन वृश्चिक और कर्क अतिसंतानवाले ॥ ६३ ॥

वृषमृगहयकलशाः समसंताना अपरे लघुसंततिभाजः
यो मिथुनाश्वनवांशविभागः सन्ततिहीनतरः खलदृष्टः ॥ ६४ ॥

वृष, मकर धनु और कुंभ समसन्तानवाले और अन्य राशि लघुसन्तानवाले हैं मिथुन तथा धनुका जो नवांश पापग्रहसे दृष्ट हो तो संतानहीन कहा है ॥ ६४ ॥

मेषो हरिर्धनुश्चेति पित्तोष्णाः पूर्वदिग्भवाः ॥
शनिः स्वामी सदा चैषां जीवो रात्रौ दिवा रविः ॥ ६५ ॥

मष, सिंह और धनु पित्तप्रकृतिवाले, गरम हैं और पूर्वदिशामें रहनेवाले हैं और सदैव इनका स्वामी शनि है, बृहस्पति रात्रिमें और सूर्य दिनमें स्वामी है ॥ ६५ ॥

अथ राशिसंज्ञाचक्रम्

मेष.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशिनाम.
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुषस्त्रीसंज्ञा.
अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	तत्वसज्ञा.
चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञा.
चतुष्पद	चतुष्पद	द्विपदनर	बहुपद	चतुष्पद	द्विपदनर	द्विपदनर	बहुपद	पूर्वार्द्धनर परार्द्धचतु.	पू. चतुष्प- दपरार्द्धनर	अपद	अपद	चतुष्पदादिसंज्ञा.
लाल	सफेद	हरा	सफेद-लाल	सफेद पीला	अनेकप्रकारका	काला	पीला	लालपीला	कबरा	न्योलेकार	मलीन	रंगसंज्ञा.
अधिक शब्द	अधिक शब्द	अधिक शब्द	शब्दरहित	अधिक शब्द	अर्द्धशब्द	पूर्णशब्द	शब्दरहित	पूर्णशब्द	शब्दरहित	अर्द्धश०	शब्दरहित	शब्दसंज्ञा
निजल	सजल	निर्जल	सजल		सजल	सजल	निर्जल	निर्जल	सजल	सजल	सजल	सजलनिर्जलसंज्ञा.
चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भादौं	क्वार	कार्तिक	अगहन	पौष	माघ	फाल्गुन	माससज्ञा.
पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	पूर्व	उत्तर	दक्षिण	पूर्व	पूर्व	दक्षिण	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	घरका द्वार अथवा शय्या आमन विचारमें दिशाज्ञान.
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्वादि दिशाओंकी स्वामिसंज्ञा.
रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	दिन	दिन	दिन	दिन	रात्रि	रात्रि	दिन	दिन	रात्रिदिनस्वामिसंज्ञा.

अथ राशिसंज्ञाचक्रम्

मेष.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशिनाम.
अंध	बधिर	मूक	पंगू	अंध	बधिर	मूक	पंगू	अंध	बधिर	मूक	पंगू	अंधादिसंज्ञा.
ह्रस्व	ह्रस्व	मध्यम	मध्यम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	मध्यम	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्वादिसंज्ञा.
अल्पसंतान	समसंतान	अतिसंतान	अतिसंतान	अल्पसंतान	अल्पसंतान	अल्पसंतान	अतिसंतान	समसंतान	समसंतान	समसंतान	अतिसंतान	अल्पसंतानादिसंज्ञा.
पित्तप्रकृति	वातप्रकृति	वातप्रकृति	शीतप्रकृति	पित्तप्रकृति	वातप्रकृति	वातप्रकृति	शीतप्रकृति	पित्तप्रकृति	वातप्रकृति	वातप्रकृति	शीत प्रकृति	पित्तादिप्रकृतिसंज्ञा.
उष्ण	उष्ण शीतल	उष्ण	शीतल	उष्ण	उष्ण शीतल	उष्ण	शीतल	उष्ण	उष्ण शीतल	उष्ण	शीतल	उष्णादिसंज्ञा.
सम	रूखा	चिकना	चिकना	सम	रूखा	चिकना	चिकना	सम	रूखा	चिकना	चिकना	रूक्षादिसंज्ञा.
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्वादिदिशास्थानीयसंज्ञा.
शनि	मंगल	बृहस्पति	चंद्रमा	शनि	मंगल	बृहस्पति	चंद्रमा	शनि	मंगल	बृहस्पति	चंद्रमा	नित्यस्वामिनो ग्रहाः.
बृहस्पति	चंद्र	बुध	मंगल	बृहस्पति	चंद्र	बुध	मंगल	बृहस्पति	चंद्र	बुध	मंगल	रात्रौ स्वामिनो ग्रहाः.
सूर्य	शुक्र	शनि	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शनि	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शनि	शुक्र	दिने स्वामिनो ग्रहाः

ग्रहसंज्ञाचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	ग्रहनाम
धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	जीव	मूल		साधारणधात्वादिसंज्ञा.
धातु	जीव	धातु	मूल	जीव	जीव	मूल		केंद्रस्थबली-धात्वादि संज्ञा
रक्त	श्वेत	रक्त	हरित	पीत	श्वेत	श्याम		वर्णसंज्ञा.
वैडूर्य,मोती पत्थरआदि	चांदी, दूध, आदि	तांबा, वैडूर्य रत्न आदि	कांच चित्र आदि	गोमेद,स्वर्ण आदि	चांदी गहना आदि	नीला पत्थर आदि	कांटा अस्थि आदि	वस्तुसंज्ञा.
चतुष्पद	सर्प	चतुष्पद	पक्षी	द्विपद	द्विपद	पक्षी	सर्प	चतुष्पदादि-संज्ञा
क्षत्री	वैश्य	क्षत्री	शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	म्लेच्छ	म्लेच्छ	क्षत्रियादिसंज्ञा
चौकोर	स्थूल	चौकोन	गोलाकार	गोलाकार	खण्ड	दीर्घ	दीर्घ	चतुरस्रादि-संज्ञा.
वनचर	जलचर	वनचर	ग्रामचर	ग्रामचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचरादिसंज्ञा
मध्याह्न बली	अपराह्न बली	मध्याह्न बली	पूर्वाह्नबली	पूर्वाह्न बली	अपराह्न-बली	सायंबली	सायंबली	कालबलिसंज्ञा
पित्तप्र.	कफप्र.	पित्तप्र.	समधातुप्र.	समधातुप्र	कफप्र.	वातप्र.	वातप्र.	पित्तादिसंज्ञा.
कटु	लवणाम्ल	कटु	कटुमिष्ट	मिष्ट	लवणाम्ल	तीक्ष्ण	तीक्ष्ण	कटुकादिसंज्ञा
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री.अन्य मते नपुंसक	पुरुष	स्त्री	स्त्री,नपुंस-कभी	स्त्री	पुरुषादिसंज्ञा.
वृद्ध	मध्यमायु	युवा	शिशु	वृद्ध	मध्यमायु	वृद्ध	वृद्ध	वृद्धादिसंज्ञा.
चौराहा	जलाशय	दग्धस्थान	ईंटोंकाढेर	देवस्थान	जलाशय	बाह्यभूमि	बाह्यभूमि	नष्टवस्तुनिवास स्थान.
राजा	तपस्वी	सुनार	बनिया	वैश्य	वैश्य	शूद्र वा अन्य	निषाद	जातिसंज्ञा.
भूषण	धातु	पात्र	पात्र	भूषण	धातु	शस्त्र	शस्त्र	भूषणादिसंज्ञा.
शिरोभूषण	शिरोभूषण	बाहुभूषण	हस्तभूषण	कर्णभूषण	बाहुभूषण	चरणभूषण	चरणभूषण	अंगभूषणसंज्ञा.
नीरस	सरस	नीरस	सरस	सरस	सरस	नीरस	नीरस	सरसादिसंज्ञा.
अभक्ष्य	भक्ष्य	अभक्ष्य	भक्ष्य	भक्ष्य	भक्ष्य	अभक्ष्य	अभक्ष्य	भक्ष्यादिसंज्ञा.

ग्रहसंज्ञाचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	ग्रहनाम.
फलरहित	फलयुक्त	फलरहित	फलयुक्त	फलयुक्त	फलयुक्त	फलरहित	फलरहित	फलवद्वृक्षसंज्ञा
वृक्ष	लता	वृक्ष	लता	वृक्ष	लता	लता	लता	वृक्षादिसंज्ञा
धान्य	गोधूम	कुलत्थ	जौ	घासज	धान्य	मूंग	उडद	अन्नसंज्ञा
पक्व	पक्व	जलयुक्त	पक्व	पक्व	अपक्व	अपक्व	कवल	पक्वादिसंज्ञा
सूखेपलाश शाखादि	खिन्नी आदि	कांटेवाले वृक्ष	बेरी आदिकं	दूधवाले	कदली	बेरी आदि वाक वृक्ष	री अखण्डित सूखे	वृक्षनामसंज्ञा
युद्ध	स्त्री	युद्ध	व्यवहार	स्वजन	स्त्री	कलि	कलि	युद्धादिसंज्ञा
मज्जा हड्डी	चित्त	रक्त	जीवशुद्धि	प्राण	वीर्य	मांसत्वचा रोम	चर्बी, हड्डी	मज्जादिसंज्ञा
निर्जल	जलाधार	निर्जल	स्वल्प जल	स्वल्पजल	जलाधार	निर्जल	निर्जल	निर्जलादिसंज्ञा
वायु	जल	वायु	भूमि	बाह्यस्थान	अग्नि	आकाश	आकाश	स्थानाधिपतयः
स्वकीय चिन्ता	वधूजनों की चिंता	जीवचिंता	चाचा ताऊकी चिं.	पतिचिंता	सपिण्डकी चिंता	अन्यजन की चिंता	पिता आदिकी चिं.	स्वक्षेत्रीय होनेसे चिंतावि.
पाताल	मर्त्यलोक	पाताल	आकाश	आकाश	पाताल	पाताल	पाताल	लोकसंज्ञा
आषाढ	श्रावण	भादों	क्वार	कार्तिक अगहन पौष	ज्येष्ठ	माघ फाल्गुन	चैत्र, वैशाख	माससंज्ञा
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्निकोण	पश्चिम	नैर्ऋत्य	दिशाधिपतयः
अग्निपर रहनेवाला	जलके नीचे रह.	अग्निपर रहनेवाला	भूमिके मध्यमें रह.	आकाशमें रहनेवाला	जलकेनीचे रहनेवाला	तिरछेरहनेवाला	तिरछे रहनेवाला	निवासस्थान

कन्यावृषमृगा याम्या रूक्षोष्णशीतवातुलाः ॥
कुजः स्वामी सदा चैषां रात्रौ चंद्रः सितो दिवा ॥ ६६ ॥

कन्या, वृष और मकर दक्षिणमें रहनेवाले, रूखे, गरम, शीतल और वातप्रकृतिवाले हैं, इनका स्वामी सदैव मंगल है और रात्रिमें चंद्रमा तथा दिनमें शुक्र स्वामी है ॥ ६६ ॥

कुंभयुग्मतुलासंज्ञाः स्निग्धोष्णा वातुलास्तथा ॥
एषां स्वामी सदा जीवो रात्रौ सौम्यो दिने शनिः ॥ ६७ ॥

मिथुन, कुंभ, तुला चिकने और गरम तथा वातप्रकृतिवाले हैं, इनका स्वामी सदैव बृहस्पति, रात्रिमें बुध और दिनमें शनि है। ये पश्चिममें रहने वाले हैं ॥ ६७ ॥

मीनालिकर्कटाः स्निग्धाः शीता उत्तरसम्भवाः ॥
दिने शुक्रः कुजो रात्रौ शशी नित्यं च तत्पतिः ॥ ६८ ॥

मीन, वृश्चिक और कर्क चिकने और शीतल ,उत्तर दिशामें रहनेवाले हैं, दिनमें शुक्र, रात्रिमें मंगल और सदैव चंद्रमा इनका स्वामी है ।। ६८ ।।

सप्तवर्गे तु लग्नस्य शुभवर्गो यदा भवेत् ।।
चिन्तितार्थे शुभं वाच्यं ग्रहयोगेक्षणं विना ।।
परथा त्वशुभं मिश्रो वर्गश्चेत्समता फले ।। ६९ ।।

यदि लग्नके सप्त वर्गमें शुभ ग्रहका वर्ग हो तो चिंतित अर्थमें शुभ कहना चाहिये परन्तु किसी ग्रहका योग तथा दृष्टि न होवे तो, अन्यथा अशुभ ग्रहका वर्ग हो तो अशुभ, मिश्र ग्रहोंका हो तो फलमें समता बतावे ।। ६९ ।।

यद्वा–चेच्छुक्रचंद्रशतयोऽम्बुनि जातीफलं तथा ।।
धातुश्च मृत्तिका चाथ बुधमंदाररराहवः ।। ७० ।।

अथवा यदि शुक्र, चंद्रमा और शनि चौथे घरमें हों तो जायफल, धातु, मृत्तिका कहे और बुध, शनि, मंगल और राहु ।। ७० ।।

लाभे च नवमे श्वेतं फलं स्यादथ वाक्पतिः ।।
तृतीये च धने चांद्रिर्मुष्टौ पट्टाम्बरं वदेत् ।। ७१ ।।

ग्यारहवें नौवें हों तो श्वेतफल और बृहस्पति तीसरे, बुध दूसरे हो तो मुष्टिमें रेशमी वस्त्र कहे ।। ७१ ।।

भौमो विद्रुमकृत्केन्द्रे ताम्रकृद्वा हिमांश्वगू ।।
केन्द्रे शंखादिदौ केन्द्रे सौम्यो लवणकारकः ।। ७२ ।।

मंगल केंद्रमें हो तो मूंगा वा तांबा, चंद्रमा राहु केंद्रमें हों तो शंखादि, बुध केंद्रमें हो तो लवण ।। ७२ ।।

कर्के शुक्रो यदा केन्द्रे रुक्ममुद्रां तदा वदेत् ।।
गुरुर्दशनवस्थाने सप्तमे वा समागतः ।। ७३ ।।

कर्कका शुक्र केंद्रमें हो तो चांदीका रुपया, बृहस्पति नौवें दशवें तथा सातवें हो तो ।। ७३ ।।

सुवर्णं रत्नसंयुक्तं वस्त्रं चैव सुवर्णकम् ।।
भौमे शुक्रे त्रिकोणे च मृत्तिका मुष्टिगा भवेत् ।। ७४ ।।

रत्नयुक्त सुवर्ण और सुवर्णकेवस्त्र, मंगल शुक्र त्रिकोण (९ । ५) में हों तो मुष्टिमें मृत्तिका है ऐसा कहे ।। ७४ ।।

कर्मस्थाने गुरुर्नूनमाम्रादिफलकारकः ।।
निशापतिः शुक्रदृष्टः केन्द्रे क्षाराम्लवत्फलम् ।। ७५ ।।

दशवें स्थानमें बृहस्पति हो तो आम्रादिफल, शुक्रदृष्ट चंद्रमा केंद्रमें हो तो खारा खट्टा फल है ।। ७५ ।।

रविः केन्द्रे बुधो भाग्ये पंचमे भूमिजः फलम् ।।
मिष्टं यदा रिपौ चंद्रः पिप्पलीफलमत्र चेत् ।। ७६ ।।

सूर्य केंद्रमें, बुध नौवें, मंगल पांचवें हो तो मीठा फल है, यदि चंद्रमा छठे हो तो पिप्पली फल है ।। ७६ ।।

शुक्रयुक्तश्चंद्रमा स्यादेलाफलमथो रिपौ ।।
मंदश्च नवमे भौमे रक्तकृष्णं च वर्तुलम् ।। ७७ ।।

यदि छठे घरमें शुक्रयुक्त चंद्रमा हो तो इलायचीफल और जो शनि छठे, मंगल नौवें हो तो लाल काले वर्णकी गोलाकार कोई वस्तु है ।। ७७ ।।

श्यामास्तिला मसूराद्या यदा लाभे भृगोः सुतः ।।
गोधूमान्नं यवश्चैव यदा गुणपदे रविः ।। ७८ ।।

अथवा श्याम तिल, मसूरादि है ऐसा कथन करे। यदि ग्यारहवें शुक्र हो तो गेहूं जौ और यदि तीसरे घरमें सूर्य हो तो ।। ७८ ।।

अर्कपत्रं यदा केन्द्रे राहुः शस्त्रायसी स्मृते ।।
केन्द्रे शनिः श्यामपुष्पं यदा वित्केंद्रगस्तदा ।। ७९ ।।

अर्कपत्र और केंद्रमें राहु हो तो शस्त्र, लोह; केंद्रमें शनि हो तो श्यामपुष्प, यदि बुध केंद्रमें हो तो ।। ७९ ।।

पद्मं यदा राहुचंद्रशुक्राः केन्द्रे हि दाडिमम् ।।
शनिराहुबुधाः केन्द्रे फलमेरण्डजं यदा ।। ८० ।।

कमल । राहु चंद्रमा और शुक्र केंद्रमें हों तो दाडिम, शनि, राहु और बुध केंद्रमें हों तो एरंडफल ।। ८० ।।

बुधेक्षितो गुहः केन्द्रे मालतीपुष्पमादिशेत् ।।
चंद्रो भौमबुधद्रष्टा धनस्थानं निरीक्षते ।। ८१ ।।

बुधदृष्ट राहु केंद्रमें हो तो मालतीपुष्प, मंगल और बुधका देखनेवाला चंद्रमा धन-स्थानको देखता हो तो ।। ८१ ।।

रक्तपीतं तदा वस्त्रं यदा राह्वारकेतवः ।।
तनुं पश्यन्ति धूम्रं च रक्तं वस्त्रं च विद्रुमम् ।। ८२ ।।

लाल पीला वस्त्र और राहु, मंगल, केतु लग्नको देखते हों तो धूम्र, रक्तवस्त्र और मूंगा ।। ८२ ।।

बुधात्पञ्चमंर्यात्त्रिकोणंचपश्येद्भृगुश्चापिचंद्रोरिपो तत्फलं स्यात् ।।
त्रिकोणेहिमांशुश्चकेन्द्रेमहीजस्तदामृत्तिकारक्तगुंजाफलं वा ।। ८३ ।।

और बुधसे पांचवें त्रिकोणको शुक्र देखता हो और चंद्रमा छठे हो तो पूर्वोक्त धूम्र रक्त वस्त्र मूंगा कहे। त्रिकोणमें चंद्रमा और केंद्रमें मंगल हो तो मृत्तिका, लाल चोटली वा फल है ऐसा जाने ।। ८३ ।।

अथ चिन्ताप्रश्ने विचारः

रवौ स्वभे भूपतिराज्यचिन्ता विधौ स्वभे क्षेत्रनिखातचिन्ता ।।
कुजेऽरिभूपालभयस्य चिन्ता बुधे कृषिक्षेत्रखलायुधानाम् ।। ८४ ।।

सूर्य अपनी राशिके हो तो राजाके राज्यकी चिन्ता है, चंद्रमा स्वक्षेत्री हो तो क्षेत्र खोदनेकी चिन्ता, मंगल हो तो शत्रु राजाके भयकी चिन्ता, बुध हो तो खेती क्षेत्र, खल और आयुधोंकी चिन्ता ।। ८४ ।।

चिन्ता गुरौ धर्मसुहृन्नृपाणां भृगौ स्वभे वाऽखिलसौम्यचिन्ता ।।
शनौ नृपागारविवादचिन्ता भवेदथो लग्नगते दिनेशे ।। ८५ ।।

बृहस्पति हो तो धर्म मित्र और राजाकी चिन्ता, शुक्र हो तो सकल शुभचिन्ता शनि हो तो राजद्वारमें विवादकी चिन्ता है ऐसा कहे, यदि लग्नमें सूर्य हो तो ।। ८५ ।।

पाखंडिकूटानृतमंत्रचिन्ता धने भवेत्कार्यबलस्य चिंता ।।
त्रये चतुर्थे च विवादचिंतासुतेसुतानांरिपुगेऽध्वनश्च ।। ८६ ।।

पाखण्डीजनके कपट, झूंठ तथा मंत्रकी चिन्ता है। सूर्य दूसरे घरमें हो तो कार्य-बलकी चिन्ता, तीसरे या चौथे हो तो विवादकी चिन्ता, पांचवें हो तो पुत्रोंकी, छठे हो तो मार्गके ।। ८६ ।।

कार्यस्य चिंता मदनेऽगनाया मृतौ च नावः सुकृते हि चिंन्ता ।
विदेशसंस्थस्य नृपेनृपार्थकार्यस्य लाभे द्रविणस्य रिष्फे ।। ८७ ।।

कार्यकी, सातवें हो तो स्त्रीकी, आठवें हो तो नौकाकी, नौवें हो तो विदेशस्थ जनकी चिन्ता, दशवें हो तो राजाके अथकायकी ग्यारहवें हो तो धनलाभकी, बारहवें हो तो ।। ८७ ।।

मार्गारिचिंतातऽथ तनौ हिमांशौ क्षेत्रार्थभोज्यस्य भवेद्धने च ।।
वित्तप्रवासस्य तथा तृतीयेवृष्टेश्चतुर्थे च गृहाम्बयोश्च ।। ८८ ।।

मार्गकी और शत्रुकी चिन्ता है ऐसा कहे। यदि लग्नमें चन्द्रमा हो तो क्षेत्रकी, अर्थकी और भोज्यवस्तुकी, दूसरे हो तो धनकी तथा परदेशकी चिन्ता, तीसरे हो तो वर्षाकी तथा चौथे हो तो घरकी और माताकी ।। ८८ ।।

सुते सुतानां च रिपौ गदानां मंदे युवत्या निधने मृतेश्च ।।
भोजस्य वाधर्मगतेचपुण्याध्वगप्रयाणस्यखभेहिचिन्ता ।। ८९ ।।

पांचवे हो तो पुत्रोंकी, छठे हो तो रोगोंकी, सातवें हो तो जवान स्त्रीकी, आठवें हो तो मृत्युकी तथा भोज्य वस्तुकी, नौवें हो तो पुण्यकी, पथिककी तथा यात्राकी, दशवें हो तो ।। ८९ ।।

क्षेत्रस्य धूर्त्तस्य च लाभयाते चिन्ताहि वासःशुचिवस्तुनोश्च ।।
व्यये हृताप्तेश्चतनौचभौमेभीवादयोःस्याच्च धने गताप्ते ।। ९० ।।

क्षेत्रकी तथा धूर्त मनुष्यकी, ग्यारहवें हो तो वस्त्रकी और पवित्र वस्तुकी चिन्ता बारहवें हो तो चोरी गई वस्तुकी प्राप्तिकी चिन्ता है ऐसा कहे। यदि लग्नमें मंगल हो तो भयकी तथा वादकी, दूसरे मंगल हो तो गत वस्तुकी प्राप्तिकी ॥ ९० ॥

दुश्चिक्यगे भ्रातृसुहृत्कलेश्च तुर्ये सुहृद्वैरिपशुप्रपादेः ॥
पुत्रे सरोषानुनयस्य षष्ठे चिंताच वह्न्यायसरूप्यहेम्नाम् ॥ ९१ ॥

तीसरे हो तो भाईकी, मित्रकी तथा लडाईकी; चौथे हो तो मित्रकी, वैरीकी, पशुकी तथा प्याऊ आदिकी, पांचवें हो तो क्रोधसहित समझानेकी, छठे हो तो अग्निकी लोहकी, चांदीकी तथा सोनेकी ॥ ९१ ॥

द्यूने विनष्टार्थतुरंगदासींचिंता मृतौ मंदिरमंदुरादेः ॥
धर्मेऽध्वनःस्याद्दशमेचवादिप्रवादिनां लाभगते च चिन्ता ॥ ९२ ।

सातवें हो तो विनष्ट द्रव्यकी, घोडेकी तथा दासीकी, आठवें हो तो मकानकी और घुडसाल आदिकी, नौवें हो तो मार्गकी, दशवें हो तो वादी प्रतिवादीकी, ग्यारहवें हो तो ॥ ९२ ॥

विश्वासबुद्ध्या रिपुपातचिन्ता व्ययस्थिते वैरिरणस्यचिन्ता ॥
बुधेतनौशास्त्रसुखादिकानांचिन्ताधनेवस्त्रधनात्मजानाम् ॥ ९३ ॥

विश्वास बुद्धिसे शत्रुके मारनेकी, बारहवें हो तो वैरीसे युद्ध करनेकी चिन्ता है। बुध लग्नमें हो तो शास्त्र और सुखादिकी चिन्ता, दूसरे हो तो वस्त्र, धन तथा पुत्रकी ॥ ९३ ॥

तृतीयगे स्वसृसहोदराणां सुखेऽम्बुपानां कृषिवाटिकानाम् ॥
सुते सुतानां च रिपौहिगुप्तनार्यश्च कार्यस्य मदेंऽगनायाः ॥ ९४ ॥

तीसरे हो तो बहिन भाईयोंकी, चौथे हो तो जल पीनेवालोंकी, खेतीकी तथा वाटिकाकी, पांचवें हो तो पुत्रोंकी, छठे हो तो गुप्त स्त्रियोंके कार्यकी, सातवें हो तो स्त्रीकी ॥ ९४ ॥

विहंगमस्यापि मृतौ नृपाज्ञाहृतादिकानां नवमे च चिंता ॥
पतत्रिणां कर्मणि शास्त्रसौख्यकथानकानां च बुधे भवे च ॥ ९५ ॥

तथा पक्षीकी, आठवें हो तो राजाकी आज्ञा हरनेवालोंकी, नौवें हो तो पक्षियोंकी, दशवें हो तो शास्त्रकी, सौख्यकी तथा कथाकी, ग्यारहवें हो तो ॥ ९५ ॥

निजार्थकार्यस्य च संशयानांपाखण्डिविद्रोहिसुखस्यचान्त्ये ॥
गुरौतनुव्याकुलताविनाशिसौख्यस्यकोशेकुशलार्थकानाम् ॥ ९६ ॥

अपने अर्थकार्यकी, बारहवें हो तो संशयकी, पाखंडी और विद्रोही मनुष्यके सुखकी चिन्ता है ऐसा बतावे। यदि बृहस्पति लग्नमें हो तो व्याकुलताके विनाश करनेवाले, सौख्यकी, दूसरे घरमें बृहस्पति हो तो कुशलकी तथा द्रव्यकी चिन्ता ॥ ९६ ॥

तृतीयगे स्वसृकुलान्वितानां सुखे विवाहस्य कुलोद्भवां च ।।
सुते सुतोद्वाहरतेश्च षष्ठे वधूतुरंग्यादिकदोहदस्य ।। ९७ ।।

तीसरे हो तो बहिनके कुलसे मिले हुए मनुष्योंकी, चौथे हो तो कुलके मनुष्योंके विवाहकी, पांचवें हो तो पुत्र के विवाहप्रीतिकी, छठे हो तो वधू और घोडी आदिके गर्भकी ।। ९७ ।।

स्मरस्थिते स्याद्दुहितार्थविद्ध्यैमृत्यौतथास्यात्कृपणस्य पुंसः ।।
धर्मेऽन्यदेशस्यधनध्वजानांस्वस्थेसुहृद्विग्रहसौख्यतश्च ।। ९८ ।।

सातवें बृहस्पति हो तो पुत्रीके अर्थसिद्धिकी, आठवें हो तो कृपण पुरुषकी, नौवें हो तो परदेशकी, धन तथा ध्वजाकी, दशवें हो तो मित्रकी लडाईकी, सुखकी ।। ९८ ।।

लाभे स्थिरत्वादिसुखस्य रिष्फे पशोश्च चिन्ता तनुगो भृगौ च ।।
नृत्येष्टगीतादिसुखस्य कोशे रक्ताम्बरस्वस्य तृतीयसंस्थे ।। ९९ ।।

यारहवें हो तो स्थिरतादिके सुखकी, बारहवें हो तो पशुकी चिन्ता है ऐसा कहे। जो शुक्र लग्नमें हो तो नृत्यकी, इष्टकी तथा गीतादिके सुखकी चिन्ता, दूसरे घरमें हो तो लाल वस्त्रोंकी तथा धनकी, तीसरे हो तो ।। ९९ ।।

स्वदारगर्भस्य सुखे विवाहसौख्यस्य सूनौ हितवाहनानाम् ।।
षष्ठे प्रसूतेर्मदने वधूटीमेलाय सुस्नेहसुखाय चिन्ता ।। १०० ।।

अपनी स्त्रीके गर्भकी ,चौथे हो तो विवाहके सुखकी, पांचवें हो तो मित्र और वाहनोंकी, छठे हो तो प्रसूतिकी सातवें हो तो वधूटीके मिलनेकी, प्रेम और सुखके लिये चिन्ता है ।। १०० ।।

मृतौ परस्त्रीजनिताऽथ भाग्ये सुप्तस्य खे कर्मण औपयाते ।।
शुक्रेच नारी झकटस्य चिन्ता व्यये स्थितिस्वर्गतवस्तुचिन्ता ।। १०१ ।।

आठवें हो तो परस्त्रीकृत चिंता, नौवें हो तो सोये हुए पुरुषकी, दशवें हो तो कर्मकी ग्यारहवें हो तो नारीके झकटकी चिन्ता, बारहवें हो तो स्थितिकी और स्वर्गमें गई वस्तुकी चिन्ता है ऐसा जाने ।। १०१ ।।

शनौ तनुस्थे गददारचिन्ता धने भवेत्स्वात्मजपाठचिन्ता ।।
तृतीयगे भ्रातृविनाशचिंतासुखेस्त्रियाःस्तन्यविवृद्धिचिन्ता ।। १०२ ।।

शनि लग्नमें हो तो रोग और स्त्रीकी चिन्ता है, दूसरे हो तो पुत्रके पाठकी, तीसरे हो तो भाईके विनाशकी, चौथे हो तो स्त्रीके दूध बढनेकी चिंता ।। १०२ ।।

सूनौ च मर्त्यद्वयकार्यचिन्ता चिन्ता रिपौ प्राक्तनजारिकायाः ।।
द्यूने च वध्वा झकटस्य मृत्यो गतार्थदासीमृतवस्तुनश्च ।। १०३ ।।

पांचवें हो तो दो मनुष्योंके कार्यकी, छटे हो तो पहिली स्वैरिणी स्त्रीकी, सातवें हो तो वधूके झकट (झगडे) की, आठवें हो तो गये धनकी, दासीकी तथा मृत वस्तुओंकी ।। १०३ ।।

भाग्ये शनौ निन्दितदुर्मतीनां दशस्थितेऽस्या झकटस्य भीतेः ।।
आयेशनौ कुत्सितकार्यचिन्तारिष्फेशनौवैरिगणस्यचिन्ता ।। १०४ ।।

नौवें शनि हो तो निन्दित और दुर्मति मनुष्योंकी, दशवें हो तो झकटेके भयकी, ग्यारहवें हो तो कुत्सित कार्यकी और बारहवें हो तो वैरियोंकी चिन्ता है ऐसा कथन करे ।। १०४ ।।

शुक्रेत्थसाले च बुधेत्थसाले जीवेत्थसाले हिमगौ प्रकर्षात् ।।
सूर्येत्थसाले मदने विशेषात्स्त्रीणां विवाहस्य भवेच्च चिन्ता ।। १०५ ।।

शुक्रके इत्थसालमें बुधके इत्थसालमें तथा बृहस्पतिके इत्थसालमें यदि चंद्रमा हो तो अधिकतासे स्त्रियोंके विवाहकी चिन्ता है। एवं सातवें घरमें सूर्यके इत्थसालमें चंद्रमा हो तो भी विशेषकरके स्त्रियोंके विवाहकी चिन्ता है ऐसा जाने ।। १०५ ।।

यद्वेन्दुनन्दांशतः फलम्

यदा चंद्रो मेषभागे कनकं गुरुशुक्रयोः ।।
एकेन दृष्टोऽसौ रत्नं वृषांशे चेन्निशापतिः ।। १ ।।

यदि चन्द्रमा मेषके नवांशमें हो तो सुवर्ण और जो बृहस्पति अथवा शुक्र इन दोनोंमेसे किसी एकसे दृष्ट हो तो रत्न कहे। यदि चंद्रमा वृषके नवांशमें ।। १ ।।

पुष्टशुक्रेक्षिते भूषामयोऽसौ वक्रिणो दृशा ।।
अतिचारिभृगोश्च स्वं जीर्णं मिथुनकर्कयोः ।। २ ।।

पुष्ट शुक्रसे दृष्ट हो तो भूषणयुक्त रत्न है और जो वृषनवांशस्थ चंद्रमा वक्री ग्रहकी अथवा अतिचारी शुक्रकी दृष्टिसे दृष्ट हो तो पुराना धन है। यदि मिथुन अथवा कर्कके ।। २ ।।

नवांशगः शशी वारिजानि सिंहांशगः शशी ।।
सूर्यदृष्टोहेमरूप्ये कन्यांशेन्दुरवीक्षितः ।। ३ ।।

नवांशमें चन्द्रमा हो तो जलोत्पन्न वस्तु कमल आदि हैं। यदि चंद्रमा सिंहके नवांशमें सूर्यसे दृष्ट हो तो सुवर्ण और चांदी है यदि कन्याके नवांशमें चंद्रमा सूर्यसे अदृष्ट हो तो ।। ३ ।।

रूप्यं सौम्येक्षितश्चासौ कांस्यं सौम्येक्षणं विना ।।
मुद्रां शुक्रेक्षितो वस्त्रं कुद्दालं शनिवीक्षितः ।। ४ ।।

चांदी, और बुधसे दृष्ट हो तो कांस्य और बुधसे अदृष्ट हो तो मुद्रा, शुक्रसे दृष्ट हो तो वस्त्र, शनिसे दृष्ट हो तो कुद्दाल (कचनार) है ।। ४ ।।

तुलांशे चंद्रमाः शुक्रदृष्टश्चेद्गंधवाससी ।।
अशुक्रवीक्षितो जीर्णं वासो वृश्चिकभागगः ।। ५ ।।

यदि चंद्रमा तुलाके नवांशमें दृष्ट हो तो गंध और वस्त्र, यदि शुक्रसे अदृष्ट हो तो जीर्ण वस्त्र कहे। यदि चंद्रमा वृश्चिकके नवांशमें ।। ५ ।।

शुक्रदृष्टो विधुर्लोहं स्वर्णरूपे कुजेक्षितः ।।
धनुर्लवे विधुर्जीवदृष्टो रत्नं मृगांशके ।। ६ ।।

शुक्रसे दृष्ट हो तो लोह, मंगलसे दृष्ट हो तो सुवर्ण और चांदी है। यदि धनके नवांशमें चंद्रमा बृहस्पतिसे दृष्ट हो तो रत्न, मकरके नवांशमें चंद्रमा ।। ६ ।।

जीवदृष्टः शशी चाल्पभास्करं मंदवीक्षितः ।।
काचादिकल्पितं रत्नं जातिं चंद्रांशतो वदेत् ।। ७ ।।

बृहस्पतिसे दृष्ट हो तो थोडी चमकवाला रत्न है। शनिसे दृष्ट चन्द्रमा हो तो कंचादि बना हुआ रत्न है ऐसा कहे। इस प्रकार चंद्रमाके नवांशसे जाति कहे ।। ७ ।।

अथ तात्कालेन्दुः

इष्टा नक्षत्रघटिकाः सूर्योदयगतेष्टगाः ।।
पञ्चत्रिंत्तरशतेनाप्ता राश्यादिको विधुः ।। १ ।।

सूर्योदयसे गत इष्टपर्यन्त नक्षत्रकी घडियोंमें अर्थात् गतर्क्षमें १३५ का भाग देनेसे जो लब्ध मिले वही राश्यादिक चंद्रमा जाने ।। १ ।।

गतनक्षत्रसंख्यांका षष्टचा संगुण्य संभजेत् ।।
पञ्चत्रिंशोत्तरशतेनाप्तोराश्यादिको विधुः ।।
द्वयोर्योगे स्पष्टचंद्रस्तात्कालीनोऽभिजायते ।। २ ।।

गत नक्षत्रके संख्यांकको साठसे गुणा करके १३५ का भाग देनेसे राश्यादिक चंद्रमा जानेः इन दोनोंका योग करनेपर तात्कालिक चंद्रमा स्पष्ट हो जाता है ।। २ ।।

षष्टिघ्नं गतभं द्विघ्नं नंदभक्तं लवादि यत् ।।
उदितर्क्षेष्टनाडीभिर्द्विगुणाभिस्तथा कृतम् ।।
त्रिंशद्भक्तं हि राश्यादि चंद्रस्तात्कालिको भवेत् ।। ३ ।।

अथवा गतनक्षत्रको ६० से गुणा करके दूना करे, नौ (९) का भाग देकर जो अँशादिक लब्ध मिलें उनको अलग लिख दे और फिर उदित नक्षत्रकी इष्टपर्यन्त घडियोंको अर्थात् गतर्क्षको दूना करके नौ (९) का भाग देकर जो लब्ध अंश मिलें उनको पूर्व लिखित पंक्तिमें जोडकर अंशोंमें तीसका भाग देनेसे राश्यादि तात्कालिक चंद्रमा स्पष्ट होता है ।। ३ ।।

जीवज्ञशशिभिर्जीवं धातुं पातार्किभूसुतैः ।।
मूलमादित्यशुक्राभ्यां मिश्रैर्मिश्रं विनिर्दिशेत् ।। ४ ।।

बृहस्पति, बुध तथा चंद्रमासे जीव राहु, शनि तथा मंगलसे धातु, सूर्य और शुक्रसे मूल और मिश्र ग्रहोंसे मिश्र फल कहे ।। ४ ।।

तत्कालचंद्रं नंदांशचक्रे पश्यति यो बली ।। ५ ।।
तद्द्रव्यं स्याद्बलिष्ठाश्चेद्बहवो द्रव्यभूरिता ।।
मंदजीवेक्षिते चंद्रे सजीवं जीवमादिशेत् ।। ६ ।।

तत्काल चंद्रमाके नवांश चन्द्रमाको जो कोई बलवान् ग्रह देखता हो तो उसी ग्रहका द्रव्य जाने, यदि बहुतसे बलवान् ग्रह देखते हों तो बहुतसा द्रव्य उन ग्रहोंके अनुसार बतावे। यदि शनि और बृहस्पतिसे दृष्ट चंद्रमा हो तो सजीव जीव कहे ॥ ५ ॥ ६ ॥

बुधेक्षिते च निर्जीवं जीवं भौमशनीक्षिते ॥
स्वर्णादि धाम्यं धातुं च केवलागुनिरीक्षिते ॥ ७ ॥

बुधसे दृष्ट हो तो निर्जीव जीव; मंगल, शनिसे दृष्ट हो तो सुवर्णादि धाम्य धातु और केवल राहुसे दृष्ट हो तो ॥ ७ ॥

रत्नाद्यधान्यं सूर्येण दृष्टे शुष्कं च मूलकम् ॥
आर्द्रं शुक्रेक्षिते मूलं मिश्रैर्मिश्रफलं वदेत् ॥ ८ ॥

रत्नादि अधाम्य धातु, सूर्यसे दृष्ट हो तो सूखा हुआ मूल, शुक्रसे दृष्ट हो तो गीला मूल और जो मिश्र ग्रहोंसे दृष्ट हो तो मिश्र फल कहे ॥ ८ ॥

तात्कालिकदिनचंद्रः स्त्रीतुलमिथुनांशके तदा द्विपदम् ॥
कुम्भधनुर्नवमांशे ब्रूयाद्वै पादवर्जितं जीवम् ॥ ९ ॥

यदि तात्कालिक दिनका चंद्रमा कन्या, तुला तथा मिथुनके नवांशमें हो तो द्विपद; कुंभ तथा धनुके नवांशमें हो तो पादवर्जित जीव ॥ ९ ॥

कर्कझषालिनवांशे बहुपदजीवं सदा वदेत्कुशलः ॥
मेषमकरवृषसिंहेष्वत्र विशेषं परं ब्रूमः ॥ १० ॥

कर्क, मीन तथा वृश्चिकके नवांशमें हो तो बहुपदजीव कहे। अब मेष, मकर, वृष तथा सिंहमें कुछ अधिक विशेष कहते हैं ॥ १० ॥

चतुर्द्धा द्विपदा देवनरवायसराक्षसाः ॥
भ्रमत्रयेण मेषादिचंद्रे तात्कालिके मताः ॥ ११ ॥

चार प्रकारके द्विपद हैं—देव, नर, वायस और राक्षस। ये तात्कालिक मेषादि चन्द्रमामें तीन वार गिननेसे जानने चाहिये ॥ ११ ॥

चतुष्पदादयश्चान्ये द्विधा स्थलजलोद्भवाः ॥
ते च राशेः स्वभावेन तात्कालेन्दोः परिस्फुटाः ॥ १२ ॥

जैसे मेषका तात्कालिक चन्द्रमा मेषके ही नवांशमें हो तो देव, वृषके नवांशमें हो तो नर, मिथुनके नवांशमें हो तो वायस, कर्ककेमें हो तो राक्षस, सिंहकेमें हो तो देव। इसी प्रकार कन्यादिके नवांशमें और वृषादिकमें भी समझना चाहिये। अन्य चतुष्पदादिक जीव दो प्रकारके हैं—स्थलचारी और जलचारी। ये तात्कालिक चन्द्रमाकी राशिके स्वभावसे जाने जाते हैं ॥ १२ ॥

स्वर्णं रूप्यं तथा ताम्रं वंगं नागारलोहकम् ॥
नागं कांस्यं च विज्ञेयं नंदांशस्य क्रमेण वै ॥ १३ ॥

सुवर्ण, चांदी, तांबा, वंग, शीशा, पीतल, लोह, शीशा, कांस्य ये धातु नवांशके क्रमसे जानने चाहिये ।। १३ ।।

गुल्मवल्लीलताकंदा मेषाद्येन्दोभ्रमत्रयात् ।।
पत्रं पुष्पं फलं मूलं त्वचा त्रिंशांशकाद्विधोः ।। १४ ।।

गुल्म, वल्ली, लता और कन्द ये मेषादि चन्द्रमाकी तीन आवृत्ति करनेसे क्रमपूर्वक समझे । पत्र, पुष्प, फल, मूल, त्वचा ये चन्द्रमाके त्रिंशांशके क्रमानुसार कहे ।। १४ ।।

यतिविप्राधिकारिस्त्रीष्टान्त्यदस्यव ईरिताः ।।
सूर्याद्यर्क्षगते चंद्रे चिंतितः पुरुषो भवेत् ।। १५ ।।

यति, विप्र, अधिकारी, स्त्री, इष्टमित्र, अन्त्यज, चौर ये सूर्यादि ग्रहोंकी राशिपर चन्द्रमाके होनेसे क्रमानुसार समझने चाहिये । इनमें ही चिन्तित पुरुष है ऐसा कथन करे ।। १५ ।।

सूर्याद्यर्क्षे वदेच्चंद्रेकुष्ठं चिह्नं च दद्रु च ।।
मसकं तिलकं स्फोटं घातं चिन्तित चौरयोः ।। १६ ।।

सूर्यादि ग्रहोंकी राशिपर चन्द्रमाके होनेसे चिन्तित पुरुष और चोरके शरीरमें क्रमसे कुष्ठ, चिह्न, दद्रु, तिलक, स्फोट और घात बतावे ।। १६ ।।

गौरोऽतिगौरः श्यामश्च श्यामो वानरसन्निभः
त्रिंशांशकाद्द्रव्यवर्णो नृणां व्युत्क्रमतस्त्वितः ।। १७ ।।

गौर, अतिगौर, श्याम, वानरसमान श्याम इस प्रकार द्रव्यका वर्ण त्रिंशांशसे क्रमपूर्वक कहे । परन्तु मनुष्योंका वर्ण उलटे क्रमसे समझना चाहिये । जैसे वानरसमान श्याम, श्याम, अतिगौर और गौर ।। १७ ।।

बालो युवा तथा वृद्धो द्रेष्काणस्य वशान्मताः ।।
सप्ततित्रिचतुःसूर्याः पंचाशदवत्सराः ।।
सूर्यादीनां च वयसो वार्धक्यं बहु भास्करेः ।। १८ ।।

वाल, युवा, वृद्ध द्रेष्काणवशसे समझे । ७० । ३ । ४ । १२ । ५० । ३२ ये वर्ष सूर्यादि ग्रहोंकी अवस्थाके कहे हैं परन्तु शनैश्चरकी अतिवृद्धावस्था है ।। १८ ।।

राजा भानुस्तपस्वीन्दुः स्वर्णकारः कुजो बुधः ।। १९ ।।
द्विजो गुरुर्वणिक् शुक्रो वैश्यः शूद्रः शनैश्चरः ।।
राहुर्निषाद इत्येते सर्वकार्येषु संमताः ।। २० ।।

सूर्य राजा, चंद्रमा तपस्वी, मंगल सुनार, बुध ब्राह्मण, बृहस्पति वणिक्, शुक्र वैश्य शनि शूद्र, राहु निषाद सब कार्योंमें माने हैं ।। १९ ।।२० ।।

भूपराज्ञीमण्डलेशकुमारसचिवाभिधः ।।
नेतृपत्यभिधाः सूर्यान्नवांशेशाद्विधोर्वदेत् ।। २१ ।।

राजा, रानी, मण्डलेश, कुमार, मंत्री, नेता, पति ये चंद्रमाके नवांशसे सूर्यादि ग्रहोंसे कहे ।। २१ ।।

वर्गेशादत्र भूमाने मूर्द्धा हस्तो निवर्तनम् ॥
अर्द्धक्रोशस्तथा क्रोशो द्विक्रोशो योजनं भवेत् ॥ २२ ॥

इसी प्रश्नमें पृथ्वीका प्रमाण जाननेके लिये सूर्यादिक वर्गेशग्रहसे क्रमानुसार मूर्धा, हाथ, गज, अर्धकोश, दो कोश और योजन हो हैंते ॥ २२ ॥

नाड्यहःपक्षमासर्त्तुषण्मासाश्च समाः क्रमात् ॥
वर्गाक्षरगते चंद्रे वाच्यं चैवान्तरग्रहात् ॥ २३ ॥

घडी, दिन, पक्ष, मास, ऋतु, षणमास और वर्ष इन वर्गके अक्षरपर चन्द्रमा होनेसे मध्यमें जो सूर्यादि ग्रह हो उससे क्रमानुसार कहे ॥ २३ ॥

अथ तात्कालिकर्क्षचरणानयनम् ।

ग्रहलिताः खखाष्टाता गतर्क्षं यदि चैव ताः ॥
शतद्वहृता याताश्चरणाद्व स्रभादितः ॥ २४ ॥

ग्रहकी लिप्ता (कलाओं) म ८०० का भाग देनेसे गतनक्षत्रसंख्या और उन्हीं कलाओंमें २०० का भाग देनेसे जो लब्ध मिले सो अश्विनीसे लेकर गत चरण होते हैं, परंतु (राशि, अंश, कला) सबकी कला करनी चाहिये ॥ २४ ॥

सप्तविंशतिभिर्निघ्ना उदितर्क्षेष्टनाडिकाः ॥
षष्ट्याप्ता गतभैर्युक्ता दिने तत्कालभं गतम् ॥ २५ ॥

उदित नक्षत्रकी इष्ट घडी अर्थात् गतर्क्षको २७ से गुणा करके ६० का भाग देनेपर जो लब्ध मिले उसमें गत नक्षत्र जोडनेसे जो २७ से अधिक हो तो सत्ताइस घंटा देवे तो तात्कालिक गत राशि होगी ॥ २५ ॥

तत्कालचंद्रराशेर्दिक्स्थाने च तदनन्तरम् ॥
तत्कालचंद्रभाद् ब्रूयाद्धृतनष्टपदं सुधीः ॥ २६ ॥

तात्कालिक चंद्रमाकी राशिकी दिशा और स्थान विचारे, तदनन्तर चंद्रमाकी राशिसे हृत नष्ट वस्तुका स्थान बुद्धिमान् पंडित कहे ॥ २६ ॥

पुष्यार्द्राश्रुतिरोहिणीशतधनिष्ठाश्चोत्तराणां त्रयं,
स्यादूर्ध्वास्यगणोऽनलान्तकमघारक्षोविशाखाहयः ॥
पूर्वाणां त्रितयं त्वधोमुखगणो ज्येष्ठादितिस्वातय-
श्चित्राहस्तहयाश्च मित्रविधुरेवत्यः समास्यो गणः ॥ २७ ॥

पुष्य, आर्द्रा, श्रवण, रोहिणी, शतभिषा, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा ये ऊर्ध्वमुख नक्षत्र हैं। कृतिका, भरणी, मघा, मूल, विशाखा, आश्लेषा, तीनों पूर्वा ये अधोमुख नक्षत्र हैं। ज्येष्ठा, पुनर्वसु, स्वाती, चित्रा, हस्त, अश्विनी, अनुराधा, मृगशिर, रेवती ये समानमख नक्षत्र हैं ॥ २७ ॥

ऊर्ध्ववक्त्रर्क्षगे चंद्रे धृतमूर्ध्वमधोमुखे ।।
भे बिलादौ धरायां हि माध्यर्क्षे च तिरोधृतम् ।।
नक्षत्रयोनितो योनिं पश्वादीनां वदेद्बुधः ।। २८ ।।

यदि चंद्रमा ऊर्ध्वमुख नक्षत्रपर हो तो ऊपर किंसी स्थानमें ,अधामुखपर हो तो बिल आदि नीचे स्थानमें पृथ्वीमें, समान मुखवाले नक्षत्रपर हो तो तिरछे स्थानमें हृत नष्ट वस्तु धरी है और नक्षत्रकी योनिसे पश्वादिकोंकी योनि कहे ।। २८ ।।

अथ नवांशस्पष्टसाधनम्

खेटांशांस्त्रिभिराहत्य दशभिश्च विभाजयेत् ।।
ततो भयातशेषेण भादिर्नंदांशकः स्फुटः ।। २९ ।।

ग्रहके अंशोंको ३ से गुणा करके १० का भाग देनेसे जो लब्ध मिले उसमें भयात घटा देनेसे जो शेष रहे वह राशि, पूर्वमें दशका भाग देनेसे जो शेष रहे वस अंश जानना, यही राश्यादि नवांश स्फुट हो जाता है ।। २९ ।।

तत्कालराशिनक्षत्रे द्रेष्काणे च नवांशके ।।
दृष्ट्वा स्फुटतरं चंद्रं ततोऽवस्थां निरीक्षयेत् ।। ३० ।।

तत्कालकी राशि और नक्षत्रमें, द्रेष्काणमें. नवांशमें, चंद्रमा अतिस्पष्ट देखकर अवस्थाको देखे ।। ३० ।।

विभचंद्रलवा द्विघ्नाः पंचभक्ताः फलं गताः ।।
अवस्थाभाग्यकायाश्च फलं ब्रूयान्निरन्तरम् ।। ३१ ।।

राशिरहित चंद्रमाके अंशोंको दूना करके ५ का भाग दे मिले वही चन्द्रमाकी गत अवस्था होती है, उन्हें छोडकर वर्त्तमान अवस्थाका फल कहे ।। ३१ ।

प्रवासनाशौ मरणं जयश्च हास्यो रतिः क्रीडितसुप्तभुक्ताः ।।
ज्वरप्रकंपस्थितयः क्रियादिचंद्रक्रमात्स्युः प्रथमा अवस्थाः ।। ३२ ।।

प्रवास, नाश, मरण, जय, हास्य, रति, क्रीडित, सुप्त, भुक्त, ज्वर, प्रकंप, स्थिति ये अवस्था मेषादि चंद्रमाके क्रमसे पहिली पहिली हैं । जैसे—मेषके चंद्रमाकी प्रथमावस्था प्रवास, वृषके चन्द्रमाकी प्रथमावस्था नाश, मिथुनके चन्द्रमाकी प्रथमावस्था मरण इत्यादि क्रमसे समझ लेना चाहिये ।।३२ ।।

यथावस्था विधौ राशौ तथा धिष्ण्यनवांशके ।।
आद्यपंचनवेशानां द्रेष्काणो निजराशितः ।। ३३ ।।

जिस प्रकारसे चन्द्रमाकी अवस्था राशिमें कही है उसी प्रकारसे नक्षत्रमें, नवांशमें तथा द्रेष्काणमें जाननी उचित है । अपनी राशिमें प्रथम, पंचम तथा नवम राशिके अधिपति ग्रहका द्रेष्काण क्रमसे होता है । जैसे मेष राशिके प्रथम १० अंशोंका अधिप मंगल, उससे आगे दश अंशोंका अधिप सूर्य और उससे आगे १० अंशोंका अधिप बृहस्पति है, एवं वृषादि राशियोमें भी जानना चाहिये ।। ३३ ।।

अवस्था द्वादश प्रोक्ताः स्वनामफलदा विधोः ।।
यथोत्तरबलावस्था राशिद्रेष्काणभागजाः ।। ३४ ।।

चंद्रमाकी १२ अवस्था अपने नामके अनुसार फल देनेवाली हैं और देष्काण और नवांश इनकी अवस्था यथोत्तर बलवती हैं अर्थात् राशिकी अवस्थासे द्रेष्काणावस्था बलवती है और द्रेष्काणावस्थासे नवांशावस्था बलवती है ।। ३४ ।।

गमागमकृता चिन्ता प्रवासी पृच्छकोऽथवा ।।
, धनोद्देशेन वा चिन्ता प्रवासस्येति लक्षणम् ।। ३५ ।।

जाने आनेकी चिन्ता है वा प्रवासी है वा पृच्छक है वा धनोद्देशसे चिन्ता है यह लक्षण प्रवासावस्थाका है ।। ३५ ।।

बंधन भूपतो भीतिर्वैरिक्रोधो गतो हतम् ।।
उद्वेगश्च तथा रौद्रं नाशे फलमितीरितम् ।। ३६ ।।

बंधन, राजासे भय, वैरिका क्रोध, जाना, हानि, उद्वेग, भयानक ये फल नाशाव-स्थाके लक्षण हैं ।। ३६ ।।

मारणं मरणं क्रूरकर्म यात्रा मृतौ फलम् ।।
स्वस्य च स्वजनस्यापि जयस्याशा जयाफलम् ।। ३७ ।।

मारना, मरना, क्रूर कर्म, यात्रा मरणावस्थाका फल है और अपनी वा परायी जयाशा करनी जयावस्थाका फल है ।। ३७ ।।

स्वेभ्यः प्रीतिर्धनाकांक्षा स्त्रीगर्भो हास्यतः फलम् ।।
स्त्रिया वा मित्रतश्चिन्ता लाभालाभं यथाविधि ।। ३८ ।।

अपने जनोंके लिये प्रसन्नता, धमकी आकांक्षा, स्त्रीगर्भ इत्यादि हास्यावस्थाका फल है । स्त्री वा मित्रसे चिन्ता, यथावधि लाभ अलाभ ।। ३८ ।।

परम्पराकुलत्वं च रताविति फलं वदेत् ।।
सुतमित्रादिमांगल्यं चित्तोत्साहः सुखं तथा ।। ३९ ।।

परम्परासे व्याकुलता होनी यह रत्यवस्थामें फल कहे । सुत मित्रादिका मंगल कर्म चित्तोत्साह, सुख ।। ३९ ।।

लाभालाभस्य चिन्ता स्यादिति क्रीडागते विधौ ।।
स्वस्य च स्वजनस्यापि लाभाशा सुप्तिते विधौ ।। ४० ।।

लाभालाभकी चिन्ता यह क्रीडावस्थागत चंद्रमाका फल है । अपनी वा अपने जनकी लाभाशा होनी यह सुप्तावस्थागतचंद्रमाका फल है ।। ४० ।।

परोपसर्पणे चिंता लाभालाभौ ततः शुभम् ।।
कष्टं वापि वदेद्भुक्तावस्थायां यदि चंद्रमाः ।। ४१ ।।

परायेके समीप जानेकी चिन्ता, लाभ, अलाभ वहांसे शुभ वा कष्ट ये भुक्तावस्थागत चंद्रमाका फल कहे ।। ४१ ।।

सुतस्त्रीद्रव्यतश्चिन्ता ज्ञेयाचिन्ता ज्वराफलम् ।।
क्रूरकर्मभयं शत्रोर्दु:खचिन्ता प्रकम्पिते ।।
संगमे सुतमित्राणां द्रव्ये चिन्ताफलं स्थितौ ।। ४२ ।।

पुत्र' स्त्री, द्रव्यसे चिन्ता होनी अथवा अन्य चिन्ता होनी यह ज्वरावस्थाका फल है। क्रूर कर्मसे और शत्रुसे भय दु:ख चिन्ता यह प्रकम्पितावस्थाका फल है सु,त मित्रके मिलनेमें वा द्रव्यके मिलनेमें चिन्ता होनी यह स्थित्यवस्थाका फल है ।। ४२ ।।

किं करोतीति प्रश्नेः विचारः

मकरराशिःपुमांस्तस्य ज्वरावस्थापूर्वास्ति तत्र चंद्रस्तृतीयावस्थायां ततो ज्वरावस्थातः तृतीया स्थितिरतः स्थितः इति ज्ञेयम् ।। १ ।।

मकरराशि पुरुष है, उसकी प्रथमा ज्वरावस्था है, वहांसे चन्द्रमा तीसरी, अवस्थामें है, तीसरी अवस्थाका नाम स्थिति है इसीसे वह पुरुष स्थिति है ऐसा जानना चाहिये ।। १ ।।

चौर्याय यामीति प्रश्ने विचारः

पापेऽङ्गे सौम्यदृष्टिर्वा चौर्यवादाग्रहात्सुखम् ।।
तदान्यथा भयं हानिर्बन्धनं वा समादिशेत् ।। १ ।।

लग्नमें पाप ग्रह हो वा शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो चोरी, वाद, आग्रह या लडाईसे सुख होता है और इससे अन्यथा हो तो भय, हानि वा बंधन कहे ।। १ ।।

लग्नेशो वीक्षते लग्नं पापयोगेक्षणं विना ।।
तत्र चौर्यादिसंसिद्धिः परथा परथा भवेत् ।। २ ।।

पापयोगेक्षणरहित लग्नको लग्नेश देखता हो तो चोरी आदिकी संसिद्धि होती है, यदि इस प्रकारसे न हो तो असिद्धि होती है ।। २ ।।

धने रिपौ व्यये छिद्रे लग्नेशः सद्दृशा विना ।।
हानिं भीतिं तथा बंधं मृतिं च क्रमशो वदेत् ।। ३ ।।

२ । ६ । १२ । ८ इन घरोंमें लग्नेशु शुभ ग्रहकी दृष्टिरहित स्थित हो तो क्रमसे हानि भय, बंधन और मृत्यु कहे ।। ३ ।।

क्रिमाप्यमिति प्रश्ने विचारः

कुजार्कौ तनुगौ चौर्ये स्वर्णं रूप्यं सितोडुपौ ।।
सरत्नं हेम सौम्येज्यौ लौहं च शनिदानवौ ।। ४ ।।

यदि मंगल, सूर्य लग्नमें हों तो सुवर्ण; शुक्र, चंद्रमा हों तो चांदी; बुध, बृहस्पति हों तो रत्नसहित सुवर्ण; शनि ,राहु हों तो लोह मिलेगा ऐसा कहे ।। ४ ।।

उभौ तनौ तनौ सौख्यं चौर्ये न शुभयोगतः ।।
चौर्यं स्यात्पापदृष्टचा हि चौर्यसिद्धिर्न जायते ।। ५ ।।

यदि शनि राहु दोनों लग्नमें हों तो चोरी करनेमें शरीरविषयक सुखकी प्राप्ति होती है और लग्नमें शुभ ग्रहका योग होनेसे अथवा पाप ग्रहकी दृष्टि होनेसे चोरीकी सिद्धि नहीं होती है ।। ५ ।।

चौर्यधनचौरयोः स्थानादिलाभप्रश्ने विचारः

अष्टेश्वरे सप्तममृत्युयाते प्रष्टुर्न लाभो द्रविणस्य चौरात् ।।
मृतीश्वरद्रव्यपतीत्थसाले नष्टं हृतं वस्तु हि लभ्यमेव ।। १ ।।

अष्टमेश्वर ग्रह सातवें वा आठवें हो तो पूछनेवालेको चोरसे धनका लाभ नहीं होता । अष्टमेश और धनेशका इत्थसाल हो तो नष्ट और हृत वस्तुका लाभ हो जाता है ।। १ ।।

वित्तलग्नेशयोः कर्मधीशयोश्च सुदृष्टितः ।।
राजा गृह्णाति तद्द्रव्यं चौरं बद्ध्वा बलेन हि ।। २ ।।

धनेश और लग्नेशपर दशमेश और पंचमेशकी शुभ दृष्टी होनेसे राजा, चोरको जबर्दस्तीसे बांधकर उस धनको छीन लेता है ।। २ ।।

धनेशे भानुलुप्तांशौ चौरो लभ्यो न तद्धनम् ।।
किञ्चित्समुदिते द्रव्यनाथे लभ्यधनं लघु ।। ३ ।।

धनेश सूर्यके साथ अस्त हो तो चोर मिल जाता है, परन्तु धन नहीं मिलता । यदि द्रव्येश किचित् उदयको प्राप्त हो तो थोडा धन मिलता है ।। ३ ।।

कर्माष्टेशेत्थसाले न राजा चोरस्य पक्षकृत् ।।
क्रूरेत्थसाले हिमगौ नूनं चौरो न चान्यथा ।। ४ ।।

दशमेश और अष्टमेशका इत्थसाल होनेसे राजा चोरका पक्ष करनेवाला होता है । यदि चंद्रमा क्रूर ग्रहके इत्थसालमें हो तो निश्चयही चोर होता है; अन्यथा नहीं ।।४।।

अलग्नेशदृष्टं धन वोदयं चेत्स्वलाभेऽपि न स्यादवाप्तिःकदाचित् ।।
तपोभ्रातृनाथेत्थसाले धनेशेऽन्यदेशे धनं चौरितं वा प्रनष्टम् ।। ५ ।।

दूसरा घर वा लग्न लग्नेशसे अदृष्ट हों तो धनलाभ होंनेपर भी प्राप्ति कदाचित् नहीं हो । नवमेश वा तृतीयेशके इत्थसालमें धनेश हो तो चोरी किया वा प्रनष्ट धन विदेशमें चला गया है ऐसा कहे ।। ५ ।।

तपोभ्रातृसंस्थग्रहेणेत्थसाले धनेशोऽथवा धर्मदुश्चिक्ययाते ।।
विदेशे गतं तद्धनं वावलग्ने चरर्क्षे हिमांशौ तु यातोऽन्यदेशे ।। ६ ।।

नवमस्थ वा तृतीयस्थ ग्रहके साथ धनेशका इत्थसाल हो; अथवा धनेश नौवें वा तीसरे घरमें स्थित हो तो वह धन विदेशमें चला गया, अथवा लग्नमें चर राशिका चंद्रमा हो तो भी अन्य देशमें चला गया । ।। ६ ।।

वपु:सप्तनाथेत्थसाले तनौ चेद्गृहे स्यात्सचौरोऽथ केंद्रेऽस्तनाथे ।।
पुरीमध्यगोऽथो तनौचन्द्रभान्वोर्द्वयोर्वीक्षणात्तस्कर स्वीयएव ।। ७ ।।

लग्नेश और सप्तमेशका इत्थसाल लग्नमें हो तो चोर घरमें है और जो सप्तमेश केंद्रमें हो तो पुरीके मध्यमें है और लग्न पर सूर्य, चन्द्रमा दोनोंकी दृष्टि होनेसे अपना ही जन चोर है ।। ७ ।।

तनौ चेद्रवेर्वा विधोर्वीक्षणेन बलिष्ठस्य चौरः समीपे स्थितःस्यात्
यदा भानुपुत्रेस्मरेशेहिमांशोर्भवेद्वीक्षणं दम्भपाखण्डरूपी ।। ८ ।।

लग्नपर सूर्य वा चंद्रमाकी दृष्टि होनेसे चोर किसी बलिष्ठ पुरुषके समीप ठहरा हुआ है, यदि सप्तमेशसे शनैश्चर चंद्रमाकी दृष्टि हो तो छल कपट पाखण्डरूपी चोर है ।। ८ ।।

नष्टं यस्य स मूर्तीशो नष्टात्मा चेन्दुभास्करौ ।।
जायेशश्चौररूप स्यादेभ्यः कुर्याद्विनिश्चयम् ।। ९ ।।

जिसका धन नष्ट हो गया है वह जन लग्नेश है और जो वस्तु नष्ट हो गई है तो सूर्य चंद्रमा है और सप्तमेश चोररूप है, इन सबसे निश्चय करे ।। ९ ।।

लग्नेशो मदने लग्ने वक्री जायेश्वरस्तदा । ।।
पुरस्थमपि यद्वस्तु हृतं नैवाप्यते कदा ।। १० ।।

लग्नेश सातवें घरमें और वक्री सप्तमेश लग्नमें हो तो जो वस्तु चोरी गई है वह पुरमें रखी है; किन्तु किसी प्रकारसे भी मिलेगी नहीं ।। १० ।।

लग्नेशः सखलः पश्येज्जायेशं धनपो बली ।
भानुचंद्रौ बलिष्ठौ चेत्तदा प्रत्यक्षचौरितम् ।। ११ ।।

यदि पापग्रहसहित लग्नेश, सप्तमेशको देखता हो, धनेश बलवान् हो तथा सूर्य चंद्रमा भी वलिष्ठ हों तो वह धन प्रत्यक्ष चुराया है ।। ११ ।।

सलग्ननाथःक्षीणेन्दुर्बली जायेश्वरोऽपि वा ।।
लग्नेशो दुर्बलश्चन्द्रोऽङ्गेशयुक् स्वपुरो हृतम् ।। १२ ।।

यदि क्षीण चंद्रमा लग्नेशसे युक्त हो, सप्तमेश बलवान् हो, चंद्रमा लग्नेशसे दुर्बल होकर लग्नेशके साथमें हो तो सामने चुराया है ।। १२ ।।

जायेशो भास्करान्मृत्यो प्रत्यक्षं तद्धृत धनम् ।।
लग्नेशः सप्तमं नैव वीक्षते बलवान् विधुः ।। १३ ।।

सप्तमेश सूर्यसे आठवें घरमें हो तो वह धन सामने चोरी किया गया है । लग्नेश सातवें घरको नहीं देखता हो, बलवान् चंद्रमा ।। १३ ।।

सपापश्च तदा चौरैः प्रत्यक्षं चोरितं धनम् ।।
सप्तेशेऽस्तं गते यद्वा केन्द्रे चौरौ मृतो भवेत् ।। १४ ।।

पापग्रहसे युक्त हो तो चोरोंनें वह धन प्रत्यक्ष चुराया है । सप्तमेश अस्तंगत हो वा केंद्रमें हो तो चोर मर गया ऐसा कहे ।। १४ ।।

चंद्रभेशो विधुं पश्येन्नष्टद्रव्याप्तिदो भवेत् ।।

सप्तमे यदि पापः स्याद्वध्यचौरो नृपाज्ञया ।। १५ ।।

चंद्रमाकी राशिका पति चंद्रमाको देखता हो तो नष्ट द्रव्यकी प्राप्ति कराता है यदि सातवें घरमें पाप ग्रह हो तो राजाकी आज्ञासे चोर मारा जायगा ऐसा कहे ।।१५ ।।

सप्तमे यदि शुभो न हृताप्तिश्चेद्बली हिमगुर्द्रुतमाप्तिः

चेत्कृशो द्रुतमवाप्तिकरश्चेस्तगस्तनुपतिर्न हृताप्तिः ।। १६ ।।

सातवें घरमें यदि शुभ ग्रह हो तो चोरी गये धनकी प्राप्ति नहीं होती । यदि बलवान् चंद्रमा हो तो शीघ्र ही प्राप्ति होती है । यदि चंद्रमा क्षीण हो तो भी शीघ्र प्राप्ति होती है; किन्तु यदि लग्नेश सातवें हो तो हृत वस्तुकी प्राप्ति नहीं होती ।। १६ ।।

लग्नेशो लग्नतो लग्नाजायानायकयोर्युतिः ।।

सूर्येन्दू स्वगृहांशे चेत्तदा चौरः स्ववेश्मनि ।। १७।।

लग्नेश लग्नमें हो अथवा लग्नेश सप्तमेशका योग हो, सूर्य और चंद्रमा अपने घरके नवांशमें हों तो चौर अपने मकानमें है ।। १७ ।।

सप्तमेशो यदा तुंगे स्वामीचौरोऽथवाम्बिका ।।

स्वांशत्रिंशांशकत्र्यंशे स चेत्स्वीयो हरः स्मृतः ।। १८ ।।

सप्तमेश यदि उच्चका हो तो स्वामी अथवा माता चोर है। यदि वही सप्तमेश अपने नवांश वा त्रिंशांश वा द्रेष्काणमें हो तो अपना ही चोर है ऐसा बतावे ।। १८ ।।

सप्तमेशोंऽगार्थरिष्फेऽर्कश्चौरो जनको विधुः ।।

माता च भूमिजो भ्राता विच्चेन्मित्र गुरुर्यदा ।। १९।।

यदि सप्तमेश सूर्य लग्न, द्वितीय वा बारहवें घरमें हो तो पिता चोर. है । यदि सप्तमेश चन्द्रमा हो तो माता, मंगल हो तो भ्राता, बुध हो तो मित्र, बृहस्पति होतो ।। १९ ।।

पुत्रो वा लौल्यतो वास्तुप्रधानो चौर्यकृद्यदा ।।

भृगुश्चेत्स्त्री यदा मंदो दासी च स्वगृहे भवेत् ।। २० ।।

पुत्र अथवा चंचलतासे घरका मुखिया चोर है। यदि शुक्र सप्तमेश हो तो स्त्री, शनैश्चर हो तो अपने घरकी दासी चोर है ऐसा कहे ।। २० ।।

लग्नेन्दू चेच्छनिः पश्येच्चौरः पाखण्डरूपधृक् ।।

गायकस्तु भृगुश्चौरो विशेषोऽयमुदाहृतः ।। २१ ।।

यदि लग्न और चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो तो पाखण्डरूपीधारी चोर है और जो शुक्र देखता हो तो गानेवाला जन चोर है इतना विशेष कहा है ।। २१ ।।

तदा वध्वाहृतं द्रव्यं जायेशो यदि सप्तमे ।।

स्मरे भानौ भृगो वापि पिता चौरो गुरौ गृहेट् ।। २२ ।।

यदि सप्तमेश सातवें घरमें हो तो वधूने द्रव्य चुराया है और जो सातवें सूर्य वा शुक्र हो तो पिता चोर है, बृहस्पति हो तो घरका मालिक चोर है ।। २२ ।।

मंदो दासी बुधे स्वीयः कुजः पुत्रोऽथवानुजः ।।
सप्तमे न ग्रहश्चेत्स्यात्तनौ पूर्णविधौ परः ।। २३ ।।

शनि हो तो दासी, बुध हो तो आप, ही, मंगल हो तो पुत्र अथवा छोटा भाई चोर जानना । यदि सातवें घरमें कोई ग्रह न हो और लग्नमें पूर्ण चंद्रमा हो तो परपुरुष चोर है ऐसा जाने ।। २३ ।।

मेषे तनौ द्विजश्चौरो वृषे क्षत्रो नृयुग्मके ।।
वैश्यः कर्के च शूद्रश्च सिंहे नीचः स्त्रियां वधूः ।। २४ ।।

जो मेष लग्न हो तो ब्राह्मण, वृष हो तो क्षत्रिय ,मिथुन हो तो वैश्य, कर्क हो तो शूद्र, सिंह हो तो नीच, कन्या हो तो वधू ।। २४ ।।

तुलायां पुत्रमित्रानुजाताश्चालौ हि सेवकः ।।
चापे भ्राता स्त्रियो वापि मृगे वारांगना घटे ।। २५ ।।

तुला हो तो पुत्र वा मित्र वा छोटा भाई, वृश्चिक हो तो सेवक, धनु हो तो भ्राता, मकर हो तो स्त्री, कुम्भ हो तो वारांगना ।। २५ ।।

मूषको मीनभे भूमिस्त्वङ्गे क्षीणेऽस्ति तल्लवे ।।
चौरस्य कर्म मृतिपादाकारं स्मरपाद्वदेत् ।। २६ ।।

मीन हो तो मूषक, यदि लग्न और लग्नका नवांश निर्वल हो तो भूमि चौर है ऐसा कहे । अष्टमेशसे चोरका कर्म और सप्तमेशसे चोरका आकार कहे ।। २६ ।।

एकद्वारं स्थिरे चंद्रे यत्र चौरोऽस्ति तद्दिशि ।।
लग्नतश्चंद्रमा यत्र तत्र चौरगृहं वदेत् ।। २७ ।।

यदि चन्द्रमा स्थिर राशिका हो तो चोर जिस दिशामें रहता है उस दिशामें उसके घरका एक दरवाजा है और लग्नसे चन्द्रमा जिस दशामें हो उसी तर्फ चोरका घर कहे ।। २७ ।।

एकद्वारं स्थिरे चंद्रे द्व्यंगे द्वारद्वयं भवेत् ।।
लग्नं प्राची खभं याम्या सुखं सौम्याऽङ्गना परा ।। २८।।

जो स्थिर राशिका चन्द्रमा हो तो घरका एक द्वार, द्विस्वभाव राशिका हो तो दो द्वार चोरके घरके होते हैं । लग्न तो पूर्वदिशा, दशवां घर दक्षिण, चौथा उत्तर और सातवां पश्चिम दिशा है ।। २८ ।।

चरेऽम्बुनि चलं वस्तु स्थिरे भूमौ द्विदेहके ।।
तिर्यक् मञ्चादिके वोच्चश्चंद्रे दृष्टयनुमानतः ।। २९ ।।

यदि चर राशिका चन्द्रमा हो तो जलमें चलनेवाली वस्तु, स्थिर राशिका हो तो पृथ्वीमें चलनेवाली द्विस्वभाव राशिका हो तो तिर्यक् स्थानमें वस्तुको कहे । अथवा

उच्चका चन्द्रमा हो तो किसी ऊंचे मञ्चानपर रखी हुई बतावे, अथवा दृष्टिके अनुमानसे कथन करे जैसे पूछनेवाला ऊपरको दृष्टि करके प्रश्न करे तो ऊंची जगह, नीचेको दृष्टि करके पूछे तो नीची जगह (भूमि आदि) और जो समान दृष्टि करके पूछे तो मकानके बीचमें रखी है ।। २९ ।।

यदा चौरग्रहो राशिं विहाय च परं व्रजेत् ।।
तदैव स्वपुराद्याति मार्गं ब्रूयादिहांशकात् ।। ३० ।।

जब चौरका ग्रह राशिको छोडकर दूसरीपर जाता है तब ही चोर अपने पुरसे निकल जाता है और उसके मार्गको नवांशसे कहे ।। ३० ।।

लग्नेशो वक्रगो भूत्वा यदा राशिं समुत्सृजेत् ।।
तदा नूनं समायाति चौर्यकृत्स्वपुरं प्रति ।। ३१ ।।

लग्नेश वक्री होकर जिस समय राशिको त्यागता है उसी समय चोर अपने पुरको चला आता है ।। ३१ ।।

मंदे सप्तमगे चौरो रुद्धो वा पीडितो भवेत् ।।
स्थिरे तत्र चिरं रोगी तत्राष्टेशो मृतिर्भवेत् ।। ३२ ।।

यदि शनि सातवें हो तो चोर घिरा हुआ वा पीडित है और जो सातवें घरमें स्थिर राशि हो तो बहुत कालसे बीमार है। यदि वहां (सातवें घरमें) अष्टमेश हो तो चोर मर गया है ऐसा कहे ।। ३२ ।।

यदासप्तपतिः सिंहे चौर एको यदा झषे ।।
मिथुने च तदा चौरा बहवोऽथ स्थिरर्क्षगे ।। ३३ ।।
स्वल्पापत्ये भवेदेको द्व्यंशे चौरा बहुप्रजे ।।
चरे ग्रामान्तरं यातः स्थिरे देशे द्विदेहभे ।। ३४ ।।

यदि सप्तमेश सिंहराशिपर हो तो चोर एक और मीन वा मिथुनपर हो तो चोर बहुत हैं। स्वल्पसन्तानवाली स्थिर राशिपर सप्तमेश हो तो चोर एक और बहुसन्तानवाली द्विस्वभाव राशिपर हो तो चोर बहुत हैं। यदि चर राशिपर सप्तमेश हो तो ग्रामान्तरको चला गया, जो स्थिर राशिपर हो तो देशमें है और द्विस्वभाव राशिपर हो तो ।। ३३ ।। ३४ ।।

मार्गे चौरोथ सप्तेशे स्त्रीखेटे सप्तमस्थिते ।।
स्त्रीग्रहैर्वीक्षिते स्त्री स्याद् बुधभृग्वोर्हि गुर्विणी ।। ३५ ।।

मार्गमें चोर है ऐसा कहे। यदि सप्तमेश स्त्रीग्रह सातवें घरमें स्थित हो और स्त्रीग्रहोंसे दृष्ट हो तो स्त्री चोर है और जो बुध, शुक्र हों तो गर्भवती स्त्री है ।। ३५ ।।

यदि गुरुरधिपुत्री चेच्छनिर्वृद्धनारी यदि समुदितमंदोऽतीव वृद्धा कुजश्चेत् ।। बयसि भवति मध्या चेद्विधुर्लग्नयातो न भवति हि विशेषोऽयं फलार्हः कदाचित् ।। ३६ ।।

बृहस्पति हो तो बडी पुत्री, शनि हो तो वृद्ध स्त्री और यदि शनि उदित हो तो अतिवृद्ध स्त्री, मंगल हो तो मध्यमावस्थावाली स्त्री है ऐसा कहे। परन्तु जो चन्द्रमा लग्नमें हो तो यह विशेष कथन फलके योग्य कदापि नहीं होता अर्थात् इस कथनके द्वारा फल कहना नहीं चाहिये ।। ३६ ।।

अथ तनुनवभागान्मूकवद्वस्तुसंज्ञां तनुतनुपबलीयो वर्णतांगाधिनाथे ।।अबलिनि सुषिरत्वं सद्बलेऽन्तर्बलित्वं जितगतकरनीचेऽश्मानता वस्तुनः स्यात् ।। ३७ ।।

अब अन्य बात कहते हैं कि लग्नके नवांशसे मूकप्रश्नके समान वस्तुकी संज्ञाको कहे और लग्न तथा लग्नेशमें जो वली हो उससे वस्तुका रंग और यदि लग्नेश निर्बल हो तो वस्तुकी सुषिरता (छिद्र आदि) और लग्नेश पूर्ण वलवान् हो तो भीतरसे वस्तु ठोस वा सारवाली है। यदि लग्नेश किसी ग्रहसे पराजित वा अस्तंगत वा नीचका हो तो वस्तुकी कठोरता कहे ।। ३७ ।।

तनुवांशभतो लघुमध्यदीर्घसदृशं च ततोऽङ्गलवेशिनः ।।
नियमतोऽस्रमितिश्च तनोर्दृकाणत उ चौर्यकरोऽथ तनोर्भतः ।।
भवतिचौरकदेशदिशोऽङ्गपाद्वरवयोमितिजातिगुणाः स्मृताः ।। ३८ ।।

लग्नके नवांशकी राशिसे वस्तुका लघु, मध्य, दीर्घ, समानपन कहे और लग्नके नवांशपतिके नियमसे वस्तुकी कोणसंख्या और लग्नके द्रेष्काणसे चोर, लग्नकी राशिसे चोरके देशकी दिशा और लग्नेशसे चोरकी अवस्था, जाति तथा गुण कहे ।। ३८ ।।

मेषस्य पूर्वत्रिलवेऽरुणाक्षो ना रौद्रशस्त्री द्वितये वधूश्च ।।
कुम्भोदरी दीर्घमुखी च रक्तवस्त्रा तृतीये कपिलश्च दण्डी ।। ३९ ।।

मेषके प्रथम द्रेष्काणमें भयानक शस्त्रधारी लाल नेत्रोंवाला पुरुष है। दूसरे द्रेष्काणमें घडे समान पेटवाली, दीर्घमुखी, लाल वस्त्रोंवाली स्त्री है। तीसरे द्रेष्काणमें कपिलवर्ण, दण्डधारी ।। ३९ ।।

रक्तांबरो नाऽथ वृषस्य पूर्वे वधूर्द्वितीये पशुवन्नरोऽन्त्ये ।।
बृहत्तनुर्ना मिथुनस्य पूर्वे रजस्वला भूषणकार्यदक्षा ।। ४० ।।

लाल वस्त्रोंवाला पुरुष है। वृषके प्रथम द्रेष्काणमें स्त्री, २ में पशुसमान नर, ३ में वडे शरीरवाला पुरुष है। मिथुनके १ में रजस्वला, भूषण और कार्यके वनानेमें चतुर ।। ४० ।।

अनुप्रजालज्जितरूपिणी च द्वितीय उद्यानगतो धनुष्मान् ।।
नरस्तृतीये सुमतिः सुरत्नी धन्वी नरो कर्कटकस्य पूर्वे ।। ४१ ।।

पीछे लगी हुई संतानवाली, लज्जावती, रूपावली स्त्री है, २ में बगीचेमें रहनेवाला धनुर्धारी पुरुष है, ३ में सुन्दर बुद्धिवाला पण्डित, अच्छे रत्नोंवाला धनुर्धारी पुरुष हैं। कर्कके १ में ।। ४१ ।।

मातंगकायः पुरुषश्च कोलाननो द्वितीये रुदती हि नारी ।।
सुकर्कशा वै त्रितयेप्लवस्थःसर्पावृतो नाचि पिटास्यभूषी ।। ४२ ।।

हाथीके तुल्य शरीरवाला, सूकरसमान मुखवाला पुरुष है, २ में रोती हुई कर्कशा स्त्री है, ३ में नौकामें बैठा हुआ, सर्पोंसे घिरा हुआ, आभूषण पहिने हुए चिपटे मुखवाला पुरुष है ।। ४२ ।।

सिंहस्य पूर्वे हरिगृद्ध्रपूर्वग्राही द्विके धन्विनताग्रनासः ।।
तृतीयके त्वक्षमुखश्च दण्डीकूर्ची च वक्रांगरुहः कुमार्याः ।। ४३ ।।

सिंहके १ में सिंह, वानर, गीध आदिका पकडनेवाला पुरुष है, २ में धनुर्धारी और जिसकी नासिकाका अग्रभाग नीचेको नवा हुआ है ऐसा पुरुष है, ३ में रीछसमान मुखवाला, दंडधारी, ऊंची कूर्चवाला*, घुंघराले केशोंवाला पुरुष है । कन्याके ।। ४३ ।।

पुरान्त्ययोः स्त्रीविवरेसरोमा श्यामोधनुष्मान्धृतलेखको ना ।।
तुलस्य पूर्वे नव आपणस्थस्तुलाभृदन्तः क्षुधितस्तृषार्त्तः ।। ४४ ।।

१ और ३ में स्त्री, २ में रोमोंवाला, धनुर्धारी, लिखनेवाला पुरुष है । तुलाके १ में नवीन अवस्थावाला, बाजारमें रहनेवाला, तराजू धारण करनेवाला है, २ भूख और प्याससे पीडित पुरुष है ।। ४४ ।।

तृतीयके किन्नरवच्च रौद्रो वनेचरो नायुधभृत्सुरन्तः ।।
अलो पुरा भूषणवस्त्रहीना मनोरमा सर्पनिबद्धपादा ।। ४५ ।।

३ में किन्नरके समान शरीरवाला, भयानक, वनमें विचरनेवाला, आयुध धारण करनेवाला, सुन्दर रत्न पहिनेवाला पुरुष है । वृश्चिकके १ में भूषण और वस्त्रोंसे हीन पावोंमें सर्प लपेटे हुए सुन्दर स्त्री है ।। ४५ ।।

द्वितीयके कच्छपकुम्भकाया सर्पावृता स्त्री त्रितये ह्रदार्थी ।।
श्वकोलपादश्चिपटाननो ना हयस्य पूर्वे च धनुर्धरो ना ।। ४६ ।।

२ में कछुएके कुम्भसमान शरीरवाली, सर्पोंसे घिरी हुई स्त्री है, ३ में जलके कुंडका चाहनेवाला, कुत्ता शूकरके समान पैरवाला, चिपटे मुखवाला पुरुष है । धनुके १ में धनुषधारी पुरुष है ।। ४६ ।।

द्वितीयके रत्नधरा मनोज्ञा हेमाभवर्णा त्रितये च कूर्ची ।।
दण्डी च पट्टांबर चर्मधारी मृगस्य पूर्वे मकरेभदृष्टः ।। ४७ ।।

२ में रत्न पहिने हुए सुवर्णके रंगके समानवर्ण वाली सुन्दर स्त्री है, ३ में (बडे) मूछोंवाला, दण्ड लिये हुए, रेशमी वस्त्र और चर्मको धारण किये हुए पुरुष है । मकरके १ में घडियालके समान दीखता हुआ ।। ४७ ।।

रोमान्वितो रौद्रमुखो द्वितीये श्यामा सुरूपारुणवस्त्रभृत्स्त्री ।।
तृतीयके कंबलतूणचापी दीर्घाननो ना कलशस्य पूर्वे ।। ४८ ।।

रोमोंसे युक्त, भयानक मुखवाला पुरुष है, २ में श्याम शरीरवाली, सुरूपा, लाल वस्त्र पहिने हुए स्त्री है, ३ में कम्बल, तरकस, धनुष धारण किये हुए, दीर्घ मुखवाला पुरुष है । कुम्भके १ में ।। ४८ ।।

---

* कूर्च–भौहोंके मध्यभाग वा मूछोंको कहते हैं ।

गृद्ध्रानन: कंबलभृद्द्वितीये स्त्री रक्तवस्त्रा त्रितयेऽतिकृष्ण: ।।
सरोमकर्णस्तु झषस्य पूर्वे नौस्थो नरो मौक्तिकशंखरत्नी ।।
मध्येऽथ गौरी रमणी तृतीये नग्नोऽहिभृच्चेति दृकाणरूपम् ।। ४९ ।।

गीधसमान मुख, कम्बल, धारण किये पुरुष है, २ में लाल वस्त्रोंवाली स्त्री है, ३ में अत्यन्त काला, कानोंपर रोमोंवाला पुरुष है, मीनके १ में नौकामें बैठा, मोती शंख, रत्न हाथमें लिये हुए पुरुष है, २ में गोरांगी स्त्री है, ३ में नंगा, सर्प धारण, किये पुरुष है। ये द्रेष्काणोंके रूप कहे हैं ।। ४९ ।।

अजेऽजभूमौ गवि गोकुलादौ युग्मे श्मशाने इणगीतभूम्यो: ।।
कर्केऽम्बुपार्श्वे च हरौ वने च स्त्रियां प्लवे तौलिनि पण्यदेशे ।। ५० ।।

मेषमें बकरेके रहनेकी जगह, वृषमें गौओंके रहनेकी भूमि, मिथुनमें श्मशान, मृगोंकी और गानेकी भूमि, कर्कमें जलके समीप, सिंहमें वन, कन्यामें नौका, तुलामें बाजार ।। ५० ।।

अलौ बिलान्तश्च हयेऽश्वगेहे मृगेऽम्बुभूधीवरपूर्वदेशे ।।
घटे कुलालादिगृहे घटाम्बुपार्श्वे च मीनेऽम्बुजलाशयादौ ।। ५१ ।।

वृश्चिकमें बिलके भीतर, धनुमें घुडशाल, मकरमें जलसमीप पृथ्वीमें अथवा धीवरादिका घर, कुम्भमें कुम्हार आदिका घर अथवा घडे और जलके समीप, मीनमें जल वा जलाशयादिकमें ।। ५१ ।।

यद्वा स्त्रियां क्षेत्रभूमौ नृभे नानागृहे भुवि ।।
चतुष्पदेऽश्वशालादौ जलर्क्षेऽम्भ: स्थले भवेत् ।। ५२ ।।

अथवा स्त्रीसंज्ञक राशियोंमें खेत आदिकी भूमि और पुरुषसंज्ञक राशियोंमें अनेक प्रकारके घर और भूमि, चतुष्पादसंज्ञक राशियोंमें अश्वशालादि, जलचर राशियोंमें जल, स्थल वषे चौरादिका स्थान कहे ।। ५२ ।।

रवौ सुखे स्वशय्यायां चंद्रेऽम्भसि च भूसुते ।।
गोषुस्तयो: पदे सौम्ये चित्रशाल्यां गुरौ वने ।। ५३ ।।

यदि सूर्य चौथे घरमें हो तो अपनी शय्यापर, चन्द्रमा हो तो जलमें मंगल हो तो गौ और कारीगरीके मकानमें ,बुध हो तो चित्रशालामें, बृहस्पति हो तो वनमें ।। ५३ ।।

देवालये वा शुक्रे स्त्रीशय्यायां रविनंदने ।।
प्रान्ते तमोमये स्थाने गेहे ज्ञाते वदेदिति ।। ५४ ।।

वा देवालयमें, शुक्र हो तो स्त्रीकी सेजपर, शनि हो तो अन्धकारमय घरके कोनेमें, यह फल घरके जान लेनेपर कहना चाहिये ।। ५४ ।।

प्रथमांशे विधौ मेषे घटितं स्वर्णरूप्यवत् ।।
तत्रेज्यशुक्रदृष्टिश्चेद्रत्नमापणगं वदेत् ।। ५५ ।।

यदि मेषका चन्द्रमा मेषके प्रथम नवांशमें हो तो सोने चांदीकी बनी हुई वस्तु है और जो उस चन्द्रमापर शुक्र बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो बाजारका रत्न है ऐसा कहे ।। ५५

वर्गोत्तमे वृषे चंद्रेऽलंकारं भौमवीक्षिते ।।
अयोऽतिचारवद्दृष्टे जीर्णं मिथुनगे विधौ ।। ५६ ।।

वृषका चन्द्रमा वर्गोत्तम नवांशमें हो तो अलंकार मंगल देखता हो तो लोहा और यदि अतिचारी ग्रहसे दृष्ट हो तो जीर्ण वस्तु है। यदि मिथुनका चन्द्रमा ।। ५६ ।।

वर्गोत्तमेऽम्बुजं वस्तु कर्के वर्गोत्तमे विधौ ।।
सुवर्णमेवं सिंहेन्दौ रौप्यं स्वर्णं रवीक्षिते ।।५७।।

वर्गोत्तम नवांशमें हो तो जलसे पैदा हुई वस्तु, कर्कका चन्द्रमा वर्गोत्तम नवांशमें हो तो सुवर्ण और सिंहका चंद्रमा वर्गोत्तम नवांशमें हो तो चांदी, सूर्य देखता हो तो सुवर्ण ।। ५७ ।।

कन्येन्दौ कांस्यलोहादि पाषाणं बुधवीक्षिते ।।
केवलस्य भृगोर्दृष्टचा वस्त्रं चंद्रे तुलास्थिते ।।५८।।

कन्याके चंद्रमा हो तो वस्त्र कांस्य लोहादि, बुध देखता हो तो पत्थर, केवल शुक्र देखता हो तो वस्त्र और तुलाके चंद्रमा हो तो ।। ५८ ।।

तौल्यं वस्तु भृगोर्दृष्टचा वदेद्वा गन्धवाससी ।।
वृश्चिके कुजदृष्टचा हि स्वर्णं रौप्यं धनुर्धरे ।।५९।।
जीवेक्षिते भवेद्रत्नं मृगेन्दौ स्वल्पभास्करम् ।।
जीवेक्षिते सुवर्णाज्यं कुंभे मुद्रा रवीक्षिते ।।६०।।

तोलनेके योग्य वस्तु, शुक्र देखता हो तो गंध और वस्त्र,| वृश्चिकके चंद्रमा हो और मंगल देखता हो तो सोना, चांदी है ऐसा कहे। धनका चन्द्रमा बृहस्पतिसे दृष्ट हो तो रत्न, मकरके हो तो थोडा चमकदार रत्न और बृहस्पति देखता हो तो सुवर्णादिक कुंभका चंद्रमा सूर्यसे दृष्ट हो तो मुद्रा ।। ५९ ।। ९० ।।

मीने काचादिवज्जीववीक्षिते मौक्तिकं हृतम् ।।
लग्ने सूर्येक्षिते घस्रे चेन्दुदृष्टे हृतं निशि ।।
द्वादशेन्दौ हृतं भुक्तं निर्बले शेषमल्पकम् ।।६१।।

मीनके हो तो काचादिवाली वस्तु, बृहस्पति देखता हो तो मोती चोरी गया है ऐसा कहे। यदि लग्न सूर्यसे दृष्ट हो तो दिनमें, चंद्रमासे दृष्ट हो तो रात्रिमें चोरी हुई कहे। बारहवां चंद्रमा हो तो चोरी गई वस्तु खर्चमें आगई और जो निर्बल चन्द्रमा हो तो थोडीसी बाकी रही कहे ।। ६१ ।।

अथ नामबन्धः

द्व्यक्षरं ननुगते चरभांशे त्र्यक्षरं स्थिरलवेऽस्ति च नाम ।।
नाम युग्ममुभयांगलवे पंचत्रिवर्णमु दलक्रमतो वा ।।१।।

यदि लग्नमें चर राशिका नवांश हो तो नामके दो अक्षर और स्थिर राशिका नवांश हो तो तीन अक्षर, द्विस्वभाव राशिका नवांश हो तो नामके युग्म अक्षर अथवा दलके क्रमसे नामके पाच और तीन वर्ण कहे अर्थात् लग्नका पूर्वदल हो तो पांच और परदल हो तो तीन वर्ण जानने ।। १ ।।

द्विस्वभावलवे शुभदृष्टे स्याद्दृकाणगतिरेव यदेष्टा ।।
तां ब्रवीमि विशदां बुधतुष्टयै सज्जनाः शृणुत नामविधाने ।।२।।

यदि द्विस्वभाव राशिका नवांश शुभ ग्रहसे दृष्ट हो और द्रेष्काणकी गति भी इष्ट हो तो नामविधानमें उस द्रेष्काणकी चालको पंडितोंकी प्रसन्नताके लिये स्पष्ट कहता हूं, हे सज्जन पुरुषो ! तुम सुनो ।।२ ।।

ओजर्क्षेतनुगे त्रिपंचकनगा वर्णा दृकाणक्रमात्
युग्मे व्द्यब्धिरसाश्च तेऽपि बलिसद्दृष्टा व्रजेयुश्चयम् ।।
तत्रोजेः विषमाः समाश्च समभे यद्वा स्ववर्गान्विते,
लग्ने स्वेशदृशैकवर्ण इति नाम्नो मात्रिकान्त्यो भवेत् ।।३।।

यदि विषम लग्न हो तो द्रेष्काणके क्रमसे तीन, पांच, सात वर्ण और सम लग्न हो तो द्रेष्काणक्रमसे २।४।६ वर्ण नाममें जानने चाहिये । यदि उक्त द्रेष्काण बली शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो तो उक्त वर्ण बहुलताको प्राप्त होता है, किन्तु विषम राशि हो तो वषम और सम राशि हो तो सम वर्ण बहुत होते हैं । अथवा अपने वर्गसे-युक्त लग्नपर धनेशकी दृप्टि होनेसे मात्रा है अन्तमें जिसके ऐसा नामका एक अक्षर है ।। ३ ।।

अवर्गेशो भानुः कुजभृगुबुधेज्यार्कतनयाः, कचादीनामी-
शायरलवमुखक्षान्तमुपतिः ।। विधुर्लग्नाम्बुस्त्रीदशनव-
लवाद्यक्षरयुते।, क्रमाद्वर्णा नाम्नोऽक्षरबहुलतायां पुनरिति ।।४।।

अवर्गका ईश सूर्य और कवर्ग चवर्गादिका स्वामी मंगल, शुक्र, बुध, बृहस्पति तथा शनैश्चर क्रमसे हैं और यरलवसे लेकर क्षकारपर्यंत अर्थात् यरलवशषसह इनका पति चंद्रमा है । लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम इन घरोंके नवांशोंके आद्याक्षर क्रमसे जोडनेसे नामके वर्ण होते हैं–और जो नामके बहुत अक्षर हों तो फिर भी यही नवांशोंके वर्ण होते हैं ।। ४ ।।

नवांशवर्णः

एतद्वर्णोपपत्तिः प्रस्तारतो वा रज्जुवेधतो द्रष्टव्या
नवांशाक्षराग्रेऽङ्का वर्गाक्षरसंख्यासूचकाः ।।

इन वर्णोंके उपपत्ति प्रस्तारसे वा रज्जुवेधसे देखनी चाहिये और निम्न लिखित चक्रमें नवांशाक्षरोंके आगे जो अंक हैं सो वर्गाक्षरोंकी संख्याके सूचक हैं ।।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशिनाम
क१	प१	झ४	ल३	ख२	फ२	ञ५	ब२	ग३	ब३	च१	थ१	प्रथमनवांशाक्षराः
च१	फ२	घ४	इ३	छ२	ब३	ङ५	उ५	ज३	भ४	क१	ऐ८	द्वितीयनवांशाक्षराः
ट१	थ२	द३	ट१	ठ२	द३	ध४	ठ२	ड३	घ४	न५	ड३	तृतीयनवांशाक्षराः
थ१	ग३	ब३	च१	ब३	घ४	भ४	छ२	स३	ङ५	म५	ज३	चतुर्थनवांशाक्षराः
अ१	ज३	भ४	क१	ई४	झ४	म५	ख२	ऊ६	ञ५	प१	ग३	पंचमनवांशाक्षराः
ठ२	ड३	ध४	न५	ड३	ढ४	न५	त१	ढ४	ण५	त१	थ२	षष्ठनवांशाक्षराः
छ२	र२	ङ५	म५	ज३	श१	क१	प१	झ४	ह४	ख२	फ२	सप्तमनवांशाक्षराः
ख२	।२	ञ५	प५	ग३	उ५	च१	फ२	घ४	ए७	छ२	ब३	अष्टमनवांशाक्षराः
त२	ढ४	ण५	त१	थ२	ण५	ट१	थ२	द३	ट१	ठ२	द३	नवमनवांशाक्षराः

नवांशवर्णाः

नामानि चाग्न्यम्बुकुमारविष्णुशक्रेन्द्रपत्नी चतुराननानाम् ।।
तुल्यानि भानुक्रमतो विचिन्त्य द्वित्र्यादिवर्णैर्घटयेत्सुबुद्ध्या ।।५।।

सूर्यके क्रमसे अग्नि, जल, कुमार, विष्णु, इन्द्र, इन्द्राणी, ब्रह्मा इनके तुल्य नाम विचार कर दो तीन आदि वर्णोंकरके सद्बुद्धिसे नाम घटना करे ।। ५ ।।

केंद्रांशराशौ हि खलस्तदंशवर्णं हरेत्तत्र बली शुभश्चेत् ।।
दृष्टः शुभैः स्वांशसमानवर्णं ददाति चेदक्षरदः स्वभोच्चे: ।।
स्वभाक्षरं द्विः प्रकरोति चोज ओजाक्षरं तत्र समे समं च ।।६।।

यदि केन्द्रकी नवांश राशिमें पाप ग्रह हो तो उस नवांशके वर्णको हर लेता है और जो केन्द्रांशराशिमें शुभ ग्रह शुभ ग्रहसे दृष्ट हो तो अपने नवांशके तुल्य वर्णको देता है। यदि अक्षरका देनेवाला ग्रह अपनी उच्च राशिका हो तो अपनी राशिके अक्षरोंको द्वित्व करता है, विषम राशि हो तो विषम और सम राशि हो तो समाक्षरको द्वित्व करता है ।। ६ ।।

पश्येत्स्थितः केंद्रलवात्मजेषु स्वोच्चे स्वभे वाक्षरदो द्विरुक्तः ।।
संयोगमादौ बहुलेषु विन्द्यात्कूटेषु संयोगपरं वदन्ति ।।७।।

यदि अक्षरदाता ग्रह अपनी उच्च राशि वा स्वराशिका होकर केंद्रके पांच नवांशोंको देखता हो वा उनके मध्यमें स्थित हो तो अक्षर देता है। बहुतसे अक्षर हों तो आदिमें संयोग और थोडे हों तो अन्तमें संयोगको जाने ।। ७ ।।

अथ मात्रानिश्चयः

केंद्रत्रिकोणेषु शुभो बलीयान् शीर्षोदये शीर्षगतास्ति मात्रा ।।
पृष्ठोदये चेत्तलवर्तिनी स्यात्पार्श्वानुगा चोभयराशिभागे ।।८।।

बलवान् शुभ ग्रह केंद्र वा त्रिकोणमें पृष्ठोदय राशिका हो तो अक्षरके शिरपर मात्रा है और पृष्ठोदय राशिका हो तो नीचे मात्रा है और उभयोदय राशिका हो तो अक्षरके पार्श्वमें मात्रा है ऐसा जाने ।। ८ ।।

शीर्षोदयमात्रा ए ओ अं पृष्ठोदयमात्राः उ ऊ ।।
उभयोदयमात्रा अ इ इमा लघवः एतत्सवर्णा दीर्घाः ।।

शीर्षोदयमात्रा ए ओ अं, पृष्ठोदयमात्रा उ ऊ और उभयोदयमात्रा अ इ हैं, और ये लघु हैं, इनकी सवर्ण मात्रा दीर्घ जाननी चाहिये ।।

ओजे दृकाणे विषमाः समे च समाः स्युरिष्टो यदि दीर्घराशौ ।।
दीर्घाऽन्यथान्या च खलास्त्रिकोणे मात्रासरा भांशपतौ बलोने ।।९।।
अंशे हि मात्रानिधनं तु नो चेद्दृष्टः स्वभोच्चादि तदंशपेन ।।
मात्राक्षरं नश्यति हीनवीर्ये क्षेत्रे च स्वस्यांशपतौ च सत्यम् ।।१०।।

विषम द्रेष्काण हो तो विषम, सम द्रेष्काण हो तो सम मात्रा होती हैं। यदि इष्ट दीर्घ राशिका हो तो दीर्घ, हस्वका हो तो हस्व मात्रा हैं। यदि पाप ग्रह त्रिकोणमें हों तो मात्राका हरण करते हैं और जो राशि नवांशेश निर्बली होकर नवांशमें हो तो मात्राका नाशक होता है। यदि अपने उच्चादिपति वा नवांशपति ग्रहसे दृष्ट हो तो मात्राका नाशक नहीं होता, अन्यथा नाश कहा है। यदि नवांशपति हीनवीर्य होकर अपने क्षेत्रमें हो ।। ९ ।। १० ।।

अथांबुचारी सबलो दशस्थोऽनुस्वारदः सप्तमगो विसर्गम् ।।
ददाति केचिद्बलिकेंद्रराशेर्मात्रा वदन्त्येव तदीशभाद्वा ।।
मृगादयः षड् लघवः परे च दीर्घाः प्रयोज्याः किल नामबन्धौ ।।११।।

और बली होकर चौथे घरमें हो तो ए, दशवें हो तो अनुस्वार, सातवें हो तो विसर्ग देता है और कोई ज्योतिर्वित्पण्डित बली केंद्रकी राशिसे अथवा उसके स्वामी ग्रहसे मात्राका वर्णन करते हैं। मकरसे लेकर छः राशि हों तो लघु, शेषसे दीर्घ मात्रा नामबंधमें जोडनी चाहिये ।। ११ ।।

चौरमोक्षप्रश्ने विचार:

स्थिरर्क्षेऽल्पभुक्तौ शनौ गुप्तिगः स्याच्चिरं तस्करोऽथाष्टमे-
भौमशन्योः ।। गृहे भौमयुक्तेक्षिते तस्य मृत्युः कुजार्क्योत्थ-
साले स सन्ताड्यतेऽलम् ।।१।।

यदि स्थिर राशिगत शनैश्चरके थोडे अंश गये हों तो चोर बहुत काल रखवालीमें अर्थात् हवालातमें रहता है। यदि आठवें घरमें मंगल शनैश्चरकी राशि मंगलसे युक्त वा दृष्ट हो तो उस चोरकी मृत्यु होती है और मंगल शनैश्चरका इत्थसाल हो तो वह चोर कठिन ताडना पाता है ।। १ ।।

मृतीशस्य दृष्टचा स सन्ताडचमानोमृतिं याति गुप्त्यास्पदे वस्तु
चौरः । स्वभेत्थसाले स्वपतीत्थसाले मदे दशेशेन शुभैश्च दृष्टे ।।
दशेशैसूर्येण निरीक्षते वा राजा स्वयं मुंचति तस्करं वै ।।२।।

जो अष्टमेशकी दृष्टि हो तो ताडना करनेसे हवालातमें मर जाता है । सातवें घरमें अपने राशि वा अपने स्वामीका इत्थसाल योग दशमेश और शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो अथवा दशमेश सूर्यसे दृष्ट हो तो राजा स्वयं ही चोरको छोड देता है ।। २ ।।

विस्मृतिप्रश्ने विचारः

विस्मृतौ यत् तृतीयं भं वस्तुस्थानं सुखस्थितः ।।
ग्राहकश्च तयोर्दाता शीघ्रं प्राग्वदतः फलम् ।।१।।

विस्मृति हो जानेमें जो तीसरा है सो वस्तुस्थान है, चौथे घरमें स्थित ग्रह उसका लेनेवाला है, वस्तुस्थान और ग्राहक दोनोंका दाता ग्रह जो होवे उसे शीघ्र ही पहिलेके समान जानकर फल कहे ।। १ ।।

वस्तुस्थानांशतुल्यं स्याल्लाभस्थानं तथावता ।।
विस्मृतेस्तावता लाभो दिनात्मसमयेन वै ।।२।।

वस्तुस्थानके नवांशके तुल्य मिलनेका स्थान और विस्मृत वस्तुका लाभ भी नवांशके तुल्य दिनोंमें कहे ।। २ ।।

अमुकं कार्यं कर्तुं यामि न वेति प्रश्ने विचारः

केंद्रे शुभैर्लग्नपचंद्रसौम्येत्थसालतः सद्गमनं न चान्यथा ।।१।।

केंद्रमें शुभ ग्रहोंके साथ लग्नेश, चंद्रमा और शुभ ग्रहका इत्थसाल होनेसे जाना अच्छा है; अन्यथा नहीं ।। १ ।।

नष्टधनप्रश्ने विचारः

तनुपतौ स्मरगे स्मरपे तनौ गतधनं समुपैति च सप्तमे ।।
मदनलग्नपयोरपि मुत्सिले गतधनाप्तिरथो तनुसप्तपौ ।।१।।

लग्नेश सातवें और सप्तमेश लग्नेशमें हो तो गत धन मिल जाता है और सातवें घरमें सप्तमेश तथा लग्नेशका इत्थसाल हो तो गत धनकी प्राप्ती होती है । यदि लग्नेश और सप्तमेश ।। १ ।।

वपुषि मुत्थसिलं कुरुतो यदा धनहरः प्रददाति धनं स्वयम् ।।
यदि तनौ तरणिर्मदने विधुर्न गतलब्धिरथांगदशेशयोः ।।२।।

लग्नमें इत्थसाल करते हों तो धनका हर लेनेवाला स्वयं ही धन दे देता है । यदि लग्नमें सूर्य और सातवें चंद्रमा हो तो गत धनकी प्राप्ति नहीं होती । लग्नेश दशमेशका ।। २ ।।

मुथसिले धनहृद्विपलायतेऽथ मदपे यदि वा हिमदीधितौ ।।
तरणिलुप्तकरे न लभेद्धनं यदि चतुष्टयगो रमणीपतिः ।।३।।

इत्थसाल हो तो धनका हरनेवाला चोर भाग जाता है। यदि सप्तमेश अथवा चंद्रमा सूर्यके साथमें अंतरगत हो तो धन नहीं मिलता। यदि सप्तमेश केंद्रमें हो तो ॥ ३ ॥

तद्‌ हरःपुर एव यदास्मरेट्क्ततपस्त्रितयेश्वरमुत्सिलः ॥
क्व च गतो यदि वांगमदेशयोर्नच परस्परदृग्यदि लग्नपः ॥४॥

धनका हरनेवाला पुरमें ही है। यदि सप्तमेश अस्तंगत तृतीयेश्वरके साथ इत्थ-साल करता हो तो कहीं चला गया है अथवा लग्नेश सप्तमेशकी परस्पर दृष्टि न हो और लग्नेश ॥ ४ ॥

गतबलो धनहृद्भय विह्वलो नृपकुले प्रददाति धनं तदा ॥
यदि वपुर्मदनेश्वरमुत्सिलं नृपकुलादुपलभ्यमितं धनम् ॥५॥

बलहीन हो तो धनका हरनेवाला भयसे व्याकुल होकर राजकुलमें धन दे देता है। यदि सप्तमेषका इत्थसाल हो तो गया हुआ धन राजकुलसे मिलता है ॥ ५ ॥

त्रिखपसप्तममुत्थसिले धनं परपदे गमनादुपलभ्यते ॥
यदि विधुः शुभमुत्थसिली तनौ दशमभेऽप्यथवा गतलाभदः ॥६॥

तृतीयेश दशमेशका सातवें घरमें इत्थसाल हो तो पराये स्थानमें जानेसे धन मिलता है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल करनेवाला होकर लग्न वा दशवें घरमें हो तो गत धनका लाभ करता है ॥ ६ ॥

चेद्वाङ्गराण्मुत्थसिलं तदाऽल्पावाप्तिस्तथार्कादुदिते च चंद्रे ॥
सद्योगदृग्भ्यां बुधचंद्रयोश्च मिथो गताप्तिः परथा नहि स्यात् ॥७॥

और जो लग्नेशके साथ चंद्रमाका इत्थसाल हो तो अल्प धनकी प्राप्ति होती है और सूर्यसे उदित चंद्रमापर शुभ ग्रहका योग और दृष्टि होनेसे और बुध चंद्रमाकी परस्पर दृष्टि होनेसे गत धनकी प्राप्ति होती है, अन्यथा नहीं होती ॥ ७ ॥

सुस्नेहदृष्टचा शुभभानुदृष्टे लग्ने हिमांशौ हि गतार्थलाभः ॥
सूर्येत्थसाले हिमगौ तनुस्थे स्वस्थेऽथवा तुर्यदृशार्कदृष्टे ॥८॥
चंद्रे न लाभस्तु भवेच्चिरेण स्वल्पार्थलाभो बहुकष्टतो वा ॥
सौम्यैर्बलाढ्यैस्त्रिवपुःखधर्मपुत्राप्तिकोशेषु गतैः खलैश्च ॥९॥

यदि लग्न और चंद्रमा शुभ ग्रह तथा सूर्यकी मित्रदृष्टिसे देखे गये हों तो गत धनका लाभ होता है। यदि लग्नस्थ वा दशमस्थ चन्द्रमा सूर्यके इत्थसालमें हो, अथवा चतुर्थ दृष्टिसे सूर्यसे देखा गया चन्द्रमा हो तो गत धनका लाभ नहीं होता और यदि मिले भी तो बहुत दिनोंमें थोडा धन बहुत कष्टसे मिले। बलवान् शुभ ग्रह ३। १।१०।९।५।११।२। इन घरोंमें हों और पापग्रह ॥ ८ ॥ ९ ॥

केन्द्रत्रिकोणाष्टमलाभवर्जं नष्टस्य लाभो नियतं प्रदिष्टः ॥
केंद्रे त्रिकोणेषु शुभः खलग्नमदेषु पापैर्हृतनष्टलाभः ॥१०॥

अर्द्धस्ततः स्याद्यदि वित्तकेंद्रत्रिकोणपापाः खलवीक्षिताश्च ॥
असौम्यदृष्टा गतवित्तनाशं कुर्वन्तिचान्यस्वविनाशनंच ॥११॥

१ । ४ । ७ । १० । ९ । ५ । ८ । ११ । इन घरोंको छोडकर अन्य घरोंमें हों तो नष्ट धनका लाभ निश्चय ही होता है केंद्र तथा त्रिकोणमें शुभ ग्रह; दशम, लग्न और सप्तममें पाप ग्रह हों तो हृत और नष्ट धनका आधा लाभ होता है। यदि २ । ४ । ७ । १० । ५ ९ इन घरोंमे पाप ग्रहोंसे दृष्ट हों और शुभ ग्रहोंसे अदृष्ट हों तो गत धन तथा अन्य धनका विनाश करते हैं ॥ १० ॥ ११ ॥

शीर्षोदये सौम्ययुतेऽथ पूर्णे चंद्रे तनौ सौम्ययुतेक्षिते च ॥
नष्टार्थलाभो द्रुतमेव वाच्यो यद्वा शुभे लाभगृहे बलाढये ॥१२॥

शुभ ग्रहसे युक्त पूर्ण चंद्रमा शीर्षोदय राशिका हो और लग्न शुभ ग्रहोंसे युक्त या दृष्ट हो तो नष्ट द्रव्यका लाभ शीघ्र ही कहना चाहिये, अथवा ग्यारहवें घरमें शुभग्रह बलवान् हो तो भी नष्ट द्रव्यका लाभ शीघ्र होता है ॥ १२ ॥

पतितधनप्रश्ने विचारः

धनाधिपश्चेत्तनुपेत्थसाली वेन्द्वित्थलाली पतितार्थलाभः ॥
यद्वैकगा लग्नधनेशचंद्रा यद्वा तनुद्रव्यगतेत्थसाले ॥१॥

यदि धनेश लग्नेश वा चन्द्रमाके साथ इत्थसाल करता हो तो पतित धनका लाभ होता है अथवा लग्नेश, धनेश और चन्द्रमा एक घरमें हों; अथवा लग्न वा दूसरे घरमें इत्थसाल करते हों ॥ १ ॥

यद्वार्कचंद्रौ तनुमीक्षमाणौ गतार्थलाभो हितदृग्विशेषात् ॥
तुर्यादधःस्थे तरणौ विधौ वा न लभ्यते संपतितं च नष्टम् ॥२॥

अथवा सूर्य और चंद्रमा लग्नको देखते हों तो गत द्रव्यका लाभ होता है और जो मित्र दृष्टि हो तो विशेष करके गत धनका लाभ होता है । चौथे घरसे नीचेके स्थानोंमें सूर्य वा चंद्रमा हो तो पतित और नष्ट धन नहीं मिलता है ॥ २ ॥

धनभ्रान्तिप्रश्ने विचारः

तुर्येशे यदि वा चंद्रे तुर्यस्थे वाम्बुवीक्षके ॥
धनं तत्रैव वास्तेशे स्वे वा बन्धौ धनं बहु ॥१॥

चतुर्थेश वा चंद्रमा चौथे घरमें स्थित हो वा उसको देखते हों तो धन उसी स्थानमें है जहा रखा था अथवा सप्तमेश दूसरे वा चौथे घरमें हों तो बहुत धन है ॥ १ ॥

क्रूरेऽम्बुगे धनं तत्र स्थितमप्याप्यते नतु ॥
भौमे सप्ताष्टमे यद्वा तनौ राहौ रवौ मृतौ ॥२॥

यदि क्रूर ग्रह चौथे घरमें हों तो धन वहीं रखा है परन्तु मिलेगा नहीं । मंगल सातवें, आठवें, अथवा राहु लग्नमें, सूर्य आठवें हो तो ॥ २ ॥

न लभ्यते तदा वित्तं यदा सप्ताष्टदिक्स्वगौ ।।
चंद्रजीवौ तदावाप्तिर्लग्नेशो द्यूनगस्तनौ ।।
द्यूनेशश्च तदा भ्रान्तेर्धनलाभो भवेद्ध्रुवम् ।।३।।

धन नहीं मिलेगा और जो ७ । ८ । १० । २ इन घरोंमें चन्द्रमा और बृहस्पति हों तो धन मिलेगा । लग्नेश सातवें, सप्तमेश लग्नमें हों तो भूले हुए धनका लाभ निश्चय होगा ऐसा कहे ।। ३ ।।

नष्टभृत्यप्रश्ने विचारः

शुभेक्षितं लग्नमदेशमुत्सिलं गतस्य दासस्य तदाप्तिरीरिता ।।
वपुष्पतौ सप्तमगेऽङ्गवीक्षके विनष्टदासाप्तिरथास्तपे तनौ ।।१।।

लग्नेश और सप्तमेशका इत्थसाल शुभ ग्रहसे दृष्ट हो तो गया हुआ नौकर आ जाता है । सातवें घरमें स्थित लग्नेश लग्नको देखता हो तो विनष्ट नौकर मिल जाता है यदि सप्तमेश लग्नमें हो तो ।। १ ।।

स्वयं समायाति तनौ तु मुत्सिले स्मरांगपत्योरथवाङ्गपेन्दुतः ।।
जनः प्रनष्टः स्वयमेति भूपतेर्भयादथार्कांशुगते न सप्तपे ।।२।।

नौकर आप ही आ जाता है और लग्नमें सप्तमेश लग्नेशका इत्थसाल हो, अथवा लग्नेश चंद्रमाका इत्थसाल हो तो प्रनष्ट जन राजाके भयसे स्वयं ही आ जाता है और जो सप्तमेश सूर्यके साथ अस्त हो तो नहीं आता है ।। २ ।।

क्रूरेक्षितेऽङ्गस्मरपेत्थसाले नैवेति सूर्येण च वक्रिणा वा ।।
खलेन वा शीतगुमुत्थशीलं प्रलभ्यते नो स्थिरगैश्च सौम्यैः ।।३।।

यदि लग्नेश और सप्तमेशका इत्थसाल क्रूर ग्रहसे दृष्ट हो तो नहीं आता है । अथवा सूर्य वा वक्री वा पाप ग्रहके साथ चन्द्रमाका इत्थसाल हो और शुभ ग्रह स्थिर राशिके हों तो भी नौकर नहीं मिलता है ।। ३ ।।

विभागप्रश्ने विचारः

लग्नेन्दू चरभे न निर्वहति भागश्च स्थिरर्क्षे तयो-
र्नूनं निर्वहति द्विदेहभगतौ विश्वासतो वाप्तितः ।।
क्रूरे क्रूरनिरीक्षिते तनुगते श्रेष्ठो ह्यलीकांशद-
श्चैवं सप्तगते परः परविभागार्थो यदेन्द्वम्बुपौ ।।१।।

लग्न और चंद्रमा चर राशिके हों तो भाग (हिस्सा) निर्वाह नहीं करता और जो स्थिर राशिके हों तो निश्चय ही निर्वाह करता है और द्विस्वभाव राशिके हों तो विश्वाससे प्राप्ति होनेपर हिस्सा निर्वाह करनेवाला होता है । यदि लग्नमें क्रूर ग्रह क्रूर ग्रहसे दृष्ट हो तो सेठ कपटपूर्वक हिस्सा देता है अर्थात् सच्चा हिस्सा नहीं देता, इसी प्रकार सातवें घरमें क्रूर ग्रह क्रूर ग्रहसे दृष्ट हो तो अन्य पुरुष किसी दूसरेके हिस्सेका धन पाता है । यदि चन्द्रमा और चतुर्थेश ।। १ ।।

कृत्वा मुत्थसिलं शुभेन सततं निर्वाहदौ चेच्छुभः,
खस्थो भूरिधनाय पापखचरोऽल्पप्राप्तये चेच्छुभाः ।।
केंद्रायार्थगता बलेन सहिता लाभार्थदाः पापिनः,
केन्द्रायाष्टधनेषु चेद्व्यवहृतौ कुर्वन्ति हानिं पराम् ।।२।।

शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल करते हों तो निर्वाह करते हैं। कदाचित् शुभ ग्रह दशमस्थ हों तो बहुत धन और पाप ग्रह हों तो थोडा धन देता है। यदि शुभ ग्रह १।४।७।१०।११।२ इन घरोमें बलवान् हों तो लाभ देते हैं और पाप ग्रह १।४ ७।१०।८।२ इन घरोंमें हों तो व्यवहारमें परम हानि करते हैं ।। २ ।।

कुत्र गत इति प्रश्ने विचारः

तनुराशिवशाद्वाच्या नष्टदिग्वा तनुस्थितात् ।।३।।

लग्नकी राशिसे वा लग्नस्थ ग्रहसे नष्ट वस्तु वा नष्ट भृत्यादिकी दशा कहनी चाहिये ।। ३ ।।

क्रयविक्रयप्रश्ने विचारः

क्रेता लग्नपतिर्लाभपतिर्विक्रयकारकः ।
तनौ बलिनि संग्राह्य विक्रेतव्यं तथा भवेत् ।।१।।

लग्नेश खरीदनेवाला और एकादशेश बेचनेवाला कहा है; लग्न बलवान् हो तो खरीदना, बेचना अच्छा होता है ।। १ ।।

यदि लग्नसप्तमपमुत्थसिलं स्वयमेव साटिरथ मित्रदृशा ।।
यदि लग्नसप्तपतिनक्रयुतिः परतो यदांगमदपौ हि हितौ ।।२।।

यदि लग्नेश और सप्तमेशका इत्थसाल हो तो आप ही खरीद बेंच करना अच्छा होता है और जो मित्रदृष्टिसे दोनोंका इत्थसाल हो तथा लग्नेश, सप्तमेश मकरराशिगत हों तो अन्यपुरुष द्वारा खरीद बेंच शुभ होता है । यदि लग्नेश और सप्तमेश दोनों आपसमें मित्र हों तो ।। २ ।।

प्रियसाटिरेव यदि मित्रपतिस्तनुपश्च मित्रदृशितौ यदि तौ ।।
तद्रु विक्रयप्रियसुसाटितार्थदैवं सुखस्मरपती क्रयीष्टतः ।।३।।

मित्रके साथ खरीद बेंच शुभ होती है। यदि चतुर्थेश और लग्नेश मित्रदृष्टिसे युक्त हों तो बेचनेमें मित्रके साथ साझा धनदायक होता है इसी प्रकार चतुर्थेश सप्तमेश मित्रदृष्टिसे युक्त हों तो खरीदनेवाले मित्रसे साझा सुखदायक होता है ।। ३ ।।

नियतं हि साटिरथ लग्नपतौ मदने क्रयी नियतवस्तुयाचकः ।।
यदि सप्तपो वपुषि विक्रयी यदा तनुगःशुभःस्वमृतवाग्घि विक्रयी ।।४।।

यदि लग्नेश सातवें हो तो खरीदनेवाला नियत वस्तुको मांगता है और जो सप्त, मेश लग्नमें हो बेचनेवाला नियत वस्तुकी याचना करता है और जो लग्नमें शुभ ग्रह हो तो बेचनेवाला अमृतसमान मीठा बोलनेवाला है ।। ४ ।।

मदने शुभःस्वमृतवाक् क्रयी भवेद्यदि यत्र चन्द्रखगयोश्चमुत्सिलम् ।।
क्रयमाचरेत्खलु तदैव यदा मुत्सरिफं सदु तयोश्च विक्रयम् ।।५।।

यदि सातवें घरमें शुभ ग्रह हो तों खरीदनेवाला मीठी वाणीवाला है। यदि जब कभी चन्द्रमा और इत्थसाल हो तो उसी कालमें खरीद करे और जब उन दोनोंका इशराफ योग हो तो बेचे ।। ५ ।।

येनैवेन्दोः खेचरेणेशराफः स स्यात् खेटो भानुरश्मिप्रविष्टः ।।
दत्त्वाऽन्यस्मै वस्तु हित्वा पणं तद्विक्रेता वै याति दैवात्प्रणाशम् ।।६।।

जिस ग्रहके साथ चंद्रमाका इशराफ योग हो वह ग्रह सूर्यके साथ अस्तंगत हो तो अन्यके वास्ते वस्तु दे, बाजारको छोडकर उस वस्तुका बेचनेवाला दैवसे नाशको प्राप्त हो जाता है ।। ६ ।।

समर्घमहर्घप्रश्ने विचारः

यावद्धस्त्रं स्वोच्चमित्रर्क्षसंस्थः सौम्योऽङ्गे तावन्ममासाः समर्घम् ।।
पापैश्चैवं स्यान्महर्घो ह्यथेशे लग्ने यद्वा विग्रहेऽङ्गाधिपस्य ।।
वीर्यं पूर्णं चाऽन्यथा तत्स्थवीर्यं तस्माद्वीर्याच्चिन्तयेच्चिन्तनीयम् ।।१।।

स्वोच्च मित्रराशिस्थ शुभ ग्रह जितने दिन लग्नमें रहता है उतने महीनोंतक समर्घ रहता है और इस प्रकार पाप ग्रह होनेसे महर्घ रहता है। लग्नमें वा लग्नेशमें अथवा लग्नेशके घरमें पूर्ण वल हो अथवा उसका बल अन्यथा हो तो उसी बलसे विचारणीय वस्तुका विचार करे ।। १ ।।

पूर्णामेन्दुर्यत्र सद्दृष्टयुक्तस्तस्मिन्मासे नूनमुग्रं समर्घम् ।।
पापैरेवं युक्तदृष्टो महर्घम् मिश्रैर्मिश्रं स्यात्फलं तत्र मासे ।।२।।

जिस महीनेकी पूर्णमासी, अमावास्याका चंद्रमा शुभ ग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो उस महीनेमें निश्चय ही उग्र समर्घ होता है। और जो पाप ग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो महर्घ और मिश्र ग्रहोंसे युक्त, दृष्ट हो तो उस मासमें मिश्र फल होता है ।। २ ।।

अथ बलवति लग्ने स्वेशसन्दृष्टयुक्तेऽपि च स शुभचतुःकेन्द्रेषुसर्वम्
समर्घम् ।। तदनु विबललग्ने कैंद्रपापैर्महर्घं सकलमथ रिपुक्षेत्रे वपुष्युग्रदृष्टः ।।
खलखचर उ यावद्वासरं स्याद्वदेत्तद्दिनपरिमितिस्तावद्धि सर्वं महर्घम् ।।३।।

यदि बलवान् लग्न अपने स्वामीसे दृष्ट वा युक्त हो और चारों शुभ ग्रह हो तो सर्व वस्तुका समर्घ होता है, तदनन्तर लग्न निर्वल हो, केंद्रोंमें पाप ग्रह हो तो सब वस्तुओंका महर्घ होता है और पाप ग्रह पाप ग्रहसे दृष्ट छटे वा लग्नमें जितने दिनतक रहे उतने हो दिन सव वस्तुका महर्घ होता है ।। ३ ।।

वर्षप्रश्ने विचारः

नृयुग्मभानोः क्रमणे नृयुग्मकन्याश्वमीनेषु शुभैः सुवृष्टिः ।।
किंवात्र गोकर्कगतौ सितज्ञौ चन्द्रे झषे देवगुरौ स्त्रियां च ।।१।।

मिथुनके सूर्यकी संक्रान्तिमें मिथुन, कन्या, धनु तथा मीन राशियोंपर शुभ ग्रह हों हों तो अच्छी वर्षा होती है। अथवा इसी संक्रान्तिमें शुक्र और बुध वृष, कर्कके, चन्द्र मीनके, बृहस्पति कन्याके हों ॥ १ ॥

विशोमतो वापि भवेत्सुवृष्टिर्यदात्र भौमार्कजसैंहिकेयाः ॥
नृयुग्मकन्याझषचापसंस्थास्तदाल्पवृष्टिश्च भवेन्महर्घम् ॥२॥

अथवा विलोमसे हों अर्थात् कन्याके शुक्र बुध, चन्द्रमा मीनके बृहस्पति; कर्क या वृषके हों तो सुवृष्टि होती है। अथवा उसी संक्रान्तिमें मङ्गल, शनि और राहु मिथुन कन्या, मीन तथा धनुराशिपर हों तो अल्प वर्षा और महर्घ होता है ॥ २ ॥

यदात्र गोकर्कगतौ च भौममन्दौ द्विदेहे दितिजोऽल्पवृष्टिः ॥
अन्नं प्रियं वात्र सितेन्दुजातौ नृयुग्ममेषोपगतौ धनस्थौ ॥
शीतांशुजीवौ च खलास्तुलालिसिंहेषु वृष्टिश्च भवेत्समर्घम् ॥३॥

यदि मिथुनसंक्रातिमें वृष और कर्कके मंगल, शनैश्चर, द्विस्वभाव राशिपर राहु हो तो अल्प वर्षा और अन्न प्रिय हो और यदि शुक्र और बुध मिथुन, मेषके हों, चन्द्रमा और बृहस्पति दूसरे घरमें हों; पाप ग्रह तुला, वृश्चिक तथा सिंहके हों तो वृष्टि और समर्घ होता है ॥ ३ ॥

पूर्णे हिमांशौ शुभदृष्टयुक्ते केंद्रे जलर्क्षे द्रुतमेव वृष्टिः ॥४॥

पूर्ण चंद्रमा शुभ ग्रहसे दृष्ट वा युक्त होकर केंद्रमें जलराशिका हो तो शीघ्र ही वृष्टि होती है ॥ ४ ॥

तद्वद् भृगुश्चन्द्रमसस्त्रिकोणे तनोर्हि वा याति तदैव वर्षा ॥
सौम्या जलर्क्षे धनके च संस्थाः पक्षे सिते चोदयगेऽम्बुभेन्दो ॥५॥

इसी प्रकार चंद्रमासे वा लग्नसे त्रिकोणमें जब शुक्र जाता है उसी समय वर्षा होती है। शुभ ग्रह जलचरराशिपर दूसरे घरमें हों और शुक्ल पक्षमें लग्नगत जलचर-राशिका चंद्रमा हो तो ॥ ५ ॥

वृष्टिर्भवेद्वा रविशीतरश्मी स्मरे सुखे वापि मृतौ सितार्कौ ॥
तथा तनोर्द्वित्रिगतौ प्रवृष्टिर्यद्वोदयास्ते सितजीवयोश्च ॥६॥

वर्षा होती है। अथवा सूर्य और चंद्रमा सातवें चौथे वा आठवें हों और शुक्र शनि लग्नसे दूसरे, तीसरे घरमें हों तो बहुत वर्षा होती है। अथवा शुक्र और बृहस्पति का उदय अस्त हो ॥ ६ ॥

जलर्क्षगैः सर्वशुभैः प्रवृष्टिर्यदा चतुर्थे शुभगाः प्रवृष्टिः ॥
खलाश्च दुर्भिक्षभयं यदारसूर्येन्दवोऽङ्गे विजले बलाढ्याः ॥७॥

सब शुभ ग्रह जलचरराशिके हों तो अच्छी वर्षा होती है। यदि चौथे घरमें शुभ ग्रह हों तो बहुत वर्षा होती है। और पाप ग्रह हों तो दुर्भिक्षका भय होता है। यदि मंगल, सूर्य तथा चंद्रमा जलराशिवर्जित लग्नमें बलवान् हों तो ॥ ७ ॥

दुर्भिक्षपीडे तु शनेर्नवाम्बुकोशे सुदृष्टो विधुरम्बुदः स्यात् ।।
यदीन्द्रवाद्यादि परिस्पृशंस्तु जलेषु तिष्ठेत् सलिलोद्यतश्च ।।८।।

दुर्भिक्ष और पीडा होती है। यदि शनिसे नौवें ,चौथे तथा दूसरे घरमें चंद्रमा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो तो जलदायक होता है, यदि इंद्रके बाजेको छूता हुआ, जलमें खडा हुआ, जल लेनेको उद्यत होता हुआ ।। ८ ।।

जलस्य पृच्छा प्रवदेज्जलस्य प्रवर्षणं वा यदि शक्रचापम् ।।
पीताभ्रसंध्याश्च नवाश्च मेघाः स्निग्धाम्बुवृष्टिः परिघस्तथैव ।।९।।

पुरुष जलका प्रश्न करे तो जलकी वर्षा होगी ऐसा कहे। अथवा यदि इंद्रधनुष, पीले बादलोंवाली संध्या तथा नवीन मेघ हों तो जलकी अच्छी वर्षा होती है, इसी प्रकार परिघ ।। ९ ।।

प्राचीप्रतीच्युत्तररुद्रकाष्ठाविद्युद्द्रुतं वर्षणदा नितान्तम् ।।
सौदामिनी वायुभवा च वृष्टयै शेषोत्थविद्युद्यदि वृष्टिहर्त्री ।।१०।।

और पूर्व, पश्चिम, उत्तर और ईशान दिशामें बिजली होवे तो शीघ्र ही नितान्त वर्षा होती है। इसीप्रकार वायव्यदिशाकी बिजली भी वर्षाके लिये कही है और शेष दिशाओंमें बिजली चमके तो वर्षाको हर लेती है ।। १० ।।

स्निग्धा घना जलधरा दिवि पौषशुक्लाद्यस्यां तिथौ निशि दिने प्रभवन्ति यावत् ।। तस्यां तिथौ भुवि भवेन्नभसः सिताद्वै वृष्टिः पयोदसमयेऽम्बुब-वृन्दतुल्या ।।११।।

पौषके शुक्लपक्षसे लेकर जिस तिथिकी रात्रिमें वा दिनमें चिकने और घने बादल आकाशमें हों तो श्रावणके शुक्ल पक्षसे लेकर उसी तिथिमें वर्षा ऋतुमें पौषके बाद-लोंसमान वर्षा होती है ।। ११ ।।

कार्तिकैकादशी मेघवीक्षाषाढे हि वृष्टिदा ।।
मार्गाष्टम्यां यदा विद्युद्वीक्षा श्रावणवृष्टिदा ।।१२।।

यदि कार्तिककी एकादशीको बादल दीखे तो आषाढमें वर्षा करते हैं और मार्ग-शीर्षकी अष्टमीको जो बिजली हो तो श्रावणमें वर्षा होती है ।। १२ ।।

पौषकृष्णदशम्यां च वृष्टिर्भाद्रप्रवृष्टिदा ।।
वृष्टिश्चेन्माघसप्तम्यां ज्येष्ठे मूले न वर्षति ।।
नक्षत्रवारिवाहस्य तदान्नैः पूर्यते मही ।।१३।।

पौष कृष्ण दशमीको वर्षा हो तो भाद्रपदमें अच्छी वर्षा होती है। यदि माघकी सप्तमीको वर्षा हो और ज्येष्ठमें मूलनक्षत्रके दिन वर्षा न हो तो मेघके नक्षत्रोंमें पृथ्वी अन्नसे पूरित हो जाती है ।। १३ ।।

नभःप्राक्पक्षपञ्चम्यां वृष्टिर्बह्वन्नधान्यदा ।।
आषाढपूर्णा पूर्वायुक्समर्घायोत्तरायुता ।।१४।।

श्रावणके प्रथम पक्षकी पंचमीके दिन वर्षा हो तो बहुत जल अन्न देनेवाली कही है। आषाढकी पूर्णमासी पूर्वाषाढायुक्त हो तो समर्घ, उत्तराषाढायुक्त हो तो ॥ १४ ॥

साश्वपीडाकरी रोगदैव सा यदि मूलयुक् ॥
महादुर्भिक्षदा ज्येष्ठे कृष्णे प्रतिपदार्कयुक् ॥१५॥

अश्वपीडा और रोग करनेवाली, मूलयुक्त हो तो महान् दुर्भिक्ष देनेवाली कही है। ज्येष्ठकी कृष्ण प्रतिपदा रविवारको हो तो ॥ १५ ॥

महावातस्तरुध्वंसी भौमयुक्तातिविग्रहः ॥
सौम्यान्विता च दुर्भिक्षमुच्चैवृष्टिक्षयस्तथा ॥१६॥

वृक्षोंका नाश करनेवाला महाप्रचंड पवन चलता है, मंगलको हो तो अति विग्रह, बुधको हो तो महादुर्भिक्ष और वर्षाक्षय होता है ॥ १६ ॥

शनियुग्दुर्लभं वारि शेषवारयुता शुभम् ॥
धनधान्यसुतोत्पत्तिर्गेहे गेहे महोत्सवाः ॥१७॥

शनिको हो तो जलकी दुलर्भता और अन्य वारकी हो तो फल, धन, धान्य, संतानोत्पत्ति तथा घर घर महोत्सव होते हैं ॥ १७ ॥

पौषसंक्रमणे वारो रवश्चेद्धान्यमूल्यकम् ॥
द्विघ्नं भौमस्य तुर्यघ्नं शनेस्त्रिघ्नं ज्ञशुक्रयोः ॥१८॥

पौषकी संक्रान्तिके दिन रविवार हो तो धान्यका मूल्य दूना, मंगल हो तो चौगुना, शनि हो तो तिगुना, बुध वा शुक्र हो तो ॥ १८ ॥

पादोनं शेषयोरर्द्धं वदेन्मीनार्कसंक्रमे ॥
रवेवारस्तदा वातः कुजस्य पशुपीडनम् ॥१९॥

चौथाई कम और सोम या बृहस्पति वार हो तो आधा मूल्य हो जाता है। मीनकी संक्रांतिको रविवार हो तो पवन अधिक चलता है, मंगल हो तो पशुपीडा ॥ १९ ॥

शनेर्दुर्भिक्षता ज्ञस्य महामारीसमुद्भमः ॥
संक्रमे शुभवारश्चेच्छुभदोऽन्यो हि कष्टदः ॥२०॥

शनि हो तो दुर्भिक्ष, बुध हो तो महामारी, संक्रांतिके दिन शुभ वार हो तो शुभ फल और अशुभ वार हो तो कष्टदायक होता है ॥ २० ॥

शुभावंबरे सर्वदा वृष्टिदौ चेच्छुभानां त्रयं दीर्घवृष्टयै नितान्तम् ॥
चरेऽङ्गे यदा सर्वखेटास्तदा सार्द्धघस्राज्जलं स्यादथो यत्र पापः २१

यदि चौथे घरमें दो शुभ ग्रह हों तो सर्वदा वृष्टि करते हैं, और तीन शुभ ग्रह हों

तो निरन्तर दीर्घ वर्षा करते हैं। यदि सब ग्रह चर लग्नमें हों तो डेढ दिन पर्यन्त जल वर्षता है। यदि लग्नमें पापग्रह ॥ २१ ॥

शनिप्रेक्षितस्तद्दिशः सस्यहर्ताऽथवा यत्र भूमीजसूर्यो हि भे स्तः ॥
भवेत्तद्दिशः सस्यसंपद्विनाशः शुभावेवपत्रेष्टदृष्टौ सुधान्यम् ॥२२॥

शनैश्चरसे दृष्ट हो तो उसकी दिशाकी खेतीका हरनेवाला कहा है और वहां लग्नमें मंगल, सूर्य हों तो उनकी दिशाकी सस्यसंपदा नष्ट होती है। यदि लग्नमें दो शुभ ग्रह मित्रग्रहसे दृष्ट हों तो धान्य बहुत अच्छा पैदा होता है ॥ २२ ॥

सौम्यस्वेशोज्झिते केन्द्रे चतुर्षु च खलेक्षणम् ॥
गोमृगेन्द्रतुलालग्ने शलभाखुमुखैर्भयम् ॥२३॥

केंद्रोंमें शुभ ग्रह और केंद्रोंके स्वामी न हों; किन्तु उनमें पाप ग्रहोंकी दृष्टि हो; वृष सिह तथा तुला लग्न हो तो धान्य टीडी, मूषक आदिका भय होता है ॥ २३ ॥

कुंभालिवृषमेषेषु वायुवह्नीतितो भयम् ॥
कन्यानृयुग्मचापेषु शलभादिकृमेर्भयम् ॥२४॥

कुभ, वृश्चिक, वृष तथा मेष हो तो पवन, अग्नि और ईतिसे भय होता है। कन्या, मिथुन तथा धन लग्न हो तो टीडी आदि कीडोंसे भय होता है ॥ २४ ॥

कर्के भौमे जलं चन्द्रदृष्टे रोगयुतं वदेत् ॥
शालयोऽपियवाश्चैव गोधूमाः सतिलातसी ॥२५॥

कर्कके मंगल हो तो जल होता है और चंद्रमासे दृष्ट हो तो रोगसहित जल वर्षाता है। साठी, जौ, गेंहू, तिल, अलसी ॥ २५ ॥

कलायमुद्गश्यामाकाः कंगुमाषौ च कोद्रवः ॥
मसूराः क्रमतो लग्नाद्द्वादशर्क्षफलं वदेत् ॥२६॥

मटर, मूंग, श्यामाक (तृणधान्य विशेष झरुआ आदि), कंगनी, उडद, कोदौं, मसूर ये अन्न लग्नके क्रमसे बारह घरोंका फल कहे ॥ २६ ॥

अथ सप्तनाडीचक्रम्



कृत्तिकादि लिखेद्भानि साभिजिन्ति क्रमेण च ।।
सप्तनाडीव्यधस्तत्र कल्पनीयो द्विजिह्ववत् ।।१।।

कृत्तिकासे लेकर अभिजित्सहित अट्ठाईस नक्षत्र क्रमपूर्वक लिखे, तहां सप्तनाडीका वेध सर्पके समान बनावे ।। १ ।।

चतुर्नक्षत्रवेधेन नाड्येका परिकीर्तिता ।।
कृत्तिका च विशाखा चानुराधा भरणी तथा ।।२।।

चार नक्षत्रके वेधसे एक नाडी कही गई है, जैसे–कृत्तिका, विशाखा, अनुराधा और भरणी ।। २ ।।

ऊर्ध्वाख्या मंदनाडी सा चंडनाडी स्मृता बुधैः ।।
रोहिणी स्वातिरिन्द्राश्वौ द्वितीया रविसंभवा ।।३।।

यह चंडनाडी शनैश्चरकी ऊर्ध्वाख्या पंडितोंने कही है। रोहिणी, स्वाती, ज्येष्ठा तथा अश्विनी यह सूर्यकी ।। ३ ।।

वायुनाडी ततः सौम्यं चित्रा मूलं च रेवती ।।
तृतीया भौमनाडीति दहनाख्या ततः परा ।।४।।

वायुनाडी है। इसके अनन्तर मृगशीर्ष, चित्रा, मूल, और रेवती यह तीसरी नाडी मंगलकी दहना नामवाली है ।। ४ ।।

आर्द्राकरस्तथा पूर्वाषाढा चोत्तरभाद्रपात् ।।
जीवनाडी चतुर्थेयं सौम्यनाडी ततोऽदितिः ।।५।।

इसके आगे आर्द्रा, हस्त, पूर्वाषाढा और उत्तराभाद्रपदा यह चौथी नाडी बृहस्पति की सौम्या नामावाली है। इससे पीछे पुनर्वसु ।। ५ ।।

उत्तराफाल्गुनी चोत्तराषाढा पूर्वभाद्रपात् ।।
पंचमीयं नीरनाडी शुक्रोद्भूताऽथ पुष्यभम् ।।६।।

उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा और पूर्वभाद्रपदा यह पांचवी नाडी शुक्रकी नीर नामवाली है। इसके अनन्तर पुष्य ।। ६ ।।

पूर्वाफाल्गुनिका चैवाऽभिजिच्छतभिषा तथा ।।
षष्ठी बुधोद्भवा नाडी जलनाडी ततः परम् ।।७।।

पूर्वाफाल्गुनी, अभिजित् और शतभिषा यह छठी नाडी बुधकी जलनामवाली नाडी है। इससे आगे ।। ७ ।।

आश्लेषा च मघा श्रोत्रं धनिष्ठा सप्तमी विधोः ।।
अमृताख्या शीतला च मध्यस्थातोऽग्रपृष्ठतः ।।८।।

आश्लेषा, मघा, श्रवण और धनिष्ठा यह सातवीं नाडी चंद्रमाकी अमृता और शीतला नामवाली मध्यमें स्थित है। इसके आगे और पीछेकी ।। ८ ।।

त्रयं त्रयं नाडिकानां सौम्यं याम्यं प्रकीर्तितम् ।।
खला याम्यर्क्षगाः सौम्याः सौम्यर्क्षेषु च मध्यमाः ।।९।।

तीन तीन नाडी सौम्य और याम्य कही हैं अर्थात् आगेकी तीन सौम्य और पिछली तीन याम्य हैं। पाप ग्रह याम्यसंज्ञक नक्षत्रमें और शुभ ग्रह सौम्यसंज्ञक नक्षत्रोंमें और मध्यम ग्रह ।। ९ ।।

मध्यनाडीगता नूनं निजरूपफलप्रदाः
क्रूरा वा शुभगा द्वयाद्या एकनाड्यां फलप्रदाः ।। १० ।।

मध्यनाडीमें हों तो अपनेके समान फल देनेवाले कहे हैं। दो वा तीन आदि शुभ ग्रह वा क्रूर ग्रह एक नाडीमें हों तो फल देते हैं ।। १० ।।

चंडनाड्यां महावातो वायुनाड्यां समीरणः ।।
अग्निनाड्यां भवेदग्निःसौम्यनाड्यां च मध्यता ।।११।।

यदि चंडनाडीमें हों तो महाप्रचंड पवन, वायुनाडीमें हो तो पवन अग्निनाडीमें हो तो अग्नि, सौम्यनाडीमें हों तो मध्यम फल ।। ११ ।।

चंद्रनाड्यां महावृष्टिर्भवेदेकोऽपि चेत्खगः।।
स्वनाड्यां फलदश्चारः सर्वत्र फलदायकः ।।१२।।

चंद्रनाडीमें हो तो महावृष्टि होती है। यदि अकेला भी ग्रह अपनी नाडीमें हो तो फलदायक होता है और ग्रहका चार सत्र नाडियोंमें फलदायक होता है ।। १२ ।।

अथ वृष्टियोगाः

दशार्द्रातस्त्रियस्तारा विशाखाद्या नपुंसकाः ।।
तिस्रः शेषा नरा इन्द्रा यदा सूर्येन्दुतारयोः ।।१।।

आर्द्रासे लेकर दश नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक, विशाखासे तीन नपुसक और शेष पुरुषसंज्ञक हैं। जत्र सूर्य और चंद्रमाके नक्षत्र ।। १ ।।

पुंस्त्रीयोगे भवेद्वृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोः क्वचित् ।।
स्त्रियोर्योगे घनश्छाया षण्ढयोर्न दिने लघु ।।२।।

पुरुष और स्त्रीसंज्ञकका योग होवे तो वृष्टि होती है, स्त्री नपुंसकका योग हो तो कहीं कहीं वर्षा होती है। स्त्री' स्त्रीसंज्ञकका योग हो तो वादलोंकी छाया रहती है। यदि नपुंसक नपुंसकका योग हो तो एक भी वर्षा नहीं होती ।। २ ।।

उदयास्तगतः शुक्रो बुधो वा जलदायकः ।।
जलभेन्दुश्च पक्षान्ते संक्रमे वा ज्ञशुक्रयुक् ।।३।।

शुक्र वा बुध उदय वा अस्तको प्राप्त होता हुआ जलकी वर्षा करता है। पूर्णमासी, अमावास्या अथवा संक्रांतिके दिन जलराशिका चन्द्रमा बुध या शुक्रसे युक्त हो तो ।। ३ ।।

एकार्णवां महीं कुर्यात् तन्मध्येऽर्कश्च शोषयेत् ।।
यद्दिने चंद्रमाः क्रूरसौम्यखेटैर्विमिश्रितः ।।४।।

पृथ्वीपर अति जलकी वर्षा होनेसे एक समुद्रसा फैला हुआ प्रतीत होता है और यदि उसके मध्यमें सूर्य हो तो जलका शोषण करता है। जिस दिन चन्द्रमा क्रूर तथा सौम्य ग्रहोंसें युक्त होता है ।। ४ ।।

तद्दिने परमा वृष्टिरेवमृक्षांशयोगतः ।।
अतिवृष्टिर्यदा चंद्रः सौम्यैर्वोग्रैर्हि केवलैः ।।५।।

उस दिन अत्यधिक वृष्टि होती है। इसी प्रकार जिस राशिका चन्द्रमा हो उसीके राशिके नवांशका योग होनेसे अतिवृष्टि होती है। जब चन्द्रमा केवल क्रूर ग्रहोंसे वा शुभ ग्रहोंसे ।। ५ ।।

विद्धो दुर्दिनकृत्तुच्छजलदश्च यदा विधुः ।।
यस्य नाडीगतस्तेन युक्तदृष्टो जलप्रदः ।।६।।

विद्ध हो तो दुर्दिन करता और थोडा जल वर्षाता है। चन्द्रमा जब जिस ग्रहकी नाडीमें हो और उसी ग्रहसे युक्त या दृष्ट हो तो जलदायक होता है ।। ६ ।।

चेत्कृशेन्दुर्भवेन्नैव यदेंदुः सौम्यपापयुक् ।।
चंद्रनाड्यां तदाम्भः स्याद्द्विचतुःपंचभिर्ग्रहैः ।।७।।

जो क्षीण चंद्रमा हो तो वर्षा नहीं होती है : जब चंद्रमा शुभ और पाप ग्रहसे युक्त होकर चंद्रनाडीमें होता है तो जलकी वर्षा होती है। यदि दो चार या पांच ग्रहोंसे ।।७।।

क्रमात्तद्द्विचतुःपंचदिनकृत्कैवलेन्दुना ।।
सर्वैरेकत्र सप्ताहो यथासंख्यं ग्रहैरिति ।।८।।
वर्षायां द्विगुणं तच्च कदाचिदपि जायते ।।९।।

युक्त चन्द्रमा हो तो क्रमसे दो चार तथा पांच दिन वर्षा करता है। केवल चंद्रमाके साथ सब ग्रह एक नाडीमें हों तो सात दिन वर्षा होती है। इसी प्रकार ग्रहोंसे यथासंख्याके दिन वर्षाके कहे और कभी दूने भी हो जाते हैं ।। ८ ।। ९ ।।

जलनाडीस्थिते चंद्रे त्वंभः सौम्योग्रसंयुते ।।
दिनार्द्धं दिवसं पंचदिनान्यंभः प्रजायते ।।१०।।

जलनाड़ीमें स्थित चन्द्रमा जल देता है और सौम्य तथा पाप ग्रहोंसे युक्त हो तो आधे दिन, एक दिन या पांच दिन जल वर्षा करता है ।। १० ।।

एवं विधौ नीरनाड्यां तत्रस्थैर्मिश्रखेचरैः ।।
आयामयामयुग्माहस्त्रयं पूर्वोदितक्रमात् ।।११।।

इसी प्रकार चंद्रमा नीरनाडीमें शुभ और पाप ग्रहोंसे युक्त हो तो प्रहर, दो प्रहर एक दिन तथा तीन दिनतक वर्षा पूर्वोक्त क्रमसे कहे ।। ११ ।।

चंद्रादिनाडीत्रितये सर्वे खेटाः प्रवर्षणम् ।।
अष्टादशार्क षड्वारैः क्रमादथ यदा खगाः ।।१२।।

चन्द्रादि तीन नाड़ियोंमें सब ग्रह हों तो अठराह, बारह तथा छः दिन क्रमसे वर्षा होती है ।। १२ ।।

सर्वेऽपि सौम्यनाडीस्थास्तदा वृष्टिर्दिनत्रयम् ।।
शेषनाडीगता वातदुष्टवर्षणदा ग्रहाः ।।१३।।

सब ग्रह सौम्यनाडीमें स्थित हों तो तीन दिन वर्षा होती है और जो शेष नाडियोंमें सब ग्रह हों तो पवन और प्रचण्ड वर्षा करते हैं ।। १३ ।।

निर्जला जलदा नाडी भवेद्योगेऽधिसौम्यके ।।
जलदाप्यधिपापाढ्या नाम्बुदा यदि पापिनः ।।१४।।

अधिक शुभ ग्रहोंका योग हो तो निर्जलनाडी भी जलदायिनी और अधिक पाप ग्रहोंका योग हो तो जलदायिनी नाडी भी निर्जला हो जाती है । यदि पाप ग्रह ।। १४ ।।

याम्यनाड्यामनावृष्टिर्यदा चंद्रधरासुतौ ।।
एकनाड्यां गुरुस्तत्र तदा जलमयी हि भूः ।।१५।।

याम्यनाडियोंमें हो तो वर्षा नहीं होती । यदि चंद्रमा, मंगल तथा बृहस्पति एक नाडीमें हों तो पृथ्वी जलमय होती जाती है ।। १५ ।।

बुधशुक्रौ यदैकत्र जीवमुक्तौ सशीतगू ।।
तदैव परमा वृष्टिर्यदा चंद्रसितौ खलैः ।।१६।।

बुध, शुक्र, बृहस्पति तथा चंद्रमा एक नाडीमें हों तो परम वृष्टि होती है । यदि चंद्र और शुक्र पाप ग्रहोंसे ।। १६ ।।

युतदृष्टौ तदा मेघो लघुवृष्टिर्यदा ग्रहाः ।।
उदयास्तमने मार्गे वक्रे खेटाश्च संक्रमे ।। ।।१७।।

युक्त या दृष्ट हों तो मेघ थोडी वर्षा करता है । जब ग्रह उदयास्तमन वा वक्र मार्गमें अथवा संक्रांतिमें प्राप्त होते हुए जलनाडीपर समारूढ होते हैं तब महावृष्टिदायक कहे हैं ।। १७ ।।

अथ शुक्रोदयफलम्

चैत्राच्छुक्रोदयो भूयात् तरुसंपद्‌ विग्रहः ।।
नृपाणां भूरिवृष्टिश्च जलदुर्लभता तथा ।।१८।।

चैत्र लेकर शुक्रका उदय जिस महीनेंमें हो उसका फल इस प्रकार क्रमसे कहे । कहे । वृक्षसंपदा, राजविग्रह, अतिवृष्टि जलदुर्लभता ।। १८ ।।

पशुपीडा च सद्धान्यं सर्वसंपत्परं शुभम् ।।
शुभं च राज्यभंगश्च राज्यभंगोऽर्घवृद्धिता ।।१९।।

पशुपीडा, श्रेष्ठ धान्य, सबप्रकारकी सम्पत्ति, अतिशुभ, शुभ, राज्यभंग और अर्घवृद्धि चैत्रादि मासके क्रमसे जानना चाहिये ।। १९ ।।

हुताशनीफलम्

पूर्वेऽत्र वायो होल्यां स्यात्प्रजाभूपसुखं तथा ।।
दक्षे भंगश्च दुर्भिक्षं पश्चिमेऽतितृणोद्भवः ।।
धान्यं सौम्ये शिखा खे चेद्वृष्टिर्भूयो गढाश्रया ।।२०।।

होलिकादीपनके समय पूर्वका पवन चले तो राजा प्रजाको सुख, दक्षिणका चले तो राज्यभंग और दुर्भिक्ष, पश्चिमका चले तो अधिक तृणोत्पत्ति और उत्तरका चले तो धान्य पैदा होता है। यदि होलीकी शिखा आकाशको जावे तो राजाके किलेपर बहुत वर्षा होती है ॥ २० ॥

भोजनप्रश्ने विचारः

अन्नदस्तनुपतिः खलु भोक्ता कर्मपो मदपतिश्च बुभुक्षा ॥
तुर्यपोऽन्नमिह सद्युतिदृष्टया सत्फलं खलयुतीक्षणतोऽन्यत् ॥१॥

लग्नेश अन्न देनेवाला, दशमेश भोजन करनेवाला, सप्तमेश बुभुक्षा (भोजनेच्छा) और चतुर्थेश अन्न कहा है। इस प्रश्नमें शुभ ग्रहका योग और दृष्टि होनेसे शुभ फल और पाप ग्रहका योग और दृष्टि होनेसे अशुभ फल कहा है ॥ १ ॥

लग्ने चतुर्थे शुभदृष्टयुक्ते सुभोजनं लग्नगतेऽथ जीवे ॥
सितेऽपि वासाध्यशनं कुकाले भवेदथो लग्नगते सुरारौ ॥२॥

लग्न और चतुर्थ घर शुभ ग्रहसे युक्त या दृष्ट हों तो सुन्दर भोजन किया है। यदि लग्नमें बृहस्पति वा शुक्र हो तो कुसमयमें बहुत अच्छा भोजन किया है और जो लग्नमें राहु हो। २ ॥

मंदेऽपि वा भास्करदृष्टयुक्ते न भोजनं शस्त्रभयं क्वचिच्च ॥
चेद्भानुना दृष्टयुतं न लग्नं तदोपवासो निशि वा कुभोज्यम् ॥
चंद्रे खभे सूष्णमिलातनूजे खभे हि शीतं प्रवदेन्मनीषी ॥३॥

अथवा सूर्यसे दृष्ट वा युक्त शनैश्चर हो तो भोजन कहीं नहीं होता, किंतु कहीं शस्त्रका भय होता है। यदि लग्न सूर्यसे दृष्ट वा युक्त न हो तो उपवास होता है वा रात्रिमें कुभोजन मिलता है। यदि चंद्रमा दशम घरमें हो तो गरम और जो मंगल दशवें घरमें हो तो शीतल भोजन किया है इस प्रकार प्रश्न पण्डित कहे ॥ ३ ॥

लग्नं पश्यन्ति ये खेटा भोजने तद्रसाः स्मृताः ॥
शुभर्क्षगानः सुरसाः परेषां नीरसाः स्मृताः ॥४॥

जो ग्रह लग्नको देखते हों उन्हीं ग्रहोंके रस भोजनमें कहने चाहिये। शुभराशिस्थ ग्रहोंके सुरस और अशुभराशिस्थ ग्रहोंके नीरस भोजन कहे हैं ॥ ४ ॥

वक्रिणः प्राप्य च रसान्न भुंक्तेऽथ तनौ न दृक् ॥
तदा केंद्रस्थितरसो वाच्योऽथार्केऽत्र भोजनम् ॥५॥

जो वे ग्रह वक्री हों तो रसोंको पाकर भी भोजन नहीं करता है। जो लग्नपर किसी किसी ग्रहकी दृष्टि न हो तो केंद्रस्थित ग्रहका रस कहना चाहिये। यदि केंद्रमें सूर्य हो तो ॥ ५ ॥

गोधूमगुड भक्ताद्यमिन्दोश्च परमान्नकम् ॥
सदध्याज्यसितान्नं च भौमे गुडहविष्यवत् ॥६॥

गेहूं गुड तथा भात आदि; चंद्रमा हो तो श्रेष्ठ अन्न, दधि, घी तथा श्वेत अन्न, मंगल हो तो गुड और हविष्ययुक्त ॥ ६ ॥

रक्तान्नं च बुधे मुद्गदुग्धकर्पूरवद्गुरौ ।।
निशाचणकदध्यादि शुक्रे मृद्वाज्यवत्क्वचित् ।।७।।

तथा लाल अन्न, बुध हो तो मूंग, दूध तथा कर्पूरयुक्त अन्न, बृहस्पति हो तो हल्दी, चना तथा दधि आदि, शुक्र हो तो मृदु (कोमल) तथा घीयुक्त अन्न ।। ७ ।।

शनौ शिवीतैलतिलाद्यं राहौ पूतिसर्षपात् ।।
समाषान् शिखिनि ब्रूयाद्भूरिद्रव्यसमुच्चयम् ।।८।।

शनि हो तो ओमल की, तैल, तिलादिक; राहु हो तो दुर्गन्धयुक्त या अपवित्र; सरसों तथा उडद और केतु हो तो बहुत पदार्थोंवाला भोजन कहना चाहिये ।।८।।

अम्बुस्थखेटस्य वशाद्भोज्यान्नस्य रसं वदेत् ।।
स्निग्धान्नं भास्करे तुर्ये शनौ तैलेन मिश्रितम् ।।९।।

चतुर्थस्थ ग्रहके वशसे भोजनके अन्नका रस कहना चाहिये । यदि सूर्य चौथे घरमें हो तो चिकना अन्न और शनि हो तो तैल मिला भोजन कहे ।। ९ ।।

नीचग्रहैर्गतरसं कदन्नं स्वल्पसंस्कृतम् ।।
प्रबलार्कमुखैर्लग्नै भूपालादेर्गृहेऽशनम् ।।१०।।

यदि चौथे घरमें नीच ग्रह हो तो नीरस, थोडा पका हुआ तथा कदन्नका भोजन कहे । सूर्यादिक बलवाले ग्रह लग्नमें हों तो राजादिके घरमें भोजन किया है इस प्रकार कहे ।। १० ।।

सुखपतौ सबले च सुभोजनं चरगृहे त्वसकृत्स्थिरगे सकृत् ।।
द्वितनुगे द्विरथो शुभदृग्युते सदशनं सुखतो न कदाऽन्यथा ।।११।।

चतुर्थेश बलवान् हो तो अच्छा भोजन किया है । यदि चर राशिका हो तो कई वार और स्थिर राशिका हो तो एक बार, द्विस्वभाव राशिका हो तो दो बार भोजन किया है । यदि चतुर्थेश शुभ ग्रहसे दृष्ट वा युक्त हो तो अच्छा भोजन सुखसे किया है और जो इससे अन्यथा हो तो किसी समय नहीं किया है ।। ११ ।।

मूलत्रिकोणगः खेटो यद्गृहं च समाश्रितः ।।
तद्गृहेशस्य गेहे स्याद्भोजनं बलिनोऽथवा ।।१२।।

मूल त्रिकोणमें प्राप्त होता हुआ ग्रह जिस घरमें बैठा हो तो उसी घरके स्वामीके घरमें भोजनकिया है, अथवा अधिक बलवान् ग्रहके घरमें भोजन किया हुआ कहे ।। १२

गृहात्कुटुंबात्सहजात्पितृभ्यः पुत्राद्रिपोर्वध्वृणियाचितेभ्यः ।।
नृपात्स्वमित्रात्क्रयतः क्रमेण भोज्याप्तिरंगादिषु वीर्यवत्सु ।।१३।।

लग्नादि घर वलवान् हो तो क्रमसे अग्र लिखित मनुष्योंसे भोजनकी प्राप्ति कहे । निज घरसे, कुटुंवसे, भाईसे, पिता मातासे, पुत्रसे, शत्रुसे, वधूसे, कर्जवालेसे, मांगनेसे राजासे, अपने मित्रसे तथा खरीदनेसे भोजनकी प्राप्ति होती है ।। १३ ।।

तिलानि तण्डुलाश्चैव मसूराश्चणकान्नकम् ।।
समुद्गराजमाषाश्च गोधूमा यवबाजरे ।।
कुलत्थमाषकौ चैव तुषान्नं भास्करक्रमात् ।।१४।।

सूर्यादिक्रमसे अन्न जानने चाहिये, जैसे सूर्यसे तिल, चंद्रसे चावल, मंगलसे मसूर और चना, बुधसे मूग और लोबिया, बृहस्पतिसे गेहूं, शुक्रसे जौ तथा बाजरा, शनिसे कुल्थी और उडद और राहुसे घास तृणादिकसे उत्पन्न हुआ अन्न ।। १४ ।।

मूलं रवौ रात्रिपतौ च पुष्पं कुजे च पत्रं सितजीववित्सु ।।
शाखाशनौ व्यंजनवच्च राहौ केतौ तथामांसमवेः प्रवाच्यम् ।।१५।।

अब अन्य प्रकारसे कहते हैं । सूर्य में मूल, चंद्रमामें पुष्प, मंगलमें पत्र, शुक्र, बृहस्पति तथा बुधमें शाखा, शनिमें व्यञ्जनयुक्त और राहु तथा केतुमें भेडका मांस भोजनमें कहना चाहिये ।।१५।।

निशापतौ राशिपतिः प्रविष्टः सुखेन सद्भोजनमिष्टकाले ।।
अतो विलोमे परथा क्षशेन्दौ खला लवे वासमये न चान्नम् ।।१६।।

यदि चन्द्रमाकी राशिका स्वामी ग्रह चंद्रमाके साथमें हो तो इष्ट समयपर मित्र के साथ अच्छा भोजन किया है और इस योगसे विलोम हो तो अन्यथा फल कहे । यदि क्षीण चन्द्रमा हो और चंद्रराशिके नवांशमें पाप ग्रह हों तो इष्ट समयपर अन्नकी प्राप्ति नहीं होती है ।।१६।।

सूर्येण चेन्मुत्थसिलं हिमांशौ शुच्युष्णतीक्ष्णं गुरुणां समिष्टम् ।।
सगौरवान्नं भृगुणा बुधेन महोत्सवे स्वादुरसं कुजेन ।।१७।।

यदि सूर्यके साथ चन्द्रमाका इत्थसाल हो तो निर्मल (पवित्र , तीक्ष्ण भोजन, बृहस्पतिके साथ इत्थसाल हो तो मीठा भोजन, शुक्रके साथ हो तो भारी अन्नका भोजन, बुधके साथ होतो तो महोत्सवमें स्वादुरसवाला भोजन, मंगलके साथ हो तो ।।१७।।

कुस्थान उष्णं शनिनायुधानां गृहेऽशनं सत्खगमित्रदृष्टया ।।
भुक्तं विवाहे शुभवैरिदृष्टया विवाहतश्चागतमत्र भुक्तम् ।।१८।।

दुष्ट स्थानमें गरम भोजन तथा शनिके साथ हो तो शस्त्रस्थानमें भोजन किया है । शुभ ग्रहकी मित्रदृष्टि होने से विवाहमें भोजन किया है और शुभ ग्रहकी वैरिदृष्टि हो तो विवाहसे आया हुआ अन्न भोजन किया है ।।१८।।

भुक्तं भोक्तव्यं वेति प्रश्ने विचारः

सदित्थसाले च खलेशराफे चंद्रे प्रभुक्तं परथास्थि भोज्यम् ।।१९।।

यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहके इत्थसालमें और पापग्रहके इशराफमें हो तो भोजन कर लिया है, अन्य प्रकारसे हो तो भोजन करेगा ।।१९।।

स्ववैरिणा निमन्त्रितोऽहं शुभमशुभं वा भविष्यतीति
प्रश्ने विचारः

वपुषि शनौ धनराहौ दिनकरदृष्टे निमन्त्रितो रिपुणा ।।
लभते शस्त्रविद्यां तच्चाङ्गं शनिभौमयोस्तथैति दृशम् ।।१।।

लग्नमें शनि, दूसरे घरमें राहु सूर्यसे दृष्ट हो तो शत्रुसे निमंत्रित पुरुष शस्त्रविद्याका लाभ करता है । यदि वह लग्न शनि और मंगलकी दृष्टियोंको प्राप्त हो अर्थात् लग्नको शनि और मंगल देखते हों तो पूर्वोक्त फल कहे ।।१।।

यदांगनाथेज्यसिता बलाढ्याश्चेन्द्विन्दुजौ केंद्रगतौ ससौम्यौ ।।
त्रिषष्ठलाभेषु खलास्तदा स्यात्सुभोजनं प्रीतिकरैर्मनुष्यैः ।।२।।

जब लग्नेश, बृहस्पति तथा शुक्र बलयुक्त हों और शुभ ग्रहोंके साथ चन्द्रमा तथा बुध केंद्रमें हो तथा ३ । ६ । ११ घरोंमें पाप ग्रह हों तो प्रेम करनेवाले पुरुषोंसे अच्छा भोजन मिलता है ।।२।।

स्वप्नप्रश्ने तथा सुरतप्रश्ने विचारः

लग्नेऽर्कोऽर्कांशगे वाऽप्यरुणपटरवीन्दूंश्च वन्हिं प्रपश्ये-
च्चंद्रे श्वेताम्बरस्त्रङ्मणिमयमु कुजे रक्तवद्विद्रुमं ज्ञे ।।
स्वर्लोकस्यापि वार्त्ता गमनमपि सुरेज्ये च विद्याप्रसंगा-
च्छुक्रे क्रीडासवर्चा जलपथि तरणं चाक्षखेलां विलासम् ।।१।।

लग्नमें सूर्य वा सूर्यका नवांश हो तो लाल वस्त्र, सूर्य, चंद्रमा तथा अग्निको स्वप्नमें देखता है । चंद्रमा हो तो श्वेत वस्त्र, माला तथा मणि; मंगल हो तो लाल रंगवाली वस्तु मूंगा आदि; बुध हो तो स्वर्गलोककी वार्ता और वहां जाना; बृहस्पति होतो विद्याप्रसंग तथा आनंद होना; शुक्र हो तो क्रीडा करना, आसव पीना, जलमार्ग तैरना, चौसर खेलना तथा विलास करना ।।१।।

मंदे म्लेच्छारिभीतिं गतिमपि च वने पर्वते राहुकेत्वोः,
नीचैःसंगं ततो धीरिपुमदनसहोत्थायगश्चेद्धिमांशुः ।।
भृग्विज्यार्कप्रदृष्टः शुभफलखचरैः केंद्रधर्मेषु संस्थैः,
सद्भोगं कामिनीनां भवति हि नियतं सद्विलासैर्वदेद्वै ।।२।।

शनैश्चर हो तो म्लेच्छ और शत्रुसे भय तथा वन, पर्वतपर चढना तथा राहु, केतु हो तो नीच संग होना इत्यादि स्वप्नमें देखता है । इसके अनन्तर ५ । ६ । ७ । ३ । ११ घरोंमें चन्द्रमा शुक्र, बृहस्पति तथा सूर्यसे दृष्ट हो और शुभफलदायक ग्रह केंद्र और नवम घरमें स्थित हों तो कामिनीजनोंका सद्भोग सद्विलासके साथ प्राप्त होता है । अथवा अपनी स्त्रीके साथ भोग प्राप्त होता है ऐसा निश्चितरूपसे कहना चाहिये ।।२।।

स्त्रीभोगो वांगनाथे नरि मदनपतिस्त्रीखगेनेत्थसाले ।।
भोगः स्यादेकपत्ये बहुलतरसुखं नैव भोगःकदाचित् ।।३।।

पुरुषसंज्ञक राशिस्थ लग्नेशका सप्तमेश स्त्रीग्रहके साथ इत्थसाल हो तो स्त्रीभोग प्राप्त होता है और सप्तमेश लग्नेशका एक ही स्वामी हो तो सुख बहुत मिलता है परंतु भोग नहीं मिलता ।।३।।

केंद्रे सौम्येत्थसालेन्दुः स्त्रीसंगोऽधिमुखं स्मरे ।।
क्रूरदृष्टे सरोषाऽस्ते सक्रूरं कलहोऽथवा ।।४।।

यदि केंद्रमें शुभ ग्रहके साथ इत्थसाल करनेवाला चंद्रमा हो तो अधिमुख स्त्रीसंग होता है । सातवां घर क्रूर ग्रहोंसे दृष्ट हो तो क्रोधके साथ स्त्रीसंग होता है और क्रूर ग्रहोंसे युक्त हो तो कलह अथवा ।।४।।

पीडा भवेद्यथास्तक्षं रतिकृच्च तथा रतिः ।।
जीवे तनौ भृगावस्ते सुखे चंद्रे विलासकृत् ।।५।।

पीडा होती है। जैसा सप्तम घर हो वैसा ही रति करनेवाला और रति कहनी चाहिये। बृहस्पति लग्नमें, शुक्र सातवें, चंद्रमा चौथे हो तो विलास करनेवाली ।।५।।

सरूपवेषलावण्ययुक्तरुण्याः सुगन्धिवत् ।।
रतं स्यात्केन्द्रराज्येन्दुः शुक्रमुत्थसिले तथा ।।६।।

सुन्दर वेष, रूप तथा लावण्यसे युक्त तरुणीके साथ सुगन्धयुक्त रति प्राप्त होती है। दशमकेंद्रगत चन्द्रमा शुक्रके इत्थसालमें हो तो भी सुन्दर स्त्रीके साथ उत्तम रतिकी प्राप्ति होती है ।।६।।

स्थिरर्क्षे द्विदेहेऽथवा स्वीयनारि चरर्क्षे हि मन्देऽथ केंद्रे परस्त्री ।।
महादुर्भगा भूसुते रोषपूर्णाऽथ पापे चतुर्थे धृता सप्तमे च ।।७।।

यदि स्थिर वा द्विस्वभाव राशिका शनैश्चर केन्द्रमें हो तो अपनी स्त्री और चरराशिगत शनि केन्द्रमें हो तो परायी स्त्री महादुर्भगा, मंगल हो तो क्रोधपूर्ण, चौथे घरमें पाप ग्रह हों तो धृता, सातवें घरमें पाप ग्रह हों तो ।।७।।

स्मृतोद्वाहिता स्त्री प्रभुक्तास्थिरर्क्षे तनौ वारमेकं द्विदेहे द्विवारम् ।।
चरर्क्षे त्रिवारं च केंद्रे दिनर्क्षे दिवाखेचरे वासरे स्त्री प्रभुक्ता ।।८।।
निशान्ते निशाखेचरे स्यान्निशायां द्वियोगेऽत्र सन्ध्यासु भुक्ताऽस्ति पूष्णा ।।
स्वभस्थैः स्वगेहेऽशुभैरन्यभेऽन्यस्य गेहेऽरिभेऽरैर्हितर्क्षे हितस्य ।।९।।

स्मृता, विवाहिता स्त्री भोगी गई है। स्थिर लग्न हो तो एक वार, द्विस्वभाव हो तो दो वार और चर हो तो तीन वार भोगी गई है। यदि केंद्रमें या दिनर्क्षमें दिनसंज्ञक ग्रह स्थित हो तो दिनमें और यदि उक्त स्थानमें रात्रिसंज्ञक एक ग्रह हो तो रात्रिके अन्तमें, रात्रिसंज्ञक दो ग्रह हों तो रात्रिमें और सूर्य हों तो सन्ध्यामें भोगी हुई कहे। यदि अपनी राशिके ग्रह हों तो अपने घरमें, पाप ग्रह तथा अन्य ग्रहकी राशिके हों तो अन्यके घरमें, मित्रराशिके हों तो मित्रके और शत्रुराशिके हों तो शत्रुके घरमें भोगी गई कहे ।।८।। ९।।

इति रुद्रमणिप्रकल्पितो जगदम्बापदयोः समर्पितः ।।
भवताच्छुभदः सुकर्मिणां पठतां प्रश्नशिरोमणिर्नृणाम् ।।१०।।

इति श्री वाल्मीकवंशावतंसश्रीमंत्रिपाठिरुद्रमणिप्रकल्पिते
प्रश्नशिरोमणौ विशेषाध्यायः समाप्तः

श्रीयुत पण्डित रुद्रमणि विरचित जगदम्बा (पार्वतीजी) के चरणोंने समर्पित यह प्रश्न शिरोमणिनामक ग्रन्थ पढनेवाले सुकर्मी पुरुषोंके लिये शुभ फलका देनेवाला हो ।।१०।।

इति श्रीवाल्मीकवंशावतंसश्रीमत्रिपाठिपंडितरुद्रमणिविरचितप्रश्नशिरोमणिनामकग्रन्थे ढाडौलिग्रामवास्तव्यपण्डितरामदयालुविरचितभावार्थबोधिनीनामभाषाटीका समाप्ता ।

टीकाकारका परिचय आदि

श्रोत्रिद्विजावासविभूषिते शुभे ढाडौलिसंज्ञे चिरतः प्रतिष्ठिते ।।
ग्रामे महात्मा गुणवृन्दमण्डितश्रीपण्डिताऽऽपूजितपादपङ्कजः ।।१।।

श्रीवेणिरामो द्विजदेवसेवको ह्यासीद्विजो गुर्ज्जरगौडवंशजः ।।
तस्यात्मजो रामदयालुनामकष्टीकां शुभां प्रश्नशिरोमणेर्व्यधात् ।।२।।

मयाऽसर्वज्ञेनाऽत्र लिखितमशुद्धं क्वचिदपि,
ह्ययोग्यं यत्किञ्चित् तदतिकृपया पण्डितजनाः ।
क्षमध्वं संशोध्योपकृतिकरणाः संस्तुतगुणाः,
सटीकोऽयं ग्रन्थो भवदभिविलोक्यश्च सुदृशा ।।३।।

वैक्रमीयेऽब्दके टीका भूरसांकधरामिते ।।
नभःसिततृतीयायां रवौ सम्पूर्णतामगात् ।।४।।

शिखरिणी छंद—द्विजोंकी ढाडौली जगत बिच विख्यात सुभली ।
तहां वेणीरामो बुधवर महापण्डित बली ।।
वसैं भास्वद्भक्तो तनय तिनको है गतछली ।
दयालुः पीछे है प्रथम विलसै राम विमली ।।१।।

यही नामी जानो भजन करतो विप्रगनको ।
उसीने कीनी है यह सरल टीका सबनको ।।
महाप्रश्नग्रन्थे पढि पढि लहो मोद मनको ।
क्षमा कीजो जो जो कछु रह गयो भूल गनको ! ।।२।।

सवैया—छे अरु द्वै अरु आठ रु एक यहै वरतै जगमें शुभ शाको ।
श्रावणमास सुदी शुभ तीज विभाकरवार जु नाथ प्रजाको ।।
प्रश्नशिरोमणिगन्थ मनुष्यगिरामें तिलक्कसमेत प्रभाको ।
पूरन कीन प्रवीन जनो तुव सेवक रामदयालु सदाको ।।

समाप्तोऽयंग्रंथः

श्रीगणेशाय नमः

प्र श्न मा ला



मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास™,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

भूमिका

★

भाषाका यह प्रश्नमाला नाम पुस्तक भी मेरे पास प्राची नही था, इसको किसी प्राचीन महात्मा विद्वान्ने बनाया है । ऐसा भी प्रतीत होता हैं कि संभवतः किसी यवनाचार्यके ग्रन्थसे उद्‌धृत किया हो; परन्तु यह कथन पूर्णतया पुष्टताको धारण नहीं करता है, क्योंकि इसके आदिमें हमारी देववाणीमें प्रश्नविधि और मन्त्र लिखा है, जिससे यह विदित होता है, कि किसी पूर्णप्रज्ञ दैवज्ञने अपने विद्याभण्डारसे ही निर्माण किया है, इसके द्वारा प्रश्नकर्त्ताके प्रश्नका फल केवल सिद्धि, असिद्धिमात्र ठीक ठीक सत्य कहा जासकता है इसी कारणसे सर्व साधारण जनोंके उपकारार्थ इसका भी छपाना उचित समझकर प्रश्नशिरोमणिके साथ ही श्रीयुत सेठ खेमराजजीको समर्पण कर दिया है ।

सर्वविद्वज्जनानुरागी पं०-रामदयालु.

अथ

प्रश्नमाला

✵

महादेवं नमस्कृत्य केवलं ज्ञानभास्करम् ।।

वक्ष्ये सद्गुरुणादिष्टं ज्ञेयं शुभमथाऽशुभम् ।। १ ।।

ज्ञानके सूर्य श्रीमहादेवजीको केवल नमस्कार करके जानने योग्य शुभ और अशुभ फल कहूंगा जो कि सद्गुरुने बताया है ।। १ ।।

अर्कवारेऽर्कमूलमुत्पाटच तस्योपवासं कृत्वा अवजदादि तस्मिन् विलिख्य प्रश्नकर्ता मंत्रेण सम्मन्त्र्य त्रिवारं भूमौ क्षिपेत् । अथ मन्त्रः—ॐ नमो भगवति कूष्माण्डिनि देवि सर्वकार्यप्रसाधिनि सर्वनिमित्तप्रकाशिनि एहि एहि वरदे हिलिहिलि मातङ्गिनि सत्यं ब्रूहि स्वाहा ।। इति ।।

रविवारके दिन आककी जड उखाडकर चार पहलूका पासा बनावे और उसी दिन उसका उपवास करके पासेका पूजन करे । उसपर पहलूके क्रमसे ये चार ,,अ, व ज, द" अक्षर लिख दे । प्रश्नकर्ता इस मंत्रको ! नमो भगवति कूष्मांडिनि देवि सर्वकार्यप्रसाधिनि सर्वनिमित्तप्रकाशिनि एहि एहि वरदे हिलिहिलि मातङ्गिनि सत्यं ब्रूहि स्वाहा" पढके पासेको अभिमंत्रित करके भूमिपर तीन वार फेंके और जो अक्षर आवें उनका फल आगे देखे ।

१ अअअ–सुनो पृच्छक ! जो काम तुम चिंतन करते हो उस कार्यसे बहुत संतोष होगा, मनमें धीरज करो, आप ही काम सिद्धं हो जायगा, सन्देह मत करो ।

२–अअद–सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्तन करता है सो कार्य समभाग है, बहुत सुखसे शून्य कार्य है, वह सत्य हो जायगा, सन्देह न कीजिये ।

३ अजद–सुनो पृच्छक ! जो तुम कार्य चिंतन करतें हो सो नहीं होगा, तू इसको छोड दे, और कार्य कर, दूसरी चिन्ता कर, उसीसे आरोग्य होगा ।

४ अवद–सुनो पृच्छक ! जिसका तुम चिन्तन करते हो वह कार्य बहुत दिनोंमें होगा, गोत्रदेवीकी पूजा करो, कार्य समभाग है, परन्तु अर्थ लाभ होगा ।

५ अदव–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो सो तुमको लक्ष्मी प्राप्त होगी, बन्धुओंसे सन्तोष पाओगे, आगे शत्रुलोग शिर नवायेंगे, सन्देह मत करो, यह बात सत्य है ।

६ अवअ–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो सो कार्य कठिन है, जिससे तुम बात करते हो वह तुम्हारा शत्रु है, अपना काम सावधानीसे करो, सब शत्रु मित्र हो जावेंगे, तब काम सत्य ही सिद्ध होगा, सन्देह मत करो ।

७ अवज–सुनो पृच्छक ! तुमको चिंता बहुत है तू अकेला है, भार बहुत है, तुझ अकेलेहीस कार्य बन जावेगा, सब शोक छोड दे कल्याण होगा, पहिले तेरे संगी लोगोंने जो सलाह दी है उसे मनमें मत धर ।

८ अदअ–सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्तन करता है सो कार्य समभाग है, तू अर्थलाभ चाहता है, शीघ्र ही कार्य सिद्ध होगा ।

९ अअव–जो तू मनसे चिन्तन करता है उस कार्यमें बहुत विलम्ब है, तू किसीकी शिक्षा पर विश्वास मत कर और अपनी रक्षा करता रह ।

१० अदद–सुनो पृच्छक ! जो चिंतन करता है उस चिन्तनका विलम्ब बहुत है, तेरी कुबुद्धि है मन ठिकाने नहीं है, इस कारणसे तेरा कार्य होना कठिन है, कार्य भला नहीं है ।

११ अदज–सुनो पृच्छक ! जो चिन्तन करता है सो रामकार्यके समान बनेगा, राममंत्र जप करता रहो, अपना मन दृढ करो, धीरजसे सफल होगा ।

१२ अजज–सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्तन करता है सो कार्य सफल होवेगा, तुम कुबुद्धिको छोड दो, सद्‌बुद्धि धारण करो, ही प्रसन्नतासे काम बनेगा, अब तुम्हारे दिन भल आये हैं ।

१३ अवव–सुनो पृच्छक ! जिस कार्यके निमित्त पूछते हो वह काम सफल होगा, तुम्हारे शत्रु भला नहीं चाहते हैं, उनका विश्वास नहीं करना, शत्रुओंका ही बुरा होगा, तुम किसीका बुरा मत करो, परमेश्वर भला करेगा ।

१४ अअज–सुनो पृच्छक ! जिस कार्यके निमित्त पूछते हो वह कार्य कठिन है, जैसे असवार घोडेपर चढ कर भाग निकलता है, वैसा कार्य तुम्हारा है कुछ थोडासा सहजमें होगा ।

१५ अजअ–सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्तन करता है सो सफल होगा ।

१६ अजव–सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्तन करता है उसमें भगवान् भला करेंगे, तेरे मनका भ्रम दूर होगा, उद्यम तत्काल सिद्ध होगा ।

१७ ववव–सुनो पृच्छक ! तरा कार्य तत्काल सफल होगा, तुम इष्टदेवताकी पूजा करो ।

१८ ववअ–सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्तन करता है सो कार्य तत्काल होगा, किसीका विश्वास नहीं करना, जो तेरे सामने वडाई करते हैं, आरोग्यताका आशीर्वाद देते हैं व पीछे शत्रुभाव रखते हैं, उनका कहना कभी न मानना, चिन्ता मत करो, वांछित फल पाओगे ।

१९ ववज–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते सो जाना चाहते हो, जानेसे अर्थलाभ प्राप्त होगा, कार्यकी चिन्ता मत करो ।

२० वदव–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करतें हो उस कार्यमें मन लगाकर उपाय करो तो वह कार्य आनंदसे पूर्ण होवेगा और बहुत लाभ भी होगा ।

२१ वजव–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो उससे तेरा मन बहुत चञ्चल हो रहा है, मनको शान्त कर, चिंता संदेह दूर होगा, कुछ धर्म कार्य करो ।

२२ ववद–सुनो पृच्छक ! जो तू चिंतन करता है उससे बन्धुओंमें प्रीति होगी ।

२३ वदद–सुनो पृच्छक । जो तू चिन्तन करता है उसको परमेश्वर पूरा करेगा, तेरे बंधु मित्र भला नहीं चाहते हैं भगवान्‌का स्मरण करते रहो ।

२४ वजद–सुनो पृच्छक । जो तुम चिंतन करते हो वह अर्थका है, धन प्राप्त होगा, कुछ अल्पकष्ट होगा, अन्तमें परमेश्वर भला करेगा ।

२५ वदज–सुनो पृच्छक । जो तुम चिंतन करते हो उस कार्यका कुछ अंश सिद्ध होगा, सुख आनन्द बहुत प्राप्त होगा, चिन्ता मत करो ।

२६ वजअ–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो सो कार्य कठिन है, उसका उद्यम मत करो, करनेसे नहीं होगा ।

२७ वअव–सुनो पृच्छक ! तुम्हारे कार्यका एक शत्रु है, वह बुरा चाहता रहता है, किन्तु वह शत्रु आप दूर होजायगा, यह कार्य पांच पंचोंसे मिलकर सिद्ध होगा,

२८ वदअ–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिंतन करते हो उस कार्यके बहुत शत्रु हैं, किसीका विश्वास नहीं करना, कार्य अधिकतासे सिद्ध नहीं होगा और जो तू इस कार्यमें हठ करेगा तो कष्ट प्राप्त होगा ।

२९ अवज–सुनो पृच्छक ! यह कार्य बहुत कष्टका है, लाभदायी थोडा है जैसे लोहेकी नावसे समुद्र तरा चाहे वैसा तेरा कार्य है इसका यत्न मत करो सिद्ध नहीं होगा ।

३० वअअ–सुनो पृच्छक ! तेरे कार्यमें विलम्ब है समय पाकर होगा, जैसे जलकी मछली जल विना पलमात्रमें हाथ आजाती है और जल विना मर जाती है वैस ही यह कार्य आग्रह और यत्नसे हाथ आवेगा, परन्तु नाश तत्काल हो जायगा इससे यत्न क्यों करते हो ?

३१ वअद–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो सो कार्य बहुत शीघ्र सिद्ध होवेगा, चित्तको दृढ करो, मनमाना सैर करना छोड दो, और कार्यका विचार करो वह सफल होगा, चिंता मत करो ।

३२ वजज–सुनो पृच्छक ! जो तू चिंतन करता है वह तुरंत सिद्ध होगा, परमेश्वरकी कृपासे अर्थलाभ भी होगा इसकी शीघ्रता करो ।

३३ ददद–सुनो पृच्छक ! इस कार्यका उद्यम मत करो, क्योंकि यह भाई बन्धु मित्र कुटुम्बियोंके बलसे सफल होगा, अकेलेकी बात नहीं है इससे मिलकर करो ।

३४ दजद–सुनो पृच्छक ! जो तू चिंतन करता है सो जाना चाहता है, इसका उद्यम करनेसे अर्थलाभ होगा, इससे तत्काल करो ।

३५ ददज–सुनो पृच्छक ! जो तू चिंतन करता है सो कार्य कठिन है, इसे छोड दे, अन्य सब सिद्ध होंगे ।

३६ ददअ–सुनो पृच्छक ! जो तू कार्य चिंतन करता है सो कार्य दूर है, किन्तु कार्य भाग्यसे सन्तोषसे सिद्ध होगा ।

३७ दजअ–सुनो पृच्छक ! जो तू कार्य चिन्तन करता है उसके बहुत शत्रु हैं, तुम्हारा बुरा चाहते हैं उनके भरोसे पर कार्य मत करो, क्षेमपूर्वक सन्तोषकारक काम सिद्ध होगा ।

३८ दअअ–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो वह कार्य सफल होगा । अब तुम्हारा भाग्य उदय होगा, कुछ पुण्य करते रहो, शीघ्र ही पुत्र लक्ष्मी यश मिलेगा, कुशलताके साथ प्रसन्नता रहेगी ।

३९ दवद–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो वह कार्य दुष्टभाव है, इस कार्यसे कुछ प्राप्त तो होगा, परन्तु तुम अपने भाई बन्धुओंके अनुकूल चलो विरोध करना छोड दो, कार्य सफल होगा ।

४० दअद–सुनो पृच्छक ! तुम मनका किया चाहते हो इस कारणसे कर्मके ऊपर ध्यान धरो तुमको आनंद प्राप्त होगा ।

४१ ददव–सुनो पृच्छक ! इस कार्यके होनकी आशा बहुत है, पर तेरे शत्रु तेरा भला नहीं चाहते हैं, उनका विश्वास नहीं करना सफल होगा ।

४२ दजव–सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्तन करता है उसे छोड़कर अन्य कार्यका उद्यम करो, सिद्ध होगा ।

४३ दवज–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो उससे अर्थलाभ होगा, पुत्र, धन, यश अधिक प्राप्त होगा, कामना पूर्ण होगी ।

४४ दअज–सुनो पृच्छक ! यदि तुम उद्यम किया चाहते हो तो योग्य कार्यका चिन्तन करो, तुम्हारे मनुष्य मनके शुद्ध नहीं हैं, इस कामका तुच्छ फल होगा ।

४५ दवअ–सुनो पृच्छक ! तेरे उद्यमके दिन हैं, तेरा कार्य सिद्ध होगा, कुछ पुण्य धर्म करते रहो ।

४६ दअव–सुनो पृच्छक ! तुम्हारे लिये एक वस्तु मिलगी, धैर्य करो, पुण्यसें सब कार्य सिद्ध होगा, चिन्ता मत करो ।

४७ दवव–सुनो पृच्छक ! तेरे तो क्षेत्रपालका उपाय है, उसीकी पूजा करो, अन्तमें कार्यकी सिद्धि होगी ।

४८ दजज–सुनो पृच्छक ! जो तू चिंतन करता है सो कार्य भला नहीं, इसको छोड अन्य करो, पुण्य जप करो, सब कार्यकी सिद्धि होगी ।

४९ जजज–सुनो पृच्छक ! सर्व सिद्धि होवेगी, जैसे द्वितीयाके चन्द्रमाकी कला, दिन दिन बढ़ती है इसीप्रकार तेरा काम दिन दिन सिद्ध होगा ।

५० जजद–सुनो पृच्छक ! तुम इष्टदेवताका स्मरण किया करो, मनकी कामना सिद्ध होगी, सर्व जनकी रक्षा होगी ।

५१ जदद–सुनो पृच्छक ! तेरे कामका एक शत्रु है, उसे बहुत बली समझना, विश्वास नहीं करना, दिन पाके कार्य सफल होगा ।

५२–जदव–सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्तन करता है सो कार्य सहजमें सफल होगा, परन्तु इष्टदेवताकी पूजा करो ।

५३ जवद–सुनो पृच्छक ! जो तू चितन करता है वह कार्य कठिन है, तुम्हारे मित्र कपटी हैं, उनका कहना न मानना, अपने भाई मित्रोंको देखते रहना, तब कार्य सफल होगा ।

५४ जजव–सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्तन करता है उस कामनाको परमेश्वर भला करेगा, तेरे बुरे दिन गये, भलेदिन आये हैं ।

५५ जदज–सुनो पृच्छक ! इस कार्यके करनेसे तुमको सिद्धि होगी, किन्तु कुछ होम और जप करो ।

५६ जअद–सुनो पृच्छक ! तुम और की आशा करते हो आशा भगवान्की करनी चाहिये, उद्यम करनेसे कार्य सिद्ध होगा, चिन्ता मत करो ।

५७ जवज–सुनो पृच्छक ! तेरा कार्य तत्काल होगा परन्तु तुम धैर्य करो, धैर्य करनेसे सुख मिलेगा ।

५८–सुनो पृच्छक ! तेरे मनमें बडा भ्रम है, जिस कार्यका उद्यम करते हो उसमें बहुत श्रम होगा, इसे छोड और काम करो, भला होगा ।

५९ जजअ–सुनो पृछक ! तुम अर्थ चिन्तन करते हो, उसका फल तुम शीघ्र ही पाओगे, पहिले तो तुमने अनेक उद्यम किये थे परन्तु अब जो उद्यम करोगे तो सब कार्य सिद्ध होंगे ।

६० जदअ–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो सो कार्य विषरूप है, आगमको चाहते हो तो इष्टदेवताकी पूजा करो, कार्य सफल होगा ।

६१ जवव–सुनो पृच्छक ! यह कार्य भला नहीं, दीपकके समान है, जबतक तेल रहता है तबतक जलता है और जो वनका प्रचण्ड पवन लग जाय तो बुझ जाता है इसीप्रकार तेरा कार्य है, विश्वास किसीका मत करना, उद्यम करते रहना, कार्य सफल होगा ।

६२ जअज–सुनो पृच्छक ! यह कार्य तेरा कठिन है विना कष्टके न होगा, तेरे शत्रु कार्यको बिगाड़ते हैं उनका विश्वास न करना, अन्तमें भला होगा ।

६३ जवअ–सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो उसका घडीमें बनाव और घडीमें बिगाड पडता है, कार्यको हुआ हुआ कहते हो परन्तु होता नहीं कुछ, प्रयोग विना यह काम सिद्ध न होगा, इसीसे कुछ गायत्रीजप, होम, स्तोत्र पाठ करो तब इसकी सिद्धि होगी ।

६४ जअअ–सुनो पृच्छक ! यह कार्य कठिन है ।

१ अअअ	१७ ववव	३३ ददद	४९ जजज
२ अअद	१८ ववअ	३४ दजद	५० जजद
३ अजद	१९ ववज	३५ ददज	५१ जदद
४ अवद	२० वदव	३६ ददअ	५२ जदव
५ अदव	२१ वजव	३७ दजअ	५३ जवद
६ अवअ	२२ ववद	३८ दअअ	५४ जजव
७ अवज	२३ वदद	३९ दवद	५५ जदज
८ अदअ	२४ वजद	४० दअद	५६ जअद
९ अअव	२५ वदज	४१ ददव	५७ जवज
१० अदद	२६ वजअ	४२ दजव	५८ जअव
११ अदज	२७ ववअ	४३ दवज	५९ जजअ
१२ अजज	२८ वदअ	४४ दअज	६० जदअ
१२ अवव	२९ वअज	४५ दवअ	६१ जवव
१४ अअज	३० वअअ	४६ दअव	६२ जअज
१५ अजअ	३१ वअद	४७ दवव	६३ जअव
१६ अजव	३२ वजज	४८ दजज	६४ जअअ

इति प्रश्नमाला समाप्त

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS